भैरव तन्त्र रहस्य
और
भीषण भैरव शाबर
(सम्पूर्ण चारों खण्ड)

-योगीराज यशपाल जी

बावन बीर साधना और हनुमान जंजीरा सहित

भैरव तन्त्र रहस्य

भीषण भैरव शाबर

(बावन बीर साधना व हनुमान जंजीरा सहित)

काल भैरुँ कपिला केश,
काना मदरा भगवाँ भेष।

एवं

बारह कोस की रिद्धि ल्यावो,
चोबीस कोस की सिद्धि ल्यावो,
सुत्या होय तो जगाय ल्यावो,
बैठा होय तो उठाय ल्यावो।

प्राचीन शाबर परम्परा के अन्तर्गत भैरव जंजीरा की उपरोक्त पंक्तियाँ भैरव बाबा के व्यक्तित्व, स्वरूप एवं क्षमता का सजीव चित्रण करती हैं। प्राचीन तन्त्र शास्त्रों की धरोहर में भैरव तन्त्र एक अमूल्य कोष के समान है। भैरव तन्त्र और भैरव शाबर एक ऐसी गुप्त निधि है, जिसमें सर्व सिद्धि के बहुमूल्य रत्न छुपे हुये हैं। इन्हीं अनमोल और उत्कृष्ट तन्त्र प्रयोगों को उजागर करने का प्रयास इस पुस्तक में किया गया है।

पुस्तक के चारों खण्डों का संक्षिप्त विवरण

प्रथम खण्ड : भैरव तन्त्र रहस्य

- ☐ भैरव तत्त्व विवेचन
- ☐ दस वीर भैरव और चौंसठ भैरव स्वरूप दर्शन
- ☐ भैरव मन्त्र रहस्य
- ☐ भैरवी साधना विवेचन
- ☐ ५२ शक्ति पीठ (भैरवी) और उनके भैरव
- ☐ भैरव तत्त्व की महिमा
- ☐ भैरव साधना रहस्य
- ☐ भैरव तन्त्र साधना
- ☐ भैरव वशीकरण साधना
- ☐ शत्रु संहार हेतु काल भैरव साधना
- ☐ श्री बटुक भैरव यन्त्र साधना

द्वितीय खण्ड : भैरव साधना

- ☐ काल संकर्षण तन्त्रोक्त विस्तृत श्रीमद् बटुक भैरव स्तोत्रम्
- ☐ भैरव तन्त्रोक्तं श्री बटुक भैरव कवचम्
- ☐ श्री बटुक भैरव ब्रह्म कवचराज
- ☐ श्रीस्वर्णाकर्षण भैरव साधना
- ☐ रुद्रयामल तंत्रोक्त स्वर्णाकर्षण भैरव स्तोत्र
- ☐ शरभेश्वर भैरव साधना
- ☐ क्रोध भैरव साधना
- ☐ उन्मत्त भैरव साधना

तृतीय खण्ड : भीषण भैरव शाबर मन्त्र

- ☐ दुर्लभ भीषण भैरव शाबर मन्त्र
- ☐ भीषण भैरव के गुह्य शाबर मन्त्र प्रयोग
- ☐ सर्व कार्य रुद्र भैरव शाबर मन्त्र
- ☐ अचूक भैरव साधना शाबर मन्त्र
- ☐ रूद्रभैरव भय नाशक शाबर मन्त्र
- ☐ भैरव साधना के अद्‌भुत प्रयोग

चतुर्थ खण्ड : बावन बीर साधना और हनुमान जंजीरा

- ☐ बावन वीर साधना
- ☐ श्री हनुमान जंजीरा

जय काल भैरव बाबा!

भैरव तन्त्र रहस्य
और
भीषण भैरव शाबर

(बावन बीर साधना व हनुमान जंजीरा सहित)

सम्पूर्ण चारों खण्ड

लेखक :
योगीराज यशपाल जी

मूल्य : ₹ 300.00

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

प्रकाशक : **रणधीर प्रकाशन**
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे)
हरिद्वार-249401
फोन : (01334) 226297, मो. : 9012181820

वितरक : **रणधीर बुक सेल्स**
रेलवे रोड, हरिद्वार
फोन : (01334) 228510

जम्मू विक्रेता : **पुस्तक संसार**
167, नुमाइश मैदान, जम्मू तवी (ज.का.)

दिल्ली विक्रेता : **गगन बुक डिपो**
4694, बल्ली मारान, निकट चावड़ी बाजार मैट्रो, दिल्ली-6
0011-23950635, मो.: 9315667218

वेबसाइट : **www.randhirbooks.com**

संस्करण : द्वितीय 2021

शब्द सज्जा : जे के प्रिन्टस एन ग्राफिक्स, दिल्ली-6

मुद्रक : राजा ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली-92

ISBN : 978-81-940650-8-1

BHAIRAV TANTRA RAHASYA AUR BHISHAN BHAIRAV SHABAR

Written by : Yogiraj Yashpal ji

Published by : Randhir Prakashan, Hardwar (India)

गुरु प्रसाद

पाठकों के सम्मुख योगीराज यशपाल जी की यह चिरप्रतीक्षित पुस्तक प्रस्तुत करते हुये, हमें अत्यन्त हर्ष हो रहा है। इस पुस्तक के प्रकाशन के सम्बन्ध में अनेक वर्षों से कई साधकों के पत्र एवं संदेश हमें निरन्तर प्राप्त होते रहे हैं। पाठकों की जिज्ञासा ही इस पुस्तक के प्रकाशन की प्रेरणा है।

लगभग तीन दशक़ पूर्व यशपाल जी की 'भैरव गुटिका' नामक पुस्तक अत्यन्त अल्प संख्या में प्रकाशित हुई थी। पुस्तक का वह संस्करण तब एक वर्ष से भी कम समय में समाप्त हो गया था। तब पाठकों की मांग थी कि इसमें बटुक भैरव एवं भैरव शाबर का विषय भी सम्मिलित किया जाये, अत: पाठकों की आकांक्षा को ध्यान में रखकर यशपाल जी ने काशी के अनेक प्राचीन पुस्तकालयों में स्वयं जाकर अनेक प्राच्य भैरव तन्त्र ग्रन्थों से शोधपूर्ण साहित्य का संकलन करके एक नवीन पाण्डुलिपि 'भैरव तन्त्र रहस्य एवं भीषण भैरव शाबर मन्त्र' के नाम से तैयार की थी। यही पुस्तक अनेक वर्षों के परिश्रम के पश्चात् अब प्रकाशित की गई है। इस पुस्तक के अनेकों तन्त्र एवं शाबर के प्रयोग स्वयं लेखक ने सिद्ध किये हैं। पाठक भी इस पुस्तक का उचित विधि से लाभ उठायें।

—शिष्यगण (यशपालजी)

भूमिका

आप सुधी पाठकों का प्रेम एवं स्वयं काल भैरव जी की कृपा इस पुस्तक की रचना का मूल कारण हैं। मैं तो निमित्त मात्र हूँ। अनेक वर्षों से महाकाल भैरव की आराधना करते हुये अनगिनत विलक्षण अनुभूतियाँ हुई हैं, जिन्हें लेखनीबद्ध करना मेरे लिये सम्भव नहीं है। अनेक वर्षों तक भैरव तन्त्र सिद्धि की कालावधि में तन्त्र पीठों के भ्रमण के साथ-साथ सिद्धों से प्राप्त प्राच्य ग्रन्थों के अध्ययन का सुअवसर भी मुझे प्राप्त हुआ है। इन्हीं जीर्ण-शीर्ण प्राचीन भैरव तन्त्र शास्त्रों के अनेक प्रयोगों का मैं स्वयं परीक्षार्थी रहा हूँ। भैरव तन्त्र सिद्धि के बीस वर्षों के अनुसंधान का यह निचोड़ इस पुस्तक के स्वरूप में आपके सम्मुख प्रस्तुत है।

कोलतार से भी गहरा रंग, विशाल प्रलम्ब, स्थूल शरीर, अंगारक नेत्र, काले वस्त्र, कण्ठ में रुद्राक्षमाला, हाथ में भयानक लौहदण्ड और काले श्वान की सवारी—यह है महाभैरव अर्थात् मृत्युभय के देवता का बाह्य स्वरूप। भैरव का शाब्दिक अर्थ है भयानक। किन्तु एक अन्य अर्थ में भैरव = भय + रव अर्थात् भय से रक्षा करने वाला। भैरव वास्तव में तमस (अंधकार) के देव हैं। इनकी साधना से साधक अपने अज्ञान रूपी तमस का नाश करके भैरव कृपा रूपी प्रकाश को प्राप्त कर सकता है।

भैरव शिव का ही एक स्थूल स्वरूप हैं। शिव का रौद्र रूप ही काल भैरव है। तन्त्र में भैरव शब्द का निरूपण भगवान शिव के विराट रूप को प्रतिबिम्बित करता है। भैरव सर्वदा निर्भय है। यह भक्तों को भी निर्भयता प्रदान करते हैं।

भगवान भीषण भैरव की अनेक वर्षों तक अनवरत साधना का मेरा अनुभव ही भीषण भैरव शाबर के रूप में इस पुस्तक में समाहित किया है। मैंने देखा है कि भैरव शाबर के मन्त्रों पर भैरव जी के भीषण स्वरूप या तत्व का प्रभाव सर्वाधिक है। भीषण भैरव की अदृश्य प्रेरणा ही इन शाबर मन्त्रों को जनसामान्य हेतु प्रकाशित करने का मूल कारण है।

पुस्तक के द्वितीय खण्ड भैरव साधना में भैरव उपासना हेतु सभी मन्त्र, स्तोत्र व कवच प्रस्तुत किये गये हैं। इसी खण्ड में उन्मत्त भैरव साधना के अन्तर्गत पहली बार क्रोधभूपति के प्रबल मन्त्र, भूतनाथ सिद्धि व तन्त्र मुद्रा प्रकरण प्रकाशित किये गये हैं।

पुस्तक के अंतिम खण्ड 'बावन बीर साधना और हनुमान जंजीरा' में मेरे शिष्यों की विशेष अनुनय व प्रार्थना पर वीर साधना का यह अदृश्य पक्ष उजागर किया गया है।

इस पुस्तक में दिये गये शाबर मन्त्र अनेक प्राचीन शक्तिपीठों के भ्रमण स्वरूप प्राचीन सिद्ध महात्माओं तथा प्राच्य ग्रन्थों से संकलित किये गये हैं। अनेक भैरव शाबर मन्त्र आपको देखने में लगभग एक जैसे लगेंगे, किन्तु उन मन्त्रों की रचना एवं विधि में सूक्ष्म अन्तर होने के कारण उनका प्रभाव विलग है। प्रसिद्ध तांत्रिकों से प्राप्त कुछ भैरव शाबर मन्त्रों को अनेक स्थान पर यथारूप प्रकाशित किया गया है। इसे मन्त्र की पुनरावृत्ति न समझकर पूज्य सिद्धों का आशीर्वाद ही समझें।

भगवान काल भैरव की कृपा इस ग्रन्थ के माध्यम से आप सभी पाठकों पर भी बनी रहे, यही मेरी कामना है। इस पुस्तक में दिए गये प्रयोग एवं शाबर मन्त्र अनुभूत हैं, आप भी इनसे लाभ उठायें, यही इस पुस्तक की सफलता है।

ॐ श्री भैरवाय नमः

आपका—

योगीराज यशपाल जी

विषय सूची

प्रथम खण्ड : भैरव तन्त्र रहस्य

द्वितीय खण्ड : भैरव साधना

तृतीय खण्ड : भीषण भैरव शाबर मन्त्र

चतुर्थ खण्ड :
बावन बीर साधना और हनुमान जंजीरा

प्रथम खण्ड

भैरव तन्त्र रहस्य

तन्त्र अधिपति-भैरव

भगवान भैरव देव तन्त्र के अधिपति होने के साथ-साथ ज्ञान के अथाह सागर भी हैं। इनका अवतरण अज्ञान का विनाश तथा ज्ञान की रक्षा हेतु हुआ था। भैरव देव परम त्यागी तथा वैरागी हैं। संसार का भरणकर्ता होते हुये भी वह शमशान में निवास करते हैं तथा खप्पर में मांगकर खाते हैं। भैरव भगवान के विभिन्न स्वरूपों में से आठ स्वरूप अत्यन्त रौद्र, भयंकर और क्रोध से परिपूर्ण हैं। इन स्वरूपों में यह शमशान में निवास करते हैं तथा अर्द्धरात्रि में जलती हुई चिताओं के पास योगिनियों के साथ नृत्य करते हैं।

इनका एक अत्यन्त प्रचण्ड स्वरूप ही कालभैरव का है, जिसे 'महाकाल भैरव' भी कहते हैं। इस स्वरूप में ये मृत्यु के नियंता और यमराज के प्रतिरूप ही नहीं, अपितु यमदेवता और काल को नियंत्रित करने वाले देव भी हैं। यह पृथ्वी पर अपने किसी न किसी स्वरूप में भक्तों के मध्य सदा उपस्थित रहते हैं। इनके किसी भी स्वरूप की साधना करके सिद्धि प्राप्त की जा सकती है।

—यशपाल जी

भैरव तत्त्व विवेचन

यहाँ हम सर्वप्रथम 'भैरव' तत्त्व की चर्चा करते हुये भैरव शब्द का उचित अर्थ समझने का प्रयास करेंगे। भैरव का नाम आते ही सामान्य मानव के मन में एक भयानक आकृति उत्पन्न होती है, जिसमें बड़ी-बड़ी आँखे, काला शरीर, हाथ में दण्ड व कपाल खप्पर लिए श्वान के वाहन पर बैठे हुए भैरव दिखाई देते हैं। किन्तु भैरव मात्र यह भयानक आकृति नहीं है, न ही भैरव वह है, जिनके अनेक मन्दिर अलग-अलग स्थानों पर स्थित है। जैसे-जैसे रात्रि बढ़ने लगती है, वैसे ही मनुष्य का भय बढ़ने लगता है, उसी से भैरव का क्षेत्र व्यापक होता जाता है, उसी से भैरव का क्षेत्र व्यापक होता जाता है, तभी भैरव का कार्य प्रारम्भ होता है। यह सर्वव्याप्कता ही भैरव है। यही तन्त्र की व्याख्या भी है।

तन्त्रज्ञान भैरव और भैरवी के सम्बन्ध में एक नई अवधारणा लेकर आता है, इसकी झलक आगम और निगम ग्रन्थों में भी है, जिससे भय की उत्पत्ति हुई हो, जो भय की वृद्धि करता हो, जो भय पर शासन करता हो, और जिसने भय का नाश किया हो, वही भैरव कहलाता है। भैरव की अनेक परिभाषायें हैं, अनेक रीति से भैरव को समझा जा सकता है। तन्त्र पन्थ के अनुसार भैरव का अर्थ है स्वयं शिव। तन्त्र के साधक या प्रशिक्षु को भैरव या भैरवी कहा जाता है। आगम तन्त्र ग्रन्थों में अनेक स्थान पर महादेव को भैरव कहकर सम्बोधित किया गया है। माँ पार्वती को भी कई ग्रन्थों में भैरवी नाम से पुकारा गया है। इस प्रकार भैरव-भैरवी तत्त्व एवं

शब्द अत्यन्त विस्तृत है। तन्त्र के प्राचीनतम, गोपनीय, रहस्यपूर्ण कौलान्तक सम्प्रदाय में भी साधकों को भैरव और भैरवी कहा जाता है तथा साधक को भैरव तत्त्व की दीक्षा दी जाती है। गुरु दीक्षा देते समय शिष्य में भैरव तत्त्व की स्थापना करते हैं।

एक साधक जो सर्वथा ज्ञान शून्य है और ईश्वर रहस्य की प्राप्ति के मार्ग पर आगे बढ़ने हेतु गुरु की शरण में जाता है। सर्वप्रथम उसे भय मुक्त करने के लिए गुरु भैरव तत्त्व की दीक्षा देते हैं। तन्त्र में अनेक ऋषियों और स्वयं महादेव ने भैरव शब्द का प्रयोग किया है, जिसका अर्थ है कि जो सभी बंधनों और भय से मुक्त है, मात्र शिव तत्त्व पर दृढ़ रहने वाला ही भैरव है। इस सृष्टि में शिव ही ज्ञान, विज्ञान, बुद्धि, आचरण और मृत्यु के प्रदाता है। भैरव वही कहलाता है, जिसने यह मान लिया हो कि गुरु प्रदत्त, शिव प्रदत्त मार्ग और शिव कृपा से खोजा जाने वाला मार्ग ही श्रेष्ठ है। तन्त्र ने अपने सच्चे साधकों को बाबा, साधु या योगी कहने के स्थान पर भैरव नाम दिया। भैरव स्वरूप आचरण करने वाला, स्वयं खोजी एवं गुरु मार्ग पर चलने वाला ही भैरव है।

भैरव और भैरवी होना एक प्रयोगिक अवस्था है, जिसमें संसार के भय से तो मुक्त होना ही है साथ ही स्वयं के षड्यन्त्रों और मन के बन्धनों से भी पार होना है। भैरव मन्दिर में स्थापित विग्रह स्वरूप तन्त्र के साधक के अन्तर्मन में स्थित भय मुक्त भैरव का ही स्थूल रूप है। भैरव के स्थूल स्वरूप का पूजन व आराधना स्वयं की जागृति का ही प्रतीक है।

भैरव तत्त्व का तात्पर्य है कल्याण हेतु स्वयं के साथ प्रयोग हेतु सदैव तत्पर रहना। भैरव तत्त्व की एक और विशेषता है, इसमें भोग और मोक्ष एक साथ समाहित है। भैरव का अर्थ संसार से पलायन करना नहीं है, भैरव होना संसार में रहकर वांछित भोगों को भोगते हुए, भोग और मोक्ष को जानने की प्रक्रिया है। भैरव किसी संकुचित मार्ग का नाम नहीं, यह विशाल ब्रह्माण्ड में आच्छादित होने वाला तत्त्व है।

दस वीर भैरव और चौंसठ भैरव स्वरूप दर्शन

विश्व के विकास का एकमात्र स्रोत है परब्रह्म। यह वाणी और मन की पहुँच से परे है। द्रव्य, गुण आदि भाव पदार्थों का इसमें सर्वथा अभाव है। इसी का शुद्ध प्रकाश सर्वत्र व्याप्त है। वेदों में इसी का नाम रूद्र है। तन्त्र शास्त्र में यही भैरव के नाम से वर्णित हुआ है। इन्हीं के भय से अग्नि एवं सूर्य का तेज विद्यमान है, इन्हीं के भय से इन्द्र, वायु और मृत्यु देवता अपने-अपने काम में तत्पर हैं। इन्हीं का वर्णन रौद्र तथा सौम्य दोनों स्वरूप में वेद व तन्त्र में उपलब्ध है।

काल की भाँति शोभित होने के कारण यह साक्षात 'कालराज' हैं। भीषण होने के कारण 'भैरव' हैं। इनसे काल भी भयभीत होता है अतः यह 'कालभैरव' हैं। दुष्ट आत्माओं का मर्दन करने के लिए इन्हें 'आमर्दक' कहा गया है।

विश्वेश्वरस्य ये भक्ता न भक्ताः कालभैरवे।
ते लभन्ते महादुखं काश्यां चैव विशेषतः॥

अर्थात् जो मनुष्य शिव भक्त होकर कालभैरव की भक्ति नहीं करते हैं वे महा दुख को प्राप्त करते हैं, यह तथ्य काशी में विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है।

'विज्ञान भैरव' और 'तन्त्रालोक' नामक प्राचीन ग्रन्थों में भैरव शब्द की उत्पत्ति 'भी' धातु भयावचक तथा 'अव' धातु से मानी गई है,

जिसका अर्थ है भीषण, भय कारक साधनों से रक्षा करने वाला ही भैरव है। वामकेश्वर तन्त्र के अनुसार 'भ','र', 'व' इन तीन वर्णों के अर्थ, भरण, रमण तथा वमन का सम्मिलित स्वरूप 'भैरव' है।

'आम्नाय सप्तविंशतिका' के अन्तर्गत अष्ट भैरव इस प्रकार हैं—मन्थानभैरव, चक्रभैरव, फट्कार भैरव, एकान्त भैरव, रवि भैरव, चरण भैरव, नभोनिर्मल भैरव, भ्रमर भास्कर भैरव।

इसी ग्रन्थ में दस वीर भैरवों का भी उल्लेख है—सृष्टि वीर भैरव, स्थिति वीर भैरव, संहार वीर भैरव, रक्तवीर भैरव, यमवीर भैरव, मृत्यु वीर भैरव, भद्रवीर भैरव, परमार्क वीर भैरव, मार्तण्डवीर भैरव तथा कालाग्निवीर भैरव।

अन्य प्रमुख तन्त्र ग्रन्थों में दस भैरवों के नाम इस प्रकार हैं—हेतुक भैरव, त्रिपुरान्तक भैरव, वेताल भैरव, अग्निजिह्वा भैरव, काल भैरव, कराल भैरव, एकपाद भैरव, भीमरूप भैरव, अचल भैरव तथा हाटकेश्वर भैरव।

प्राचीन शक्ति ग्रन्थों में स्पष्ट उल्लेख है कि शक्ति उपासना बिना भैरव उपासना के परिपूर्ण नहीं होती। ये दोनों एक-दूसरे के अविभाज्य अंग है। शक्तिसंगम तन्त्र में इस कथन की पुष्टि की गई है।

क्रोध भैरव संयोगाद् यक्षिण्यः सिद्धिदा यथा।
तथा विद्याः प्रसिद्ध्यन्ति पुंयोगादेव पार्वति॥

हे पार्वती! जिस प्रकार क्रोध भैरव के संयोग से यक्षिणियां शीघ्र फलदायी होती हैं, उसी प्रकार पुंयोग से ही शक्ति विद्याएँ शीघ्र सिद्धि प्रदान करती हैं।

रुद्रयामल तन्त्र के अनुसार चौंसठ भैरव की चर्चा की गई हैं। इन ६४ भैरवों की शक्तियाँ ही ६४ योगिनी के नाम से प्रसिद्ध हैं। ६४ भैरव के नाम इस प्रकार हैं—

१. असिताङ्ग, २. विशालाक्ष, ३. मार्तण्ड, ४. मोदकप्रिय, ५.

स्वच्छन्द, ६. विघ्नसन्तुष्ट, ७. खेचर, ८. सचराचर, ९. रूरू, १०. क्रोडदंष्ट्र, ११. जटाधर, १२. विश्वरूप, १३. विरूपाक्ष, १४. नानारूपधर, १५. नर, १६. वज्रहस्त, १७. महाकाय, १८. चण्ड, १९. प्रलयान्तक, २०. भूमिकम्प, २१. नीलकण्ठ, २१. विष्णु, २३. कुलपालक, २४. मुण्डपाल, २५. कामपाल, २६. क्रोध, २७. पिङ्गलेक्षण, २८. अभ्ररूप, २९. धरापाल, ३०. कुटिल, ३१. मन्त्रनायक, ३२. रुद्र, ३३. पितामह, ३४. उन्मत्त, ३५. वटुनायक, ३६. शङ्कर, ३७. भूतवेताल, ३८. त्रिनेत्र, ३९. त्रिपुरान्तक, ४०. वरद, ४१. पर्वतावास, ४२. कपाल, ४३. शशिभूषण, ४४. हस्तिचर्माम्बरधर, ४५. योगीश, ४६. ब्रह्मराक्षस, ४७. सर्वज्ञ, ४८. सर्वदेवेश, ४९. सर्वभूतहृदिस्थित, ५०. भीषण, ५१. भयहर, ५२. सर्वज्ञ, ५३. कालाग्नि, ५४. महारौद्र, ५५. दक्षिण, ५६. मुखर, ५७. अस्थिर, ५८. संहार, ५९. अतिरिक्ताङ्ग, ६०. कालाग्नि, ६१. प्रियङ्कर, ६२. घोरनाद, ६३. विशालाक्ष तथा ६४. दक्षसंस्थितयोगीश।

जितने भी प्राचीन आगम और तन्त्र के ग्रन्थ हैं, उनमें श्री भैरव साधना का परिचय एवं उल्लेख अवश्य किया गया है। इसी तथ्य से भैरव उपासना के महत्त्व का पता चलता है। प्रस्तुत पुस्तक में भैरव साधना का गहन, सरल, संशोधित व तंत्रोक्त स्वरूप पूर्ण रूप में समाहित करने का प्रयास किया गया है।

—लेखक

भैरव मन्त्र रहस्य

अब यहाँ भैरव मन्त्र के सम्बन्ध में कुछ चर्चा करेंगे।

ॐ भं भैरवाय नमः

यह भैरव का बीज मन्त्र है, '**भं**' बीज भयनाशक बीज है, '**भं**' बीज का कुण्डलिनी में स्थान '**भं**' बीज की स्थिति, यह बीज मनुष्य की किस चेतना को जाग्रत करता है, इस '**भं**' बीज को धारण करने का विधान एवं '**भं**' नामक चक्र, इन सबका ज्ञान होना आवश्यक है।

केवल '**भं**' मन्त्र से ही सम्पूर्ण सृष्टि को जान लेने की विधि ही भैरव (साधक) को पूर्ण बनाती है। इस संसार के प्रपंच को मात्र इस बीज मन्त्र से जाना जा सकता है। यह संसार माया द्वारा रचित है। शून्या, महाशून्या, महाविकराल, महा सौन्दर्य शालिनी, महा प्रपंचकारिणी द्वारा रचित यह सृष्टि मात्र परम प्रखर '**भं**' बीज को धारण किया हुआ भैरव ही जीत सकता है। भैरव सर्वदा निर्भय है। सृष्टि के उच्च शिखरों पर उन्मुक्त विचरण करने वाला ही भैरव है।

भैरव तत्त्व गुरु से ही प्राप्त किया जाता है, इसके लिये भैरव मण्डल की उपासना का विधान पूर्ण करना होता है। अतः भैरव को अपना ईष्ट मानकर उनकी प्रखरता को स्वयं में अवतरित करने की प्रार्थना करनी चाहिए।

भैरवी साधना विवेचन

तन्त्र मत के अनुसार ऋग्वेद में सांकेतिक रूप से पंच चक्रों का उल्लेख किया गया है, इन्हीं पंच चक्रों में से एक भैरवी चक्र है। भैरवी चक्र भी दो प्रकार के होते हैं, चीनाचार चक्र और शैव मत चक्र। चक्र पूजा हिमालय में स्थित चीना चार नामक स्थान से आरम्भ हुई। यहाँ चीन से आशय हिमाचल में स्थित कुल्लू जिले के एक स्थान से है। काफी समय पश्चात् पंच चक्रों के अनुसरण में पंच मकारों को भी जोड़ा गया। वाम मार्ग में मद्य, मीन, मांस, मुद्रा और मैथुन के माध्यम से साधक की उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया गया। इसमें तन्त्र, मन्त्र और यन्त्र के बल पर सिद्धियों की कामना की गई। इस मत में भैरवी साधना को विशेष स्थान दिया गया। इसमें साधक को भैरवी के साह्चर्य की भी अनुमति दी गई। तन्त्र शास्त्र के अनुसार भैरवी के दस प्रकार है। जब भगवान शिव का दक्ष के यज्ञ में अपमान किया गया, तब शिव वहाँ से जाने लगे, तब सती ने दस स्वरूप धारण करके दशो दिशाओं में जाने का मार्ग अवरूद्ध कर दिया। इन्हें दश विद्या कहा जाता है। ये ही दश भैरवियाँ हैं। इनमें से पाताल़ भैरवी, शमशान भैरवी तथा त्रिपुर भैरवी विशेष प्रसिद्ध हैं।

इनके अतिरिक्त कौलेश भैरवी, रुद्र भैरवी, नित्य भैरवी तथा चैतन्य भैरवी आदि है। इन सभी के ध्यान व पूजन की विधियाँ अलग-अलग है। तन्त्र साधना में दीक्षा लेने वाली स्त्री को भैरवी कहा जाता है, जिसका अर्थ होता है, शिव की संगिनी, माँ शक्ति।

सनातन धर्म के अनुसार गुरु-शिष्या के बीच विवाह की अनुमति नहीं है तथा एक ही गुरु से दीक्षित स्त्री-पुरुष परस्पर विवाह नहीं कर सकते। परन्तु कौल मतानुसार यह निषेध नहीं है। तन्त्र साधना के कुछ नियम निश्चित है, जिसकी पालना प्रत्येक साधक हेतु आवश्यक है। इसके अनुसार भैरवी शक्ति का ही एक स्वरूप है। तन्त्र की सम्पूर्ण भाव-भूमि शक्ति पर आधारित है। साधना के माध्यम से साधक को इस तथ्य का साक्षात्कार कराया जाता है कि स्त्री मात्र वासना का माध्यम न होकर शक्ति का उद्‌गम है। शक्ति प्राप्ति की यह क्रिया गुरु अपने निर्देशन में सम्पन्न कराता है। इसी कारण तन्त्र में स्त्री समागम क्रिया में गुरु के मार्गदर्शन का विशेष महत्त्व चित्रित किया गया है।

शक्ति उपासको के वाम मार्गी मत में पहले मद्य, फिर बलि प्रथा और मांस का सेवन होने लगा। इसके भी दो भाग हुए, जो साधक मांस और मद्य का सेवन करते थे उन्हें सामान्य साधक कहा जाता था। मद्य और मांस के साथ मीन, मुद्रा व मैथुन पांच मकारों का सेवन करने वालो को सिद्ध तांत्रिक कहा जाता था।

सामान्य एवं सिद्ध तांत्रिक दोनों ही अपनी विधियों द्वारा ब्रह्म को प्राप्त करने का यत्न करते थे। पंच मकारों द्वारा अत्याधिक ऊर्जा उत्पन्न करके कुण्डलिनी जागरण का प्रयत्न किया जाता था। कुण्डलिनी जागृत करके सहस्त्रदल भेदन द्वारा दशम द्वार को खोलकर सृष्टि के रहस्य को उजागर करना ही इनका अन्तिम लक्ष्य था। इस प्रकार वाम मार्ग में काम भाव का समुचित प्रयोग करके ब्रह्म की प्राप्ति की जाती थी।

भैरवी साधना में कई भेद है। प्रथम प्रकार की साधना में स्त्री और पुरुष निर्वस्त्र होकर आमने-सामने बैठकर एक दूसरे की आँखों में देखते हुए शक्ति मन्त्रों का निर्विघ्न जाप करते हैं। निरन्तर ऐसा करने से साधक के भीतर का काम भाव ऊर्ध्वमुखी होकर ऊर्जा के रूप में सहस्त्र कमल का भेदन करता है। इसी क्रम के अंतिम चरण में भैरव-भैरवी समागम

करते हुए तथा स्वयं पर पूर्ण नियन्त्रण रखते हुए शक्ति मन्त्रों का जाप बिना स्खलन के करते हैं। इस साधना में स्खलन से शक्ति नष्ट होने का भय है, अतः यह साधना अत्याधिक संयम से की जाती है। इस साधना में काम के वेग को नियंत्रित करके क्रमानुसार चक्रों का भेदन करने की विधि गुरु ही बताता है। यह सहस्रदल भेदन की तन्त्र की अनूठी साधना है, इसके पूर्ण होने के पश्चात् साधक को ब्रह्माण्ड की दिव्य ध्वनियाँ सुनाई देने लगती है। साधक को दिव्य प्रकाश अनुभव होता है और पुनः काम भाव की उत्पत्ति नहीं होती। वह पूर्ण संतोष का अनुभव करता है। उचित मन्त्रों व उचित दीक्षा से ही यह सम्भव है।

५२ शक्ति पीठ (भैरवी) और उनके भैरव

अनेक प्रचीन तन्त्र ग्रन्थों में बावन शक्तिपीठों को भैरवी स्थान की संज्ञा दी गई हैं। इन सभी शक्तिपीठों के अपने भैरव देव भी हैं। इन सबका विवरण प्राचीन शास्त्रानुसार यहाँ दिया गया है—

१. हिंगलाज
शक्ति—कोटरी (भैरवी-कोट्टवीशा)
भैरव का नाम—भीमलोचन

२. शर्करेरे (करवीर)
शक्ति—महिषासुरमर्दिनी
भैरव का नाम—क्रोधिश

३. सुगन्धा—सुनन्दा
शक्ति—सुनन्दा
भैरव का नाम—त्र्यंबक

४. कश्मीर—महामाया
शक्ति—महामाया
भैरव का नाम—त्रिसंध्येश्वर

५. ज्वालामुखी—सिद्धिदा (अंबिका)
शक्ति—सिद्धिदा (अंबिका)
भैरव का नाम—उन्मत्त

६. जालंधर—त्रिपुरमालिनी
शक्ति— त्रिपुरमालिनी
भैरव का नाम—भीषण
७. वैद्यनाथ—जयदुर्गा
शक्ति—जय दुर्गा
भैरव का नाम—वैद्यनाथ
८. नेपाल—महामाया (गुहेश्वरी)
शक्ति—महशिरा (महामाया)
भैरव का नाम—कपाली
९. मानस—दाक्षायणी
शक्ति—दाक्षायनी
भैरव का नाम—अमर
१०. विरजा—विरजाक्षेत्र
शक्ति—विमला
भैरव का नाम—जगन्नाथ
११. गंडकी—गंडकी
शक्ति—चण्डी
भैरव का नाम—चक्रपाणि
१२. बहुला—बहुला (चंडिका)
शक्ति—देवी बाहुला
भैरव का नाम—भीरुक
१३. उज्जयिनी—मांगल्य चंडिका
शक्ति—मंगल चंद्रिका
भैरव का नाम—कपिलाम्बर
१४. त्रिपुरा—त्रिपुर सुन्दरी
शक्ति—त्रिपुर सुन्दरी

भैरव का नाम—त्रिपूरेश

१५. चट्टल—भवानी

शक्ति—भवानी

भैरव का नाम—चन्द्रशेखर

१६. त्रिस्त्रोता—भ्रामरी

शक्ति—भ्रामरी

भैरव का नाम—अम्बर और भैरवेश्वर

१७. कामगिरि—कामाख्या

शक्ति—कामाख्या

भैरव का नाम—उमानन्द

१८. प्रयाग—ललिता

शक्ति—ललिता

भैरव का नाम—ललितेश्वर

१९. जयंती—जयंती

शक्ति—जयंती

भैरव का नाम—क्रमदीश्वर

२०. युगाद्या—भूतधात्री

शक्ति—भूतधात्री

भैरव का नाम—क्षीर खंडक

२१. कालीपीठ—कालिका

शक्ति—कालिका

भैरव का नाम—नकुशील

२२. किरीट—विमला (भुवनेशी)

शक्ति—विमला

भैरव का नाम—संवर्त्त

२३. वाराणसी—विशालाक्षी

शक्ति—विशालाक्षी मणिकर्णी

भैरव का नाम—काल भैरव

२४. कन्याश्रम—सर्वाणी

शक्ति—सर्वाणी

भैरव का नाम—निमिष

२५. कुरुक्षेत्र—सावित्री

शक्ति—सावित्री

भैरव का नाम—स्थाणु

२६. मणिदेविक—गायत्री

शक्ति—गायत्री

भैरव का नाम—सर्वानन्द

२७. श्रीशैल—महालक्ष्मी

शक्ति—महालाक्ष्मी

भैरव का नाम—शम्बरानन्द

२८. कांची—देवगर्भा

शक्ति—देवगर्भा

भैरव का नाम—रूरू

२९. कालमाधव—देवी काली

शक्ति—काली

भैरव का नाम—असितांग

३०. शोणदेश—नर्मदा (शोणाक्षी)

शक्ति—नर्मदा

भैरव का नाम—भद्रसेन

३१. रामगिरि—शिवानी

शक्ति—शिवानी

भैरव का नाम—चण्ड

३२. वृंदावन—उमा
शक्ति—उमा
भैरव का नाम—भूतेश
३३. शुचि—नारायणी
शक्ति—नारायणी
भैरव का नाम—संहार
३४. पंचसागर—वाराही
शक्ति—वराही
भैरव का नाम—महारुद्र
३५. करतोयातट—अपर्णा
शक्ति—अर्पण
भैरव का नाम—वामन
३६. श्रीपर्वत—श्रीसुन्दरी
शक्ति—श्रीसुन्दरी
भैरव का नाम—सुन्दरानन्द
३७. विभाष—कपालिनी
शक्ति—कपालिनी (भीमरूप)
भैरव का नाम शर्वानन्द
३८. प्रभास—चन्द्रभागा
शक्ति—चन्द्रभागा
भैरव का नाम—वक्रतुण्ड
३९. भैरवपर्वत—अवंती
शक्ति—अवंती
भैरव का नाम—लम्बकर्ण
४०. जनस्थान—भ्रामरी
शक्ति—भ्रामरी

भैरव का नाम—विकृताक्ष

४१. सर्वशैल स्थान

शक्ति—राकिनी

भैरव का नाम—वत्सनाभम

४२. गोदावरीतीर

शक्ति—विश्वेश्वरी

भैरव का नाम—दंडपाणि

४३. रत्नावली—कुमारी

शक्ति—कुमारी

भैरव का नाम—शिव

४४. मिथिला—उमा (महादेवी)

शक्ति—उमा

भैरव का नाम—महोदर

४५. नलहाटी—कालिका तारापीठ

शक्ति—कालिका देवी

भैरव का नाम योगेश

४६. कर्णाट—जयदुर्गा

शक्ति—जयदुर्गा

भैरव का नाम—अभिरू

४७. वक्रेश्वर—महिषमर्दिनी

शक्ति—महिषमर्दिनी

भैरव का नाम—वक्रनाथ

४८. यशोर—यशोरेश्वरी

शक्ति—यशोरेश्वरी

भैरव का नाम—चण्ड

४९. अट्टाहास—फुल्लरा

शक्ति—फुल्लरा

भैरव का नाम—विश्वेश

५०. नंदीपुर—नंदिनी

शक्ति—नंदिनी

भैरव का नाम—नंदिकेश्वर

५१. लंका—इंद्राक्षी

शक्ति—इंद्राक्षी

भैरव का नाम—राक्षसेश्वर

५२. मगद—सर्वानन्दकरी

शक्ति—सर्वानन्दकरी

भैरव का नाम—सदाशिव

भैरव तत्त्व की महिमा

भैरव तत्त्व सहायक तत्त्व होता है। जीवन में भैरव तत्त्व बहुत उपयोगी होता है। बिना भैरव तत्त्व के कोई अकेला कुछ कार्य नहीं कर पाता है। भैरव तत्त्व का मतलब है आपके जीवन में कोई मित्र, कोई सहायक, कोई नौकर, कोई शिष्य, कोई सिर्फ आपको मानने वाला, कोई सिर्फ आपकी सुननेवाला, कोई सिर्फ आपका हितचिंतक, उसे ही आप अपना भैरव कह सकते है। जिस गुरु के ऊपर भैरव जी की कृपा होती है, उन्हें समर्पित शिष्य मिलते है। जिस सेनापती या राजा के ऊपर भैरव की कृपा हो उन्हें अपने प्राणों की आहुती देने वाले सैनिक मिलते हैं, जिस नेता के ऊपर भैरव कृपा हो उन्हें समर्पित अनुयायी या कार्यकर्ता मिलते हैं। जिस अधिकारी के ऊपर भैरव कृपा होती है, उनके कर्मचारी सदैव उनकी बात मानेंगे। जिस व्यक्ति के ऊपर भैरव कृपा हो उसके मित्र उसके लिये कुछ भी करने के लिये तैयार होते है। इसी प्रकार भैरव तत्त्व के प्रभाव से युक्त शिष्य अपने गुरु के लिये जान न्यौछावर करता है। भैरव एक ऐसा तत्त्व है जो सिर्फ आपके लिये कुछ भी करने को तैयार हो। जब सती ने दक्ष के यज्ञ में अपने आपको भस्म किया तब शिव जी क्रोधित हुये और उनके क्रोध से जिस वीरभद्र का आविर्भाव हुआ वो भैरव ही थे। वीरभद्र ने सिर्फ शिव जी के लिये विष्णु आदि देवताओं से युद्ध किया था। कालभैरव ने शिव जी के लिये ही ब्रह्मा का पाँचवा मुख काट लिया था। भैरव तत्त्व सैनिकों में भी होता है इसलिये वे देश के लिये

बिना व्यक्तिगत हित देखे बलिदान देते है, भैरव तत्व के कारण ही क्रान्तिकारी अपने देश के लिये हँसते-हँसते फाँसी चढ़ जाते है। भैरव तत्त्व स्वार्थी नहीं होता। भैरव अपने स्वामी के लिये, अपने विचारों के लिये, अपने देश के लिये, राज्य के लिये कुछ भी कर सकता है और किसी भी हद तक जा सकता है। भैरव तत्व आपका संक्षरक है।

जब तक भैरव की आपके ऊपर कृपा है तब तक कोई आपका बाल भी ब़ांका नहीं कर सकता। भैरव तत्त्व आपके शत्रु को ध्वस्त कर देता है। सभी देवियों के पास शिवजी भैरव के रूप में विद्यमान है। यहाँ शिव तत्त्व शक्ती तत्त्व का सहायक बन जाता है। भैरव कृपा के कारण ही छत्रपति शिवाजी महाराज और महाराणा प्रताप को उनके लिये जान देने वाले असंख्य वीर मिल जाते हैं, भैरव कृपा के कारण ही लोकमान्य तिलक, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, गांधी जी की एक पुकार पर लोग देश के लिये बलिदान देने को तैयार थे। अगर आपके जीवन में कोई व्यक्ति ऐसा हो जो आपके लिये कुछ भी करने को तैयार हो तो आप भी समझ लीजिये कि आपके ऊपर भैरव जी की कृपा है। कुत्ते के अन्दर भैरव तत्व माना जाता है, इसलिये कुत्ते मालिक के प्रति वफादार होते है। इसलिये काले कुत्ते को अगर रोटी खिला दें तो बहुत सारी बाधायें टल जाती है। कुत्ते, मालिक के लिये अपनी जान भी देते है। भैरव तत्व भी ऐसा ही होता है। आपके प्रति वफादार, आपके हर आदेश का पालन करने वाला, आपके शत्रु और विरोधी के ऊपर टूट पड़ने वाला, आपका संरक्षक, आपका अत्यन्त करीबी, जो आपकी छाया हो, जो आपके लिये अपना लिये अपना सर कलम करने को तैयार, आपके लिये जान देने के लिये तैयार और आपके शत्रु की जान भी ले सके। अगर आप ऐसे व्यक्ति किसी भी रूप में अपने जीवन में चाहते हैं, अगर आप शत्रु बाधा से मुक्त होना चाहते है, अगर आप किसी व्यक्ति के द्वारा सदैव पीड़ित रहते हैं, लेकिन उसके खिलाफ कुछ भी नहीं कर सकते, अगर आप ऐसी समस्या

में घिर गये है, जहाँ आपको रास्ता नहीं दिखाई दे रहा है या आपको कोई मदद करने के लिये तैयार नहीं है, अगर आप अपने आप को बहुत दुर्बल, असहाय समझते है, अगर आप चाहते हैं कि कोई अदृश्य शक्ति सदैव आपका संरक्षण करे तो फिर आप भैरव साधना करे और निश्चिंत हो जायें। भैरव की कृपा से सारे बिगड़े काम स्वतः बनते जायेंगे। भैरव साधना से कहीं से भी अंजान रूप से आपको मदद मिलेगी। कोई आपकी बात नहीं मान रहा है तो वो आपकी बात मानने लगेगा। आपके शत्रु परास्त होंगे, भैरव साधना से राहु और शनि की बाधा भी दूर होती है।

अगर कोई तन्त्र प्रयोग हुआ है तो भैरव साधना से उससे मुक्ति मिलेगी। अगर कोई आपका पैसा नहीं लौटा रहा है तो वह पैसा दे देगा। कोई आपको त्रस्त कर रहा है तो वो आपके सामने घुटने टेक देगा। अगर किसी की शराब छुड़ानी हो तो भी आप यह भैरव साधना कर सकते है, अगर आपके यहाँ नौकर टिकते नहीं है तो यह भैरव साधना कर सकते है, अगर परिवार में कोई सदस्य आपको बिना वजह परेशान कर रहा है तो भी आप इस साधना से उससे छुटकारा पा सकते है, अगर ऑफिस में कोई आपको तकलीफ दे रहा है तो यह भैरव साधना अवश्य करके देखे। अगर आप एक अच्छे शिष्य बनना चाहते है तो आपको यह भैरव साधना जीवन में करनी ही चाहिए। बिना भैरव तत्व के शिष्य तत्व का महत्त्व नहीं है। राहु की महादशा चल रही है तो भी भैरव साधना करें। जीवन में कोई बाधा हो तो इसे श्रद्धा से करें आपको फल जरूर मिलेगा।

भैरव साधना बहुत प्राचीन काल से प्रचलित है। इसे तन्त्र क्षेत्र में बहुत मान्यता है। इस साधना को सात्विक, राजसिक और तामसिक इन तीनो पद्धति से किया जा सकता है। यदि आप गृहस्थ है तो सात्विक पद्धति से करना चाहिये। काल भैरव जयंती कार्तिक मास की अष्टमी तिथि को होती है। इस रात्रि काल में यह साधना सम्पन्न करें। यह रात्रि सिद्धिप्रद होती है। इसलिये इसे अपनी क्षमतानुसार अवश्य करें। आपको अगर

आत्मविश्वास बढ़ाना है, अपनी मानसिक क्षमता का विकास करना है, अपनी महत्त्वाकांक्षा को पूर्ण करना है तो यह साधना बहुत लाभदायी है।

प्राचीन शास्त्रों में भैरव कुल ५२ की संख्या में माने गये है। हालांकि अष्ट भैरव प्रमुख माने जाते है, ग्रामीण इलाको में इसे भैरू भी कहते हैं। महाराष्ट्र में जो खंडोबा है वे मार्तण्ड भैरव का ही एक रूप है। राजस्थान सहित उत्तर भारत में भैरव जी के कई सारे रूप मिलेंगे। प्राचीन काल में हर गांव की सीमा पर भैरव का मन्दिर होता था। वे गांव के संरक्षक होते थे। नाथ परम्परा में भी भैरव साधना की जाती है। शाबर मन्त्रों में भैरव के कई सारे मन्त्र मिलेंगे। भैरवास्त्र एक बहुत ही सटीक और परिणाम कारक स्तोत्र है। इसके परिणाम तुरन्त दिखाई देते है। साधक इसका प्रयोग करके देखे। भैरव का एक और रूप है काल भैरव, जो साक्षात काल स्वरूप है उसी सन्दर्भ में उज्जैन का काल भैरव मन्दिर प्रख्यात है। यहाँ भैरव जी को शराब चढ़ायी जाती है, जिसका वे नित्य पान करते है। हजारों साल से यहाँ चढ़ाई गई शराब कहाँ जाती है किसी को पता नहीं। यह मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है। काल भैरव काशी के कोतवाल माने जाते है। काशी में भी उनका प्रसिद्ध मन्दिर है। यहाँ भक्तों की सर्व मनोकामना पूर्ण होती है। भैरव जी के कई सारे प्रसिद्ध मन्दिर है। महाराष्ट्र में अमरावती के पास भी परतवाड़ा से आगे पहाड़ पर बहिरम गांव में एक प्रसिद्ध भैरव मन्दिर है। महाराष्ट्र के पश्चिम क्षेत्र में कालभैरव के कई सारे मन्दिर मिलेंगे। दक्षिण भारत में भी भैरव जी के मन्दिर हैं। भक्तों के ऊपर तुरन्त प्रसन्न होने वाले, भक्तों की बिगड़ी बनाने वाले भैरव सर्वत्र पूजे जाते है। भैरव का एक और रूप है आकाश भैरव, जो शरभेश्वर है। इनकी साधना तन्त्र क्षेत्र में उच्च कोटि की मानी जाती है। नेपाल में आकाश भैरव का प्रसिद्ध मन्दिर है। भैरव तत्व की महिमा अनन्त है। इनकी साधना एक दिव्य साधना है। साधकों को इसे अवश्य करना चाहिए।

भगवान शंकर के पूर्ण स्वरूप काल भैरव

एक बार सुमेरू पर्वत पर बैठे हुए ब्रह्माजी के पास जाकर देवताओं ने उनसे अविनाशी तत्व का वर्णन करने का अनुरोध किया। शिवजी की माया से मोहित ब्रह्माजी उस तत्व को न जानते हुए भी इस प्रकार कहने लगे—मैं ही इस संसार को उत्पन्न करने वाला स्वयंभू, अजन्मा, एक मात्र ईश्वर, अनादी भक्ति, ब्रह्म घोर निरंजन आत्मा हूँ।

मैं ही प्रवृत्ति और निवृत्ति का मूलाधार, सर्वलीन पूर्ण ब्रह्म हूँ। ब्रह्मा जी के ऐसा कहने पर मुनि मंडली में विद्यमान विष्णु जी ने उन्हें समझाते हुए कहा कि मेरी आज्ञा से तो आप सृष्टि के रचियता बने हो, मेरा अनादर करके आप अपने प्रभुत्व की बात कैसे कर रहे हो?

इस प्रकार ब्रह्मा और विष्णु अपना-अपना प्रभुत्व स्थापित करने लगे और अपने पक्ष के समर्थन में शास्त्र वाक्य उद्धृत करने लगे, अंततः वेदों से पूछने का निर्णय हुआ तो साक्षात् स्वरूप धारण करके आये चारों वेदों ने क्रमशः अपना मत इस प्रकार प्रकट किया।

ऋग्वेद ने कहा—जिसके भीतर समस्त भूत निहित हैं तथा जिससे सब कुछ प्रवृत्त होता है और जिसे परमात्मा कहा जाता है, वह एक रूद्र रूप ही है।

यजुर्वेद ने कहा—जिसके द्वारा हम वेद भी प्रमाणित होते हैं तथा जिसका ईश्वर के सम्पूर्ण यज्ञों तथा योगों से भजन किया जाता है, सबका

दृष्टा वह एक शिव ही है।

सामवेद ने कहा—जो समस्त संसारी जनों को भरमाता है, जिसे योगी जन ढूँढते हैं और जिसकी प्रभा से सारा संसार प्रकाशित होता है, वे एक मात्र त्र्यम्बक शिवजी ही हैं।

अथर्ववेद ने कहा—जिसकी भक्ति से साक्षात्कार होता है और जो सुख-दु:ख अतीत, अनादी, ब्रह्म हैं, वे केवल एक शंकर जी ही हैं।

विष्णु ने वेदों के इस कथन को प्रलाप बताते हुए नित्य शिव से रमण करने वाले, दिगम्बर, पीतवर्ण, धूलि धूसरित, प्रेम नाथ, नि:संग, शिवजी को परब्रह्म मानने से इनकार कर दिया। ब्रह्मा-विष्णु विवाद को सुनकर ओंकार ने शिवजी की ज्योति को नित्य और सनातन, परब्रह्म बताया परन्तु फिर भी शिवमाया से मोहित ब्रह्मा और विष्णु की बुद्धि नहीं बदली।

उस समय उन दोनों के मध्य आदि अंत से रहित एक ऐसी विशाल ज्योति प्रकट हुई कि उससे ब्रह्मा का पंचम सिर जलने लगा। इतने में त्रिशूलधारी नील-लोहित शिव वहाँ प्रकट हुए तो अज्ञानतावश ब्रह्मा उन्हें अपना पुत्र समझकर अपनी शरण में आने को कहने लगे।

ब्रह्मा की सम्पूर्ण बातें सुनकर शिवजी अत्यन्त क्रुद्ध हुए और उन्होंने तत्काल भैरव को प्रकट कर उससे ब्रह्मा पर शासन करने का आदेश दिया। आज्ञा का पालन करते हुए भैरव ने अपनी बायीं उंगली के नखाग्र से ब्रह्माजी का पंचम सिर काट डाला, तब भयभीत ब्रह्मा शत रूद्री का पाठ करते हुए शिवजी के शरण हुए। इसके बाद ब्रह्मा और विष्णु दोनों को सत्य की प्रतीति हो गयी और वे दोनों शिवजी की महिमा का गान करने लगे। यह देखकर शिवजी शान्त हुए और फिर उन दोनों को अभयदान दिया।

इसके उपरान्त शिवजी ने भैरव को भीषण स्वरूप होने के कारण तथा काल को भी भयभीत करने वाला होने के कारण काल भैरव तथा

भक्तों के पापों को तत्काल नष्ट करने वाला होने के कारण 'पाप भक्षक' नाम देकर उसे काशीपुरी का अधिपति बना दिया, कहा कि भैरव तुम इन ब्रह्मा-विष्णु को मानते हुए ब्रह्मा के कपाल को धारण करके इसी के आश्रय से भिक्षा वृत्ति करते हुए वाराणसी में चले जाओ वहाँ उस नगरी के शुभ प्रभाव से तुम ब्रह्म हत्या के पाप से मुक्त हो जाओगे।

शिवजी की आज्ञा से भैरव जी हाथ में कपाल लेकर ज्योंही काशी की ओर चले, ब्रह्म हत्या उनके पीछे-पीछे हो चली। विष्णु जी ने ब्रह्म हत्या से भैरव जी के पीछा करने की माया (कारण) पूछनी चाही तो ब्रह्म हत्या ने बताया कि वह तो अपने आप को पवित्र और मुक्त करने के लिए भैरव का अनुसरण कर रही है। भैरव जी ज्यों ही काशी पहुँचे त्यों ही उनके हाथ से चिमटा और कपाल छूटकर पृथ्वी पर गिर गया और तब से उस स्थान का नाम कपालमोचन तीर्थ पड़ गया। इस तीर्थ में जाकर सविधि पिंडदान और देव-पितृ-तर्पण करने से मनुष्य ब्रह्म हत्या के पाप से निवृत्त हो जाता है।

महाभैरव का रूप

भैरव (शाब्दिक अर्थ—भयानक) हिन्दुओं के एक देवता हैं जो शिव के रूप हैं। इनकी पूजा भारत और नेपाल में होती है। हिन्दू और जैन दोनों भैरव की पूजा करते हैं। भैरवों की संख्या ६४ है। ये ६४ भैरव भी ८ भागों में विभक्त हैं।

कोलतार से भी गहरा रंग, विशाल प्रलम्ब, स्थूल शरीर, अंगारकाय त्रिनेत्र, काले डरावने चोगेनुमा वस्त्र, रूद्राक्ष की कण्ठमाला, हाथों में लोहे का भयानक दण्ड और काले कुत्ते की सवारी यह है महाभैरव अर्थात् मृत्यु भय के भारतीय देवता का बाहरी स्वरूप।

उपासना की दृष्टि से भैरव तमस देवता हैं। उनको बलि दी जाती है और जहाँ कहीं यह प्रथा समाप्त हो गयी है, वहाँ भी एक साथ बड़ी संख्या में नारियल फोड़ कर इस कृत्य को एक बलि के प्रतीक के रूप में

सम्पन्न किया जाता है। यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि भैरव उग्र कापालिक सम्प्रदाय के देवता हैं और तन्त्रशास्त्र में उनकी आराधना को ही प्राधान्य प्राप्त है। तन्त्र साधक का मुख्य लक्ष्य भैरव भाव से स्वयं को आत्मसात करना होता है।

भय सेनापति कालभैरव की पूजा का प्रसार

कालभैरव की पूजा प्रायः पूरे देश में होती है अलग-अलग नामों से वह जाने-पहचाने जाते हैं। महाराष्ट्र में खण्डोबा उन्हीं का एक रूप है और खण्डोबा की पूजा-अर्चना वहाँ ग्राम-ग्राम में की जाती है। दक्षिण भारत में भैरव का नाम शास्ता है। वैसे हर जगह एक भयदायी और उग्र देवता के रूप में ही उनको मान्यता मिली हुई है और उनकी अनेक प्रकार की मनौतियां भी स्थान-स्थान पर प्रचलित हैं। भूत, प्रेत, पिशाच, पूतना, कोटरा और रेवती आदि की गणना भगवान शिव के अन्यतम गणों में की जाती है। दूसरे शब्दों में कहें तो विविध रोगों और आपत्तियों-विपत्तियों के वह अधिदेवता हैं। शिव प्रलय के देवता भी हैं, अतः विपत्ति, रोग एवं मृत्यु के समस्त दूत और देवता उनके अपने सैनिक हैं। इन सब गणों के अधिपति या सेनानायक हैं महाभैरव। अन्य शब्दों में कहें तो भय वह सेनापति है, जो बीमारी, विपत्ति और विनाश के पार्श्व में उनके संचालक के रूप में सर्वत्र ही उपस्थित दिखायी देता है।

भैरव साधना की शाखा और अष्ट भैरव

कालान्तर में भैरव उपासना की दो शाखाएँ—बटुक भैरव तथा काल भैरव के रूप में प्रसिद्ध हुई। बटुक भैरव अपने भक्तों को अभय देने वाले सौम्य स्वरूप के लिए विख्यात हैं तो वहीं काल भैरव आपराधिक प्रवृत्तियों पर नियन्त्रण करने वाले प्रचण्ड दण्डनायक के रूप में प्रसिद्ध हैं।

तन्त्रशास्त्र में अष्ट भैरव का उल्लेख इस प्रकार किया गया है—

१. असितांग भैरव
२. रुद्र भैरव
३. चन्द्र भैरव
४. क्रोध भैरव
५. उन्मत्त भैरव
६. कपाली भैरव
७. भीषण भैरव तथा
८. संहार भैरव।

कालिका पुराण में भैरव को नंदी, भृंगी, महाकाल, वेताल की तरह शिवजी का एक गण बताया गया है, जिसका वाहन श्वान है। ब्रह्मवैवर्तपुराण में भी महाभैरव, संहार भैरव, असितांग भैरव, रूद्र भैरव, कालभैरव, क्रोध भैरव, ताम्रचूड़ भैरव तथा चंद्रचूड़ भैरव नामक आठ पूज्य भैरवों का संकेत किया है। इनकी पूजा के मध्य में नवशक्तियों की पूजा करने का विधान बताया गया है। शिवमहापुराण में भैरव को परमात्मा शंकर का ही पूर्णरूप बताते हुए लिखा गया है—

भैरवः पूर्णरूपोहि शंकरस्य परात्मनः।
मूढास्तेवै न जानन्ति मोहिताः शिवमायया॥

भैरव साधना व ध्यान

वास्तव में ध्यान के बिना साधक मूक समान है, भैरव साधना में भी ध्यान की अपनी विशिष्ट महत्ता है। किसी भी देवता के ध्यान में केवल निर्विकल्प भाव की उपासना को ही ध्यान नहीं कहा जा सकता। ध्यान का अर्थ है—उस देवी-देवता का सम्पूर्ण आकार एक क्षण में मानस-पटल पर प्रतिबिम्बित होना। श्री बटुक भैरव जी के ध्यान हेतु इनके सात्विक राजस व तामस रूपों का वर्णन अनेक शास्त्रों में मिलता है।

जहाँ सात्विक ध्यान—अपमृत्यु का निवारक, आयु-आरोग्य व मोक्षफल की प्राप्ति कराता है, वहीं धर्म, अर्थ व काम की सिद्धि के लिए

राजस ध्यान की उपादेयता है, इसी प्रकार कृत्या, भूत, ग्रहादि प्रभाव के द्वारा शत्रु का शमन करने वाला तामस ध्यान कहा गया है। ग्रन्थों में लिखा है कि गृहस्थ को सदा भैरवजी के सात्विक ध्यान को ही प्राथमिकता देनी चाहिए।

भारत में भैरव के प्रसिद्ध मन्दिर

भारत में भैरव के अनेक प्रसिद्ध मन्दिर हैं, जिनमें काशी का काल भैरव मन्दिर सर्वप्रमुख माना जाता है। काशी विश्वनाथ मन्दिर से भैरव मन्दिर कोई डेढ़-दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। दूसरा प्रमुख मन्दिर नई दिल्ली के विनय मार्ग पर नेहरू पार्क में बटुक भैरव का पाण्डवकालीन मन्दिर है। तीसरा उज्जैन के काल भैरव की प्रसिद्धि कारण भी ऐतिहासिक और तांत्रिक मन्दिर है। नैनीताल के समीप घोड़ाखाल का बटुक भैरव मन्दिर भी अत्यन्त प्रसिद्ध है। यहाँ गोलू देवता के नाम से भैरव जी की प्रसिद्धि है। इसके अलावा शक्तिपीठों और उपपीठों के पास स्थित भैरव मन्दिरों का विशेष महत्त्व माना गया है। जयगढ़ के प्रसिद्ध किले में काल-भैरव का बड़ा प्राचीन मन्दिर है, जिसमें भूतपूर्व महाराजा जयपुर के ट्रस्ट की और से दैनिक पूजा-अर्चना के लिए पारम्परिक पुजारी नियुक्त हैं।

जयपुर जिले के चाकसू कस्बे में भी एक प्रसिद्ध बटुक भैरव मन्दिर है, जो लगभग आठवीं शताब्दी का बना हुआ है, मान्यता है कि जब तक कस्बे के लोग बारिश ऋतु से पहले बटुक भैरव की पूजना नहीं करते तब तक कस्बे में बारिश नहीं आती। मध्य प्रदेश के सिवनी जिले के ग्राम अदेगाव में भी काल भैरव का मन्दिर है, जो किले के अन्दर है, जिसे गढ़ी ऊपर के नाम से जाना जाता है।

कहते हैं औरंगजेब के शासन काल में जब काशी के विश्व-विख्यात विश्वनाथ मन्दिर का विध्वंस किया गया, तब भी कालभैरव का मन्दिर पूरी तरह अछूता बना रहा था। जनश्रुतियों के अनुसार कालभैरव

का मन्दिर तोड़ने के लिये जब औरंगजेब के सैनिक वहाँ पहुँचे तो अचानक पागल कुत्तों का एक पूरा समूह कहीं से निकल पड़ा था। उन कुत्तों ने जिन सैनिकों को काटा वे तुरन्त पागल हो गये और फिर स्वयं अपने ही साथियों को उन्होंने काटना शुरू कर दिया। बादशाह को भी अपनी जान बचा कर भागने के लिये विवश हो जाना पड़ा। उसने अपने अंगरक्षकों द्वारा अपने ही सैनिक सिर्फ इसलिये मरवा दिये कि पागल होते सैनिकों का सिलसिला कहीं खुद उसके पास तक न पहुँच जाए।

तांत्रिकों के प्रसिद्ध भैरव मन्दिर

भगवान भैरव की महत्ता असंदिग्ध है। भैरव आपत्तिविनाशक एवं मनोकामना पूर्ति के देवता हैं। भूत-प्रेत बाधा से मुक्ति में भी उनकी उपासना फलदायी होती है। भैरव की लोकप्रियता का अनुमान इसी से लग सकता है कि प्राय: हर गांव के पूर्व में स्थित देवी-मन्दिर में स्थापित सात पीढ़ियों के पास में आठवीं भैरव-पिंडी भी अवश्य होती है। नगरों के अधिकांश देवी-मन्दिरों में भी भैरव विराजमान रहते हैं। देवी प्रसन्न होने पर भैरव को आदेश देकर ही भक्तों की कार्यसिद्धि करा देती हैं।

भैरव पूर्ण रूप से परात्पर शंकर ही हैं। भैरव के कई रूप प्रसिद्ध हैं। उनमें विशेषत: दो अत्यंत विख्यात हैं—काल भैरव एवं बटुकभैरव या आनन्द भैरव। काल के सदृश भीषण होने के कारण इन्हें कालभैरव नाम मिला। ये कालों के काल हैं। हर प्रकार के संकट से रक्षा करने में यह सक्षम हैं। काशी का **काल भैरव मन्दिर** सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। काशी विश्वनाथ मन्दिर से कुछ दूरी पर स्थित इस मन्दिर का स्थापत्य ही इसकी प्राचीनता को प्रमाणित करता है। गर्भ-गृह के अन्दर काल भैरव की मूर्ति स्थापित है, जिसे सदा वस्त्र से आवेष्टित रखा जाता है। मूर्ति के मूल रूप के दर्शन किसी-किसी को ही होते हैं। गर्भ-गृह से पहले बरामदे के दाहिनी ओर दोनों तरफ कुछ तांत्रिक अपने-अपने आसन पर विराजमान रहते हैं। दर्शनार्थियों के हाथों में यह लोग उनके रक्षार्थ काले डोरे बांधते

हैं और उन्हें विशेष झाड़ू से आपाद मस्तक झाड़ते हैं। काशी के काल भैरव की महत्ता इतनी अधिक है कि जो काशी विश्वनाथ के दर्शनोपरान्त कालभैरव के दर्शन नहीं करता उसको भगवान विश्वनाथ के दर्शन का सुफल नहीं मिलता। यह सर्वकामना पूरक सर्व आपदा नाशक है। रविवार भैरव का दिन है। इस दिन यहाँ सामान्य और विशिष्ट जनों की अपार भीड़ होती है। मन्दिर के सामने की लम्बी सड़क पर कारों की लम्बी पंक्तियाँ लग जाती हैं। संध्या से शाम अपितु देर रात तक पुजारी इन दर्शनार्थियों से घिरे रहते हैं। ऐसी भीड़ देश के किसी भैरव मन्दिर में नहीं लगती। यह प्राचीन मूर्ति इस प्रकार ऊर्जावान है कि भक्तों की यहाँ हर सम्भव इच्छा पूर्ण होती है। इस भीड़ का कारण भी यही है।

यह मन्दिर काशी खण्डोक्त पुरातन मन्दिरों में से एक है। इस मन्दिर की पौराणिक मान्यता यह है कि बाबा विश्वनाथ ने काल भैरव जी को काशी का कोतवाल (क्षेत्रपाल) नियुक्त किया था। काल भैरव जी को काशीवासियों को दंड देने का अधिकार है। आरती के समय नगाड़े, घंटा, डमरू की ध्वनि बहुत ही मनमोहक लगती है। यहाँ बाबा को प्रसाद में बड़ा, शराब, पान चढ़ाने का विशेष महत्त्व है। यहाँ विशेष रूप से भूत-पिशाचादि के उपचार हेतु लोग आते हैं तथा बाबा की कृपा से ठीक हो जाते हैं। यहाँ बालकों को काले धागा (गण्डा) दिया जाता है, जिससे बच्चे भय-मुक्त हो जाते हैं। काशी में ऐसी मान्यता है कि किसी भी प्राणी को मृत्यु से पूर्व यम यातना के स्थान पर बाबा काल भैरव के सोटे की यातना का सामना करना होता है, परन्तु मान्यता यह भी है कि केदार खण्ड काशी वासी को भैरव यातना भी नहीं भोगनी पड़ती है।

नैनीताल के समीप घोड़ाखाड का **बटुक भैरव मन्दिर** भी अत्यन्त प्रसिद्ध है। यहाँ गोलू देवता के नाम से भैरव की पूजा की जाती है। पहाड़ी पर स्थित एक विस्तृत प्रांगण में एक मन्दिर में स्थापित इस सफेद गोल मूर्ति की पूजा के लिए नित्य अनेक भक्त आते हैं। यहाँ महाकाली

का भी मन्दिर है। भक्तों की मनोकामनाओं के साक्षी, मन्दिर की लम्बी सीढ़ियों एवं मन्दिर प्रांगण में यत्र-तत्र लटके पीतल के छोटे-बड़े घंटे हैं, जिनकी गणना कठिन है। मंदिर के नीचे और सीढ़ियों की बगल में पूजा-पाठ की सामग्रियाँ और घंटों की अनेक दुकानें हैं। बटुक भैरव की ताम्बे की अश्वारोही, छोटी-बड़ी मूर्तियाँ भी बिकती हैं, जिनकी पूजा भक्त अपने घरों में करते हैं। उज्जैन के **प्रसिद्ध भैरव मन्दिर** की चर्चा भी अवश्यक है। यह मनोकांक्षापूरक हैं और दूर-दूर से लोग इनके पूजन को आते हैं। इनकी एक विशेषता उल्लेखनीय है। मनोकामना पूर्ति के पश्चात् भक्त इन्हें शराब की बोतल चढ़ाते हैं। पुजारी बोतल खोल कर उनके मुख से लगाता है और तुरंत ही भक्त के समीप ही मूर्ति बोतल को खाली कर देती है। यह चमत्कार है। हरिद्वार में भगवती मायादेवी के निकट आनन्द भैरव का प्रसिद्ध मन्दिर है। यहाँ सबकी मनोकामना पूर्ण होती है। भैरव जयंती पर यहाँ बहुत बड़ा उत्सव होता है।

श्री किलकारी भैरव मन्दिर—महाभारत के समय पांडव जब यज्ञ करते थे तब सभी दैत्य यज्ञ को भंग करने आ जाते और पांडवों को बेहद परेशान करते थे। यह देख भीम ने अपने भाईयों से वादा किया कि वह भैरव जी को ले के आयेंगे जिससे यह सभी दैत्य यहाँ से भाग खड़े होंगे। भीम वादा करके जब भैरव जी के पास पहुँचे तभी भैरव जी ने भीम के आगे एक शर्त रखी कि मैं तभी तुम्हारे साथ चलूँगा जब तुम मुझे अपनी पीठ पर बिठा कर ले जाओगे और रास्ते में यदि तुम कहीं थककर रूक गए तो वह उससे आगे नहीं जायेंगे। भीम ने यह शर्त स्वीकार की और भैरव नाथ जी को अपनी पीठ पर बिठाकर निकल पड़े, परन्तु दिल्ली के पुराने किले तक पहुँच कर भीम थक गए और रुक गए और शर्त के मुताबिक भैरव जी बोले कि वह इससे आगे अब नहीं जायेंगे। भीम ने भैरव जी को बोला कि वह पाण्डवों को वादा करके आये हैं कि मैं आपको लेकर आऊँगा और आप यदि सभी दैत्यों को वहाँ से दूर

करेंगे, परन्तु आप यदि मेरे साथ आगे नहीं गए तो मैं असफल हो जाऊँगा। यह सुनकर भैरव जी बोले मैं अब यहीं से तुम्हारा काम कर दूँगा और उन्होंने जोर से किलकारी मारी, जिसे सुनकर अधिकतर दैत्यों ने वहीं प्राण त्याग दिये और बाकी वहाँ से भाग खड़े हुए।

उसी दिन से इस जगह का नाम 'श्री किलकारी बाबा भैरों नाथ जी पांडव कालीन मन्दिर' पड़ा और महाबली भीम ने ही वहाँ भैरों नाथ जी का विशाल मन्दिर का निर्माण करवाया। तांत्रिकों के बीच अत्यन्त प्रसिद्ध है यह श्री किलकारी भैरव मन्दिर।

तन्त्र विद्या में भैरों नाथ जी का विशेष स्थान है अतः यहाँ साल भर तांत्रिकों का ताँता लगा रहता है, जिनमें से कुछ भैरव नाथ जी की सिद्धि प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं व कुछ अपने यजमानों की पूजा करवाते हैं। यहाँ हर शनिवार व रविवार को अनेक तांत्रिकों को मन्दिर परिसर में देखा जा सकता है।

श्री किलकारी भैरव का भोग—बाबा भैरों नाथ जी को इस मन्दिर में शराब का भोग लगाया जाता है। भक्त बेहद श्रद्धा से शराब लेकर आते हैं और बाबा को भोग लगाते है। यहाँ एक अखण्ड ज्वाला भी जलती है, जिसमें तेल या घी नहीं बल्कि शराब डालकर उसे प्रज्वलित रखा जाता है।

उपासना से प्रसन्न होते हैं काल भैरव

भारतीय संस्कृति प्रारम्भ से ही प्रतीकवादी रही है और यहाँ की परम्परा में प्रत्येक पदार्थ तथा भाव के प्रतीक उपलब्ध हैं। यह प्रतीक उभयात्मक हैं—अर्थात् स्थूल भी हैं और सूक्ष्म भी। सूक्ष्म भावनात्मक प्रतीक को ही कहा जाता है—देवता। चूँकि भय भी एक भाव है, अतः उसका भी प्रतीक है, उसका भी एक देवता है और उसी भय का हमारा देवता हैं महाभैरव।

कहा जाता है काल भैरव शिव का रूप हैं और इनकी पूजा करने से

भय नहीं सताता है। काल भैरव सदैव रक्षा करते हैं। अगर आप शनि, राहु जैसे पापी ग्रहों की वजह से परेशान हैं, गरीबी आपका पीछा नहीं छोड़ रही है। किसी तरह की शारीरिक, आर्थिक और मानसिक समस्याओं से परेशान हैं तो आपको काल भैरव की प्रार्थना करनी चाहिए। ऐसा माना जाता है कि काल भैरव से काल भी डरता है।

भगवान शिव का रौद्र रूप काल भैरव हैं। शास्त्रों के अनुसार मार्गशीर्ष मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को काल भैरव प्रकट हुए थे। इसलिए इसे काल भैरव अष्टमी भी कहा जाता है। शास्त्रों के अनुसार जो व्यक्ति काल भैरव की पूजा-अर्चना करता है उसके पिछले जन्म और इस जन्म में किए गए पाप नष्ट हो जाते हैं। मृत्यु के बाद काल भैरव के भक्तों को भगवान शिव के पास जगह मिलती है। ऐसा भी माना जाता है कि काल भैरव के भक्तों को शिवलोक में विशेष स्थान प्राप्त होता है। जिस व्यक्ति की मृत्यु काशी में होती है उसे यमदूत अपने साथ नहीं ले जाते। क्योंकि वहाँ पर यम का शासन नहीं चलता है।

काल भैरव की पूजा करने वाले व्यक्ति पर कोई भूत, पिशाच हावी नहीं हो सकता। काल अष्टमी के दिन काल भैरव की पूजा करने से वह विशेष प्रसन्न होते हैं।

काल भैरव की पूजा

१. काल भैरव अष्टमी के दिन रात के बारह बजे काल भैरव के मन्दिर में जाकर सरसों के तेल का दीपक जलाएँ और उनको नीले रंग के फूल चढ़ाएँ।

२. अगर आप अपनी किसी खास मनोकामना को पूरा करना चाहते है तो इसके लिए काल भैरवाष्टमी के दिन किसी पुराने काल भैरव के मन्दिर में जाकर वहाँ की साफ सफाई करें और काल भैरव को सिन्दूर और तेल का चोला चढ़ाएँ।

३. शनिवार के दिन रात में बारह बजे काल भैरव के मन्दिर में

जाकर उन्हें दही और गुड़ का भोग लगायें।

४. काल भैरवाष्टमी के दिन अपने घर भैरव यन्त्र की स्थापना करें और नियमित रूप से इसकी पूजा करें।

गुप्त नवरात्रि के दिन आप काल भैरव की साधना करेंगे तो वह अधिक फलदायी होगी। कई बार ऐसा भी होता है कि यदि कोई साधक भगवान भैरव की साधना में अधिक लीन हो जाता है तो काल भैरव उस व्यक्ति के शरीर में भी प्रवेश कर जाते हैं। भगवान भैरव को अपने शरीर में बुलाने के लिए '**आयाहि भगवन रूद्रो भैरवः भैरवीपते। प्रसन्नोभव देवेश नमस्तुभ्यं कृपानिधि।**' मन्त्र का जाप करें। इसके बाद संकल्प किया जाता है कि मैं काल भैरव को अपने शरीर में लाने का प्रयोग कर रहा हूँ। काल भैरव की आराधना करने के लिए यदि ये अग्रलिखित मन्त्र जपे जाते हैं तो मनोकामना शीघ्र पूरी होती है।

१. ॐ कालभैरवाय नमः।
२. ॐ भयहरणं च भैरवः।
३. ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरुकुरु बटुकाय ह्रीं।
४. ॐ हं षं नं गं कं सं खं महाकाल भैरवाय नमः।
५. ॐ भ्रां कालभैरवाय फट्।

काल भैरव की प्रार्थना करने के लिये उनके मन्दिर में जाकर मदिरा, उड़द, दूध, दही, फूल आदि को चढ़ाकर भी बाबा भैरव को खुश किया जा सकता है।

तन्त्राचार्यों का मानना है कि वेदों में जिस परम पुरुष का चित्रण रूद्र स्वरूप में हुआ, तन्त्र शास्त्र के ग्रन्थों में उसी स्वरूप का वर्णन 'भैरव' के नाम से किया गया, जिसके भय से सूर्य एवं अग्नि तपते हैं। इन्द्र, वायु और मृत्यु आदि देवता अपने-अपने कामों में तत्पर हैं, वास्तव में वे परम शक्तिमान 'भैरव' ही हैं।

प्राच्य तन्त्र शास्त्रों में भैरव

तांत्रिक पद्धति में भैरव शब्द की निरूक्ति उनका विराट रूप स्थापित करती हैं। वामकेश्वर तन्त्र की योगिनीहृदयदीपिका टीका में अमृतानन्द नाथ कहते हैं—**'विश्वस्य भरणाद् रमणाद् वमनात् सृष्टि-स्थिति-संहारकारी परशिवो भैरवः।'**

भ—से विश्व का भरण, **र**—से रमण, **व**—से वमन अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और संहार करने वाले शिव ही भैरव हैं। तन्त्रालोक की विवेक-टीका में भगवान शंकर के भैरव रूप को ही सृष्टि का संचालक बताया गया है।

श्री तत्वनिधि नामक तन्त्र-ग्रन्थ में भैरव शब्द के तीन अक्षरों के ध्यान से उनके त्रिगुणात्मक स्वरूप का सुस्पष्ट परिचय मिलता है, क्योंकि ये तीनों शक्तियाँ उनमें समाविष्ट हैं—

'भ' अक्षरवाली जो भैरव मूर्ति है वह श्यामला है, भद्रासन पर विराजमान है तथा उदय कालिक सूर्य के समान सिन्दूरवर्णी उसकी कान्ति शोभायमान है। वह एक मुखी विग्रह अपने चारों हाथों में धनुष, बाण, वर तथा अभय धारण किए हुए हैं।

'र' अक्षरवाली भैरव मूर्ति श्याम वर्ण हैं। उनके वस्त्र लाल हैं। सिंह पर आरुढ़ वह पंचमुखी देवी अपने आठ हाथों में खड्ग, खेट (मूसल), अंकुश, गदा, पाश, शूल, वर तथा अभय धारण किए हुए हैं।

'व' अक्षरवाली भैरवी शक्ति के आभूषण और वस्त्र आकर्षक हैं। वह देवी समस्त लोकों का एकमात्र आश्रय है। विकसित कमल पुष्प उनका आसन है। वे चारों हाथों में क्रमशः दो कमल, वर एवं अभय धारण करती हैं।

भैरव स्वरूप दर्शन

भैरव को भगवान शंकर का ही अवतार माना गया है, शिव महापुराण में बताया गया है—

'भैरवः पूर्णरूपो हि शंकरः परात्मनः।
मूढ़ास्ते वै न जानन्ति मोहिता शिवमायया।''

'तन्त्रालोक' में भैरव शब्द की उत्पत्ति भैभीमादिभिः अवतीति भैरव अर्थात् भीमादि भीषण साधनों से रक्षा करने वाला ही 'भैरव' है, 'रुद्रयामल तन्त्र' में दस महाविद्याओं के साथ भैरव के दस रूपों का वर्णन है और कहा गया है कि कोई भी महाविद्या तब तक सिद्ध नहीं होती जब तक उनसे सम्बन्धित भैरव की सिद्धि न कर ली जाये।

भगवान भैरव की साधना वशीकरण, उच्चाटन, सम्मोहन, स्तम्भन, आकर्षण और मारण जैसी तान्त्रिक क्रियाओं के दुष्प्रभाव को नष्ट करने के लिए की जाती है। भैरव साधना से सभी प्रकार की तान्त्रिक क्रियाओं के अनिष्ट प्रभाव नष्ट हो जाते हैं। आपकी प्रगति कभी-कभी दूसरों को अच्छी नहीं लगती और आपकी प्रगति को प्रभावित करने के लिए तान्त्रिक क्रियाओं का सहारा लेकर शत्रु आपको प्रभावित करते हैं।

तान्त्रिक क्रियाओं के प्रभाव से व्यवसाय, नौकरी में आशानुरूप प्रगति नहीं होती। ऋण के रूप में दिया हुआ रूपया नहीं लौटता, रोग या विघ्न से आप पीड़ित रहते हैं अथवा बेकार के मुकद्मेबाजी में धन और समय की बर्बादी हो जाती है। इन सभी प्रकार के व्यवधानों के लिए भैरव

साधना फलदायी मानी गई।

भगवान भैरव का शाबर तन्त्र प्रयोग कोई सामान्य टोटका नहीं बल्कि शुद्ध तन्त्र प्रयोग है, जिसका प्रभाव तत्काल रूप से देखा जा सकता है।

'रुद्रयामल तन्त्र' के अनुसारी दस महाविद्याएँ और उनसे सम्बन्धित भैरव के नाम इस प्रकार हैं—

१. कालिका—महाकाल भैरव
२. त्रिपुर सुन्दरी—ललितेश्वर भैरव
३. तारा—अक्षभ्य भैरव
४. छिन्नमस्ता—विकराल भैरव
५. भुवनेश्वरी—महादेव भैरव
६. धूमावती—काल भैरव
७. कमला—नारायण भैरव
८. भैरवी—बटुक भैरव
९. मातंगी—मतंग भैरव
१०. बगलामुखी—मृत्युंजय भैरव

भैरव से सम्बन्धित कई साधनाएँ प्राचीन तान्त्रिक ग्रन्थों में वर्णित हैं, जैन ग्रन्थों में भी भैरव के विशिष्ट प्रयोग दिये हैं। प्राचीनकाल से अब तक लगभग सभी, ग्रन्थों में एक स्वर से यह स्वीकार किया गया है कि जब तक साधक भैरव साधना सम्पन्न नहीं कर लेता, तब तक उसे अन्य साधनाओं में प्रवेश करने का अधिकार ही नहीं प्राप्त होता। जिस प्रकार 'शिव पुराण' में भैरव को शिव का ही अवतार माना है उसी तरह 'विष्णु पुराण' में बताया गया है कि विष्णु के अंश ही भैरव के रूप में विश्व विख्यात हैं, दुर्गा सप्तशती के पाठ के प्रारम्भ और अन्त में भी भैरव की उपासना आवश्यक और महत्त्वपूर्ण बताई गई है।

भैरव साधना रहस्य

भैरव साधना के बारे में लोगों के मन में काफी भ्रम और भय है, परन्तु यह साधना अत्यन्त ही सरल, सौम्य और सुखदायक है, इस प्रकार की साधना को कोई भी साधक कर सकता है। भैरव साधना के सम्बन्ध में कुछ मूलभूत तथ्य साधक को जान लेने चाहिए—

१. भैरव साधना सकाम्य साधना है, अतः शुभ कामना के साथ ही इस प्रकार की साधना की जानी चाहिए।

२. भैरव साधना मुख्यतः रात्रि में ही सम्पन्न की जाती है।

३. कुछ विशिष्ट वाममार्गी तांत्रिक प्रयोग में ही भैरव को सुरा का नैवेद्य अर्पित किया जाता है।

४. भैरव की पूजा में दैनिक नैवेद्य साधना के अनुरूप बदलता रहता है। मुख्य रूप से भैरव को रविवार को दूध की खीर, सोमवार को मोदक (लड्डू), मंगलवार को घी-गुड़ से बनी हुई लापसी, बुधवार को दही-चिवड़ा, गुरुवार को बेसन के लड्डू, शुक्रवार को भुने हुए चने तथा शनिवार को उड़द के बने हुए पकौड़े का नैवेद्य लगाते हैं, इसके अतिरिक्त जलेबी, सेव, तले हुए पापड़ आदि का नैवेद्य भी लगाते हैं।

देवताओं ने भैरव की उपासना करते हुए बताया है कि काल की भाँति रौद्र होने के कारण ही आप 'कालराज' हैं, भीषण होने के कारण 'भैरव' हैं, मृत्यु भी आप से भयभीत रहती है, अतः आप काल भैरव हैं,

दुष्टात्माओं का मर्दन करने में आप सक्षम हैं, इसलिए आपको 'आमर्दक' कहा गया है, आप सर्व समर्थ हैं और शीघ्र ही प्रसन्न होने वाले हैं।

साधना के लिए आवश्यकता

ऊपर लिखे गये नियमों के अलावा कुछ अन्य नियमों की जानकारी भी साधक के लिए आवश्यक है, जिनका पालन किये बिना भैरव साधना पूरी नहीं हो पाती।

१. भैरव की पूजा में अर्पित नैवेद्य (प्रसाद) को उसी स्थान पर पूजा के कुछ समय बाद ग्रहण करना चाहिए, इसे पूजा स्थान से बाहर नहीं ले जाया जा सकता, सम्पूर्ण प्रसाद उसी समय पूर्ण कर देना चाहिए।
२. भैरव साधना में केवल तेल के दीपक का ही प्रयोग किया जाता है, इसके अतिरिक्त गुग्गुल, धूप-अगरबत्ती जलाई जाती है।
३. इस महत्त्वपूर्ण साधना हेतु 'चित्र' आवश्यक है, भैरव चित्र को स्थापित कर साधना क्रम प्रारम्भ करना चाहिए।
४. भैरव साधना में केवल 'काली हकीक माला' का ही प्रयोग किया जाता है।

पूजन के पश्चात्

पूजन की तैयारी पूरी होने पर भैरव का आवाहन बताए गए मन्त्र से उच्चारण करें और **भैरवाय नमः** बोलते हुए चन्दन, अक्षत, फूल, सुपारी, दक्षिणा, नैवेद्य आदि के साथ धूप और दीप से आरती करें। मन्त्र है—**आयाहि भगवान् रुद्रो भैरवः भैरवीपते, प्रसन्नोभव देवेश नमस्तुभ्यं कृपानिधि।**

भैरव के आवाहन के बाद काल भैरव की उपासना करते हुए दिए गए शाबर मन्त्र का जाप करें। मन्त्र है—**जय काली कंकाली महाकाली के पूत काल भैरव, हुक्म है—हाजिर रहे, मेरा कहा काज तुरन्त करे, काला-भैरव किल-किल करके चली आई सवारी, इसी पल**

इसी घड़ी यहीं भगत रूके, ना रूके तो, तो दुहाई काली माई की, दुहाई कामरू कामाक्षा की, गुरु गोरखनाथ बाबा की आण छु वाचापुरी!!

भैरव साधना को किसी भी रविवार, मंगलवार या कृष्ण पक्ष की अष्टमी को आरम्भ किया जा सकता है। परिधान लाल वस्त्र का होना चाहिए।

साधना की शुरुआत करने से पहले अपने आसन के ठीक सामने भैरव का चित्र या मूर्ति को स्थापित किया जाना चाहिए। इनकी पूजा तेल का दीपक जलाकर की जाती है। इसके अतिरिक्त गुग्गुल, धूप-अगरबत्ती जलाई जा सकती है।

विभिन्न उपायों के कुछ मन्त्र बहुत उपयोगी होते हैं, जिनका तुरन्त लाभ मिलता है। इन्हीं में से एक भय नाशक मन्त्र इस प्रकार है—**ॐ भं भैरवाय आपदुद्धारणाय भयं हन्!** इस मंत्र का दक्षिण दिशा की ओर मुख कर के छह माला जाप करना चाहिए। इससे तुरन्त लाभ मिलता है।

भैरव तन्त्र साधना

एक सामान्य व्यक्ति का जीवन विभिन्न प्रकार की विघ्न-बाधाओं से भरा रहता है। कुछ आपत्तियाँ तो कुछ विपत्तियों का सामना करते हुए गुजरती जिन्दगी में कई मौके ऐसे भी आते हैं जब मुश्किलों का हल आसानी से नहीं निकल पाता है। खासकर तब जब शत्रु के द्वारा पैदा की गई समस्याएँ आफत बनकर सामने आ जाती हैं। इनसे छुटकारा पाने के लिए किए जाने वाले उपायों में तन्त्र साधना को काफी उपयुक्त बताया गया है। इसका जीवन में विशिष्ट महत्त्व है और ये दिनचर्या को सहज-सरल बनाने में काफी मददगार साबित होती हैं। यह सभी लाभ भैरव तन्त्र साधना से सम्भव है, जिसमें भगवान शिव की अद्‌भुत और विपुल शक्ति को जागृत किया जाता है।

हिन्दू शास्त्रों के अनुसार भगवान शिव सर्वव्यापी हैं और यह संसार सत्व, रज और तम गुणों से मिलकर बना हुआ है। इन तत्वों पर शिव का नियंत्रण रहता है। शिव में अगर आनन्द और उग्रता का रूप है, तो वे सात्विक गुण से भी परिपूर्ण माने गए हैं। इन तीनों गुणों की अपार शक्ति उनके भैरव अवतार में होती है। इस बारे चली आ रही मान्यता के अनुसार भगवान शिव प्रदोषकाल में काल और कलह रूपी अन्धकार से संसार की रक्षा के लिए भैरव रूप में प्रकट हुए थे। इसे ही रुद्रावतार कहा गया है। रुद्र भैरव के रूपों में १. असितांग भैरव, २. चण्ड भैरव, ३. रूद्र भैरव, ४. क्रोधोन्मत्त भैरव, ५. भयंकर भैरव, ६. कपाली भैरव, ७. भीषण भैरव और ८. संहार

भैरव सर्वाधिक लोकप्रिय है। आदि शंकराचार्य ने भी अपनी पुस्तक प्रपंञ्च सार तन्त्र में भी इन्हीं आठ भैरवों की चर्चा विशेष तौर पर की है।

इस कारण भैरव के सभी स्वरूपों की पूजा फलदायी मानी गई है। भैरव का एक शाब्दिक अर्थ भरण-पोषण करने वाला होता है। वैसे इसे अकाल मौत से बचाने वाला भी माना गया है। इसी क्रम में महाभैरव के तीन प्रमुख रूप इस प्रकार हैं—

आनन्द भैरव—यह रजो गुण अर्थात् राजस्व को दर्शाता है और इनकी साधना से अर्थ, धर्म व काम की सिद्धियों के फल मिलते हैं। इनके साथ भैरवी की उपासना भी तान्त्रिक साधना-सिद्धि के रूप में की जाती है।

काल भैरव—तम गुण वाले इस स्वरूप की साधना काल-भय, संकट, दुःख और शत्रुओं से मुक्ति के लिए की जाती है। इनकी मान्यता कल्याणकारी स्वरूप में है और इनमें काल को नियंत्रित करने की अद्‌भुत शक्ति होती है।

बटुक भैरव—इन्हें सात्विक स्वरूप के तौर पर जाना जाता है, जिनकी उपासना से सभी तरह के रोगों से मुक्ति मिलती है और व्यक्ति निरोगी जीवन व्यतीत करते हुए सुख-ऐश्वर्य, पद-प्रतिष्ठा और मान-सम्मान में वृद्धि प्राप्त करता है।

भैरव तन्त्र साधना के बारे में समझने से पहले तन्त्र साधना के षट्कर्म के बारे में जानना जरूरी है, जिसमें शान्ति कर्म, वशीकरण, स्तम्भन, विद्‌वेषण, उच्चारण और मारण प्रयोग होते हैं। इनके अतिरिक्त मोहन, यक्षिणी साधना और रसायन क्रिया के प्रयोग भी किए जाते हैं। ये सब प्रयोग कई देवी-देवताओं की उपासना, आराधना व साधना-सिद्धि से किए जाते हैं। इन्हीं में भैरव तन्त्र साधना भी है, जिसे अघोरी साधु श्मशान में विधि-विधान के साथ सम्पन्न करवाते हैं। हालांकि इसे कोई सामान्य व्यक्ति भी सहजता के साथ कर सकता है।

अष्ट भैरव रहस्य

भगवान भैरव को भगवान शिव का ही एक रूप माना जाता है, इनकी पूजा-अर्चना करने का विशेष महत्त्व माना गया है। भगवान भैरव को कई रूपों में पूजा जाता है। भगवान भैरव के मुख्य आठ रूप माने जाते है। उन रूपों की पूजा करने से भगवान अपने सभी भक्तों की रक्षा करते हैं और उन्हें अलग-अलग फल योग्यतानुसार प्रदान करते हैं।

भगवान भैरव के आठ रूप और उनकी पूजा का लाभ निम्नलिखित है—

कपाल भैरव

इस रूप में भगवान का शरीर चमकीला है, उनकी सवारी हाथी है। कपाल भैरव एक हाथ में त्रिशूल, दूसरे में तलवार, तीसरे में शस्त्र और चौथे में पात्र पकड़े हैं। भैरव के इस रूप की पूजा अर्चना करने से कानूनी बाधायें नष्ट हो जाती है। अटके हुए कार्य पूरे होते हैं।

क्रोध भैरव

क्रोध भैरव गहरे नीले रंग के शरीर वाले हैं और उनकी तीन आँखें हैं। भगवान के इस रूप का वाहन गरुण हैं और ये दक्षिण-पश्चिम दिशा के स्वामी माने जाते है। क्रोध भैरव की पूजा-अर्चना करने से सभी परेशानियों का अन्त और बुरे वक्त से लड़ने की क्षमता बढ़ती है।

असितांग भैरव

असितांग भैरव ने गले में सफेद कपालों की माला पहन रखी है

और हाथ में भी एक कपाल धारण किए हैं। तीन आँखों वाले असितांग भैरव की सवारी हंस है। भगवान भैरव के इस रूप की पूजा-अर्चना करने से मनुष्य में कलात्मक क्षमताएँ स्वत: बढ़ती है।

चन्द्र भैरव

इस रूप में भगवान की तीन आँखें हैं और सवारी मोर है। चन्द्र भैरव एक हाथ में तलवार और दूसरे में पात्र, तीसरे में तीर और चौथे हाथ में धनुष लिए हुए है। चन्द्र भैरव की पूजा करने से शत्रुओं पर विजय मिलती हैं और हर बुरी परिस्थिति से लड़ने की क्षमता आती है।

गुरु भैरव

गुरु भैरव हाथ में कपाल, कुल्हाड़ी और तलवार पकड़े हुए है। यह भगवान का नग्न रूप है और उनकी सवारी बैल है। गुरु भैरव के शरीर पर सांप लिपटा हुआ है। गुरु भैरव की पूजा करने से श्रेष्ठ विद्या और ज्ञान की प्राप्ति होती है।

संहार भैरव

संहार भैरव नग्न रूप में है और उनके सिर पर कपाल स्थापित है। इनकी तीन आँखें हैं और वाहन कुत्ता है। संहार भैरव की आठ भुजाएँ हैं और शरीर पर सांप लिपटा हुआ है। इसकी पूजा करने से मनुष्य के सभी पाप खत्म हो जाते है।

उन्मत्त भैरव

उन्मत्त भैरव शान्त स्वभाव का प्रतीक है। इनकी पूजा-अर्चना करने से मनुष्य की सारी नकारात्मकता और बुराइयाँ खत्म हो जाती है। भैरव के इस रूप का स्वभाव भी शान्त और सुखद है। उन्मत्त भैरव के शरीर का रंग हल्का पीला हैं और इनका वाहन घोड़ा हैं।

भीषण भैरव

भीषण भैरव की पूजा-अर्चना करने से बुरी आत्माओं और भूतों से

छुटकारा मिलता है। भीषण भैरव अपने एक हाथ में कमल, दूसरे में त्रिशूल, तीसरे हाथ में तलवार और चौथे में एक पात्र पकड़े हुए है। भीषण भैरव का वाहन शेर है।

काल भैरव का दार्शनिक विवेचन

काल भैरव का मन्तव्य समझने हेतु पहले काल शब्द का अर्थ समझते हैं। काल शब्द के दो अर्थ हैं, पहला अर्थ है समय और दूसरा अर्थ है अंधकार। समय अर्थात् वर्तमान चक्र। आणविक से लेकर ब्रह्माण्डीय, एक सूक्ष्म अणु से लेकर विशाल ब्रह्माण्ड तक सभी वस्तुयें चक्र में घूमती हैं। पृथ्वी एक चक्र पूरा करती है, तो एसे एक दिन कहते हैं। चन्द्रमा जब पृथ्वी के चारों ओर एक चक्र पूर्ण करता है तो उसे एक मास कहते हैं। पृथ्वी जब सूर्य के चारों ओर घूमकर एक चक्र पूर्ण करती है, तो एक वर्ष कहते हैं। निद्रा और जागरण का चक्र, भोजन एवं क्षुधा का चक्र, इस प्रकार अनेक चक्र हैं। वस्तुओं की चक्रीय गति के कारण ही समय का आभास होता है। यदि यह चक्रीय गति की भौतिकता न हो, तो मनुष्य को समय का अनुभव नहीं हो सकता। समय भौतिक अस्तित्व के माध्यम से व्यक्त होता है। यह भौतिक अस्तित्व एक विशाल अनस्तित्व के सान्निध्य में घटित हो रहा है। इसे विज्ञान की भाषा में अन्तरिक्ष कहते हैं, यही काल या अन्धकार है।

यहाँ अन्तरिक्ष को काल या अन्धकार कहने का कारण मात्र यही है कि यदि हम प्रकाश का अनुभव करना चाहते हैं, तो हमें प्रकाश के उद्‌गम स्रोत को देखना होगा अथवा ऐसी किसी वस्तु को, जो प्रकाश को अवरुद्ध करती हो। इसके अतिरिक्त प्रकाश को अनुभव करने का कोई विकल्प नहीं है। हम सूर्य का उदाहरण ले सकते हैं, सूर्य प्रकाश का स्रोत

है, चन्द्रमा प्रकाश को परावर्तित करता है, किन्तु मध्य में अन्धकार ही है।

अस्तित्व का मूल आधार है काल अथवा समय। समय के कारण ही स्थान की सम्भावना है, अन्यथा स्थान की अवधारणा नहीं होती। इसी कारण अंतरिक्ष को काल या अन्धकार कहा जाता है। अन्तरिक्ष अन्धकारमय है। यदि हम समय का अनुभव करते हैं तो भौतिकता की सीमाओं से परे ऐसे समय को महाकाल कहा जाता है। महाकाल में सृष्टि के छोटे-छोटे कण अन्यत्र बिखरे पड़े हैं। शेष सब अवकाश (खालीपन) है, इस विस्तृत ब्रह्माण्ड में ९९% अवकाश है। विशालकाय आकाश गंगाये चक्कर लगा रही हैं, परन्तु उनका ९९% अंश खालीपन है। अतः महाकाल की गोद में ही सृष्टि घटित होती है। सृष्टि के सीमित कणों से ही जुड़े होने के कारण हमें समय का अनुभव चक्रीय गति के रूप में ही होता है। इसी आयाम को जगत् कहा जाता है। इसके पार जाना ही वैराग्य है अर्थात् पारदर्शी होना। जब हम पारदर्शक स्वरूप में होते हैं तब हम प्रकाश को अवरुद्ध नहीं करते अपितु प्रकाश को स्वयं से होकर गुजरने देते हैं।

स्वयं द्वारा प्रकाश को न रोकने का अर्थ है कि हम जीवन की बाध्यकारक प्रकृति या चक्रीय गति से मुक्त हो गये हैं। जीवन की चक्रीय गति से मुक्त होने को मुक्ति या मोक्ष प्राप्ति कहते हैं। जो व्यक्ति मुक्ति या मोक्ष की अभिलाषा रखते हैं, उनके लिए अस्तित्व का यह आयाम जिसे महाकाल कहा गया है, अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह मात्र सांस्कृतिक न होकर एक ठोस विज्ञान है। इस विशेष कृपा क्षेत्र में स्थित होने पर उस महाकाल की उपस्थिति में जब हम यात्रा करते हैं, तब सब द्वन्द्व, भौतिकता, मन नष्ट हो जाता है। इसका अर्थ है हम भौतिकता से मुक्त होकर परम मुक्ति, मोक्ष की ओर अग्रसर हो जाते हैं।

काल भैरव शिव का एक भयंकर रूप है। भैरव का स्वरूप भय के परे ले जाता है और काल भैरव का स्वरूप काल अर्थात् समय के भय से भी परे है। काल भैरव मात्र मृत्यु के भय से पार जाना न होकर समय के

भय से भी बाहर होना है। वास्तव में समय ही भय का आधार है, यदि अनन्त समय हो या समय के पार होने की क्षमता हो, तो भय का कोई अस्तित्व ही नहीं रहेगा। प्रत्येक घटना समय के भीतर ही घटती है। यदि मनुष्य समय के भय से मुक्त होगा, तो वह पूर्णतया स्वाधीन होगा। काल भैरव शिव की प्राणघातक अथवा भयंकर अवस्था है। काल भैरव का यह भयंकर, काला स्वरूप उनका एक अद्‌भुत आयाम है। जब भगवान शिव रौद्र रूप में सृष्टि के विनाश फैलाने लगे तब काल भैरव स्वरूप प्रकट हुआ। यह विनाश किसी वस्तु का नहीं अपितु समय का विनाश था। प्रत्येक सांसारिक या भौतिक पदार्थ की समय सीमा निश्चित है। यदि समय को ही नष्ट कर दिया जाये, तो सब कुछ ध्वस्त हो जायेगा। काल भैरव समय के नष्ट होने से उपस्थित विध्वंस से पार जाने की अवस्था का स्वरूप हैं। सम्पूर्ण जीवन की पीड़ा, आनन्द, हर्ष आदि का मात्र एक क्षण में अनुभव काल भैरव की साधना से सम्भव है। समय की सीमा से परे होने के कारण समस्त सिद्धि एवं आनन्द का अनुभव एक क्षण की प्रबलता में ही इनकी कृपा से सम्भव है। अनन्त जन्मों में प्राप्त होने वाले अनुभवों की प्रगाढ़ता मात्र एक क्षण में ही करा देने में काल भैरव समर्थ हैं।

काल भैरवाष्टमी रहस्य

'शिवपुराण' के अनुसार कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की अष्टमी को मध्याह्न में भगवान शंकर के अंश से भैरव की उत्पत्ति हुई थी, अतः इस तिथि को काल-भैरवाष्टमी के नाम से भी जाना जाता है। पौराणिक आख्यानों के अनुसार अन्धकासुर नामक दैत्य अपने कृत्यों से अनीति व अत्याचार की सीमाएँ पार कर रहा था, यहाँ तक कि एक बार घमंड में चूर होकर वह भगवान शिव के ऊपर आक्रमण करने तक का दुस्साहस कर बैठा। तब उसके संहार के लिए शिव के रुधिर से भैरव की उत्पत्ति हुई।

कुछ अन्य पुराणों के अनुसार शिव का अपमान होने पर भैरव की उत्पत्ति हुई थी। यह सृष्टि के प्रारम्भकाल की बात है। सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने भगवान शंकर की वेशभूषा और उनके गणों की रूपसज्जा देख कर शिव को तिरस्कारयुक्त वचन कहे। अपने इस अपमान पर स्वयं शिव ने तो कोई ध्यान नहीं दिया, किन्तु उनके शरीर से उसी समय क्रोध से कम्पायमान और विशाल दण्डधारी एक प्रचण्ड काया प्रकट हुई और वह ब्रह्मा का संहार करने के लिये आगे बढ़ गयी। सृष्टा तो यह देख कर भय से चीख पड़े। शंकर द्वारा मध्यस्थता करने पर ही वह काया शान्त हो सकी। रुद्र के शरीर से उत्पन्न उसी काया को महाभैरव का नाम मिला। बाद में शिव ने उसे अपनी पुरी, काशी का नगरपाल नियुक्त कर दिया। ऐसा कहा गया है कि भगवान शंकर ने इसी अष्टमी को ब्रह्मा के अहंकार को नष्ट किया था, इसलिए यह दिन भैरव अष्टमी व्रत के रूप में मनाया जाने लगा।

भैरव अष्टमी 'काल' का स्मरण कराती है, इसलिए मृत्यु के भय के निवारण हेतु बहुत से लोग कालभैरव की उपासना करते हैं। ऐसा भी कहा जाता है कि ब्रह्मा जी के पाँच मुख हुआ करते थे। जब ब्रह्मा जी पाँचवे वेद की रचना करने जा रहे थे, तब सभी देवों के कहने पर महाकाल भगवान शिव ने ब्रह्मा जी से वार्तालाप किया परन्तु उनके न समझने पर महाकाल से उग्र, प्रचंड रूप भैरव प्रकट हुए और उन्होंने नाखून के प्रहार से ब्रह्मा जी का पाँचवा मुख काट दिया, इसी कारण भैरव को ब्रह्म हत्या का पाप भी लगा।

काल भैरव अष्टमी और काल भैरव पूजा

धर्म ग्रन्थों के अनुसार मार्गशीर्ष मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को कालभैरव अष्टमी का पर्व मनाया जाता है। मान्यता है कि इसी दिन भगवान शिव ने कालभैरव का अवतार लिया था। इसलिए इस पर्व को कालभैरव जयंती के रूप में मनाया जाता है।

भगवान कालभैरव को तन्त्र का देवता माना गया है। तन्त्र शास्त्र के अनुसार, किसी भी सिद्धि के लिए भैरव की पूजा अनिवार्य है। इनकी कृपा के बिना तन्त्र साधना अधूरी रहती है। इनके ५२ रूप माने जाते हैं। इनकी कृपा प्राप्त करके भक्त निर्भय और सभी कष्टों से मुक्त हो जाते हैं। कालभैरव जयंती पर कुछ आसान उपाय कर आप भगवान कालभैरव को अवश्य प्रसन्न कर सकते हैं।

कालभैरव को प्रसन्न करने के १३ उपाय निम्नलिखित हैं इनमें से कोई भी १ उपाय अवश्य करें।

१. कालभैरव अष्टमी को सुबह जल्दी उठकर स्नान आदि करने के बाद कुश (एक प्रकार की घास) के आसन पर बैठ जाएँ। सामने भगवान कालभैरव की तस्वीर स्थापित करें व पंचोपचार से विधिवत पूजा करें। इसके बाद रूद्राक्ष की माला से नीचे लिखे मन्त्र की कम से कम पाँच माला जाप करें तथा भैरव महाराज से सुख-सम्पत्ति के लिए प्रार्थना

करें।

मन्त्र—'ॐ हं षं नं गं कं सं खं महाकाल भैरवाय नमः'

२. कालभैरव अष्टमी पर किसी ऐसे भैरव मन्दिर में जाएँ, जहाँ कम ही लोग जाते हों। वहाँ जाकर सिन्दूर व तेल से भैरव प्रतिमा को चोला चढ़ाएँ। इसके बाद नारियल, मीठे पुए, जलेबी आदि का भोग लगाएँ। मन लगाकर पूजा करें। बाद में जलेबी आदि का प्रसाद बाँट दें। याद रखिए अपूज्य भैरव की पूजा से भैरवनाथ विशेष प्रसन्न होते हैं।

३. कालभैरव अष्टमी को भगवान कालभैरव की विधि-विधान से पूजा करें और नीचे लिखे किसी भी एक मन्त्र का जाप करें। कम से कम ११ माला जाप अवश्य करें।

ॐ कालभैरवाय नमः।

ॐ भयहरणं च भैरवः।

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरुकुरु बटुकाय ह्रीं।

ॐ भ्रां कालभैरवाय फट्।

४. कालभैरव अष्टमी की सुबह भगवान कालभैरव की उपासना करें और शाम के समय सरसों के तेल का दीपक लगाकर समस्याओं से मुक्ति के लिए प्रार्थना करें।

५. कालभैरव अष्टमी पर २१ बिल्वपत्रों पर चन्दन से 'ॐ नमः शिवाय' लिखकर शिवलिंग पर चढाएँ। साथ ही, एकमुखी रुद्राक्ष भी अर्पण करें। इससे आपकी सभी मनोकामनाएँ पूरी हो सकती हैं।

६. कालभैरव अष्टमी को एक रोटी लें। इस रोटी पर अपनी तर्जनी और मध्यमा अंगुली से तेल में डुबोकर लाइन खींचे। यह रोटी किसी दो रंग वाले कुत्ते को खाने को दीजिए। इस क्रम को जारी रखें, लेकिन सिर्फ हफ्ते के तीन दिन (रविवार, बुधवार व गुरुवार) यह करें। यही तीन दिन भैरवनाथ के माने गए हैं।

७. यदि आप कर्ज से परेशान हैं तो कालभैरव अष्टमी की सुबह

जल्दी उठकर स्नान आदि करने के बाद भगवान शिव की पूजा करें। उन्हें बिल्व पत्र अर्पित करें। भगवान शिव के सामने आसन लगाकर रुद्राक्ष की माला लेकर इस मन्त्र का जाप करें।

मन्त्र—ॐ ऋणमुक्तेश्वराय नमः

८. कालभैरव अष्टमी के एक दिन पहले उड़द की दाल के पकौड़े सरसों के तेल में बनाएँ और रात भर उन्हें ढंककर रखें। सुबह जल्दी उठकर सुबह ६ से ७ के बीच बिना किसी से कुछ बोलें घर से निकलें और यह पकौड़े कुत्तों को खिला दें।

९. सवा किलो जलेबी भगवान भैरवनाथ को चढ़ाएँ और बाद में गरीबों को प्रसाद के रूप में बाँट दें। पाँच नींबू भैरवजी को चढ़ाएँ। किसी कोढ़ी, भिखारी को काला कम्बल दान करें।

१०. कालभैरव अष्टमी पर सरसों के तेल में पापड़, पकौड़े, पुए जैसे पकवान तलें और गरीब बस्ती में जाकर बाँट दें। घर के पास स्थित किसी भैरव मन्दिर में गुलाब, चन्दन, और गुगल की खुशबूदार ३३ अगरबत्ती जलाएँ।

११. सवा सौ ग्राम काले तिल, सवा सौ ग्राम काले उड़द, सवा ११ रुपए, सवा मीटर काले कपड़े में पोटली बनाकर भैरवनाथ के मन्दिर में कालभैरव अष्टमी पर चढ़ाएँ।

१२. कालभैरव अष्टमी की सुबह स्नान आदि करने के बाद भगवान कालभैरव के मन्दिर जाएँ और इमरती का भोग लगाएँ। बाद में यह इमरती दान कर दें। ऐसा करने से भगवान कालभैरव प्रसन्न होते हैं।

१३. कालभैरव अष्टमी के दिन समीप स्थित किसी शिव मन्दिर में जाएँ और भगवान शिव का जल से अभिषेक करें और उन्हें काले तिल अर्पण करें। इसके बाद मन्दिर में कुछ देर बैठकर मन ही मन में 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का जप करें।

भैरव वशीकरण साधना का ज्योतिष रहस्य

भगवान भैरव की साधना वशीकरण, उच्चाटन, सम्मोहन, स्तम्भन, आकर्षण और मारण जैसी तान्त्रिक क्रियाओं के दुष्प्रभाव को नष्ट करने के लिए की जाती है। भैरव साधना से सभी प्रकार की तान्त्रिक क्रियाओं के प्रभाव नष्ट हो जाते हैं। जन्म कुण्डली में छठा भाव शत्रु का भाव होता है। लग्न में षट्भाव भी शत्रु का है। इस भाव के अधिपति, भाव में स्थित ग्रह और उनकी दृष्टि से शत्रु सम्बन्धी कष्ट उत्पन्न होते हैं। षष्ठस्थ-षष्ठेश सम्बन्धियों को शत्रु बनाता है। यह शत्रुता कई कारणों से हो सकती है। मनुष्य प्रगति को प्रभावित करने के लिए तान्त्रिक क्रियाओं का सहारा लेकर शत्रु जातक प्रभावित करते हैं।

इन्हीं तान्त्रिक क्रियाओं के प्रभाव से व्यवसाय, नौकरी में भी आशानुरूप प्रगति नहीं होती। इस प्रकार के शत्रु बाधा निवारण हेतु भैरव साधना फलदायी मानी गई।

भैरव तीव्र वशीकरण सम्मोहन प्रयोग

भगवान् भैरव का यह अति विशिष्ट वशीकरण प्रयोग है। जिसको सम्पन्न करने के पश्चात् आप जिस किसी को भी अपने वश में करना चाहते हैं अथवा अपनी बात को उसके सामने स्पष्ट करना चाहते हैं कर सकते हैं। यह प्रयोग बालक-वृद्ध, स्त्री-पुरुष किसी पर भी उपयोग

किया जा सकता है। भगवान भैरव का तन्त्र अचूक तन्त्र प्रयोग है जिसका प्रभाव तत्काल रूप से देखा जा सकता है। शत्रु का वश में करने का एक अचूक उपाय आगे दिया गया है।

साधना विधान

यह तन्त्र वशीकरण प्रयोग किसी भी रविवार अथवा मंगलवार को सम्पन्न किया जा सकता है। यह रात्रिकालीन प्रयोग है, जिसे रात्रि में १० बजे के बाद ही सम्पन्न करना चाहिए। इस प्रयोग हेतु मन्त्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त 'भैरव वशीकरण गुटिका' तथा 'काली हकीक माला' की आवश्यकता होती है।

रात्रि में साधक स्नान, ध्यान कर किसी शान्त स्थान पर बैठकर यह साधना सम्पन्न करें। साधना स्थल को पहले से ही साफ-स्वच्छ कर लें। भैरव का यह प्रयोग उत्तर दिशा की ओर मुख करके सम्पन्न करना चाहिए।

अपने सामने एक बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा कर उस पर एक पीपल का पत्ता रखें। पत्ते पर कुमकुम से उस व्यक्ति के नाम का प्रथम अक्षर लिख दें, जिसे आप वशीभूत करना चाहते हैं। इसके पश्चात् इस पत्ते पर 'भैरव वशीकरण गुटिका' स्थापित कर दें।

गुटिका का संक्षिप्त पूजन कुमकुम, अक्षत, पुष्प इत्यादि से करें तथा धूप, दीप प्रज्जवलित कर लें।

इसके पश्चात् काली हकीक माला से निम्नलिखित मन्त्र की ३ माला मन्त्र जप करें।

ॐ नमो रुद्राय कपिलाय भैरवाय त्रिलोक-नाथाय
ह्रीं फट् स्वाहा।

मन्त्र जप समाप्ति के पश्चात् गुटिका पर २१ लौंग अर्पित करते हुए उपरोक्त मन्त्र का उच्चारण करें। इस प्रकार भैरव वशीकरण प्रयोग सम्पन्न होता है। प्रयोग समाप्ति के पश्चात् समस्त सामग्री को उसी लाल वस्त्र में

बाँधकर प्रातः किसी चौराहे पर रख दें।

ये प्रयोग सिद्ध सरल प्रयोग हैं, जीवन में जब भी स्थिति प्रतिकूल हो अर्थात् शत्रु बाधा बढ़ती ही जा रही हो, अनावश्यक वाद-विवाद बढ़ता ही जा रहा हो तो यह प्रयोग अवश्य करना चाहिये, निरन्तर कार्य सिद्धि के लिये, स्वयं को स्थापित करने के लिये, व्यक्ति विशेष को पूर्णतया अपने अनुकूल बनाने के लिये यह साधना प्रयोग अवश्य सम्पन्न करें।

शत्रु बाधा निवारक भैरव मन्त्र प्रयोग

इस साधना में साधक सर्वप्रथम स्नान कर, स्वच्छ लाल वस्त्र धारण कर, दक्षिणाभिमुख होकर बैठ जाए। अपने सामने एक बाजोट पर गीली मिट्टी की ढेरी बनाकर उस पर 'काल भैरव गुटिका' स्थापित करें। उसके चारों ओर तिल की पाँच ढेरियाँ बना लें तथा प्रत्येक पर एक-एक आक्रान्त चक्र स्थापित करें। बाजोट पर तेल का दीपक प्रज्वलित करें तथा गुग्गल धूप तथा अगरबत्ती जला दें।

सर्वप्रथम निम्नलिखित मन्त्र बोलकर भैरवजी का आवाहन करें—

आवाहन मन्त्र—

आयाहि भगवन् रुद्रो भैरवः भैरवीपते।
प्रसन्नोभव देवेश नमस्तुभ्यं कृपानिधि॥

भैरव आवाहन के पश्चात् साधक भैरव जी का ध्यान करते हुए अपनी शत्रु बाधा शान्ति हेतु भैरव जी से प्रार्थना करें तथा हाथ में जल लेकर निम्न संकल्प करें—

संकल्प—

मैं अपने अमुक शत्रु-बाधा के निवारण हेतु काल भैरव प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूँ।

बाधा निवारण संकल्प के पश्चात् 'काल भैरव गुटिका' का सिन्दूर लगाकर पूजन करें। उस सिन्दूर से स्वयं के मस्तक पर भी तिलक

लगायें। इसके पश्चात् पाँचों आक्रान्त चक्र का सिन्दूर, कुमकुम, काजल, सफेद पुष्प से पूजन करें।

अब एक पात्र में काली सरसों, काले तिल मिलाएँ, उसमें थोड़ा तेल डालें, थोड़ा सिन्दूर डालकर उसे मिला दें, इस मिश्रण को निम्नलिखित भैरव मन्त्र का जप करते हुए 'काल भैरव गुटिका' के समक्ष थोड़ा-थोड़ा करके २१ बार अर्पित करते रहें—

विभूति भूति नाशाय, दुष्ट क्षय कारकं, महाभैरव नमः।
सर्व दुष्ट विनाशनं सेवकं सर्वसिद्धि कुरू।
ॐ काल भैरव, बटुक भैरव, भूत-भैरव,
महा-भैरव महा-भय विनाशनं देवता सर्व सिद्धिर्भवेत्।

उपरोक्त मन्त्र जप के पश्चात् भैरव के निम्नलिखित विशिष्ट मन्त्र का १५ मिनट तक जप करें—

मन्त्र—॥ ॐ ह्रीं भैरवः भैरवः भयकरहरः मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा॥

इस प्रकार जप पूर्ण कर भैरव जी को दूध से बना नैवेद्य अर्पित करें। आप स्वयं भी इस नैवेद्य को ग्रहण करें। इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न होता है। प्रयोग समाप्ति के पश्चात् समस्त सामग्री को किसी काले वस्त्र में बांधकर अगले दिन जल में विसर्जित कर दें।

शत्रु बाधा निवारण का यह अत्यन्त तीव्र प्रयोग है। अतः इस प्रयोग को अकारण किसी को हानि पहुँचाने हेतु न करें।

ऋण मुक्ति भैरव साधना

हर व्यक्ति के जीवन में ऋण एक अभिशाप है। एक बार व्यक्ति इस में फंस गया तो धंसता ही चला जाता है। ऋण की चिन्ता धीरे-धीरे मस्तिष्क पर हावी होती चली जाती है, जिसका असर स्वास्थ्य पर होना भी स्वाभाविक है। प्रत्येक व्यक्ति पर छह किस्म का ऋण होता है, जिस में पितृ ऋण, मातृ ऋण, भूमि ऋण, गुरु ऋण और भ्राता ऋण और ऋण

जिसे ग्रह ऋण भी कहते है। संसारी ऋण (कर्ज) व्यक्ति की कमर तोड़ देता है, मगर हजार प्रयत्न के बाद भी व्यक्ति छुटकारा नहीं पाता तो मायूस होकर वह खुदकुशी तक सोच लेता है। हम यहाँ एक बहुत ही सरल अनुभूत साधना प्रयोग दे रहे हैं, आप निश्चिंत होकर करे। बहुत जल्द आप इस अभिशाप (कर्ज) से मुक्ति पा लेंगे।

विधि—शुभ दिन जिस दिन रवि पुष्य योग हो या रविवार हस्त नक्षत्र हो, शुक्ल पक्ष हो तो इस साधना को शुरू करें।

वस्त्र—लाल रंग की धोती पहन सकते है। **माला**—काले हकीक की लें। **दिशा**—दक्षिण। **सामग्री**—भैरव यन्त्र का चित्र और हकीक माला काले रंग की। **मन्त्र संख्या**—१२ माला, २१ दिन जप करना है।

पहले गुरु पूजन कर आज्ञा लें और फिर श्री गणेश जी का पंचौपचार पूजन करें तत्पश्चात् यह संकल्प लें। अपने जीवन में समस्त ऋण मुक्ति के लिए मैं यह साधना कर रहा हूँ हे भैरव देव! मुझे ऋण मुक्ति दें। जमीन पर थोड़ा रेत डाल के उसके ऊपर कुमकुम से त्रिकोण बनाए उसमें एक प्लेट में स्वस्तिक लिखकर उस पर लाल रंग का फूल रखें उस पर भैरव यन्त्र की स्थापना करें। उस यन्त्र के चित्र का पंचौपचार से पूजन करें, तेल का दिया लगायें और भोग के लिए गुड़ रखें, लड्डू भी रख सकते है। मन को स्थिर रखते हुए मन ही मन ऋण मुक्ति के लिए प्रार्थना करें और जप शुरू करें। १२ माला जप रोज करें, इस प्रकार २१ दिन करें। साधना के बाद सामग्री, माला, यन्त्र और जो पूजन सामग्री प्रयोग किया है वह सब सामान जल प्रवाह कर दें। साधना के दौरान रविवार और मंगलवार को छोटे बच्चों को मीठा भोजन आदि जरूर करायें। शीघ्र ही कर्ज से मुक्ति मिलेगी और कारोबार में प्रगति भी होगी। **मन्त्र—ॐ ऐं क्लीम ह्रीं भम भैरवाये मम ऋणविमोचनाये महां महा धन प्रदाय क्लीम स्वाहा।**

क्रोध भैरव साधना

तन्त्र के क्षेत्र में भगवान भैरव का स्थान तो अपने आप में निराला है, यह देव अपने साधको को शीघ्र सिद्धि एवं कल्याण प्रदान करने के कारण सदियों से महत्त्वपूर्ण उपास्य देव रहे है।

भगवान शिव के स्वरूप समान उनके ये विविध रूप, सभी स्वरूप अपने आप में निराले तथा विलक्षण हैं। तन्त्र के क्षेत्र में भैरव के यूँ तो ५२ रूप प्रचलित है, लेकिन ८ रूप मुख्यरूप से ज्ञात है, इनको संयुक्त रूप से अष्ट भैरव के नाम से जाना जाता है।

वस्तुतः भगवान भैरव से सबन्धित कई-कई प्रकार की तान्त्रिक साधना विविध मत के अन्तर्गत होती आई है। कापालिक, नाथ, अघोर इत्यादि साधना मत में तो भगवान भैरव का स्थान बहुत ही उच्चतम माना गया है, तन्त्र में जहाँ एक और गणपति को विघ्न निवारक के रूप में पूजन करना अनिवार्य क्रम है तो साथ ही साथ सिद्धों के मत से किसी भी साधना के लिए भैरव पूजन भी एक अनिवार्य विधि है क्योंकि यह रक्षात्मक देव हैं, जो की साधक तथा साधक की साधना क्रम की सभी रूप में रक्षा करते हैं।

वस्तुतः भैरव को संहारात्मक देवता के रूप में प्रस्तुत कर दिया गया है, जिसके कारण सामान्य जनमानस के मध्य इनको भय की दृष्टि से देखा जाता है, लेकिन इनकी संहारात्मक प्रकृति साधक के लिए नहीं वरन साधक के शत्रु तथा कष्टों के लिए होती है। इसी तथ्य का अनुभव तो कई महासिद्धों ने अपने जीवन में किया है, आदि शंकराचार्य से लेकर गोरखनाथ तक सभी अर्वाचीन प्राचीन सिद्धों ने एक मत में भगवान भैरव की साधना को अनिवार्य तथा जीवन का एक अति आवश्यक कर्म माना है।

यूँ तो भगवान भैरव से सबन्धित कई-कई प्रकार के प्रयोग साधकों के मध्य हैं ही तथा इसमें भी बटुक भैरव एवं कालभैरव स्वरूप तो तन्त्र

साधको के प्रिय रहे हैं, लेकिन साथ ही साथ भैरव के अन्य स्वरूप भी अपनी एक अलग ही विलक्षणता को लिए हुए है।

भगवान क्रोध भैरव के सम्बन्ध में भी ऐसा ही है, यह स्वरूप क्रोध का ही साक्षात स्वरूप है अर्थात् पूर्ण तमस भाव से युक्त यह स्वरूप पूर्ण तमस को धारण किए हुए है अतः इस स्वरूप से साधक को अत्याधिक तीव्र रूप से तथा तत्काल परिणाम की प्राप्ति होती है, इनकी उपासना शत्रुओं के मारण, उच्चाटन, सेना मारण आदि अति तीक्ष्ण क्रियाओं के लिए होती आई है।

वस्तुतः इनकी साधना इतनी प्रचलित नहीं है, इसके पीछे भी कई कारण है, खास कर इनकी संहारात्मक प्रकृति, इसीलिए भयवश भी इनकी साधना कई साधक नहीं करते है, साक्षात् तमस का रूप होने के कारण इनके प्रयोग असहज भी है तथा थोड़े कठिन भी।

प्रस्तुत साधना भगवान के इसी स्वरूप की साधना है, जिसको पूर्ण कर लेने पर साधक इसका प्रयोग अपने किसी भी शत्रु पर करके उसको जमीन चटा सकता है, शत्रु के पूरे घर परिवार को भी तहस नहस कर सकता है, यह प्रयोग भी अब तक सिर्फ सिद्धों के मध्य ही प्रचलित रहा है, क्योंकि भले ही यह प्रयोग उग्र है, लेकिन इसमें ज्यादा समय नहीं लगता है तथा एक बार साधना सम्पन्न कर लेने पर साधक इसकी सिद्धि से जीवन भर लाभ उठा सकता है।

आज के युग में जहाँ एक तरफ असुरक्षा सदैव ही साधक पर हावी रहती है तथा पग-पग पर ज्ञात-अज्ञात शत्रुओं का जमावड़ा लगा हुआ है तब ऐसी स्थिति में इस प्रकार के प्रयोग अनिवार्य ही है, इसलिए उग्र प्रयोग होने के कारण भी इस प्रयोग को यहाँ पर प्रस्तुत किया जा रहा है, जिससे कि आवश्यकता पड़ने पर साधक अपने जीवन की तथा अपने परिवार की गरिमा को रख सके तथा पूर्ण सुरक्षा को प्राप्त कर सके।

यह प्रयोग अत्यधिक तीव्र प्रयोग है अतः साधक अपनी विवेक

बुद्धि के अनुसार स्वयं की क्षमता परख कर ही इसका प्रयोग करें, इस प्रयोग के मध्य साधक को अत्यन्त तीव्र अनुभव हो सकते है।

साधक को अगर कोई व्यक्ति अत्याधिक परेशान कर रहा हो तथा बिना कारण अहित किये जा रहा हो तब ही यह प्रयोग करना उचित है। मात्र किसी को बेवजह परेशान करने के उद्देश्य को मन में रख कर यह प्रयोग नहीं करना चाहिए वरना साधक को इसका बुरा परिणाम भुगतना पड़ सकता है। साधक को इस प्रयोग को रक्षात्मक रूप से ही लेना चाहिए तथा अपनी तथा घर परिवार की सुरक्षा के लिए ही साधक यह प्रयोग कर सकता है।

यह प्रयोग साधक किसी भी अमावस्या या कृष्ण पक्ष अष्टमी को शमशान में या निर्जन स्थान में करे, रात्रि में १० बजे के बाद ही यह साधना आरम्भ करें। सर्वप्रथम साधक काले रंग के वस्त्र को धारण करे तथा काले रंग के आसन पर बैठे, साधक का मुख दक्षिण दिशा की तरफ होना चाहिए।

साधक अपने सामने भैरव का कोई विग्रह या चित्र स्थापित करे, उस पर सिन्दूर अर्पित करे, साधक गुरु पूजन के पश्चात् चित्र या विग्रह का पूजन करे। साधक लाल रंग के पुष्प का प्रयोग करें। साधक को किसी पात्र में मदिरा भी अर्पित करनी चाहिए। इसके बाद साधक को गुरु मन्त्र का जाप करना चाहिए। इस जाप के बाद साधक न्यास करे।

करन्यास—

भ्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

भ्रीं तर्जनीभ्यां नमः

भ्रूं मध्यमाभ्यां नमः

भ्रैं अनामिकाभ्यां नमः

भ्रौं कनिष्टकाभ्यां नमः

भ्रः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास—

भ्रां हृदयाय नमः

भ्रीं शिरसे स्वाहा

भ्रूं शिखायै वषट्

भ्रैं कवचाय हूं

भ्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्

भ्रः अस्त्राय फट्

न्यास के बाद साधक रुद्राक्ष की माला से निम्नलिखित मन्त्र की ५१ माला मन्त्र जाप करे—

ॐ भ्रं भ्रं भ्रं क्रोधभैरवाय अमुकं उच्चाटय भ्रं भ्रं भ्रं फट्।

मन्त्र जाप पूर्ण होने पर साधक वहीं पर किसी पात्र में अग्नि प्रज्वलित कर के १०८ आहुति बकरे के मांस में या इसके प्रतिरूप में शराब को मिला कर अर्पित करे। भोग के लिए अर्पित की गई मदिरा वहीं छोड़ दे। दूसरे दिन किसी श्वान को दही या कुछ भी अन्य खाद्य पदार्थ खिलाये।

इसके बाद साधक को जब भी प्रयोग करना हो तो साधक को रात्रि काल में १० बजे के बाद उपरोक्त क्रियाओं अनुसार ही पूजन आदि क्रिया कर इसी मन्त्र की १ माला मन्त्र का जाप कर १०१ आहुति शराब तथा बकरे के मांस या इसके प्रतिरूप को मिलाकर देनी चाहिए।

मन्त्र में अमुक की जगह सबन्धित व्यक्ति या शत्रु का नाम लेना चाहिए, जिसके ऊपर प्रयोग किया जा रहा है। इस प्रकार उच्चारण करने से उस व्यक्ति का उच्चाटन हो जाता है तथा वह साधक के जीवन में कभी परेशानी नहीं डालता।

अगर साधक प्रयोग की आहुति देने के बाद निर्माल्य या भस्म को उठा कर शत्रु के घर के अन्दर डाल देता है तो शत्रु का पूरा घर परेशान हो जाता है, उसके घर के सभी सदस्यों को दुःख एवं कष्ट का सामना करना

पड़ता है तथा शत्रु का पूर्ण परिवार बरबाद हो जाता है।

उपरोक्त प्रयोग किसी सिद्ध पुरुष या गुरु की देखरेख में ही सम्पन्न करें। अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि के साथ-साथ कुछ गलत भी घटित हो सकता है।

महाकाल भैरव साधना

भगवान भैरव को शब्दमय रूप में वर्णित करने का रहस्य मात्र इतना है कि अन्य देवों कि अपेक्षा यह पूरे ब्रह्माण्ड में सर्वत्र विद्यमान हैं। जिस प्रकार शब्द को किसी भी प्रकार के बन्धन में नहीं बाँधा जा सकता उसी प्रकार भैरव भी किसी भी विघ्न या बाधा को सहन नहीं कर पाते और उसे विध्वंस कर साधक को पूर्ण अभय प्रदान करते हैं।

उनकी इसी शक्ति को साधक अनेक रूपों वर्णित कर साधनाओं के द्वारा शक्ति प्राप्त कर अपने जीवन के दुःख और कष्टों से मुक्ति प्राप्त करते हैं।

वस्तुतः भैरव साधना भगवान शिव की ही साधना है, क्योंकि भैरव तो शिव का ही रूप है और उनका ही एक नर्तनशील स्वरूप। भैरव भी शिव की ही तरह अत्यन्त भोले हैं, एक तरफ अत्याधिक प्रचण्ड स्वरूप जो पल भर में प्रलय ला दे और दूसरी तरफ इतने दयालु कि अपने भक्त को सब कुछ दे डालें।

इसके बाद भी समाज में भैरव के नाम का इतना भय कि नाम सुनकर ही लोग काँप जाते हैं, उसे जादू-टोने से जोड़ने लगते हैं।

भैरव की अनेक साधनाओं में एक साधना है 'महाकाल भैरव' साधना। इस साधना की विशेषता है की ये भगवान् महाकाल भैरव के काल रूप की साधना है, जो तीव्रता के साथ साधक को सौम्यता का भी अनुभव कराती है और जीवन के सभी अभाव, प्रकट या गुप्त शत्रुओं का समूल निवारण करती है, विपन्नता, गुप्त शत्रु, ऋण, मनोकामना पूर्ती और भगवान भैरव की पूर्ण कृपा प्राप्ति, इस १ दिवसीय साधना प्रयोग से

सम्भव है।

बहुधा हम प्रयोग की तीव्रता को तब तक नहीं समझ पाते हैं, जब तक की स्वयं उसे सम्पन्न न कर लें, इस प्रयोग को आप स्वयं करें और अनुभव का लाभ उठायें।

ये प्रयोग रविवार की मध्य रात्रि को सम्पन्न करना होता है, स्नान आदि कृत्य से निवृत्त होकर पीले वस्त्र धारण करके, दक्षिण मुख होकर बैठ जाएँ। गुरुदेव और भगवान् गणपति का पंचोपचार पूजन और मन्त्र का सामर्थ्यानुसार जप कर लें तत्पश्चात् सामने बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा लें, जिस के ऊपर काजल और कुमकुम मिश्रित कर भैरव यन्त्र बनाना है और यन्त्र के मध्य में काले तिलों की ढेरी बनाकर चौमुहा दीपक प्रज्वलित कर उसका पंचोपचार पूजन करना है, पूजन में नैवेद्य उड़द के बड़े और दही को अर्पित करना है, पुष्प गेंदे के या रक्त वर्णीय हो तो उत्तम है। अब अपनी मनोकामना पूर्ति का संकल्प लें और उसके बाद विनियोग करें।

अस्य महाकाल भैरव मन्त्रस्य कालाग्नि रुद्र ऋषिः अनुष्टुप छन्द आपदुद्धारक देव महाकाल देवता ह्रीं बीजं भैरवी वल्लभ शक्तिः दण्डपाणि कीलक सर्वाभीष्ट प्राप्तयर्थे समस्तापन्निवाराणार्थे जपे विनियोगः

ऋष्यादिन्यास—

कालाग्नि रुद्र ऋषये नमः शिरसि
अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे
आपदुद्धारक देव महाकाल देवताये नमः हृदये
ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये
भैरवी वल्लभ शक्तये नमः पादयो
सर्वाभीष्ट प्राप्तयर्थे समस्तापन्निवाराणार्थे
जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे

करन्यास—

ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः

ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः

ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः

ह्रौं कनिष्टकाभ्यां नमः

ह्रः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

अङ्गन्यास—

ह्रां हृदयाय नमः

ह्रीं शिरसे स्वाहा

ह्रूं शिखायै वषट्

ह्रैं कवचाय हूम

ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्

ह्रः अस्त्राय फट्

अब हाथ में कुमकुम मिश्रित अक्षत लेकर निम्नलिखित मन्त्र का ११ बार उच्चारण करते हुए ध्यान करें और उन अक्षतों को दीप के समक्ष अर्पित कर दें।

नील जीमूत संकाशो जटिलो रक्त लोचनः
दंष्ट्रा कराल वदनः सर्प यज्ञोपवीतवान।
दंष्ट्रायुधालंकृतश्च कपाल स्त्रग विभूषितः
हस्त न्यस्त किरीटीको भस्म भूषित विग्रहः ॥

इसके बाद निम्न मूल मन्त्र की रुद्राक्ष, मूंगा या काले हकीक माला से ११ माला जप करें

ॐ भ्रं महाकाल भैरवाय नमः ॥

प्रयोग समाप्त होने पर दूसरे दिन आप नैवेद्य, पीला कपड़ा और दीपक को किसी सुनसान जगह पर रख दें और उसके चारों और लोटे से

पानी का गोल घेरा बनाकर और प्रणाम करके वापस लौट जाएँ तथा मुड़कर न देखें।

ये प्रयोग अनुभूत है, आपको क्या अनुभव होंगे ये आप स्वयं ही जान पायेंगे। तत्व विशेष के कारण हर व्यक्ति का अनुभव दूसरे से पृथक होता है, ईश्वर आपको सफलता दें और आप इन प्रयोगों की महत्ता समझ कर गिड़गिड़ाहट भरा जीवन छोड़कर अपना सर्वस्व पायें, यही कामना है।

शत्रु संहार की सर्वोत्तम विधि काल भैरव साधना

उच्च कोटि के तान्त्रिक ग्रन्थों में बताया गया है कि चाहे किसी भी देवी या देवता की प्रसन्नता हेतु साधना की जाये किन्तु सर्वप्रथम गणपति और कालभैरव की पूजा आवश्यक है। जिस प्रकार से गणपति समस्त विघ्नों का नाश करने वाले हैं, ठीक उसी प्रकार से भैरव समस्त प्रकार के शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण सहायक हैं। किसी भी तन्त्र साधना में आने वाली बाधाओं से काल भैरव रक्षा करते हैं।

कलियुग में बगलामुखी, छिन्नमस्ता या अन्य महादेवियों की साधनाएँ तो कठिन प्रतीत होती है, यद्यपि यह साधनाएँ शत्रु संहार के लिए पूर्ण रूप से सशक्त और बलशाली हैं, परन्तु काल भैरव साधना कलयुग में तुरन्त फल दायक और शीघ्र सफलता देने में सहायक है अन्य साधनाओं में तो साधक को फल जल्दी या विलम्ब से प्राप्त हो सकता है, परन्तु इस साधना क़ा फल हाथों-हाथ मिलता है इसीलिए कलयुग में गणपति, चण्डी और भैरव की साधना तुरन्त फलदायक मानी गई है।

प्राचीन समय से शास्त्रों में यह प्रमाण बना रहा है कि किसी भी प्रकार का यज्ञ कार्य हो तो यज्ञ की रक्षा के लिए भैरव की स्थापना और पूजा सर्वप्रथम आवश्यक है। किसी भी प्रकार की पूजा हो उसमें सबसे पहले गणपति की स्थापना की जाती है तो साथ ही साथ भैरव की उपस्थिति और भैरव की साधना भी जरूरी मानी गई है, क्योंकि ऐसा

करने से दसों दिशाएँ आबद्ध हो जाती है और उस साधना में साधक को किसी भी प्रकार का भय व्याप्त नहीं होता और न किसी प्रकार का उपद्रव या बाधाएँ आती हैं ऐसा करने पर साधक को निश्चित ही पूर्ण सफलता प्राप्त हो जाती है।

काल भैरव का स्वरूप भले ही डरावना और तीक्ष्ण हो परन्तु काल भैरव अत्यन्त सौम्य और रक्षा करने वाले देवता हैं, काल भैरव हमारे जीवन में रक्षक की तरह हैं वह हमें किसी प्रकार से तकलीफ नहीं देते अपितु हमारी रक्षा ही करते हैं और हमारे लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करते हैं।

साधना प्रयोग—यहाँ पर उन ५२ भैरवों में से प्रमुख काल भैरव साधना को स्पष्ट किया जा रहा है। इसके सम्पन्न करने से जो फल प्राप्त होते हैं, वह अद्‌भुत हैं।

साधक किसी भी महीने के कृष्ण पक्ष की अष्टमी अमावस्या या काल भैरव अष्टमी के दिन स्नान करके लाल धोती धारण कर लें, सर्दी में कन्धों पर भी लाल धोती डाल सकते हैं या लाल कम्बल ओढ़ सकते हैं, इसी प्रकार स्त्री साधिका लाल साड़ी धारण कर सकती है। फिर साधक लाल आसन बिछाकर दक्षिण दिशा की ओर मुँह कर बैठ जाएँ और सामने लकड़ी का एक बाजोट रख दें उस पर लाल वस्त्र बिछा दें। उस बाजोट पर स्टील या लोहे की थाली रख दें फिर इस थाली के मध्य में कुमकुम से या ज्यादा अच्छा यह होगा कि सिन्दूर से अपनी उँगली से **ॐ भं भैरवाय नमः** लिख दें फिर इस थाली के मध्य में काल भैरव यन्त्र को स्थापित कर दें।

काल भैरव यन्त्र अपने आप में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और दुर्लभ यन्त्र माना गया है यह तांबे का बना होना चाहिए फिर इस यन्त्र में प्राण प्रतिष्ठा की हुई हो और पूर्ण रूप से नीलकण्ठ प्रयोग, काल प्रयोग, विक्रम प्रयोग तथा मृत्युदर्पनाशन प्रयोग सम्पन्न कर इसे अधिक प्रभाव युक्त बनाना

चाहिए।

फिर काल भैरव यन्त्र थाली में स्थापित करके उस यन्त्र पर सिन्दूर की ५२ बिन्दिया लगाएँ जो कि ५२ भैरव के स्वरूप की प्रतीक होती हैं फिर उस पर लाल पुष्प चढ़ावें और चावलों को सिन्दूर में रंग कर भैरव यन्त्र पर चढ़ावें इस प्रकार का पूजन कार्य करते समय **ॐ भं भैरवाय नमः** मन्त्र का उच्चारण करते रहें। इस प्रकार संक्षिप्त पूजा सम्पन्न करने के बाद भैरव यन्त्र के सामने एक कटोरी में घी और गुड़ मिलाकर भोग लगावें और तेल का दीपक जला दें। फिर उसके सामने निम्नलिखित स्तोत्र मन्त्र का एक माला पाठ करें। यह अपने आप में स्तोत्र होते हुए भी तीव्र मन्त्र के समान प्रभाव दायक है इसीलिए इसको स्तोत्र मन्त्र कहा गया है। इसके जप में मूंगे की माला का प्रयोग करना चाहिए।

भैरव मन्त्र—

यं यं यं यक्षरूपं दश दिशि विदितं भूमिकम्पायमानं।
सं सं सं संहारमूर्ति शिर मुकुट जटाशेखरं चन्द्रबिम्बम्॥
दं दं दं दीर्घकायं विकृत नख मुखं उर्ध्वरोयं करालं।
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥

उपरोक्त स्तोत्र मन्त्र का एक माला पाठ करने के बाद साधक आसन से उठ जाए और काल भैरव के सामने जो भोग लगा हुआ है वह वहीं रहने दे और तेल का दीपक निरन्तर जलते रहना चाहिए।

फिर इसी दिन रात्रि को ९:०० बजे के बाद वह भोग, जहाँ तीन रास्ते मिलते हों वहाँ ले जाकर रख दें और वह दीपक भी वहीं पर रख दें। यदि दीपक ले जाते समय मार्ग में बुझ जाए तो वही तीन रास्तों पर वह दीपक रखकर पुनः माचिस से जला सकते हैं और फिर लौट कर आ जाएँ। दीपक और भोग रखने के बाद पीछे मुड़कर नहीं देखें और घर में आकर स्नान करके कपड़े बदल लें।

इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न होता है। अब कालभैरव महायन्त्र को

घर में किसी भी स्थान पर रख सकते हैं वह महायन्त्र निश्चित ही घर की, व्यापार की, शरीर की, परिवार की और बाल बच्चों की सभी बाधाओं से पूर्ण रक्षा करता है।

यह काल भैरव साधना कोई भी पुरुष या स्त्री सम्पन्न कर सकता है। यदि कोई स्त्री इस भैरव साधना को करती है तो उसके सौभाग्य की तथा सुहाग की रक्षा होती है तथा उसके बालकों को किसी प्रकार की कोई तकलीफ नहीं होती, उन बालकों की अकाल मृत्यु नहीं होती और न घर में किसी प्रकार की परेशानी आती है। इसके अतिरिक्त यह साधना सरल साधना है। यदि इस साधना में असफलता मिल भी जाती है या यह साधना भली प्रकार से सम्पन्न न हो अथवा साधना में किसी प्रकार की त्रुटि रह जाए तब भी किसी प्रकार का अनिष्ट नहीं होता और न किसी प्रकार का विपरीत प्रभाव देखने को मिलता है।

विकराल भैरव
शत्रु बाधा निवारण प्रयोग

भैरवाष्टमी या किसी भी कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन प्रातः साधक स्नान कर लाल वस्त्र धारण करें तथा सिन्दूर का तिलक लगाये। अपने सामने एक मिट्टी की ढेरी बनाकर उस पर पानी छिड़कें, फिर सिन्दूर छिड़कें और उस पर 'काल भैरव गुटिका' स्थापित करें। ढेरी के चारों ओर काले तिल की सात ढेरियाँ बनाकर उन पर 'सात आक्रान्त चक्र' रखें, प्रत्येक चक्र पर सिन्दूर चढ़ायें। दीप और अगरबत्ती जला लें।

अपने दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि मैं अपनी 'अमुक' शत्रु बाधा के निवारण हेतु विकराल भैरव प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूँ।

अब एक पात्र में सरसों और काला तिल लेकर उसमें थोड़ा तेल और सिन्दूर डालकर मिला दें। इस मिश्रण को निम्नलिखित विकराल भैरव मंत्र का जप करते हुए काल भैरव गुटिका के समक्ष ५१ बार अर्पित करें।

मन्त्र—

विभूति भूमि नाशाय, दुष्ट क्षय कारकं, विकराल भैरवाय नमः। सर्वदुष्ट विनाशनं सेवकं सर्व कार्य सिद्धिं कुरु। ॐ विकराल भैरव, बटुक भैरव, भूत भैरव, महाभैरव महाभय विनाशनं देवता। सर्व सिद्धिर्भवेत्।

ॐ काल भैरव, श्मशान भैरव, कालरूप काल भैरव। मेरो

बैरी तेरो आहार रे। काढ़ि करेजा चखन करो कट कट। ॐ विकराल भैरव, बटुक भैरव, भूत भैरव, महाभैरव महाभय विनाशनं देवता। सर्व सिद्धिर्भवेत्।

इस प्रकार ५१ बार इस मन्त्र का जप कर धूप-दीप से भैरव जी की आरती सम्पन्न करें। भैरव गुटिका को छोड़कर बाकी सभी सामग्री काले कपड़े में बांध कर घर से बाहर जमीन में गाड़ दें और उस पर भारी पत्थर रख दें अथवा भारी पत्थर के साथ बांध कर नदी में डाल दें।

अगले तीन रविवार तक भैरव गुटिका के समक्ष इस मन्त्र का जप करें, फिर गुटिका को भी नदी में विसर्जित कर दें। यह विकराल भैरव मन्त्र अपने चमत्कार से आपको आश्चर्य चकित कर देगा।

काल भैरव साधना का एक तीक्ष्ण तांत्रिक प्रयोग

यह साधना रात्रि में करें।

अपने सामने एक सूखा नारियल, एक कपूर की डली, ११ लौंग, ११ इलायची, १ डली लोबान या धूप रखें। सरसों के तेल का दीपक जलाएँ। हाथ में नारियल लेकर अपनी मनोकामना बोलें। नारियल सामने रखें। दक्षिण दिशा की ओर देखकर इस मन्त्र का १०८ बार जाप करें। जाप के बाद इसे भैरव मन्दिर में काले कपड़े में बांधकर चढ़ा दें या फिर जल में प्रवाहित कर दें या सुनसान जगह पर छोड़ दें।

मन्त्र—

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रः। ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः। ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रः। घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रः। म्रां म्रीं म्रूं म्रः। म्रों म्रों म्रों म्रों। क्लों क्लों क्लों क्लों। श्रों श्रों श्रों श्रों। ज्रों ज्रों ज्रों ज्रों। हूँ हूँ हूँ हूँ। हूँ हूँ हूँ हूँ। फट। सर्वतो रक्ष रक्ष रक्ष रक्ष भैरव नाथ हूँ फट॥

भय बाधा निवारक बटुक भैरव साधना

जीवन में सुख और दुःख आते ही रहते हैं। जहाँ आदमी सुख प्राप्त होने पर प्रसन्न होता है, वहीं दुःख आने पर वह घोर चिन्ता और परेशानियों से घिर जाता है, परन्तु धैर्यवान व्यक्ति ऐसे क्षणों में भी शान्त चित्त होकर उस समस्या का निराकरण कर लेते हैं।

कलियुग में पग-पग पर मनुष्य को बाधाओं, परेशानियों और शत्रुओं का सामना करना पड़ता है, ऐसी स्थिति में उसके लिए मन्त्र साधना ही एक ऐसा मार्ग रह जाता है, जिसके द्वारा वह शत्रुओं और विभिन्न समस्याओं पर पूर्ण विजय प्राप्त कर सकता है, इस प्रकार की साधनाओं में '**आपत्ति उद्धारक बटुक भैरव साधना**' अत्यन्त ही सरल, उपयोगी और अचूक मानी गई है। इस बटुक भैरव साधना का फल तुरन्त प्राप्त होता है।

भैरव को भगवान शंकर का ही अवतार माना गया है, शिव महापुराण में बताया गया है—

भैरवः पूर्णरूपो हि शंकरः परात्मनः।
मूढ़ास्ते वै न जानन्ति मोहित शिवमायया॥

देवताओं ने भैरव की उपासना करते हुए बताया है कि काल की भाँति रौद्र होने के कारण ही आप 'कालराज' हैं, भीषण होने से आप 'भैरव' हैं, मृत्यु भी आपसे भयभीत रहती है, अतः आप काल भैरव हैं,

दुष्टात्माओं का मर्दन करने में आप सक्षम हैं, इसलिए आपको 'आमर्दक' कहा गया है, आप समर्थ हैं और सर्वशक्तिमान हैं। बटुक भैरव साधना के अन्तर्गत सर्वप्रथम दोनों हाथ जोड़कर बटुक भैरव का ध्यान करें—

बटुक भैरव ध्यान

वन्दे बालं स्फटिक-सदृशम्, कुन्तलोल्लासि-वक्त्रम्।
दिव्याकल्पैर्नव-मणि-मयैः, किंकिणी-नूपुराढ्यैः॥
दीप्ताकारं विशद-वदनं, सुप्रसन्नं त्रि-नेत्रम्।
हस्ताब्जाभ्यां बटुकमनिशं, शूल-दण्डौ दधानम्॥

अर्थात् भगवान् श्री बटुक भैरव बालक रूप ही हैं। उनकी देह-कान्ति स्फटिक की तरह है। घुंघराले केशों से उनका चेहरा प्रदीप्त है। उनकी कमर और चरणों में नव-मणियों के अलंकार जैसे किंकिणी, नूपुर आदि विभूषित हैं। वे उज्ज्वल रूपवाले, भव्य मुखवाले, प्रसन्न-चित्त और त्रिनेत्र-युक्त हैं। कमल के समान सुन्दर दोनों हाथों में वे शूल और दण्ड धारण किए हुए हैं। भगवान् श्री बटुक भैरव के इस सात्विक ध्यान से सभी प्रकार की अप-मृत्यु का नाश होता है, समस्त आपदाओं का निवारण होता है, आयु की वृद्धि होती है, आरोग्य और मुक्ति-पद लाभ होता है।

भगवान भैरव के बाल स्वरूप के ध्यान एवं आपदा उद्धारक स्वरूप के ध्यान के पश्चात् गन्ध, पुष्प, धूप, दीप इत्यादि से निम्नलिखित मन्त्रों के साथ '**बटुक भैरव यन्त्र**' का पूजन सम्पन्न करें—

ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीमद् आपदुद्धारण-बटुक-
भैरव-प्रीत्यर्थे समर्पयामि नमः।
ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीमद् आपदुद्धारण-बटुक-
भैरव-प्रीत्यर्थे समर्पयामि नमः।
ॐ यं वायु तत्त्वात्मकं धूपं श्रीमद् आपदुद्धारण-बटुक-

भैरव-प्रीत्यर्थे घ्रापयामि नमः।

ताम्र यन्त्र तथा चित्र को स्थापित कर आगे का साधना क्रम प्रारम्भ करना चाहिए।

साधना विधान

इस साधना को बटुक भैरव सिद्धि दिवस अथवा किसी भी रविवार को सम्पन्न किया जा सकता है। भैरव शीघ्र प्रसन्न होने वाले देव हैं। तन्त्र साधकों को नियमानुसार वर्ष में एक-दो बार तो भैरव साधनाएँ अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

साधना वाले दिन साधक रात्रि में स्नान कर, स्वच्छ गहरे रंग के वस्त्र धारण कर लें। अपना पूजा स्थल साधना के पूर्व ही धो-पौछ कर साफ कर लें। भैरव साधना दक्षिणाभिमुख होकर सम्पन्न करने से साधना में शीघ्र सफलता प्राप्त होती है।

अपने सामने एक बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर सर्वप्रथम गुरु चित्र, गुरु विग्रह अथवा गुरु चरण पादुका स्थापित करें। गुरु चित्र के निकट ही भैरव का चित्र अथवा विग्रह स्थापित कर दें। उसके पश्चात् भैरव चित्र के सामने एक ताम्र प्लेट में कुमकुम से त्रिभुज बनाकर उस पर **'बटुक भैरव यन्त्र'** स्थापित कर दें।

भैरव साधना में तेल का ही दीपक प्रज्जवलित करना चाहिए। यन्त्र स्थापन के पश्चात् बाजोट पर ही तेल का दीपक प्रज्जवलित कर उसका पूजन कुमकुम, अक्षत पुष्प इत्यादि से करें।

बटुक भैरव यन्त्र पूजन के पश्चात् 'काली हकीक माला' से निम्नलिखित बटुक भैरव मन्त्र की ७ माला मन्त्र जप करें।

ॐ रं अग्नि तत्त्वात्मकं दीपं श्रीमद् आपदुद्धारण-बटुक-
भैरव-प्रीत्यर्थे निवेदयामि नमः।

ॐ सं सर्व तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीमद् आपदुद्धारण-बटुक-
भैरव-प्रीत्यर्थे समर्पयामि नमः।

बटुक भैरव मन्त्र—

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय
ह्रीं ॐ स्वाहा॥

यह इक्कीस अक्षरों का मन्त्र अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण माना गया है, एक दिवसीय इस साधना की समाप्ति के पश्चात् नित्य बटुक भैरव यन्त्र अपने सामने स्थापित कर उसका संक्षिप्त पूजन करके एक माह तक नित्य उपरोक्त बटुक भैरव मन्त्र की एक माला जप करने से साधक की मनोकामना पूर्ण हो जाती है। एक माह अर्थात् ३० दिन मन्त्र जप के पश्चात् यन्त्र एवं माला को जल में विसर्जित कर दें।

श्री बटुक भैरव तन्त्र साधना

तन्त्र की समस्त साधनाएँ परस्पर एक-दूसरे से सम्बद्ध हैं। जैसे मन्त्र की प्रधानता रहने पर 'मन्त्र साधना' और तन्त्र की प्रधानता रहने पर 'तन्त्र साधना'। किन्तु इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि जब तन्त्र की साधना की जाती है तो उसमें मन्त्र अथवा यन्त्र का समावेश नहीं होगा।

श्री बटुक-भैरव की तन्त्र साधना भी इसी प्रकार की एक साधना है। इस तन्त्र साधना की गम्भीरता को प्राचीन तन्त्र ग्रन्थों के अनेक पटलों में व्यक्त किया गया है।

'शिवागमसार' में प्रदर्शित 'पटल' में कहा गया है कि—

अन्ये देवास्तु कालेन प्रसन्नाः सम्भवन्ति हि।
बटुकः सेवितः सद्यः प्रसीदति ध्रुवं शिवे॥

अर्थात्—अन्य देवता तो दीर्घकाल तक उपासना के पश्चात् प्रसन्न होते हैं, किन्तु हे पार्वती! श्री बटुकभैरव नाथ तो विधिपूर्वक उपासित होने पर शीघ्र ही प्रसन्न होते हैं, यह ध्रुव सत्य है। इसीलिये सर्वकामनाओं की सिद्धि के लिये श्रीबटुकभैरव की उपासना करनी चाहिये। इसी प्रसंग में यह भी कहा गया है कि—'साधक को सर्वप्रथम वीर-शान्ति करनी

चाहिये, क्योंकि वे श्रीभैरवनाथ की आज्ञा से अपूजित रहने पर साधकों के मनोरथों को नष्ट करते रहते हैं।

वीर शान्ति प्रयोग

इसके अन्तर्गत सर्वप्रथम साधक अपने समक्ष 'अष्टदल, षोडशदल, और भुपूर' से युक्त एक मण्डल बनाकर उसमें मूलमन्त्र द्वारा अष्टभैरव, षोडश भैरव, अष्ट मातृका तथा दशदिग्पालों की पूजा करके पायस का नैवेद्य अर्पित करें। तदनन्तर वीर शान्ति का पाठ करते हुए—१. चण्ड, २. प्रचण्ड, ३. ऊर्ध्वकेश, ४. भीषण, ५. अभीषण, ६. व्योमकेश, ७. व्योम-बाहु तथा ८. व्योम व्यापक' इन आठ वीरों की आवाहनादि पूर्वक नैवेद्य समर्पित करके पूजा करे।

वन्ध्या पुत्रप्रद प्रयोग

आधा पल हल्दी और उतना ही बचा (वछ) का चूर्ण, गोमूत्र तथा गोघृत मिला कर उसकी गोली बनाये तथा उसे कमल की पंखुड़ी में रखकर बटुकनाथ के समक्ष रखें और १००० संख्या में बटुक भैरव मन्त्र का जप करें। बाद में उसे महौषधि के रूप में प्रभु प्राप्ति की कामना से वह गोली स्त्री को खिला दें तो अवश्य पुत्र प्राप्ति होगी। वह पुत्र आयुष्मान, धन-धान्य से युक्त, विद्या एवं बल से सम्पन्न तथा सुन्दर आकृति वाला होगा।

रुद्रयामलतन्त्र के अन्तर्गत श्री बटुक भैरव षट्कर्म प्रयोग विधि

१. स्तम्भन प्रयोग—रविवार के दिन प्रातःकाल श्मशान में जाकर मूलमन्त्र का १०,००० बार जप करें तथा अर्ध रात्रि के समय जायफल, जावित्री तथा कनेर के फूल घृत में मिलाकर दशांश हवन करें तो शत्रु स्तम्भन होता है।

२. मोहन प्रयोग—सोमवार को मध्याह्न के समय कुएँ के जल से

स्नान कर गूणी में बैठकर मूलमन्त्र का १०,००० जप करें तथा महिष का घृत, दही और चीनी इनको मिलाकर हवन करें तथा हवन का तिलक करें। तब जिसे देखें वही वश में हो जाता है।

३. मारण प्रयोग—मंगलवार को अर्धरात्रि के समय चौराहे पर जाकर बटुक भैरव मूलमन्त्र का १०,००० जप करें। घृत, खीर, लाल चन्दन व स्त्री के केश मिलाकर दशांश हवन करें तो काल के समान होने पर भी शत्रु अवश्य नाश को प्राप्त होता है।

४. आकर्षण प्रयोग—बुधवार को जब चार घड़ी सूर्य रहे तब एकान्त घर में जाकर मूलमन्त्र का जप १०,००० करे। फिर घृत, खाँड, सनैली का फूल अथवा कलेर के फूल, विल्व का फल, इन सबकी दशांश आहुति दें तो रम्भादिक अप्सरा भी आकर्षित होकर साधक के समीप आती है।

५. वशीकरण प्रयोग—बृहस्पतिवार को प्रातःकाल सूर्योदय के समय नदी के किनारे जाकर मूलमन्त्र का १०,००० जप करें तथा घृत, आंवला और बिल्वफल का दशांश हवन करें तो किसी को भी वशीकरण कर सकते हैं।

६. उच्चाटन प्रयोग—शुक्रवार के दिन सायंकाल वटवृक्ष के नीचे बैठ कर मूलमन्त्र का १०,००० जप करें फिर घृत, दूध, दही, ईख का रस, गोमूत्र और खीर मिलाकर दशांश का हवन करें तो इससे शत्रु का उच्चाटन होता है।

अथ मूलमन्त्र

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणं कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ॐ स्वाहा॥

भैरवमन्त्र

ॐ बं बं बं बटुकभैरवाय नमः। कृष्णभैरवाय नमः।

विविध हवन सामग्री प्रयोग

१. वशीकरण के लिये—लाल पुष्प।
२. लक्ष्मी प्राप्ति के लिये—कमलपुष्प।
३. दीर्घ आयु के लिये—दूर्वा।
४. रोगनाशक के लिये—गुड।
५. वस्त्र प्राप्ति के लिये—वस्त्र।
६. धान्यप्राप्ति के लिये—धान्य।
७. सर्वसिद्धि के लिये—पुत्रजीवफल।
८. पुत्र प्राप्ति के लिये—अश्वत्थसमिधा।
९. शत्रुनाश के लिये—लवण-घृत।
१०. वाक्सिद्धि के लिये—पलाशपुष्प।
११. कवित्व प्राप्ति के लिये—कर्पूर-अगरु-गूगल।
१२. राजपाट प्राप्ति के लिये—सरसों तथा पटसन।
१३. अन्नवृद्धि के लिये—घृताक्त अन्न।
१४. चिरंजीवी होने के लिये—लाजा और घृत।

इसी प्रकार बहुत सी वस्तुओं के द्वारा 'तिलक' करने से, 'अञ्जन' बनाकर लगाने से, 'मार्जन' करने से तथा अन्य तान्त्रिक विधानों से भी कार्यसिद्धियाँ होती हैं।'

इन सब में श्रीबटुकभैरव का मन्त्रजप आवश्यक है। आपदुद्धारक बटुक-भैरव-अष्टोत्तर शत नामावली का पाठ भी इन कार्यों की सिद्धि के लिये अत्यन्त उपयोगी माना गया है। ग्रहण अथवा उत्तम पर्वों के अवसर पर मन्त्र का पुरश्चरण कर लेने से ये प्रयाग शीघ्र फल-प्रदान करने वाले कहे गये हैं।

बटुक भैरव विलक्षण मन्त्र

आप अपने जीवन में आने वाली अन्य किसी समस्या से निजात

पाने के लिए बटुक भैरवजी की साधना कर अद्भुत परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। **ॐ ह्रीं वां बटुकाये क्षौं क्षौं आपदुद्धाराणाये कुरु कुरु बटुकाये स्वाहा ॥** इस मन्त्र का जाप आप प्रतिदिन ११ माला २१ मंगलवार तक जाप करें। इस साधना के बाद अपराध-क्षमापन स्तोत्र का पाठ भी करने के अलावा श्री बटुक भैरव अष्टोत्तर शत-नामावली का पाठ भी करना चाहिए। आप इस साधना को किसी भी मंगलवार को शाम ७ से १० बजे के बीच कर सकते है। साधना करने के लिए जरूरी है कि आपके पास बटुक भैरव यन्त्र हो, जिसे आप भैरवजी के चित्र के समीप लाल वस्त्र के ऊपर रखें। फिर चित्र या यन्त्र के सामने हार, फूल, थोड़े काले उड़द चढ़ाकर, पूजा के बाद लड्डू का भोग लगा दें। ऐसा करने से आपको कष्टों से छुटकारा मिलता है व बटुक भैरवजी की कृपा मिलती है।

आप बटुक भैरव तन्त्र साधना के द्वारा अपने ऊपर हुए किसी भी जादू-टोटके का नाश कर सकते है। जिसके लिए आपको ये मन्त्र बोलना होता है, मन्त्र—**ॐ भं भैरवाय आपदुद्धारणाय तन्त्र बाधाम नाशय नाशय।** बताए मन्त्र का सात माला जाप करने से पहले ही आप आटे के तीन दीपक जलाकर कपूर से आरती करें। इसी प्रकार अगर आप यदि किसी की लम्बी आयु के लिये दुआ कर रहे है, तो इस मन्त्र का सहारा ले सकते है।

मन्त्र—ॐ भं भैरवाय आपदुद्धारणाय कुमारं रु रु स्वरूपाय स्वाहा: ।

पूर्व दिशा की ओर मुख करके आपको इस मन्त्र का पाँच माला जाप करना होता है, फिर आप गरीबों को खाना खिला दे। भैरवजी की कृपा से आपकी इच्छा पूर्ण हो जाएगी।

श्री बटुक भैरव यन्त्र साधना

यन्त्र साधना में इष्टदेव का आवास यन्त्र में ही माना जाता है। प्रतिमा के समान प्रतीक स्वरूप यन्त्र की शस्त्राज्ञा के अनुसार सुवर्ण, रजत, ताम्र, अष्टधातु, त्रिधातु अथवा स्फटिक आदि मणियों पर आकृति बनवाकर पूजा की जाती है। भोजपत्र पर लिखकर अथवा किसी पात्र में ही नित्य लिखकर भी पूजा करते है।

पूजा के लिए और धारण करने के लिए यन्त्र बनाये जाते हैं।

श्री बटुक भैरव पूजा यन्त्र

मध्ये चाष्टदलं पद्म कर्णिकाकेसरोज्ज्वलम्।
त्रिकोणं च ततः कृत्वा षट्कोणं च ततो न्यसेत्॥
वर्तु लं चाष्टपत्रं च चतुरस्त्रत्रयात्मकम्।

इस प्रमाण के अनुसार श्रीभैरव का यन्त्र विधिपूर्वक बनाकर प्रतिष्ठित कर लें तथा बाद में जप करने से पूर्व प्रतिदिन इसकी पूजा करें। यन्त्र आगे दिया गया है।

आरोग्य व ऐश्वर्यदायक श्री बटुक भैरव यन्त्र

अष्टदल, षट्कोण तथा त्रिकोण से भी बटुक भैरव-यन्त्र की रचना की जाती है। जिसमें अष्टभैरव आसिताङ्गादि अष्टदल में, षडङ्ग षट्कोण में, डाकिनीपुत्रादि त्रयोदश पुत्रवर्ग षट्कोण के बाहर तथा मध्य में, बाह्य कमलपत्रों में दस लोकेशबटुक दसों दिशाओं में, पुनः वहीं श्रीकण्ठादि और बाह्य भाग में क्रोधीश्वरादि तथा ३ नकुलीशादि, दिव्य, अन्तरिक्ष एवं

भौम योगीश की शाकिनी सहित पूजा की जाती है। इस यन्त्र की आराधना से आयु, आरोग्य तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।
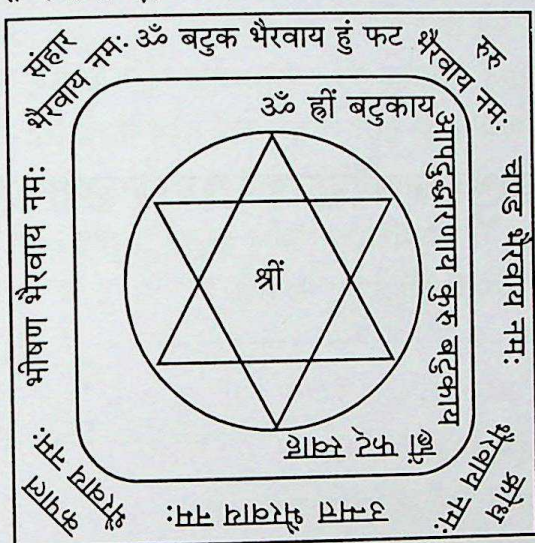
श्री बटुक भैरव यन्त्र

श्री भैरव सिद्धि पूजन यन्त्र

भगवान भैरवदेव का ध्यान पूजन करने के उपरान्त सिंदूर का चौका देकर उसमें एक त्रिकोण आकार के यन्त्र की रचना करें, जिसका प्रारूप नीचे दिया गया है—
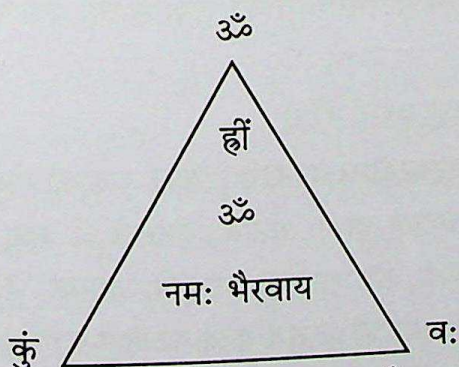
इस यंत्र में जिस स्थान पर 'ह्रीं' लिखा है, वहाँ दीपक रखकर संकल्प, न्यास, ध्यान, आवाहन आदि द्वारा भैरवदेव का षोडशोपचार

पूजन करना चाहिए।

जप व होम विधि—इस यंत्र का बड़े आकार में निर्माण करके विधिवत पूजन करें।

पूजनोपरान्त त्रिकोण के समीप तेल में पके हुए उड़द के बड़े रखकर उसके समीप ही दही व गुड़ रखें तथा थोड़ी-सी सामग्री अलग से पवित्र भी रख दें। भोग में बड़े, दही व गुड़ मिलाकर रखना चाहिए। भैरवदेव के भोग में निम्नलिखित पाँच वस्तुएँ प्रयुक्त होती हैं—

१. तेल में पके हुए उड़द के बड़े

२. गुड़

३. दही

४. मद्य (शराब)

५. अग्नि में भुनी हुई साबुत मछली

पूर्वोक्त विधि से भोगादि रखकर एक हजार की संख्या में भैरवदेव के मूल मंत्र का जाप करना चाहिए। तत्पश्चात् जप का दशांश अर्थात् एक सौ की संख्या में घृत व शहद की आहुतियाँ देकर होम करें।

इस प्रकार ग्यारह दिन तक जप, पूजन और होम करने से भैरवदेव की सिद्धि होती है। इस प्रकार के तीन प्रयोग करने के बाद कितना भी कठिन कार्य क्यों न हो, भैरवदेव की कृपा से वह यथाशीघ्र पूर्ण हो जाता है।

भैरव विघ्नहरण यंत्र

विधि—बटुक भैरव के आगे अंकित यन्त्र को गोरोचन व कुमकुम से भोजपत्र पर स्वच्छ होकर बनायें। लिखने के बाद पूर्वोक्त ढंग से पूजन, प्राण-प्रतिष्ठा कर यन्त्र के बीच में 'अमुक' की जगह जिसके ऊपर कोई विपत्ति आई हो, उस व्यक्ति का नाम लिखें। फिर उसे कवच में भरकर उसके दाएँ हाथ में बाँध दें (स्त्री के बाएं हाथ में बांधें)। इससे आपत्तियों से उसका उद्धार हो जाएगा, धन की वृद्धि होगी, शत्रु का नाश

होगा तथा कभी कोई अनिष्ट न होगा। यह विघ्नहरण यन्त्र है—

ह्रीं ह्रीं

ह्रीं ह्रीं

ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणं

कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं

अमुक

ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणं कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं

ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणं कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं

ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणं कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं

ह्रीं ह्रीं

ह्रीं ह्रीं
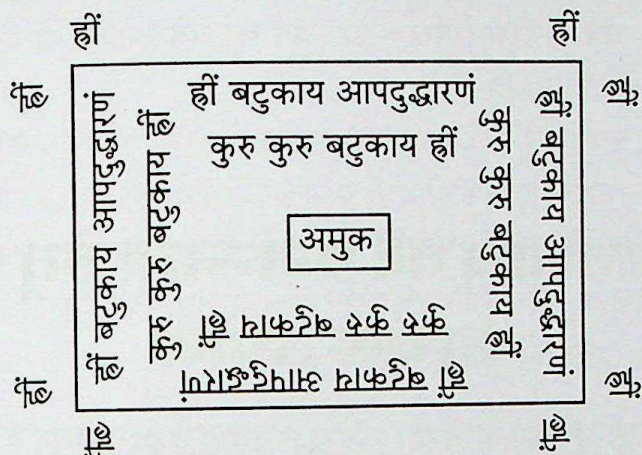
अभीष्ट सिद्धि भैरव यन्त्र

ॐ भैरवाय नमः

१२	५१	२	८
७	३	६६	१५
१८	८३	९	१
४	६	१४	१७

ॐ भैरवाय नमः

ॐ भैरवाय नमः

ॐ भैरवाय नमः

विधि—यदि किसी व्यक्ति का कोई कार्य सफल या पूर्ण न होता हो और मन की अभिलाषा मन में ही रह जाती हो तो इस यंत्र को भोजपत्र पर काकरे के रस से, दाड़िम (अनार) की कलम द्वारा संध्याकाल में लिखें। '**ॐ भैरव नमः**' मंत्र का एक सौ आठ बार जप करें। तदुपरान्त यन्त्र को किसी सुनसान जगह पर भूमि में गाड़ आएँ। कुछ ही समय में सभी कार्य पूर्ण होने लगेंगे। इसे भैरव हरसिद्धि यन्त्र भी कहते हैं।

भैरवनाथ की प्रसन्नता हेतु दो अचूक उपाय

यूँ तो भगवान भैरवनाथ को खुश करना बेहद आसान है, लेकिन अगर वे रूठ जाएँ तो मनाना भी बेहद मुश्किल। अब प्रस्तुत है काल भैरव अष्टमी पर किए जाने वाले कुछ अचूक सरल उपाय जो निश्चित रूप से भैरव महाराज को प्रसन्न करेंगे।

१. रविवार, बुधवार या गुरुवार के दिन एक रोटी लें। इस रोटी पर अपनी तर्जनी और मध्यमा अंगुली से तेल में डुबोकर लाइन खींचे। यह रोटी किसी भी दो रंग वाले कुत्ते को खाने को दीजिए। यदि कुत्ता यह रोटी खा ले तो समझो कि भैरवनाथ प्रसन्न हो गये और अगर कुत्ता रोटी सूँघ कर आगे बढ़ जाए तो इस क्रम को जारी रखें लेकिन सिर्फ हफ्ते के इन्हीं तीन दिनों में (रविवार, बुधवार या गुरुवार)। यही तीन दिन भैरव नाथ के माने गए हैं।

२. उड़द के पकौड़े शनिवार की रात को कड़वे तेल में बनाएँ और रात भर उन्हें ढंककर रखें। सुबह जल्दी उठकर प्रातः ६ से ७ के बीच बिना किसी से कुछ बोलें घर से निकले और रास्ते में मिलने वाले पहले कुत्ते को खिलाएँ। याद रखें पकौड़े डालने के बाद कुत्ते को पलट कर ना देखें। यह प्रयोग सिर्फ रविवार के लिए हैं।

द्वितीय खण्ड

भैरव साधना

भैरव महिमा

भैरव की उपासना करने वाला साधक अणिमादि आठ प्रकार की सिद्धियों के गुणों से युक्त हो जाता है। ज्ञान, क्रिया, आनन्द आदि शक्ति रूप योगिनियों का प्रिय होकर साधक सभी वर्णों का अधिपति बन जाता है तथा अमरता को प्राप्त कर लेता है। वह जीवित रहता हुआ और सांसारिक कर्म में प्रवृत्त होता हुआ भी जीवन्मुक्त होता है।

हवन, पूजा, कथा, जप तथा तप इन सबका बोध साधक भैरव उपासना से प्राप्त कर लेता है। साध्य को प्राप्त करके साधक पूर्ण निर्मल होकर साक्षात् ब्रह्म हो जाता है।

मानसं चेतना शक्तिरात्मा चेति चतुष्टयम्।
यदा प्रिये परिक्षीणं तदा तद् भैरवं वपुः॥

काल संकर्षण तन्त्रोक्त विस्तृत श्रीमद् बटुक भैरव स्तोत्रम्

प्राचीन तन्त्र ग्रन्थ काल संकर्षण तन्त्र में भी बटुक भैरव जी का यह विस्तृत स्तोत्र न्यास, ध्यानादि के साथ दिया गया है। यह अद्भुत तन्त्र ग्रन्थ मुझे अपने गुरुवर से आशीर्वाद स्वरूप प्राप्त हुआ था, उन्हीं की आज्ञा से यह स्तोत्र यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

विनियोग:—ॐ अस्य श्री बटुकभैरवस्तोत्रमन्त्रस्य **कालाग्निरुद्रऋषिः अनुष्टुब्छन्दः आपदुद्धारकबटुकभैरवदेवता वँबीजं ह्रींशक्तिः ॐकीलकं बटुकभैरवप्रीतये पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः

ॐ ह्रीं वँ बृहदारण्यकऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करें।

ॐ ह्रीं वँ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करें।

ॐ ह्रीं वँ श्रीबटुकभैरवदेवताय नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करें।

ॐ ह्रीं वँ वँबीजाय नमः गुह्ये न्यस्यामि। गुह्य स्पर्श करें।

ॐ ह्रीं वँ ह्रींशक्तये नमः पादयोः न्यस्यामि। दोनों पैर स्पर्श करें।

ॐ ह्रीं वँ ॐकीलकाय नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करें।

ॐ ह्रीं वँ ॐ ह्रीं वँ बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय

ह्रीं सर्वाङ्गेन्यस्यामि। सिर से पैर तक सर्वांग स्पर्श करें।

कराङ्गन्यासः

ॐ ह्रीं वाँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों अंगुष्ठ स्पर्श करें।

ॐ ह्रीं वाँ तर्जनीभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों तर्जनी अंगुलि स्पर्श करें।

ॐ ह्रूं वूं मध्यमाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करें।

ॐ ह्रैं वैं अनामिकाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करें।

ॐ ह्रौं वौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करें।

ॐ ह्रः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ भाग स्पर्श करें।

हृदयादिन्यासः

ॐ ह्राँ वाँ हृदयाय नमः न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करें।

ॐ ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा न्यस्यामि। ललाट स्पर्श करें।

ॐ ह्रूं वूं शिखायै वषट् न्यस्यामि। शिखा स्पर्श करें।

ॐ ह्रैं वैं कवचाय हूम् न्यस्यामि। दोनों बाहु स्पर्श करें।

ॐ ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट् न्यस्यामि। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करें।

ॐ ह्रः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। चारों तरफ चुटकी बजाते हुए हथेली बजाये।

ध्यानम्

करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुः,

जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥
नीलजीमूतसंकाशं नीलाञ्जनसमप्रभम्॥ १॥
अष्टबाहुत्रिनयनं चतुर्बाहुद्विबाहुकम्।
दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसङ्कुलम्॥ २॥
भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्णशिरोरुहम्।
दिगम्बरं कुमारीशं बटुकाख्यं महाबलम्॥ ३॥
खट्वाङ्गमसिपाशं च शूलदक्षिणभागतः।
डमरुञ्च कपालं च वरदं भुजगं तथा॥ ४॥
अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम्।
एवमेव कृतं ध्यानं भैरवः सर्वकामदः॥५॥

ईश्वर उवाच

श्रृणुदेवि प्रवक्ष्यामि भैरवस्य महात्मनः।
बटुकास्य शतं नाम्नामष्टोत्तरमनुत्तमम्॥ १॥
आपदुद्धारकमिदं सर्वशत्रुनिवारणम्।
अपमृत्युहरं दिव्यमाधिव्याधिनिबर्हणम्॥ २॥
विश्वेषां वश्यजननं विवादे विजयप्रदम्।
मारीभये चौरभये वाताग्निजले भये॥ ३॥
सकृत्पठनमात्रेण सर्वोपद्रवनाशनम्।
धनसम्पत्तिजननं पुत्रपौत्रविवर्धनम्॥ ४॥
नरनारिनृपाणां च वशीकरणमम्बिके।
सर्वाशास्त्रेषु सारं यद्वेदादभ्युद्धतं मया॥ ५॥
जदहं ते प्रवक्ष्यामि वटुकस्तोत्रमुत्तमम्।
अस्य श्रीबटुकस्तोत्रमन्त्रस्य सुमहीयसः॥ ६॥
ऋषिः कालग्निरुद्रश्च छन्दोऽनुष्टुप् प्रकीर्तितम्।
आपदुद्धारको देवो देवतावटुकेश्वरः॥७॥
भैरवीवल्लभः शक्तिर्बीजं ह्रींकार उच्यते।

कीलकं दण्डपाणिः स्यान्नीलो वर्णः प्रकीर्तितः ॥८॥
समस्तशत्रुदमने समस्तापन्निवारणे।
सर्वाभीष्टप्रदाने च विनियोगः प्रकीर्तितः ॥९॥
अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि सावधाना शृणु प्रिये।
यस्य स्मणमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥१०॥
नीलजीमूतसंकाशो जटिलो रक्तलोचनः।
दंष्ट्राकरालवदनः सर्पयज्ञोपवीतवान् ॥११॥
दंष्ट्रायुधालंकृतश्च कपालस्त्रग्विभूषितः।
हस्तन्यस्तकिरीटीको भस्मभूषितविग्रहः ॥१२॥
नागराजकटीसूत्रो वालमूर्तिदिगम्बरः।
मञ्जुशिञ्जानमञ्जीरपादकम्पितभूतलः ॥१३॥
भूतप्रेतपिशाचैश्च सर्वतः परिवारितः।
योगिनीचक्रमध्यस्थो मातृमण्डलवेष्टितः ॥१४॥
अट्टहासस्फुरद्वक्त्रो भृकुटीभीषणाननः।
भक्तसंरक्षणार्थाय दिक्षु भ्रमणतत्परः ॥१५॥
एवं भूतस्तु वटुको ध्यातव्यो भैरवीश्वर।
एवं ध्यात्वा ततो नाम्नामष्टोत्तरशतं विभो ॥१६॥
सावधानेन मनसा भक्तियुक्तेन कीर्तयेत्।
भक्तानाञ्च हितार्थाय देवोवटुकभैरवा ॥१७॥
तारो मायातदनु वटुकाय द्वयं क्ष्रौं तत्,
आपदुद्धारणाय शिरसि ज्ञेयोकुरुद्वन्द्वमुच्चैः।
ह्रीं बीजं यद्वटुकपुटितं भौवनमग्निजाया,
एषा विद्या बटुकभव ते वाञ्छितं मे ददातु ॥१८॥
ॐ ह्रीं वँ बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु
बटुकाय ह्रीं स्वाहा। इति मूलमन्त्रम् ॥

अथ स्तोत्रम्

ॐ ह्रीं बटुको वरदः शूरो भैरवः कालभैरवः।
भैरवीवल्लभो भव्यो दण्डपाणिर्दयानिधिः॥१९॥
वेतालवाहनो रौद्रो रुद्रभ्रुकुटिसम्भवः।
कपाललोचनः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी॥२०॥
आपदुद्धारणो धीरो हरिणाङ्कशिरोमणिः।
दंष्ट्राकरालो दृष्टौष्ठो धृष्टो दुष्टनिबर्हणः॥२१॥
सर्पाहारः सर्पशिरः सर्पकुण्डलमण्डितः।
कपाली करुणापूर्णः कपालीकशिरोमणिः॥२२॥
श्मशानवासी मांसाशी मधुमत्तोट्टहासवान्।
वाग्मी वामव्रतो वाङ्मी वामदेवप्रियङ्करः॥२३॥
वनेचरो गिरिचरो वसुदो वायुवेगवान्।
योगी योगव्रतधरो योगिनी वल्लभो युवा॥२४॥
वीरभद्रो विश्वनाथो विजेता वीरवन्दितः।
भूताध्यक्षो भूतधरो भूतभीतिनिवारणः॥२५॥
कलङ्कहीनः कङ्काली क्रूरः कुक्कुरवाहनः।
गाढो गहनगम्भीरो गणनाथसहोदरः॥२६॥
देवीपुत्रो दिव्यमूर्तिर्दीप्तिमान्दीप्तलोचनः।
महासेनप्रियकरो मान्यो माधवमातुलः॥२७॥
भद्रकालीपतिर्भद्रो भद्रदो भद्रवाहनः।
पशूपहाररसिकः पाशी पशुपतिः पतिः॥२८॥
चण्डः प्रचण्डचण्डेशश्चण्डी हृदयनन्दनः।
दक्षो दक्षाध्वरहरो दिग्वासा दीर्घलोचनः॥२९॥
निरान्तको निर्विकल्पः कल्पः कल्पान्तभैरवः।
मदताण्डवकन्मनो महादेवप्रियो महान्॥३०॥
खट्वाङ्गपाणिः खातीतः खरशूलः खरान्तकृत्।

ब्रह्माण्डभेदनो ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मणपालकः ॥ ३१ ॥
दिक्चरो भूचरो भूष्णुः खेचरो खेलनप्रियः ।
सर्वदुष्टप्रहर्त्ता च सर्वरोगनिषूदनः ॥ ३२ ॥
सर्वकामप्रदः शर्वः सर्वापापनिकृन्तनः ।
इत्थमष्टोत्तरशतं नाम्नां सर्वसमृद्धिदम् ॥ ३३ ॥
आपदुद्धारजनकं वटुकस्य प्रकीर्तितम् ।
य एतच्छ्णुयानित्यं लिखेद्वा स्थापयेग्दृहे ॥ ३४ ॥
धारयेद्वा गलेबाहौ तस्य सर्वाः समृद्धयः ।
न तस्य दुरितं किञ्चिन्न चौरनृपज भयम् ॥ ३५ ॥
न चापमृत्युरोगेभ्यो डाकिनीभ्यो भयं नहि ।
न कूष्माण्डग्रहादिभ्यो नापमृत्योन च ज्वरात् ॥ ३६ ॥
मासमेकं त्रिसन्ध्यं च शुचिर्भूत्वा पठेन्नरः ।
सर्वदारिद्र्यनिर्मुक्तो निधिं पश्यति भूतले ॥ ३७ ॥
मसद्वयमधीयानः पादुकासिद्धिमान्भवेत् ।
अञ्जनं गुटिकाखड्गं धातुवादरसायनम् ॥ ३८ ॥
सारस्वतं च वेतालवाहनं बिलसाधनम् ।
कार्यसिद्धिं महासिद्धिं मन्त्रं चैव समीहितम् ॥ ३९ ॥
वर्षमात्रमधीयानः प्राप्नुयात्साधकोत्तमः ।
एतत्ते कथितं देवि! गुह्याद्गुह्यतरं परम् ॥ ४० ॥
कालसङ्कर्षणीतन्त्रे कल्कीकल्मषनाशनम् ।
अष्टोत्तरशतं नाम्ना भैरवस्य महात्मनः ॥ ४१ ॥

कालसङ्कर्षणतन्त्रोक्त श्रीमद्बटुकभैरवस्तोत्रं सम्पूर्णम्

बटुक भैरव स्तोत्रम्

बटुक भैरव की उत्पत्ति का वर्णन

शक्ति संगम तन्त्र के अन्तर्गत काली खण्ड में बटुक भैरव देव की उत्पत्ति का विस्तृत वर्णन किया गया है। इसके अनुसार आपद् नामक एक राक्षस था। वह कठोर तपस्या करके सभी देवताओं से अधिक शक्तिशाली हो गया था। आपद् राक्षस को यह वरदान प्राप्त हुआ था कि उसकी मृत्यु विशिष्ट तेज एवं गुणों से युक्त पाँच वर्षीय बालक द्वारा ही हो सकती थी। जब इस राक्षस के अत्याचार से सभी प्राणी त्राहि-त्राहि करने लगे और देवता भी भयभीत हो गये, तब इसके वध हेतु विचार-विमर्श किया गया।

इस प्रयास में सभी देवताओं के शरीर से तपोबल से एक तेजोधारा उत्पन्न हुई, यह धारा एक निश्चित बिन्दु पर पुञ्जीभूत हो गई। इसी तेजस पुञ्ज से पंचवर्षीय बटुक का आविर्भाव हुआ। इसी बटुक बालक ने आपद् नामक राक्षस से युद्ध करके उसका वध किया और देवताओं को संकट मुक्त किया। इस बालक के द्वारा तीनों लोको की रक्षा करने के कारण समस्त देवताओं ने इन्हें 'आपदुद्धारक बटुक भैरव' के नाम से विभूषित किया।

आपदुद्धारक बटुक भैरव स्तोत्रम्

समस्त आपत्तियों व विघ्न-बाधाओं का अन्त करने वाला यह आपदुद्धारक-बटुक भैरव स्तोत्र अति महत्त्वपूर्ण है। जो प्राणी इस स्तोत्र

का जाप अङ्गन्यास, करन्यास व देहन्यास करने के पश्चात् करते हैं, उनके समस्त दुःखों का अन्त होता है। शत्रुओं का विनाश होता है, नव ग्रहों की पीड़ाओं से मुक्ति होती है, असाध्य रोग व ज्वर की समाप्ति होती है। यह स्तोत्र आयु, पुत्र, पौत्रादि की वृद्धि करवाने वाला है। इसके नियमित पाठ से दरिद्रता का नाश होता है। अतः अपनी सुख समृद्धि चाहने वाले प्रत्येक प्राणी को इस स्तोत्र का पाठ नित्यप्रति करना चाहिए।

स्तोत्र प्रारम्भ

मेरुपृष्ठे सुखासीनं देवदेवं जगद्गुरुम्।
शङ्करं परिपप्रच्छ पार्वती परमेश्वरम्॥ १॥

॥ पार्वत्युवाच॥

भगवन् सर्वधर्मज्ञ! सर्वशास्त्रगमादिषु।
आपदुद्धारणं मन्त्रं सर्वसिद्धिप्रदं नृणाम्॥ २॥
सर्वेषां चैव भूतानां हितार्थं वाञ्छितं मया।
विशेषतस्तु राज्ञां वै शान्ति-पुष्टिप्रसाधनम्॥ ३॥
अङ्गन्यास-करन्यास-देहन्यास-समन्वितम्।
वक्तुमर्हसि देवेश मम हर्ष-विवर्द्धनम्॥ ४॥
श्रृणु देवि महामन्त्रमापदुद्धारहेतुकम्।
सर्वदुःखप्रशमनं सर्वशत्रुविनाशनम्॥ ५॥
अपस्मारादिरोगाणां ज्वरादीनां विशेषतः।
नाशनं स्मृतिमात्रेण मन्त्रराजमिमं प्रिये॥ ६॥
ग्रहरोगभयानां च नाशनं सुखवर्द्धनम्।
स्नेहाद् वक्ष्यामि ते मन्त्रं सर्वसारमिमं प्रिये॥ ७॥
सर्वकामार्थदं पुण्यं राज्य-भोगप्रदं नृणाम्।
आपदुद्धारणमिति मन्त्रं वक्ष्याम्यशेषतः॥ ८॥
प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य देवीप्रणवमुद्धरेत्।
बटुकायेति वै पश्चादापदुद्धारणाय च॥ ९॥

कुरुद्वयं ततः पश्चाद् बटुकाय पुनः क्षिपेत्।
देवीप्रणवमुद्धृत्य मन्त्रोद्धारमिमं प्रिये॥ १०॥
मन्त्रोद्धारमिमं देवि त्रैलोक्ये चातिदुर्लभम्।
ॐ ह्रीं बं बटुकाय आपदुद्धारणाय-
कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं।
अप्रकाश्यमिमं मन्त्रं सर्वशक्ति-समन्वितम्॥ ११॥
स्मरणादेव मन्त्रस्य भूत-प्रेत-पिशाचकाः।
विद्रवन्त्यतिभीता वै कालरुद्रादिव प्रजाः॥ १२॥
पठेद्वा पाठयेद्वापि पूजयेद्वापि पुस्तकम्।
नाग्निचौरभयं तस्य ग्रहराजभयं तथा॥ १३॥
न च मारीभयं किञ्चित् सर्वत्र सुखवान् भवेत्।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं पुत्र-पौत्रादिसम्पदः॥ १४॥
भवन्ति सततं तस्य पुस्तकस्यापि पूजनात्।
न दारिद्र्यं न दौर्भाग्यं नापदां भयमेव॥ १५॥

॥ पार्वत्युवाच॥

क एष भैरवो नाम आपदुद्धारणो मतः।
त्वया च कथितो देव भैरवः कल्पवित्तमः॥ १६॥
तस्य नामसहस्त्राणि अयुतान्यर्बुदानि च।
सारमुद्धृत्य तेषां वै नामाष्टशतकं वद॥ १७॥
यानि सङ्कीर्तयन्मर्त्यः सर्वदुःख-विवर्जितः।
सर्वान्कामानवाप्नोति साधकः सिद्धिमेव च॥ १८॥

॥ महादेव उवाच॥

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि भैरवस्य महात्मनः।
आपदुद्धारणस्येदं नामाष्टशतमुत्तमम्॥ १९॥
सर्वपापहरं पुण्यं सर्वापत्तिविनाशनम्।
सर्वकामार्थदं देवि साधकानां सुखावहम्॥ २०॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वोपद्रवनाशनम्।
आयुष्करं पुष्टिकरं श्रीकरं च यशस्करम्॥२१॥
नामाष्टशतकस्यास्य छन्दोऽनुष्टुप् प्रकीर्तितः।
बृहदारण्यको नाम ऋषिर्देवोऽथ भैरवः॥२२॥
ह्रीं बीजं बटुकः शक्तिः प्रणवः कीलकं मतम्।
शक्तिकं कीलकं शेषमिष्टसिद्धौ नियोजयेत्॥२३॥
अष्टवाहुं त्रिनयनमिति बीजं समाहितम्।
आरोग्यायुरभीष्टश्रीसिद्ध्यर्थं विनियुज्यते॥२४॥
सर्वकामार्थसिद्ध्यर्थं विनियोगः प्रकीर्तितः।
देहान्तं न्यासकं चैव पूर्वं कुर्याच्च साधकः॥२५॥

अङ्गन्यासः

ॐ ह्रां बां हृदयाय नमः, इति तर्जनीमध्यमानाभिर्हृदि।
ॐ ह्रीं बों शिरसे स्वाहा, इति तर्जनीमध्यमाभ्यां शिरसि।
ॐ ह्रूं बूं शिखायै वषट्, इति मुष्टिवद्धाङ्गुष्ठेन शिखायाम्।
ॐ ह्रैं बैं कवचाय हुम्, इति सर्वाङ्गुली-भिरंसौ।
ॐ ह्रौं बौं नेत्रत्रयाय वौषट्, इति तर्जनीमध्यमानामाभिर्नेत्रत्रये।
ॐ ह्रः बः अस्त्राय फट्, इति तर्जनीमध्यमाभ्यामूद्ध्वोर्द्ध्वं तालत्रयं दत्वा छोटिकाभिर्दिशो दश बध्नीयात्।

करन्यासः

ॐ ह्रां बं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, इति तर्जनीभ्यामङ्गुष्ठयोः।
ॐ ह्रीं बीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, इत्यङ्गुष्ठाभ्यां तर्ज्जन्योः।
ॐ ह्रूं बूं मध्यमाभ्यां वषट्, इत्यङ्गुष्ठाभ्यां मध्यमयोः।
ॐ ह्रैं बैं अनामिकाभ्यां हुम्, इत्यङ्गुष्ठाभ्यामना-मिकयोः।
ॐ ह्रौं बौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्, इत्यङ्गुष्ठाभ्यां कनिष्ठयोः।
ॐ ह्रः बः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्, इति परस्परं करतलकरपृष्ठयोः।

देहन्यासः

भैरवं मूर्ध्नि विन्यस्य ललाटे भीमदर्शनम्।

नेत्रयोर्भूतहननं सारमेयानुगं भवोः ॥ २६ ॥
कर्णयोर्भूतनाथं च प्रेतबाहुं कपोलयोः।
नासापुटौष्ठयोश्चैव भस्माङ्गं सर्पभूषणम् ॥ २७ ॥
अनादिनाथं सौम्ये च शक्तिहस्तं गले न्यसेत्।
स्कन्धयो-र्दैत्यशमनं बाह्वोरतुल-तेजसम् ॥ २८ ॥
पाणौ कपालिनं न्यस्य हृदये मुण्डमालिनम्।
शान्तं वक्षस्थले न्यस्य स्तनयोः कामचारिणम् ॥ २९ ॥
उदरे च सदा तुष्टं क्षेत्रशं पार्श्वयोस्तथा।
क्षेत्रपालं पृष्ठदेशे क्षेत्रज्ञं नाभिदेशके ॥ ३० ॥
पापौघनाशनं कट्यां बटुकं लिङ्गदेशके।
गुदे एकाक्षरं न्यस्य तथोर्वो रक्तलोचनम् ॥ ३१ ॥
जानुनीर्घुर्घुरारावं जङ्घयोः रक्तपाणिनम्।
गुल्फयोः पादुकासिद्धं पादपृष्ठे सुरेश्वरम् ॥ ३२ ॥
आपादमस्तकं चैव आपदुद्धारकं तथा।
पूर्वे डमरुहस्तं च दक्षिणे दण्डधारिणम् ॥ ३३ ॥
खड्गहस्तं पश्चिमे च घण्टावादनमुत्तरे।
आग्नेयामग्निवर्णं च नैर्ऋत्यां च दिगम्बरम् ॥ ३४ ॥
वायव्यां सर्वभूतस्थमैशान्यां चाष्टसिद्धिदम्।
ऊर्ध्वे खेचारिणं न्यस्य पाताले रौद्ररूपिणम् ॥ ३५ ॥
एवं न्यस्य स्वदेहे च षडङ्गेषु ततो न्यसेत्।
रुद्रमङ्गुष्ठयोर्न्यस्य तर्जन्योश्च दिवाकरम् ॥ ३६ ॥
शिवं मध्यमयोर्न्यस्य नासिकायां त्रिशूलिनम्।
ब्रह्माणं तु कनिष्ठायां स्तनयोस्त्रिपुरान्तकम् ॥ ३७ ॥
मांसाशिनं कराग्रे तु करपृष्ठे दिगम्बरम्।

नामाङ्गन्यासः

हृदये भूतनाथाय आदिनाथाय मूर्द्धनि ॥ ३८ ॥

आनन्दपदपूर्वाय नाथाय च शिखासु च।
सिद्धसावरनाथाय कवचं विन्यसेत्तथा॥ ३९॥
सहजानन्दनाथाय न्यसेन्नेत्रत्रयेषु च।
परमानन्दनाथाय अस्त्रं चैव प्रयोजयेत्॥ ४०॥
एवं न्यासविधिं कृत्वा यथावत्तदनन्तरम्।
ध्यानं तस्य प्रवक्ष्यामि यथा ध्यात्वा पठेन्नरः॥ ४१॥
शुद्धस्फटिकसङ्काशं सहस्त्रादित्यवर्चसम्।
नीलजीमूतसङ्काशं नीलाञ्जनसमप्रभम्॥ ४२॥
अष्टबाहुं त्रिनयनं चतुर्बाहुं द्विबाहुकम्।
दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसङ्कुलम्॥ ४३॥
भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्णं शिरोरुहम्।
दिगम्बरं कुमारेशं बटुकाख्यं महाबलम्।
खट्वाङ्गमसिपाशं च शूलदक्षिणभागतः॥ ४४॥
डमरुं च कपोलं च वरदं भुजगं तथा।
अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम्।
ध्यात्वा जपेत्तु सन्तुष्टः सर्वान् कामानवाप्नुयात्॥ ४५॥

'ध्यानत्रयी' सात्विक ध्यानम्

वन्दे बालं स्फटिकसदृशं कुण्डलोद्भासिवक्त्रं
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणीनूपुराढ्यैः।
दीप्ताकारं विशद-वदनं सुप्रसन्नं महेशम्
हस्ताब्जाभ्यां बटुकमनिशं शूलदण्डैर्दधानम्॥

राजस ध्यानम्

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्त्रजं
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशुखण्डोज्ज्वलं
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये॥

तामस ध्यानम्

ध्यायेत्त्रैलोक्यकान्तं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं
दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथ सृणिं खड्गशूलं दधानम्।
नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्विभ्रतं भीमदंष्ट्रं
सर्पाकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयबिलसत्किङ्किणीनूपुराढ्यम्॥

सात्विकं ध्यानमाख्यातञ्चतुर्वर्गफलप्रदम्।
राजसं कार्यशुभदं तामसं शत्रुनाशनम्॥ ४६॥
ध्यात्वा जपेत्सुसंहृष्टं सर्वान् कामानवाप्नुयात्।
आयुरारोग्यमैश्वर्यसिद्ध्यर्थं विनियोजयेत्॥ ४७॥

अस्य श्रीबटुकभैरवनामाष्टशतकस्य आपदुद्धारण स्तोत्रमन्त्रस्य बृहदारण्यक ऋषिः, श्रीबटुकभैरवो देवता, अनुष्टुप् छन्दः, ह्रीं बीजं बटुकायेति शक्तिः, प्रणवः कीलकम्, ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ ह्राँ बाँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्राँ बीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं बूँ मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं बैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं बौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः बः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्राँ बाँ हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं बीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं बूँ शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं बैं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं बौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः बः अस्त्राय फट्। ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय।

नमस्कार मन्त्रः

करकलितकपालः कुण्डलीदण्डपाणि-
स्तरुणतिमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्य्याविघ्नविच्छेदहेतु-
र्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥

अद्भुत बटुक भैरव स्तोत्रम्

इस विशिष्ट बटुक भैरव स्तोत्र का पाठ आज के कलिकाल में अमृत के सामान है, इसके पाठ से दुष्ट शत्रुओं का भय समाप्त हो जाता है। यदि न्यायालय के कार्य में अनुकूलता की प्राप्ति करनी हो तो इस स्तोत्र का पाठ तीनों कालों में करना चाहिए, क्योंकि इसमें बटुकभैरव जी के अद्भुत श्लोकों का समावेश है। जो प्राणी ग्यारह हजार बार इस स्तोत्र का पाठ करते हैं, उनके समस्त कार्य अवश्य पूर्ण होते हैं। शत्रुओं के विनाश के लिये इस स्तोत्र का पाठ छः मास निरन्तर करना चाहिए। जिनको धन की इच्छा है, वह इसका पाठ प्रतिदिन करे, इसके पाठ से धन की प्राप्ति होती है। यदि असाध्य रोगी भी इसका पाठ करे तो उनके रोगों का निश्चित ही विनाश होता है।

ॐ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्॥ १॥
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी मखान्तकृत।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धिसेवितः॥ २॥
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गल-लोचनः॥ ३॥
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः।
अभीरुर्भैरवीनाथो भूतपो योगिनीपतिः॥ ४॥
धनदो धनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्॥ ५॥

कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनोज्ज्वलक्षेत्रस्त्रिशिखी च त्रिलोकपः॥ ६॥
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
बटुको बभ्रु-वेशश्च खट्वाङ्ग-वरधारकः॥ ७॥
भूताध्यक्षः पशुपतिर्भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शूरो हरिणः पाण्डुलोचनः॥ ८॥
प्रशान्तः शान्तिदः शुद्धः शङ्करः प्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञान-चक्षुस्तपोमयः॥ ९॥
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीश्वरः।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः॥ १०॥
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा॥ ११॥
शुद्धो नीलाञ्जनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग् बलिभुङ्नाथो बालोऽबालपराक्रमः॥ १२॥
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूत-निषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी॥ १३॥
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि।
अष्टोत्तरशतं नाम्ना भैरवस्य महात्मनः॥ १४॥
मया ते कथितं देवि रहस्यं सर्वकामदम्।
य इदं पठते सतोत्रं नामाष्टशतमुत्तमम्॥ १५॥
न तस्य दुरितं किञ्चिन्नैव भूतभयं तथा।
न च मारीभयं तस्य ग्रह-राजभयं तथा॥ १६॥
न शत्रुभ्यो भयं किञ्चित्प्राप्नुयान्मानवः क्वचित्।
पातकानां भयं नैव पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम्॥ १७॥
मारीभये राजभये तथा चौराग्निजे भये।
औत्पादिकभये चैव तथा दुःस्वप्नजे भये॥ १८॥

बन्धने च तथा घोरे पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम्।
सर्वं प्रशममायाति भयं भैरवकीर्त्तनात्॥ १९॥
एकादशसहस्त्रैस्तु पुरश्चरणमुच्यते।
यस्त्रिसन्ध्यं पठेद्देवि सम्बत्सरमतन्द्रितः॥ २०॥
स सिद्धिमाप्नुयादिष्टां दुर्लभोऽपि च मानवः।
षणमासाद् भूमिकामस्तु जपित्वा प्राप्नुयान्महीम्॥ २१॥
राजशत्रुविनाशार्थं पठन्मासाष्टकं यदि।
रात्रौ वा जपते देवि नाशयेत्सर्वशत्रुकान्॥ २२॥
जपेन्मासत्रयं मर्त्यो राजानं वशमानयेत्।
धनार्थी च सुतार्थी च दारार्थी चापि मानवः॥ २३॥
पठेन्मासत्रयं देवि वारमेकं तथा निशि।
धनं पुत्रांस्तथा दारान् प्राप्नुयान्नात्र संशयः॥ २४॥
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।
रोगी रोगात्प्रमुच्येत बद्धो मुच्यते बन्धनात्॥ २५॥
भीतो भयात्प्रमुच्येत देवि सत्यं न संशयः।
निगडैश्चापि यो बद्धः कारागृहनिपातितः॥ २६॥
शृङ्खलाबन्धनं प्राप्तः पठेच्चेद्यद्दिवानिशम्।
यान् यान् समीहते कामांस्तांस्तान् प्राप्नोति निश्चितम्॥ २७॥
अप्रकाश्यमिदं गुह्यं न देयं यस्य कस्यचित्।
सुकुलीनाय शान्ताय ऋजवे दम्भवर्जिते॥ २८॥
दद्यात् स्तोत्रमिदं पुण्यं सर्वकामफलप्रदम्।
इति श्रुत्वा ततो देवी नामाष्टशतमुत्तमम्॥ २९॥
सन्तोषं परमं प्राप्य भैरवस्य महात्मनः।
भैरवस्य प्रसन्नाऽभूत् सर्वलोकमहेश्वरी॥ ३०॥
भैरवस्तु प्रहृष्टोऽभूत् सर्वज्ञः परमेश्वरः।
जजाप परया भक्त्या सदा सर्वेश्वरेश्वरीम्॥ ३१॥

भैरव तन्त्रोक्तं
श्री बटुक भैरव कवचम्

ॐ सहस्त्रारे महाचक्रे कर्पूरधवले गुरुः।
पातु मां बटुको देवो भैरवः सर्वकर्मसु॥१॥
पूर्वस्यामसिताङ्गो मां दिशि रक्षतु सर्वदा।
आग्नेय्यां च रुरुः पातु दक्षिणे चण्डभैरवः॥२॥
नैर्ऋत्यां क्रोधनः पातु उन्मत्तः पातु पश्चिमे।
वायव्यां मां कपाली च नित्यं पायात् सुरेश्वरः॥३॥
भीषणो भैरवः पातु उत्तरस्यां तु सर्वदा।
संहारभैरवः पायादीशान्यां च महेश्वरः॥४॥
ऊर्ध्वं पातु विधाता च पाताले नन्दको विभु।
सद्योजातस्तु मां पयात् सर्वतो देवसेवितः॥५॥
रामदेवो वनान्ते च वनेऽघोरस्तथाऽवतु।
जले तत्पुरूषः पातु स्थले ईशान एव च॥६॥
डाकिनीपुत्रकः पातु पुत्रान् मे सर्वतः प्रभुः।
हाकिनीपुत्रकः पातु दारांस्तु लाकिनी सुतः॥७॥
पातु शाकिनिकापुत्रः सैन्यं वै कालभैरवः।
मालिनीपुत्रकः पातु पशूनश्वान् गजांस्तथा॥८॥
महाकालोऽवतु क्षेत्रंश्रियं मे सर्वतो गिरा।
वाद्यं वाद्यप्रियः पातु भैरवो नित्यसम्पदा॥९॥

श्री बटुक भैरव ब्रह्म कवचराज

भगवती पार्वती द्वारा हठपूर्वक पूछने पर भगवान शंकर ने कृपा पूर्वक जो बटुकभैरव ब्रह्म कवचराज बताया था, वह इस प्रकार है—

अथ विनियोगः—अस्य श्री बटुकभैरवकवचराजस्य भैरवऋषिरनुष्टुप्छन्दो बटुकभैरवो देवता मम सर्वार्थसाधने विनियोगः।

इतना कहकर विनियोग हेतु जल छोड़ें तथा नीचे लिखे श्लोकों का उच्चारण करते हुए सूचित स्थानों पर तत्त्वमुद्रा से स्पर्श करते हुए न्यास करें अथवा सामान्य लोग केवल श्रद्धापूर्वक पाठ करें।

ॐ पातु शिरसि नित्यं पातु ह्रीं कण्ठदेशके।
बटुकं पातु हृदये आपदुद्धारणाय च॥१॥
कुरुद्वयं मे लिंगस्य आधारे बटुकाय च।
सर्वदा पातु ह्रीं बीजं बाह्वोर्युगलमेव च॥२॥
षडङ्गसहितो देवो नित्यं रक्षतु भैरवः।
ॐ ह्रीं बटुकाय सततं सर्वांगे मम सर्वदा॥३॥
ॐ ह्रीं कालाय पादयोः पातु पातु वीरासनं हृदि।
ॐ ह्रीं महाकालः शिरः पातु कण्ठदेशे तु भैरवः॥४॥
दण्डपाणिर्गुह्यमूले भैरवी-सहितस्ततः।
ललिता भैरवः पातु अष्टाभिः शक्तिभिः सह॥५॥
विश्वनाथः सदा पातु सर्वाङ्गे मम सर्वदा।
अन्नपूर्णा सदा पातु अंसं रक्षतु चण्डिका॥६॥

असिताङ्ग शिरः पातु ललाटं पातु भैरवः।
चण्डभैरवः पातु वक्त्रे कण्ठे श्रीक्रोधभैरवः॥७॥
मूलाधारं भीषणश्च बाहुयुग्मं च भैरवः।
हंसबीजं पातु हृदि सोऽहं रक्षतु प्राणयोः॥८॥
प्राणापानसमानं च उदानं व्यानमेव च।
रक्षन्तु द्वारमूले तु दशदिक्षु समन्ततः॥९॥
प्रणवः पातु सर्वांगं लज्जाबीजं महाभये।
इति श्रीब्रह्मकवचं भैरवस्य प्रकीर्तितम्॥१०॥

॥ इति श्री महादेव कृतं बटुक भैरव ब्रह्म कवचराजः॥

श्री बटुक भैरव के भयनाशक दस नाम

कपाली कुण्डली भीमो भैरवो भीमविक्रमः।
व्यालोपवीती कवची शूली शूरः शिवप्रियः॥
एतानि दशनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
भैरवी-यातना न स्याद् भयं क्वापि न जायते॥

जो भी व्यक्ति प्रातःकाल उठकर इन दस नामों का उच्चारण करता है उसे कोई दुःख अथवा यातना नहीं सताती।

१. कपाली, २. कुण्डली, ३. भीमो, ४. भैरवो, ५. भीमविक्रम, ६. व्यालोपवीति, ७. कवची, ८. शूली, ९. शूर, १०. शिवप्रिय

बटुक भैरव देवता के प्रमुख मन्त्र

निम्नलिखित मंत्रों में से किसी भी एक मन्त्र का प्रतिदिन १०८ बार जप करने से बटुक भैरव जी की कृपा अवश्य प्राप्त होती है।

१. ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं।

२. बं बटुकाय नमः।

३. ॐ भैरवाय वं वं वं ह्रां क्ष्रौं नमः।

श्रीस्वर्णाकर्षण भैरव साधना
(दरिद्रता को समूल नष्ट करने हेतु)

श्री भैरव के अनेक रूप व साधनाओं का वर्णन तन्त्रों में वर्णित है। उनमें से एक श्रीस्वर्णाकर्षण भैरव साधना है, जो साधक को दरिद्रता से मुक्ति दिलाती है। जैसा इनका नाम है वैसा ही इनके मन्त्र का प्रभाव है। अपने भक्तों की दरिद्रता को नष्ट कर उन्हें धन-धान्य सम्पन्न बनाने के कारण ही इनका नाम 'स्वर्णाकर्षण भैरव' के रूप में प्रसिद्ध है। ये भैरव स्वर्ण आभा युक्त, मंदार वृक्ष के नीचे, माणिक्य के सिंहासन पर अवस्थित हैं।

इनकी साधना विशेष रूप से रात्रि काल में की जाती हैं। शान्ति-पुष्टि आदि सभी कर्मों में इनकी साधना अत्यन्त सफल सिद्ध होती है। इनके मन्त्र, स्तोत्र, कवच, सहस्रनाम व यन्त्र आदि का व्यापक वर्णन तन्त्रों में मिलता है। यहाँ पर मात्र सरल मन्त्र-विधान दिया जा रहा है। ताकि जन-सामान्य लाभान्वित हो सके। इस साधना की सिद्धि से स्वर्णाकर्षण भैरव, भक्त को स्वर्ण मुद्रायें प्रदान करते हैं।

प्रारम्भिक पूजा विधान पूर्ण करने के बाद—

विनियोग— **ॐ अस्य श्रीस्वर्णाकर्षण-भैरव मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, हरि-हर ब्रह्मात्मक श्री स्वर्णाकर्षण भैरवो देवता, ह्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकं, श्रीस्वर्णाकर्षण-भैरव प्रसन्नता प्राप्तये, स्वर्ण राशि प्राप्तये श्रीस्वर्णाकर्षण-भैरव मन्त्र जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास

ॐ ब्रह्मा-ऋषये नमः...शिरसि।

ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः...मुखे।

ॐ हरि-हर ब्रह्मात्मक स्वर्णाकर्षण-भैरव देवतायै नमः...हृदये।

ॐ ह्रीं बीजाय नमः...गुह्ये।

ॐ ह्रीं शक्तये नमः...पादयोः।

ॐ ॐ बीजाय नमः...नाभौ।

ॐ विनियोगाय नमः...सर्वाङ्गे।

करन्यास

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं श्रीं आपदुद्धारणाय...अंगुष्टाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामल-बद्धाय...तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ लोकेश्वराय...मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ स्वर्णाकर्षण-भैरवाय नमः...अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ मम दारिद्रय विद्वेषणाय...कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ महा भैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं... करतल-कल पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं श्रीं आपदुद्धारणाय...हृदयाय नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामल-बद्धाय...शिरसे स्वाहा।

ॐ लोकेश्वराय...शिखायै वषट्।

ॐ स्वर्णाकर्षण-भैरवाय...कवचाय हुम्।

ॐ मम दारिद्रय-विद्वेषणाय...नेत्र-त्रयाय वौषट्।

ॐ महा-भैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं...अस्त्राय फट्।

ध्यान—

पारिजात-द्रु-कान्तारे, स्थिते माणिक्य-मण्डपे।
सिंहासन-गतं ध्यायेद्, भैरवं स्वर्ण-दायिनं॥

गाङ्गेय-पात्रं डमरुं त्रिशूलं, वरं करैः सन्दधतं त्रिनेत्रम्।
देव्या युतं तप्त-सुवर्ण-वर्णं, स्वर्णाकृतिं भैरवमाश्रयामि॥

ध्यान करने के बाद पञ्चोपचार पूजन कर लें।

***मन्त्र*—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं श्रीं आपदुद्धारणाय ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामल-बद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षण-भैरवाय मम दारिद्र्य-विद्वेषणाय महा-भैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं।**

जप संख्या व हवन—एक लाख बार जप करने से उपरोक्त मन्त्र का पुरश्चरण होता है और खीर से दशांश हवन करने तथा दशांश तर्पण और तर्पण का दशांश मार्जन व मार्जन का दशांश ब्राह्मण को भोजन कराने से यह अनुष्ठान पूर्ण होता है।

पुरश्चरण के बाद तीन या पाँच माला प्रतिदिन जप करने से एक वर्ष से पूर्व ही दरिद्रता का निवारण हो जाता है। इसके साथ ही शुभ कर्म करना भी आवश्यक है।

सम्पूर्ण विधि-विधान से पाठ करने पर स्वर्णाकर्षण भैरव अवश्य प्रसन्न होते हैं।

रुद्रयामल तंत्रोक्त
स्वर्णाकर्षण भैरव स्तोत्र

नन्दी जी ने मनुष्यों की दरिद्रता के नाश के लिये यह स्तोत्र अमर महर्षि मार्कण्डेय जी को वर्णित किया था।

जिनकी कुण्डली में धन भाव का सम्बन्ध गुरु या सूर्य से है और लक्ष्मी जी और कुबेर साधनाओं के बाद भी धन की परेशानी खत्म नहीं हो रही हो, उनके लिये यह स्तोत्र धन संजीवनी के समान है।

नित्य ४१ दिन तक पाठ करने से या इस मंत्र की ५ माला जाप करने से उत्तम लाभ प्राप्त होता है। श्री भगवती के लाडले लक्ष्मी तथा कुबेर को भी धन प्रदान करने वाले श्री स्वर्णाकर्षण भैरव जी स्वर्ण का आकर्षण करने वाले देवता हैं। इनकी चर्चा रुद्रयामल तन्त्र में शिव जी और नन्दी जी के मध्य हुई थी।

१०० वर्षों तक देवासुर संग्राम में युद्ध के कारण कुबेर जी को जब धन की भारी हानि हुई थी। उस समय माँ लक्ष्मी जी भी धन से हीन हो गयी थी। उस समय सब देवी और देवता भगवान महादेव जी की शरण में गए थे। महादेव जी ने नन्दी जी को माध्यम बनाकर स्वर्णाकर्षण देव की महिमा गायी, तब सभी देवताओं सहित नन्दी जी ने यक्षराज श्री कुबेर जी को धनवान बनाने के लिए शिव जी से प्रश्न किया कि कुबेर के खाली को भण्डार फिर से भर दे ऐसे कौन भगवान हैं? तब भगवान शिव जी ने भगवती के अविनाशी धाम श्री मणिद्वीप के कोषाध्यक्ष श्री स्वर्णाकर्षण

भैरवनाथ भगवान की महिमा और उनके वैभव का वर्णन किया और उनकी शरण में जाने को कहा। लक्ष्मी जी और कुबेर जी ने विशालातीर्थ (बद्रीविशाल धाम में) ३ हजार वर्षों तक सभी देवताओं सहित भीषण तप किया तब भगवान स्वर्णाकर्षण भैरव नाथ जी ने उन्हें दर्शन देकर श्री मणिद्वीप धाम से प्रगट होकर ४ भुजाओं से धन की वर्षा की। जिससे पुनः सभी देवता श्री सम्पन्न हो गए। ऐसे महिमावान स्वर्णाकर्षण भैरव जी का स्तोत्र भी अद्‌भुत है, इसके निरन्तर पाठ से प्रचुर धन की प्राप्ति होती है।

श्री स्वर्णाकर्षण भैरव स्तोत्र

श्री मार्कण्डेय उवाच

भगवन्! प्रमथाधीश! शिव-तुल्य-पराक्रम।
पूर्वमुक्तस्त्वया मन्त्रं, भैरवस्य महात्मनः॥
इदानीं श्रोतुमिच्छामि, तस्य स्तोत्रमनुत्तमं।
तत् केनोक्तं पुरा स्तोत्रं, पठनात्तस्य किं फलम्॥
तत् सर्वं श्रोतुमिच्छामि, ब्रूहि मे नन्दिकेश्वर॥

श्री नन्दिकेश्वर उवाच

इदं ब्रह्मन्! महा-भाग, लोकानामुपकारक।
स्तोत्रं बटुक-नाथस्य, दुर्लभं भुवन-त्रये॥
सर्व-पाप-प्रशमनं, सर्व-सम्पत्ति-दायकम्।
दारिद्रय-शमनं पुंसामापदा-भय-हारकम्॥
अष्टैश्वर्य-प्रदं नृणां, पराजय-विनाशनम्।
महा-कान्ति-प्रदं चैव, सोम-सौन्दर्य-दायकम्॥
महा-कीर्ति-प्रदं स्तोत्रं, भैरवसय महात्मनः।
न वक्तव्यं निराचारे, हि पुत्राय च सर्वथा॥
शुचये गुरु-भक्ताय, शुचयेऽपि तपस्विने।

महा-भैरव-भक्ताय, सेविते निर्धनाय च॥
निज-भक्ताय वक्तव्यमन्यथा शापमाप्नुयात्।
स्तोत्रमेतत् भैरवस्य, ब्रह्म-विष्णु-शिवात्मनः॥
श्रृणुष्व ब्रूहितो ब्रह्मन्! सर्व-काम-प्रदायकम्

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीस्वर्णाकर्षण-भैरव-स्तोत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीस्वर्णाकर्षण-भैरव-देवता, ह्रीं बीजं, क्लीं शक्ति, सः कीलकम्, मम-सर्व-काम-सिद्धयर्थे पाठे विनियोगः।

ध्यानः—मन्दार-द्रुम-मूल-भाजि विजिते रत्नासने संस्थिते। दिव्यं चारुण-चञ्चुकाधर-रुचा देव्या कृतालिंगनः॥ भक्तेभ्यः कर-रत्न-पात्र-भरितं स्वर्ण दधानो भृशम्। स्वर्णाकर्षण-भैरवो भवतु में स्वर्गापवर्ग-प्रदः॥

स्तोत्र पाठ

ॐ नमस्तेऽस्तु भैरवाय, ब्रह्म-विष्णु-शिवात्मने, नमः त्रैलोक्य-वन्द्याय, वरदाय परात्मने॥

रत्ना-सिंहासनस्थाय, दिव्याभरण शोभिने।
नमस्तेऽनेक-हस्ताय, ह्यनेक-शिरसे नमः।
नमस्तेऽनेक-नेत्राय, ह्यनेक-विभवे नमः॥
नमस्तेऽनेक-कण्ठाय, ह्यनेकान्ताय ते नमः।
नमोस्त्वनेकैश्वर्याय, ह्यनेक-दिव्य-तेजसे॥
अनेकायुध-युक्ताय, ह्यनेक-सुर-सेविने।
अनेक-गुण-युक्ताय, महा-देवाय ते नमः॥
नमो दारिद्रय-कालाय, महा-सम्पत्-प्रदायिने।
श्रीभैरवी-प्रयुक्ताय, त्रिलोकेशाय ते नमः॥
दिगम्बर! नमस्तुभ्यं, दिगीशाय नमो नमः।
नमोऽस्तु दैत्य-कालाय, पाप-कालाय ते नमः॥

सर्वज्ञाय नमस्तुभ्यं, नमस्ते दिव्य-चक्षुषे।
अजिताय नमस्तुभ्यं, जितामित्राय ते नमः॥
नमस्ते रुद्र-पुत्राय, गण-नाथाय ते नमः।
नमस्ते वीर-वीराय, महा-वीराय ते नमः॥
नमोऽस्त्वनन्त-वीर्याय, महा-घोराय ते नमः।
नमस्ते घोर-घोराय, विश्व-घोराय ते नमः॥
नमः उग्राय शान्ताय, भक्तेभ्यः शान्ति-दायिने।
गुरवे सर्व-लोकानां, नमः प्रणव-रुपिणे॥
नमस्ते वाग्-भवाख्याय, दीर्घ-कामाय ते नमः।
नमस्ते काम-राजाय, योषित्कामाय ते नमः॥
दीर्घ-माया-स्वरूपाय, महा-माया-पते नमः।
सृष्टि-माया-स्वरूपाय, विसर्गाय सम्यायिने॥
रुद्र-लोकेश-पूज्याय, ह्यापदुद्धारणाय च।
नमोऽजामल-बद्धाय, सुवर्णाकर्षणाय ते॥
नमो नमो भैरवाय, महा-दारिद्रय-नाशिने।
उन्मूलन-कर्मठाय, ह्यलक्ष्म्या सर्वदा नमः॥
नमो लोक-त्रेशाय, स्वानन्द-निहिताय ते।
नमः श्रीबीज-रुपाय, सर्व-काम-प्रदायिने॥
नमो महा-भैरवाय, श्रीरुपाय नमो नमः।
धनाध्यक्ष! नमस्तुभ्यं शरण्याय नमो नमः॥
नमः प्रसन्न-रुपाय, ह्यादि-देवाय ते नमः।
नमस्ते मन्त्र-रुपाय, नमस्ते रत्न-रुपिणे॥
नमस्ते स्वर्ण-रुपाय, सुवर्णाय नमो नमः।
नमः सुवर्ण-वर्णाय, महा-पुण्याय ते नमः॥
नमः शुद्धाय बुद्धाय, नमः संसार-तारिणे।
नमो देवाय गुह्याय, प्रबलाय नमो नमः॥

नमस्ते बल-रुपाय, परेशां बल-नाशिने।
नमस्ते स्वर्ग-संस्थाय, नमो भूर्लोक-वासिने॥
नमः पाताल-वासाय, निराधाराय ते नमः।
नमो नमः स्वतन्त्राय, ह्यनन्ताय नमो नमः॥
द्वि-भुजाय नमस्तुभ्यं, भुज-त्रय-सुशोभिने।
नमोऽणिमादि-सिद्धाय, स्वर्ण-हस्ताय ते नमः॥
पूर्ण - चन्द्र - प्रतीकाश - वदनाम्भोज - शोभिने।
नमस्ते स्वर्ण-रुपाय, स्वर्णालंकार-शोभिने॥
नमः स्वर्णाकर्षणाय, स्वर्णाभाय च ते नमः।
नमस्ते स्वर्ण-कण्ठाय, स्वर्णालंकार-धारिणे॥
स्वर्ण-सिंहासनस्थाय, स्वर्ण-पादाय ते नमः।
नमः स्वर्णाभ-पाराय, स्वर्ण-काञ्ची-सुशोभिने॥
नमस्ते स्वर्ण-जंघाय, भक्त-काम-दुघात्मने।
नमस्ते स्वर्ण-भक्तानां, कल्प-वृक्ष-स्वरुपिणे॥
चिन्तामणि-स्वरुपाय, नमो ब्रह्मादि-सेविने।
कल्पद्रुमाधः-संस्थाय, बहु-स्वर्ण-प्रदायिने।
नमो हेमादि-कर्षाय, भैरवाय नमो नमः॥
स्तवेनानेन सन्तुष्टो, भव लोकेश-भैरव!
पश्य मां करुणाविष्ट, शरणागत-वत्सल!
श्री भैरव धनाध्यक्ष, शरणं त्वां भजाम्यहम्।
प्रसीद सकलान् कामान्, प्रयच्छ मम सर्वदा॥

फल श्रुति

श्रीमहा-भैरवस्येदं, स्तोत्र सूक्तं सु-दुर्लभम्।
मन्त्रात्मकं महा-पुण्यं, सर्वेश्वर्य-प्रदायकम्॥
यः पठेन्नित्यमेकाग्रं, पातकैः स विमुच्यते।
लभते चामला-लक्ष्मीमष्टैश्वर्यमवाप्नुयात्॥

चिन्तामणिमवाप्नोति, धेनुं कल्पतरुं ध्रुवम्।
स्वर्ण-राशिमवाप्नोति, सिद्धिमेव स मानवः॥
संध्याय यः पठेत्स्तोत्र, दशावृत्त्या नरोत्तमैः।
स्वप्ने श्रीभैरवस्तस्य, साक्षाद् भूतो जगद्-गुरुः।
स्वर्ण-राशि ददात्येव, तत्क्षणान्नास्ति संशयः।
सर्वदा यः पठेत् स्तोत्रं, भैरवस्य महात्मनः॥
लोक-त्रयं वशी कुर्यात्, अचलां श्रियं चाप्नुयात्।
न भयं लभते क्वापि, विघ्न-भूतादि-सम्भव॥
म्रियन्ते शत्रवोऽवश्यम लक्ष्मी-नाशमाप्नुयात्।
अक्षयं लभते सौख्यं, सर्वदा मानवोत्तमः॥
अष्ट-पञ्चाशताणढ्यो, मन्त्र-राजः प्रकीर्तितः।
दारिद्रय-दुःख-शमनं, स्वर्णाकर्षण-कारकः॥
य येन संजपेत् धीमान्, स्तोत्र वा प्रपठेत् सदा।
महा-भैरव-सायुज्यं, स्वान्त-काले भवेद् ध्रुवं॥

यह दुर्लभ स्वर्णाकर्षण भैरव स्तोत्र सर्वपापों का नाशक, ऐश्वर्य का दाता, कीर्तिप्रदायक, अष्टसिद्धिदायक एवं भुक्ति-मुक्ति का प्रदाता है।

शरभेश्वर भैरव साधना
सिद्धिप्रद स्तोत्रम्

यह सिद्धिप्रद स्तोत्र अत्यंत प्रभावकारी है। रात्रिकाल के किसी भी समय में नित्य इस स्तोत्र का तीन बार पाठ करने से अभीष्ट सिद्धि की प्राप्ति होती है।

कोपोद्रेकाति निर्यन् निखिल परिचरत् ताम्रभार प्रभूतं,
ज्वालामालाग्रदग्ध स्मरतनु सकलं त्वामहं शालुवेश।
या चे त्वत्पाद पद्मप्रणिहित मनसं मां यः क्रियामि-
स्तस्य प्राणप्रयाणं परशिवं भवतः शूलभिन्नस्य तूर्णम्॥
शंभो! त्वद्धस्त कांतक्षतरिपु हृदयान्निः स्त्रवल्लोहितौघं,
पीत्वा पीत्वातिर्घा दिशि दिशि विचरास्त्वद्गणाश्चंड।
मुख्याः गर्जन्तु क्षिप्रवेगा निखिल जयकरा भोकराः खेललोलाः,
सन्त्रस्ता ब्रह्मदेवाः, शरभ खगपते! त्राहि नः शालुवेश॥
सर्वाद्यं सर्वनिष्ठं सकल भयहरं त्वत् स्वरूपं हिरण्यं,
याचेऽहं त्वाम मोघं परिकर सहितं द्वेष्टि मां यः क्रियाभिः।
श्रीशंभो त्वत्कराब्ज स्थित कुलिशव राघातवक्षः स्थलस्य,
प्राणाः प्रेतेशदूत ग्रहगण परिखाः क्रोशपूर्वं प्रयन्तु॥
द्विष्मः क्षोण्यां वयं यांस्तव पदकमल ध्याननिर्धूततापाः,
कृत्या कृत्यैर्विमुक्ता विहग कुलपते! खेलया बद्धमूर्त्तेः।
तूर्णं त्वत्पाद पद्म प्रधृत परशुना तुण्डखण्डी कृतान्ग-

स्तदद्वेषी यातु याम्यं पुरमति कलुषं कालपाशाग्रबद्धः॥
भीम श्रीशालुवेश! प्रणत भयहर प्राणजिद् दुर्मदानां,
याचेऽहं चास्य वर्ग प्रशमनमिह ते स्वेच्छया बद्धमूर्त्तेः।
त्वामेवाशु त्वदंघ्रिभ्रष्ट कनख विलसद्ग्रीव जिह्वोदरस्य,
प्राणा यान्तु प्रयाणं प्रकटित हृदय स्यायुरल्पायतेश॥
श्रीशूलं ते कराग्रस्थित मुसलगदा वृत्तवात्याभिघाताद्,
याता-यातारियूथं त्रिदशरविघनोहरु तरक्तच्छटार्द्रम्।
सद्दृष्टवाऽऽयोधने ज्यामखिलसुरगणाश्चाशु नंदन्तु नाना-
भूता वेतालपूगः पिबतु तदखिलं प्रीतचित्तः प्रमत्तः॥
अल्पदोर्दण्डबाहु प्रकटित विन विच्चण्डको दण्डमुक्तै-
र्बाणैर्दिव्यैरनेकैः शिथिलित वपुषः क्षीणकोलाहलस्य।
तस्य प्राणावसानं परशरभ विभोऽहं त्वदिज्या प्रभावै-
स्तूर्णं पश्यामि यो मां परिहसति सदा त्वादिमध्यांतहेतो॥
इति निशि प्रयतस्तु निरासनो मम मुखः शिवभावमनुस्मरन्।
प्रतिदिनं दशवार दिनत्रयं जपति निग्रह-दारुण सप्तकम्॥
इति गुह्यं महाबीजम् परमम् रिपु नाशनम्।
भानु वारं समारभ्य मंगलान्तं जपेत् सुधीः॥

श्री शरभेश्वर प्रार्थना

रुद्रः पिंगल-कुन्तल स्त्रिनयनोऽत्युग्रः सपक्षो हरिः,
सर्पालंकरण स्तथाऽष्टचरणस्तुर्यः शुक्रः सालुवः।
क्षोभं श्रीनरसिंहजं शमयितुं नीतावतारो हरः,
पायाद् श्रीशरभेश्वरो विहगराट् सर्वार्थदः शंकर॥
काली दुर्गा पक्षयोर्यस्य संस्थे,
स्वान्ते साक्षात् सुन्दरीराजमाना।
क्षोभं यातः श्रीनृसिंहो यतस्तं,
देवं भीमं सालुवाख्यं नमामः॥

भगवान श्री शरभेश्वर भैरव के इस स्तोत्र का नित्य पाठ एवं प्रार्थना तांत्रिक साधना और प्रयोगों की दृष्टि से परम उपयोगी है। नित्य इसका पाठ करने से साधक को सभी कार्यों में सिद्धि मिलती है।

भगवान शरभ भैरव परम दयालु हैं। यह अपने भक्तों के शत्रुओं को नष्ट करने के लिये सदैव तत्पर रहते हैं। तन्त्र शास्त्रों में शरभेश्वर भैरव को श्मशान रूद्र, नील भैरव तथा उग्र भैरव के नाम से भी व्यक्त किया गया है।

काल भैरवाष्टकम्

इस काल भैरवाष्टक का पाठ जो भी साधक प्रतिदिन करता है, उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं रहता। भूत-प्रतादि का भय, राजभय, ग्रहभय, महामारी का भय भी नहीं रहता। शत्रु साधक का अहित नहीं कर सकता। साधक के समस्त पापों का अन्त हो जाता है।

अग्नि, उत्पात, भय एवं दारुण दुखों का भय नहीं रहता। दुःस्वप्न, बंधन आदि क्लेश नष्ट हो जाते हैं। ग्यारह हजार बार इसे जप कर यदि कोई साधक पुरश्चरण कर ले तो वह सर्वसिद्धि को प्राप्त कर लेता है। इसी प्रकार एक वर्ष एक इसका पाठ कर लेने पर अभीष्ट की सिद्धि होती है।

देवराज सेव्यमान पावनांघ्रि पंकजम्,
कालयज्ञ सूत्रमिन्दु शेखरं कृपाकरम्।
नारदादि योगिवृन्द वन्दितं दिगम्बरं,
काशिकापुराधिनाथ काल भैरवं भजे॥ १ ॥
भानुकोटि भास्करं भवाब्धितार कंधरम्,
नीलकण्ठभीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम्।
काल काल भानुजाक्षमक्ष शूलमक्षरं,
काशिकापुराधिनाथ काल भैरवं भजे॥ २ ॥
शूल टंकपाश दण्डपाणिमादि कारणं,
श्याम कायमादि देवमक्षयं निरामयम्।

भीम विक्रमं प्रभुं विचित्र ताण्डवप्रियं,
काशिकापुराधिनाथ काल भैरवं भजे॥ ३॥
भुक्तिमुक्ति दायकं प्रशस्त चारुविग्रहं,
भक्त वत्सलं स्थितं समस्त लोकविग्रहम्।
विनिक्वणन्मनोज्ञ हेमकिंकणोल्लसत्कटिं,
काशिकापुराधिनाथ काल भैरवं भजे॥ ४॥
धर्म सेतु पालकं त्वधर्ममार्ग नाशकं,
कर्मपाश माचकं सुशर्म दायकं विभुम्।
स्वर्णवर्ण केशपाश शोभितां मण्डलं,
काशिकापुराधिनाथ काल भैरवं भजे॥ ५॥
रत्न पादुका प्रभाभिराम पादयुग्मकं,
नित्यमद्वितीयमिष्ट दैवतं निरंजनम्।
मुत्युदर्प नाशं कराल दंश मोक्षणम्,
काशिकापुराधिनाथ काल भैरवं भजे॥ ६॥
अट्टहास भानुपदम् जांडकाश संतति,
दृष्टिपात नष्ट प्राय जालमुद्ग शासनम्।
अष्ट सिद्धि दायकं कपालमालि काधरं,
काशिकापुराधिनाथ काल भैरवं भजे॥ ७॥
भूतसंघ नायकं विशाल कीर्तिदायकम्,
काशि वासलोक पुण्यपाप शोधकं विभुम्।
नीतिमाग्र कोविदं पुरातनं जगतपतिं,
काशिकापुराधिनाथ काल भैरवं भजे॥ ८॥
काल भैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं,
ज्ञान मुक्ति साधनं सुपुष्टि पुण्यवर्द्धनम्।
शोक मोह दैन्यलोभ कोपताप नाशनं,
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥ ९॥

भैरव क्षमापन स्तोत्र

तंत्र-मंत्रादि की साधना करते समय साधकों से अज्ञानतावश कुछ त्रुटियाँ हो सकती हैं। यदि तांत्रिक साधना में तनिक सी भी त्रुटि या भूल हो जाए, तो वह भीषण हानि का कारण बन सकती है। अतः इस क्षमापन स्तोत्र का पाठ करके भगवान भैरवदेव से अज्ञानता में हुई त्रुटियों के लिए क्षमा मांगी जाती है। भैरवदेव परम कृपालु और भक्तों के प्रति अत्यधिक दयाभाव रखने वाले देव हैं। वह अपने साधकों की गलतियों को शीघ्र ही क्षमा कर देते हैं। अतः साधना के अन्त में इस स्तोत्र का पाठ प्रत्येक साधक को अवश्य ही करना चाहिए। इस स्तोत्र का पाठ करने से साधक द्वारा साधना करते समय हुई भूलों का निवारण हो जाता है। स्तोत्र पाठ निम्नलिखित है—

गुरोः सेवां त्यक्त्वा गुरुवचन शक्तोपि न भावे,
भगवत्पूजा ध्यानाज्जय हवन यागाद्धि रहित।
त्वदर्च्चानिर्माणे क्वचिदपि न यत्नं च कृत्वां-
जगज्जालग्रस्तो झटिति कुरु हार्दं मयि विभो॥
प्रभो दुर्गा सूनो तव शरणतां सोधि गत्वा-
न्कृपालो दुःखार्तः किमपि भवदन्यं प्रकथये।
सुहृत् सम्पत्तेहं सरल विरलः साधकजन-
स्तवदन्यः कस्यत्राता भवदह नाहं शमयति॥
वदान्यो मान्यस्त्वं विविधजन पालो भवसि वै,

दयालुर्दीनार्तान् भव जलधिपारम् गम यसि।
अतस्त्वत्तो याचे नतिनियमतो किंचनऽधनः,
सदा भूयाद् भावः पदनलिन योस्ते तिमिरहा॥
अजापूर्वो विप्रो मिलपदपरो योति पतितो।
महामूर्खो दुष्टो वृजिन निरतः पामरनृपः॥
असत्या ना सक्तो यवन युवती ब्रातः रमणः।
प्रभावात्त्वन् नाम्नः परम पदवीं सोप्यधिगतः॥
दयां दीर्घादीने बटुक कुरु विश्वम्भर मयि।
महोश्चर्य्य प्राप्त स्तव सरलदृष्ट्वा विरहितः।
कृपापूर्णैर्नेक्षैः कमल दल निभैर्मा खचयतात्॥
सहस्यं किं हंसो नहि तपति दीनं जनचयम्।
धनान्ते किं चन्द्रोऽसमकर नियातो भुवितले॥
कृपा दृष्टेस्तेऽहं भयहर विभौ किं विरहितो।
जले वा हर्म्ये वा घनरसमु यातो न विषमः॥
त्रिमूर्तिस्त्वं गीतो हरिहर विधातात्मकगुणो,
निराकारः शुद्ध परतरपरः सोप्य विषयः।
दयारूपं शान्त मुनिगुण नुतं भक्त दयितम्,
कदा पश्यामित्वां कुटिलकच शोभित्रिनयनम्॥
तपो योगं सांख्यम् यम-नियम चेतः प्रियजनम्,
न कौलार्च्या चक्रं हरिहर विधीनां प्रियतमम्।
न जाने ते भक्तिं परम मुनिमार्ग मधुविधि,
तयाप्येषा वाणी परिरटति नित्यं तव यशः॥
न ये कांक्षा धर्मे न वसुनिचये राज्य निवहे,
न मे स्त्रीणां भोगो सखिसुत कुटुम्बेषु न च मे।
यदा यद्यद् भाव्यं भवतु भगवन् पूर्व सुकृता-
न्ममैत्तु प्रार्थ्यं तव विमल भक्तिः प्रभवतात्॥

कियांस्तेऽस्मभ्दारः पतितपतितंस्तारयसि भो,
मदन्यः कः पापी यजन विमुखः पाठ रहितः।
दृढो मे विश्वास स्तव नियति रुद्धार विषया,
सदा स्याद्विश्रम्भः क्वचिदपि मृषा च भवतात्॥
भवद् भावादिभन्नो व्यसन निरतः को मदपरो,
मदान्धः पापात्मा बटुक शिव ते नाम रहितः।
उदारात्म बन्धो न हि तबक तुल्यः कलुषहा,
पुनस्संचिन्त्यैवं कुरु हृदि यथा चेच्छसि तथा॥
जपान्ते स्नानान्ते ह्यषसिं च निशीथे पठतियो,
महासौख्यं देवो वितरति तु तस्मै प्रमुदितः।
अहोरात्रं पार्श्वे पर विसतति भक्तानु गमनो,
वयान्ते सहृष्टः परि नयति भक्तानस्व भुवनम्॥

॥ भैरव क्षमापन स्तोत्र सम्पूर्ण॥

क्रोध भैरव साधना

तव स्नेहान्महादेव! कथ्यतेऽकथ्यमद्भुतम्।
यत. सुरैर्दुर्लभं स्वर्गे मर्त्ये मर्त्यैर्मुमुक्षभिः॥
नागलोके तथा नागैस्तच्छृणुष्व मम प्रिये॥
यस्य ज्ञानं विना क्वापि नारीणां निग्रहो भवेत्।
यक्षिण्यो नैव गच्छन्ति सिद्धिमिष्टां शृणुष्व तत्॥

भगवान् भैरव कहते हैं—महादेवि! मैं तुम्हारे स्नेह के वशीभूत होकर इस अत्यन्त गोपनीय तथा अद्भुत मन्त्र का उपदेश करता हूँ। यह स्वर्ग में देवगण के लिए, मृत्युलोक में मुमुक्षु मनुष्यों के लिए तथा नागलोक में नागों के लिए भी दुर्लभ है। हे प्रिये! सुनो इसे न जानने से यक्षिणी भी अभीष्ट सिद्धि प्राप्त नहीं कर सकती और इसके बिना नारीगण का भी निग्रह नहीं होता।

क्रोध भैरव मन्त्र

मैं यहाँ अति गोपनीय मन्त्र का वर्णन कर रहा हूँ, जिसके द्वारा देवता एवं भूतगणों का भी मारण कर्म सिद्ध हो जाता है।

विषं ॐ वज्रज्वालेन हनयुग्मं ततः परम्।
सर्वभूतान् ततः कूर्च्चमस्त्रान्तं मनुमीरितम्॥
अस्य विज्ञान मात्रेण क्रोधेशाद्रोमकूपतः।
वज्रज्वालाः प्रजायन्ते शुष्यन्ति प्रमथादयः।
ब्रह्मेशजिष्णुप्रमुखा नीताः स्युर्यमशासनम्॥

मन्त्र— **ॐ वज्रज्वाले हन हन सर्वभूतान् हुं फट्।**

इस मन्त्र को जानने मात्र से क्रोधभैरव के रोमकूप से वज्रज्वाला प्रकट होती है। प्रमथादि भूतगण शुष्क हो जाते हैं और ब्रह्मा, महादेव व इंद्राणि प्रमुख देवगण भी यमराज (मृत्यु) के अधीन हो जाते हैं।

ततः सविस्मयं प्राहू रुद्राद्या क्रोधभूपतिम्।
वर्तमानेऽत्र समये नामीषं निग्रहं कुरु।
सर्वभूताश्च भूतिन्यः करिष्यान्ति भवद्वचः॥

जब क्रोधभैरव ने भैरवी से इस प्रकार कहा तब देवगण (रुद्रादि) विस्मित होकर कहने लगे, "हे भैरव! इस समय आप इनका निग्रह न करें। समस्त भूतगण एवं पृथ्वी आपके वाक्य का अवश्य प्रतिपालन करेगी।"

विज्ञानाकर्षिणी मन्त्रं भाषतेऽतोतिविस्मिता।
तारं ब्रह्मसुखे प्रोच्य शरयुग्मान्तमीरितम्॥
अस्य भाषितमात्रेण वज्रज्वाला विनिःसृताः।
मृतसंजीवनी विद्या मृतप्राण प्रदायिनी।
भूतानां दुरितध्वंसो भवेदस्य प्रभावतः॥

मंत्र— **ॐ ब्रह्ममुखे शर शर फट्।**

यह अत्यंत आश्चर्यजनक विज्ञानाकर्षण मंत्र कहा जाता है। इसका उच्चारण करते ही वज्रज्वाला निकल पड़ती है। यह मृतसंजीवनी विद्या है। इससे मृतक प्राणी भी जीवित हो जाता है। इसके प्रभाव से भूतादि का भय नष्ट हो जाता है।

अथापराजितानाथो नाथपादौ प्रगृह्य च।
वन्दयित्वा च शिरसा त्राता त्वं भगवान् परः।
त्राहि मां भूतनिचयं जम्बूद्वीपे कलौ युगे॥

तदनन्तर भूतनाथ ने भैरवदेव का पैर पकड़कर तथा नमस्कार करके कहा कि आप परित्राता तथा षड् ऐश्वर्ययुक्त प्रधान पुरुष हैं। इस कलियुग

में जम्बूद्वीप के प्राणिवर्ग का तथा मेरा रक्षण करें।

रसं रसायनं सौख्यं स्वर्णवैदूर्यमौक्तिकम्।
हंसेन्दुकांतादिमणिगन्धवस्त्रं च कांचनम्।
भोजनं कुसुमं क्षेमं वरं दास्याम ईप्सितम्॥

भैरव कहते हैं, "रस, रसायन, सुखभोग, सुवर्ण, नीलकांतमणि, मुक्ता, उत्कृष्ट वस्तु, चन्द्रकान्ता आदि मणि, गन्धद्रव्य, वस्त्र, भोजन, पुष्प, कुशल वर आदि अभीष्ट मैं तुम्हें प्रदान करूँगा।"

भूतिन्यश्चेटिकाः क्रोधजापिनां चेटका वयम्।
राजा हि तस्करभयं जरानिष्टाघसम्भवम्।
भूत-प्रेत-पिशाचादीन्नाशयामः प्रयत्नतः॥

जो क्रोध भैरव मंत्र का जप करते हैं, मैं उनका भृत्य हूँ और भूतिनीगण उनकी दासी हैं। उनका जरा (वृद्धावस्था), अनिष्ट तथा पापजनित भय, राजा एवं तस्करभय, भूत-प्रेत-पिशाचादि समस्त अशुभों को मैं यत्नपूर्वक नष्ट कर देता हूँ।

एवमस्त्विति ताः प्राहुर्विस्मिताः क्रोधभूपतिम्॥

महादेव आदि देवगण विस्मित होकर कालभैरव से कहते हैं, "आपने जो कुछ कहा है, वही सत्य हो।"

ततो नृणां हितार्थय प्रमथाद्युपकारकम्।
क्रोधराजः पुनः प्राह मृतसंजीवनीमनुम्॥

तदनन्तर क्रोधभैरव (जो भैरवदेव के अनन्त रूपों में से ही एक विलक्षण रूप है) ने संसार के हित के लिए पुनः प्रमथादि का उपकार करने वाले संजीवनी मंत्र का उपदेश दिया।

मंत्र— **ॐ संघट्ट-संघट्ट मृतान् जीवय स्वाहा।**

इस मंत्र का उच्चारण करने मात्र से भूतादि देवता मूर्च्छित, स्तंभित, कंपित तथा आह्लादित हो जाते हैं।

अथ प्राह महादेवो भूपतिं तं मुहुर्मुहुः।

क्रोधाधिपं वज्रपाणिं हित्वा त्राता न विद्यते॥

तदनन्तर महादेव क्रोधभैरव से पुनः कहने लगे कि वज्रपाणि क्रोधभैरव के अतिरिक्त अन्य कोई भी इस संसार का रक्षक नहीं है।

अथोवाचाशनिधरो माभैर्माभैर्महेश्वरम्।
तवान्येषां च देवानां हितार्थं भूतनिग्रहम्।
करिष्यामि कलौ जम्बूद्वीपस्थानां नृणामपि॥

तदनन्तर वज्रपाणि क्रोधभैरव महादेव से कहते हैं कि भयभीत न हों, आक्रांत न हों, अन्य देवगण के, आपके तथा जम्बूद्वीप में स्थित मनुष्यों के हित के लिए मैं कलियुग में भूतनिग्रह करूँगा।

रक्षास्मानसकृत् प्राहुः प्रमथाश्चाप्सरोऽन्गानाः।
नागिन्यो यक्षकामिन्यः क्रोधेशं प्रणिपत्य च॥

प्रथमगण, अप्सराएँ, नागिनियाँ, यक्षिणियाँ, क्रोधभैरव को प्रणाम करके सभी पुनः कहते हैं कि अब आप हमारी रक्षा करो।

अथ वज्रधरः प्राह भैरवो रोमहर्षणः।
सुन्दरि! त्रिपुरे! भद्रकालि! भैरवचंडिके॥
मज्जापिनां नृणां यूयमुपस्थानं करिष्यथ।
स्वर्णाद्याकांक्षितान्नानि जापिनेऽपि प्रदास्यथ॥

इसके पश्चात् कुलिशपाणि लोमहर्षण क्रोधभैरव कहते हैं, "सुन्दरी! त्रिपुरा! भद्रकाली! भैरवचण्डिका! तुम सभी मेरा जप करने वाले साधकों की उपासना करो और उन्हें स्वर्ण, अभिलाषित भोज्यवस्तु आदि प्रदान करो।"

यक्षिण्योऽप्सरो देवकन्यका नागकन्यकाः।
दास्यामो देवदेवेश! निश्चितं क्रोधजापिनः॥
करिष्याम उपस्थानं दास्यामः प्रार्थितं धनम्।
यदि कुर्मोऽन्यथा नष्टा भवामः सकुलं प्रभो॥
सर्वकर्म करिष्यामो दासत्वं क्रोधजापिनम्।

यद्यन्यथा करिष्यामो भगवान् मूर्ध्नि दारयेत्।
शतधा क्रोधवज्रेण नरके वा निपातयेन्॥

अब यक्षिणी, देवकन्या तथा नागकन्यायें कहने लगीं, "हे देवदेवेश! हम आपके उपासकों की सेवा करेंगी तथा प्रार्थित धन भी प्रदान करेंगी। प्रभो! यदि हम लोग आपकी बातें न मानें, तब हमारा वंशसहित विनाश हो जाए। जो क्रोधभैरव के मंत्र का उपासना करते हैं, हम सभी उनकी दासी बनकर उनके समस्त कार्यों को पूर्ण करेंगी। यदि हम लोग आपकी आज्ञा का उल्लंघन करें, उस स्थिति में आप हमारा मस्तक अपने क्रोधवज्र से सैकड़ों टुकड़ों में विदीर्ण कर दें और हमें नर्क में डालें।"

साध्वित्युक्त्वा वज्रपाणिः पुनः प्राह सुरानिति।
करिष्येत्युमस्थानं नराणां क्रोधजापिनाम्।
वैदूर्यादिमणीन् स्वर्णमुक्ताद्रव्याणि दास्यथ॥

वज्रधारी क्रोधभैरव देवताओं से कहते हैं कि तुम्हारा भला हो। हे नायिकागण! जो मनुष्य क्रोधभैरव के मंत्र का जप करते हैं, तुम लोग उन्हें नीलकांतमणि तथा सुवर्ण व मोती इत्यादि भौतिक द्रव्य प्रदान करो।

एवमस्त्विति तं नत्वा क्रोधराजं सुरान्तकम्।
गता आज्ञां शिरः कृत्वा स्वस्थानं यक्षनायिकाः॥

यक्षनायिकाओं ने 'ऐसा ही हो', कहकर सुर-असुर का विध्वंस करने वाले क्रोधैभैरव को प्रणाम करके उनका आदेश शिरोधार्य करके अपने-अपने लोकों के लिए प्रस्थान किया।

तेनेष्टसिद्धिदाः सर्वा जम्बूद्वीपेकलौ युगे॥

इस प्रकार कलिकाल में जम्बूद्वीप के निवासियों को यह नायिकागण दिव्य सिद्धि प्रदान करती हैं।

मुद्रा प्रदर्शन

साधनाकाल में मंत्र जप के साथ कुछ विशिष्ट मुद्राएँ बनाने का भी विधान है। ये मुद्राएँ वांछित सिद्धि दिलाने में विशेष सहयोग करती हैं।

यह साधना किसी घने वृक्ष के नीचे बैठकर, देवालय, वन, शिव या भैरव मन्दिर, नदी के संगम स्थल पर अथवा श्मशान में करनी चाहिए। मंत्र इस प्रकार हैं—

ॐ महाभूत कुलसुंदरी हुं।

ॐ विजयसुंदरी ह्लीं अं।

ॐ विमलसुंदरी आः।

ॐ सुंदरी हुं हुं।

ॐ मनोहरी सुंदरी धीः।

ॐ भूषणसुंदरी क्लीं।

ॐ धवलसुंदरी ह्लीं।

ॐ मधुमत्तसुंदरी स्वाहा ह्लीं।

उपर्युक्त मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र को उस समय तक जपना चाहिए, जब तक कि अभीष्ट सिद्ध न हो जाए। जप के साथ मुद्रा-प्रदर्शन निम्न प्रकार से करें—

वाममुष्टिं दृढं बद्धवा मध्यमान्तु प्रसारयेत्।
आवाह्य पूजनीमुद्राम् उत्तमांगलिसाधिनीम्॥

बाएं हाथ की मुट्ठी को दृढ़तापूर्वक बन्द करके मध्यमा उंगली को फैलाये। यह 'पूजनी मुद्रा' है। इससे उंगलियों की उत्तमता सिद्ध होती है।

अन्योऽन्यमुष्टिसंयुक्ता तर्जनीन्तु प्रसारयेत्।
सिध्यते तत्क्षणादेव भूतिनी सत्यपालिनी॥

दोनों मुट्ठियों को परस्पर मिलाकर दोनों तर्जनी को फैलाएँ। इससे तत्क्षण भूतिनी (उपरोक्त मंत्रों में से किसी एक मंत्र से संबंधित देवी) सिद्ध हो जाती है।

वामहस्ते दृढां मुष्टि कनिष्ठान्तु प्रसारयेत्।
भूतिन्याकर्षिणीमुद्रा सान्निध्याकर्षिणी स्मृता॥

बाएं हाथ की मुट्ठी को दृढ़ता से बन्द करके कनिष्ठा को फैलाएँ।

यह 'आकर्षणी मुद्रा' है। यह देवसन्निधान को देने वाली है।

प्रसार्य वामहस्तन्तु तर्जनीं कुटिलाकृतिम्।
ज्येष्ठयांगुलिना बद्धा भूतिनीवशकारिणी॥

पहले बाएं हाथ की समस्त उंगलियों को फैलाएँ, किन्तु कनिष्ठा को कुण्डलाकृति करें, उसे सबसे बड़ी उंगली द्वारा बद्ध करके रखें। इस मुद्रा से भूतिनी वशीभूत हो जाती है।

वाममुष्टिं दृढां कृत्वाऽनामिकान्तु प्रसारयेत्।
भूतिन्याकर्षिणी मुद्रा सर्वविघ्नविघातिनी॥

बाएँ हाथ की मुट्ठी बांधकर अनामिका को फैलाएँ। इस भूतिनी आकर्षिणी मुद्रा से समस्त विघ्न नष्ट हो जाते हैं।

वामहस्ते दृढां मुष्टिं ज्यष्ठांगुलीं प्रसारयेत्।
सम्मुखीकरणी मुद्रा सर्वदुष्टभयंकरी॥

बाएं हाथ की मुट्ठी को बांधकर ज्येष्ठ (मध्यमा) उंगली को फैलाएँ। यह सम्मुखीकरणी मुद्रा सर्वदुष्टभय का विनाश करती है।

वामहस्ते दृढां मुष्टिं कनिष्ठांतु प्रसारयेत्।
भूतिनी नामिका मुद्रा शीघ्रानयनकारिणी॥

बाएँ हाथ की मुट्ठी को दृढ़ता से बांधकर कनिष्ठिका को फैलाएँ। यह भूतिनी मुद्रा है। इससे देवता शीघ्रता से आते हैं।

॥ इति क्रोध भैरव साधना॥

भैरव ताण्डव स्तोत्र

यहाँ भैरव का सबसे प्रभावकारी स्तोत्रों में से एक स्तोत्र दिया गया है, जिससे भैरव ताण्डव स्तोत्र की संज्ञा दी गयी है। पूर्ण भाव विभोर होकर इस स्तोत्र की स्तुति करें और देखें भैरव नाथ का चमत्कार।

यं यं यं यक्ष रूपं दश दिशि विदितं भूमि कम्पायमानं
सं सं सं संहार मूर्ति शुभ मुकुट जटा शेखरं चन्द्र विम्बं
दं दं दं दीर्घ कायं विकृत नख मुख चौर्ध्व रोमं करालं
पं पं पं पाप नाशं प्रणमतं सततं भैरवं क्षेत्रपालं॥ १॥
रं रं रं रक्तवर्णं कटक कटितनुं तीक्ष्णदंष्ट्रा विशालं
घं घं घं घोर घोसं घ घ घ घ घर्घरा घोर नादं
कं कं कं कालरूपं धग धग धगितं ज्वलितं कामदेहं
दं दं दं दिव्य देहं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं॥ २॥
लं लं लं लम्ब दन्तं ल ल ल लुलितं दीर्घ जिह्वाकरालं
धूं धूं धूं धूम्रवर्ण स्फुट विकृत मुखमासुरं भीम रूपं
रूं रूं रूं रुण्डमालं रुधिरमय मुखं ताम्र नेत्रं विशालं
नं नं नं नग्नरूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं॥ ३॥
वं वं वं वायुवेगं प्रलय परिमितं ब्रह्मरूपं स्वरूपं
खं खं खं खड्गहस्तं त्रिभुवन निलयं भास्करं भीमरूपं
चं चं चं चालयन्तं चल चल चलितं चालितं भूत चक्रं
मं मं मं मायकालं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं॥ ४॥

खं खं खं खड्गभेदं विषममृतमयं काल कालान्धकारं
क्षि क्षि क्षि क्षिप्र वेग दह दह दहन नेत्रं सांदिप्यमानं
हूं हूं हूं हूंकार शब्दं प्रकटित गहन गर्जितं भूमिकंपं
बं बं बं बाललिलम प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं॥५॥

॥ इति भैरव ताण्डव स्तोत्र ॥

उन्मत्त भैरव साधना

प्रथम भाग

क्रोध भूपति-भूतनाथ सिद्धि

उन्मत्तभैरव्युवाच।

सुरासुरजगद्वन्द्य जगतामुपकारक।
श्रीमहामण्डलं ब्रूहि सर्वसिद्धिप्रदायकम्॥

उन्मत्तभैरव उवाच।

विद्याधरोऽप्सरो यक्षःप्रेतगन्धर्व किन्नरैः।
महोरगैः परिवृतो महादेवस्त्रिलोचनः॥
क्रोधं प्रदक्षिणीकृत्य नमस्कृत्य पुनः पुनः।
पादै शिरे विधायाथ भाषते क्रोधभूयतिम्॥
क्रोधीश त्वं महाभूतदुष्टग्रहविमर्दक।
कटपूतनवेतालक्लेशविध्नविघातक ॥
प्रसीद देवदेवेश संसारार्णव तारक।
पश्चिमे समये काले जम्बुद्वीपे कलौ युगे॥
मर्त्त्यानामुपकारार्थं दुष्ट दुर्ज्जन निग्रहम्।
भूतिनी यक्षिणी-नागकन्यका साधनं वद॥
वोधिसत्वो महादेव साधु साध्विति पूजयन्।
महा मण्डलमाख्यातं सुव्यक्तं सुरपादपम्॥ १॥

उन्मत्त भैरव कह रहे हैं, हे भैरव! आप सुरासुरादि जगत के पूजनीय तथा जगत् के उपासक है, अतएव महासिद्धि प्रदायक महामण्डल मेरे समक्ष कहें।

उन्मत्त भैरव वर्णन करने लगे, महादेव, विद्याधर, अप्सरा, यक्ष, प्रेत, गन्धर्व, किन्नर तथा सर्पगण परिवृत होकर क्रोधभूपति का प्रदक्षिणा करके बार बार नमस्कार करने के बाद दोनों पैर माथे पर धारण करके क्रोधभूपति को कहें—हे क्रोधेश्वर! आप महाभूत तथा दुष्टग्रह आदि के विनाशक हो। देवाधिदेव तथा संसार स्वरूप समुद्रतारक हो, इस समय इस कलियुग में मनुष्यों के उपकारार्थ दुष्टजन निग्रहकारक भूतिनी, यक्षिणी तथा नागकन्यादि की साधना मेरे समक्ष कहें। क्रोधपति महादेव को साधुवाद प्रदान करके वर्णन किया।

अथातः संप्रवक्ष्यामि महामण्डलमुत्तमम्।
चतुरस्त्रं चतुर्द्वारं चतुष्कोणविभूषितम्॥
दलैः षोडशभिर्युक्तं वप्रप्रकारशोभितम्।
तत्र मध्ये न्यसेद् भीमं ततो ज्वालासमाकुलम्॥
साट्टहासं महारौद्रं भिन्नाञ्जनचयोपमम्।
प्रत्यालीढं चतुर्बाहुं दक्षिणे वज्रधारिणम्॥
तर्ज्जनीं वामहस्तेन तीक्ष्ण दंष्ट्रा करालिनम्।
कपालरत्न मुकुटं त्रैलोक्य स्यारिनाशनम्॥
आदित्यकोटि सङ्काशमष्टनागविभूषितम्।
अपराजितपदाक्रन्तं मुद्राबन्धेन तिष्ठति॥
अनामिका द्वयं वेष्ट्य आकुञ्चय तर्ज्जनीद्वयम्।
कनिष्ठां मध्यामाञ्चैव ज्येष्ठांगुष्ठेन च क्रमात्॥
एवं मुद्राधरः श्रीमान् त्रैलोक्य साध्यसाधकः।
उमापतिं लिखेत् क्रोधपुरो विष्णुञ्च दक्षिणे॥
रक्षोदेवं पश्चिमे तु कार्त्तिकेय तथोत्तरे।

ईशाने च गणाधीशमादित्यं वह्निसंस्थितम्॥
नैर्ऋते तु लिखेद्रा हुं वायुकोणे नटेश्वरम्।
चन्द्रं सम्पूजयेद्वामे क्रोधराजस्य भूपतेः॥
प्रभादेवीं सुवर्णाभां सर्वालङ्कारभूषिताम्।
ईषद्धसित वदनां क्रोधवामे सदा लिखेत्॥
क्रोधाग्रे पुष्पहसताञ्च श्रीदेवीं परिभावयेत्।
सालङ्कारां धूपहस्तां क्रोधदक्षे तिलोत्तमाम्॥
क्रोधस्य पृष्ठभागे च दीपहस्तामलंकृताम्।
दिव्यरूपां शशीं देवीं द्विजराजमुखीन्तथा॥
आग्नेयाञ्च न्यसेद् भद्रां दिव्यकुण्डलमण्डिताम्।
गृहीतगन्धहस्ताञ्च रत्नभूषणभूषिताम्॥
विन्यसेद्रक्षः कोष्ठायां वीणायुक्तं सरस्वतीम्।
वायव्यां यक्षिणीं रत्नमालाढ्यां सुरसुन्दरीम्॥
ईशाने च विशालाक्षीं सर्वालङ्कार भूषिताम्।
रूपयौवनसम्पन्नां स्वर्णवर्णां समालिखेत्॥
इन्द्रोवह्निर्य मोरक्षो वरुणो वायुरेव च।
कुबेरश्च शशीशानो बाह्यप्राचादिमण्डले॥ २॥

इसके बाद मैं महामण्डल कह रहा हूँ ध्यानपूर्वक सुनो! चतुरस्त्र तथा चतुर्द्वार, चतुष्कोण, षोडशदल पद्म एवं वप्रप्राकारादि शोभित मण्डल निर्माण करके उसके मध्य में भीममूर्त्ति का विन्यास करें।

भीममूर्त्ति का वर्णन इस प्रकार है—अत्यन्त तेजस्वी, अट्ठहास युक्त, महाभयंकर, अंजन के समान देह कान्ति, सामने दाहिने पैर, चतुर्बाहुधारी, दाहिने हाँथ में वज्र, बाँये हाँथ में तर्जनीमुद्रा, तीक्ष्ण दाँत में भयंकराकार, मनुष्य मस्तक तथा रत्नमुकुटधारी त्रिभुवन के शत्रुविनाशक, कोटिसूर्य के समान तेजस्वी, अष्टनाग विभूषित एवं मुद्रा बन्धन करके स्थित हैं।

अब मुद्रा वर्णन कहा जा रहा है, अनामिकांगुलि दोनों परस्पर बाँधकर तर्जनीद्वय को आकुंचित करे एवं वृद्धांगुलि के द्वारा मध्यमा तथा कनिष्ठांगुलि को आबद्ध करे। इस प्रकार मुद्राधर श्रीमान् क्रोधपति त्रिभुवन की सिद्धि प्रदान करते हैं। क्रोधपति के अग्रभाग में दक्षिण में विष्णुमूर्ति लिखें। मण्डल के पश्चिम में कुबेर, उत्तर में कार्त्तिकेय, ईशानकोण में गणेश, दक्षिण में सूर्य, नैर्ऋत्यकोण में राहु और वायुकोण में निर्ऋति तथा क्रोधभूपति के बांये चन्द्रमूर्त्ति अंकित करके पूजा करें।

क्रोधराज के बांये सुवर्णवर्णा सर्वालंकार भूषिता तथा किंचित हास्य वदना प्रभादेवी की मूर्ति बनायें। क्रोधराज के अग्र में पुष्पहस्ता लक्ष्मीदेवी, दक्षिण भाग में सालंकार धूपहस्ता तिलोत्तमा, पीठ पर दीपहस्ता, अलंकारयुक्त विद्याधरीरूपा चन्द्रमुखी शशीदेवी, अग्निकोण में दिव्यकुण्डलधारिणी गन्धहसता रत्नभूषण भूषिता भद्रादेवी, उत्तरकोण में वीणायुक्त सरस्वती, वायुकोण में रत्नमाला विभूषिता सुन्दरसुन्दरीरूपा विद्याधरी, ईशानकोण में सर्वालंकार भूषिता विशालाक्षी एवं मण्डल के पूर्वादि आठ दिशाओं में इन्द्र, वह्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर तथा ईशान इन सभी का मूर्ति बनाकर आवाहन पूर्वक पूजा करे।

अथ दीक्षाविधिं वक्ष्ये प्राणिनां दुरितापहम्।
क्रोधमुद्राधरं शिष्यं नीलवस्त्रयुगेन च।
छादितं क्रोधगं चित्त गुरुर्मन्त्रं निशामयेत्॥ ३॥

इसके बाद प्राणिवर्ग हेतु सर्वपापनाशक दीक्षाविधि को कह रहा हूँ। शिष्य को क्रोध मुद्राबद्ध करके दो नीलवस्त्र के द्वारा आच्छादन करें। उसके बाद गुरुदेव क्रोधमन्त्र सुनायेंगे।

अथ क्रोध मनुं वक्ष्ये ह्यसाध्यं येन सिध्यति।
बीज हालाहलं गुह्य क्रुं क्रों बीजमतः परम्॥
भयङ्कराणमाभाष्यासिताङ्गं क्षतजं स्थितम्।
प्रलयाग्निमहाज्वालामाभाष्य मनुमुद्धरेत्॥

एवमुच्चारिते क्रोधः स्वयमेव प्रविश्यति।
वद्ध्वातु क्रोधनीं मुद्रां शिरस्यास्ये च वक्षसि॥
स्वयं वज्रधरो भूत्वा तावत्तिष्ठद्वयं पुनः।
आभाष्य पातये त्तोयं वज्रदेहो भवन्नरः॥४॥

अब यहां क्रोधभूपति का मन्त्र कह रहा हूँ। इस मन्त्र से मनुष्य असाध्य साधना कर सकता है। '**ॐ हुं वज्र फट् क्रुं क्रों क्रुं क्रुं हुं हुं फट्**' यह मन्त्र उच्चारण करने पर क्रोधभैरव स्वयं आगमन करते हैं। शिष्य के मस्तक में, हृदय में तथा मुख में क्रोधमुद्रा बन्धन करके उक्त मन्त्र से जल को अभिमन्त्रित करके शिष्य के मस्तकादि में छिड़कने पर शिष्यदेह वज्र के समान दृढ़ होता है।

विसर्गात् प्रविश क्रोधकूर्च्चयुग्ममुदीरयेत्।
विशेदनेन मन्त्रेण क्रोधेनाभ्यर्च्चयेत्त्रिधा॥
नीलवस्त्रं परित्यज्य दर्शयेत् कुलदेवताम्।
ततोऽभिषेचनार्थञ्च मुद्रा मन्त्रं जलेक्षिपेत्।
तेनाभिषिञ्चितः शिष्या गुरुं सन्तोषयेत्ततः॥५॥

"**अः प्रविश क्रोध हुं हुं**" इस मन्त्र का तीन बार उच्चारण करके क्रोधभूपति की अर्चना करें एवं शिष्य के मस्तक से नीलवस्त्र परित्याग करके कुलदेवता का प्रदर्शन करे। उसके बाद अभिषेकार्थ जल में मुद्रामन्त्र का निक्षेप करके उस जल के द्वारा शिष्य का अभिषेक करें। इसके बाद शिष्य, गुरु को दक्षिणादि प्रदान करके सन्तुष्ट करें।

अथातः संप्रवक्ष्यामि क्रोधमन्त्रस्य साधनम्।
येन साधित मात्रेण सिद्धिः सर्वविधा भवेत्॥
धृत्वा हस्तद्वयेनासौ भावयेच्चेन्द्रमण्डलम्।
विषं भयंकरं बीजं ज्वालामालाकुलं हृदि॥
ध्यात्वा जपेदमुं मन्त्रं वक्ष्यमाणं शृणुष्व तत्।
विषम् हनयुगं गृह्य विध्वंसय द्वयान्वितम्॥

नाशयेति ततः पापं कालमन्त्रान्वितो मनुः।
शून्यं स्वमन्तरं चिन्त्यं हृदयं क्रोधमण्डितम्॥
ज्वालामालाकुलं तस्य मध्ये ध्यायेन्निरञ्जनम्।
अनेन क्रोधमन्त्रेण चिन्तयेत् क्रोधभूपतिम्॥
तारात् क्रोधावेशयावेशय कूर्च्चान्वितं मनुम्।
सञ्चिन्त्य वज्रपाणिञ्च क्रोधाधीशं स्मरेद्बुधः॥
हालाहलाल्लिखेद्वज्रं क्रोधावेशं प्रशामय।
कालबीजान्तमुच्चार्य चिन्तयेञ्च स्वदेवताम्॥
ततस्तु क्रोधमन्त्रेण षडङ्गन्यास माचरेत्।
विषं वज्रयुतं बोधिमहाकालं न्यसेद्धृदि॥
विषं हन युगं वज्रं कूर्च्चाद्यं विन्यसेत् शिरः।
हालाहलं दहयुगं वज्रं कालं न्यसेत् शिखाम्॥
विषमन्त्रयुतं वज्रमन्त्रञ्च कवचं न्यसेत्।
तारं दीप्तयुतं वज्र महाकालञ्च नेत्रयोः॥
विषं हन युगं गृह्य दहयुगमपदान्वितम्।
क्रोधवज्रपदं तद्वत् सर्वदुष्टानतः परम्॥
ततो मारय वर्मास्त्रं दिग्बन्धनान्तं षडङ्गकम्।
अन्योन्यान्तरितां मुष्टिं कुञ्चयेत्तर्ज्जनीयुगम्॥
विख्यात्यां क्रोधमुद्रेयं हृदयात् क्रोधमाह्वयेत्।
विषं वज्रधराद् गृह्य महाक्रोधपदं ततः॥
शमयेतिपदाद् गृह्य अनुपालयमुद्धरेत्।
शीघ्रमागच्छसि पदं वर्मास्त्रं ज्वलनप्रिया॥
अनेन मण्डले स्थाप्यं ततोऽर्घ्यमनु मुद्धरेत्।
विषं सर्वपदाद्देवतापदं समुदीरयेत्॥
प्रसीद कालबीजान्तां सविसर्गान्तु चण्डिकाम्।
अनेन दापयेदर्घ्यं पूजार्थं मनुमुद्धरेत्॥

विषबीजं समुद्धृत्य नाशयेति पदं ततः।
सर्वदुष्टान् हनयुगं पच भस्मी ततः कुरु॥
महाकालद्वयं चास्त्रं शिवोन्तमर्च्चनीमनुः।
ताराद्वन्द्रं समुद्धृत्य महाचण्डिपदं ततः॥
बन्धद्वयं ततो दत्वा दशदिशो निरूढद्वयम्।
द्विग्बन्धनमनुः प्रोक्तो वक्ष्ये माहेश्वरं मनुम्॥
शिवो व्याहृतयः स्वाहा महादेवमनुर्मतः।
विषं विकालिकायुक्तामुद्धरेत् कुलभैरवीम्॥
श्रीचक्रपाणिने द्विठोऽयं वैष्णवो मनुः।
विषं विष्णुर्देव गुरुपदमाभाष्य तत् परम्॥
देवकाय शिवोन्तोऽयं प्रजापति मनुर्मतः।
विषं रौद्र क्रोधपदं धारिणे च ततः परम्॥
वह्निकान्ता स्त्रयुक्तोऽयं मनुः कौमाररुपिणः।
बीज हालाहलं गुह्य गणपतये पदं ततः॥
द्विठान्तोऽयं मनुः प्रोक्तो गाणपत्योऽयमीरितः।
सान्तं सानन्तमुद्धृत्य नादबिन्दु समन्वितम्॥
ततः प्राथमिकं धूम्र ध्वजमादर संयुतम्।
सहस्त्र किरणायेति पदाज्ज्वलनवल्लभा॥
हालाहलादिरुक्तोऽसौ मनुरादित्य रूपिणः।
स्थिति बीज समुद्धत्य चन्द्रसूर्य पदं ततः॥
पराक्रमाय वर्मास्त्रं द्विठोराहोर्मनुः स्मृतः।
विषं नटेश्वर पदं नटद्वयमतः परम्॥
विषं भूतेश्वरं बीजं शिवोनतोऽसौ नटेश्वरः।
हालाहलं समृद्धृत्य चन्द्रायपदमीरयेत्॥
वह्निप्रियान्तमित्युक्तो मनुश्चन्द्रमसः स्मृतः।
विषं सौभ्रमनुं प्रोक्त्वा नत्यन्तासौ प्रभेश्वरी॥

तारं विष्णुप्रियाबीजं नमोऽन्तः श्रीमनुः स्मृतः।
विषं हरिप्रियाबीजं हां नमः श्रीतिलोत्तमा॥
पञ्चरश्मिरमाबीजं नत्यन्ता च शशीमताः।
विषबीजं जगन्मान्यां सनत्यन्तं समुद्धरेत्॥
रम्भामनुरयं प्रोक्तो मण्डले क्रोधभूपतेः।
हालाहलं समुद्धृत्य सरस्वत्यै पदं ततः॥
गाहयद्वय सर्वश्च द्विठः सारस्वतो मनुः।
विषं यक्षेश्वरीबीजं धूम्रभैरव्यलंकृतम्॥
वह्निप्रियानुतोऽन्तोयं प्रोक्तो यक्षेश्वरीमनुः।
हालाहलं समुद्धृत्य भूतिनीपदसंयुतम्॥
ततः प्राथमिकं वह्निप्रियान्तो भूतिनीमनुः।
भूतिन्यष्टौ महाद्वार पालिन्यः समुदीरीताः॥
विषं निरञ्जनं गृह्य तिष्ठ सुवासिनीपदम्।
शिरोनतिश्च भूतिन्या मन्त्रोऽयं हृदयाह्वयः॥६॥

अब क्रोध मन्त्र की साधना यहां कह रहा हूँ। इस प्रकार साधना करने पर सभी प्रकार का कार्य सिद्धि होता है। दोनों हाथों में मुद्राधारण करके चन्द्रमण्डल की ध्यान करें।

'ॐ ज्वाला समाकुलं नमः' इस मन्त्र से हृदय में ध्यान करके निम्नलिखित सभी मन्त्रों का जप करें—

ॐ हन हन विध्वंसय विध्वंसय नाशय नाशय पापं हूं फट् स्वाहा

यह मंत्र जप करके हृदय में क्रोधभैरव का चिन्तन करें। **'ॐ क्रोध आवेशय आवेशय'** इस मंत्र से वज्रपाणि क्रोधभूपति की अपने हृदय में भावना करें। **'ॐ वज्रक्रोधावेशय प्रशामय हुं,'** इस मंत्र से अपने ईष्ट देवता का चिन्तन करें। उसके बाद क्रोधमंत्र से षडङ्गन्यास करें। **'ॐ वज्रबोधि हृदयाय नमः।'**

ॐ हन हन वज्र हूं स्वाहा। ॐ दह दह वज्र हूं शिखायै वषट्। ॐ फट् वज्र फट् कवचाय हूं। ॐ दीप्त वज्र हूं नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ हन हन दह दह क्रोध वज्र सर्वदुष्टान् मारय मारय हूं फट् स्वाहा अस्त्राय फट्। इस प्रकार षडङ्गन्यास करके दिग्बन्धन करना चाहिये।

दोनों हाथ की मुट्ठी परस्पर संयुक्त करके तर्जनीद्वय को आकुञ्चित (थोड़ा टेढ़ा) करें, इस विख्यात क्रोध मुद्रा के द्वारा हृदय देश में क्रोधराज का आवाहन करना चाहिए।

'ॐ वज्रधर महाक्रोध समयमनुपालय शीघ्रमागच्छसि त्वं हुं फट् स्वाहा'

इस मंत्र से मण्डल पर देवता को स्थापित करके अर्घ्य प्रदान करें अर्घ्य प्रदान का मंत्र है—**ॐ सर्वदेवता प्रसदी हूं अः ह्रीं।**

इस मंत्र से अर्घ्य प्रदान करें।

'ॐ नाशय सर्वदुष्टान् हन हन पच पच भस्मीकुरु हूं हूं फट् स्वाहा' इस मंत्र से पूजा करना चाहिए।

'ॐ वज्र महाचण्डि वन्ध वन्ध दशदिशे निरूढ़' इस मंत्र से दिग्बन्धन करें। **'ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा'** इस मंत्र से महादेव की पूजा करें। **'ॐ अं आं असिचक्रपाणिने स्वाहा'** इस मंत्र से विष्णु की पूजा करें। **'ॐ विष्णुर्द्देवगुरु देवकाय स्वाहा'** इस मंत्र से ब्रह्मा की तथा **'ॐ हौं क्रोधधारिणे स्वाहा'** इस मंत्र से कात्तिकेय की, **'ॐ गणपतये स्वाहा'** इस मंत्र से गणेश की, **'ॐ ह्रीं हं सः सहस्त्रकिरणाय स्वाहा'**, इस मंत्र से सूर्य की, **'ॐ चन्द्र-सूर्याय पराक्रमाय हुं फट स्वाहा'** इस मंत्र से राहु की, **'ॐ नटेश्वराय नट नट ॐ ह्रीं स्वाहा'** इससे नटेश्वर की, **'ॐ चन्द्राय स्वाहा'** इस मंत्र से चन्द्र की, **'ॐ ह्रीं नमः'** इस मंत्र से प्रभादेवी की, **'ॐ श्रीं नमः'**, इस मन्त्र से लक्ष्मी की, **'ॐ श्रीं हां नमः'** इस मंत्र से तिलोत्तमा की, **'ॐ श्रीं नमः'** मंत्र से शशीदेवी की, **'ॐ जगन्मान्यायै नमः'** इस मंत्र से क्रोध मण्डल में रम्भादेवी की पूजा

करें।

'ॐ सरस्वत्यै गाहय गाहय सर्वान् स्वाहा' इस मंत्र से सरस्वती की पूजा करें। **'ॐ षीं स्वाहा'**, यह यक्षेश्वरी का पूजन मंत्र है।

'ॐ भूतिनी ह्रीं स्वाहा' इस भूतिनी मंत्र से मण्डल के अष्टद्वार में अष्टभूतिनी की पूजा करें। **'ॐ सुवासिन्यै स्वाहा नमः'** इस मंत्र से पुनः मण्डल पर भूतिनी की पूजा करनी है।

अथातः संप्रवक्ष्यामि मुद्रां परमदुर्लभाम्।
यया विज्ञातया क्रोधः स्वयं सिध्यति नान्यथा॥
अन्योन्यमंगुली वेष्टय द्वेतर्जन्यौ प्रसारयेत्।
तर्जनी कुण्डली कृत्वा मुद्रा पापप्रणाशिनी॥७॥

अब परम दुर्लभ मुद्रा कह रहा हूँ। जिस मुद्रा के विज्ञान मात्र से स्वयं क्रोधपति भूतनाथ सिद्ध होते हैं। इसे अन्यथा न समझें। दोनों हाथों की अंगुलियों को परस्पर वेष्टन करके तर्जनीद्वय प्रसारित करके कुण्डलाकार करें, यह मुद्रा सभी प्रकार के पाप को नाश करती है।

अन्योन्य मुष्टिमास्थाय वेष्टयेत्तर्जनीद्वयम्।
क्रोधस्य खङ्गमुद्रेयं त्रैलोक्यक्षयकारिणी॥८॥

दोनों हाथों की मुट्ठी बाँधकर तर्जनीद्वय को परस्पर वेष्टन करें, इसका नाम क्रोधराज का खङ्गमुद्रा है। यह मुद्रा त्रिभुवन का भी क्षय कर सकती है।

कृत्वा मुष्टि ततोऽन्योन्यं मध्यमे द्वे प्रसारयेत्।
प्रोक्ता महाशिवोमुद्रा सद्यः सिद्धि प्रदायिनी॥९॥
अस्या एव मुद्राया मध्यांगुलौ प्रसारयेत्।
तर्जन्यौ च दृढीकृत्वा शिखामुद्रा प्रकीत्तिता॥१०॥
अस्या एव च मुद्रायाः प्रसार्य तर्जनीद्वयम्।
तर्जन्या मध्यमां स्पृष्ट्वा कनिष्ठानामिके तथा।
धेन्वाख्येयं महामुद्रा नियुक्ताचार्यकर्मणि॥११॥

दोनों हाथों की मुट्ठी बाँधकर मध्यमांगुलिद्वय को प्रसारित करें। इसका नाम महाशिव मुद्रा है। यह मुद्रा सद्यः सिद्धि प्रदान करता है। उक्तरूप मुद्रा करके अनामिका तथा मध्यमांगुलि प्रसारित करके तर्जनीद्वय दृढ़रूप से बद्ध करें। इसका नाम शिखा मुद्रा है। उक्त शिखा मुद्रा में तर्जनीद्वय प्रसारित करके उसके द्वारा मध्यमा, कनिष्ठा तथा अनामिका को स्पर्श करें, इसका नाम धनु मुद्रा है, यह मुद्रा सभी प्रकार के आचार्य कार्य में प्रयुक्त करें।

मुष्टिमन्योन्यमास्थाय अंगुष्ठौ च प्रसारयेत्।
धूपाख्येयं महामुद्रा नियुक्ता धूपकर्मणि॥ १२॥

दोनों हाथों की मुट्ठी बाँधकर अंगुष्ठांगुलिद्वय को फैला दें। इसका नाम धूप मुद्रा है, यह मुद्रा धूपप्रदान में प्रयुक्त करें।

पृथगन्योन्यमास्थाय प्रसार्य वामतर्जनीम्।
प्रधानावाहनीमुद्रा युक्तावाहन कर्मणि॥ १३॥

पृथग्रूप से दोनों हाथों की मुट्ठी बाँधकर, बाँयें हाथ की तर्जनी को प्रसारित करें, यह मुद्रा आवाहन कार्य सम्पन्न करता है।

स्व दक्षहस्तांगुष्ठेन कनिष्ठा नखमाक्रमेत्।
शेषांगुलीः प्रसार्याथ बाहुमूले प्रविन्यसेत्।
तस्माक्षिपेदियं मुद्रा दिग्बन्धनकरी स्सृता॥ १४॥

अपने दाहिने हाथ की अंगुष्ठा अंगुलि के द्वारा कनिष्ठांगुलि को आक्रमण करें, अवशिष्ट अंगुलियों को प्रसारित करके बाहुमूल में स्थापित करें, यह मुद्रा दिग्बन्धन कार्य में उत्तम है।

उत्ताना अंगुलीः कार्या भिन्नतर्जन्यनामिकाः।
इयं मुद्रा महारौद्र वज्रकर्मणि पूजिता॥
उत्ताना अंगुलीः कृत्वा तर्जनीं वेष्टा कुञ्चयेत्।
शङ्खमुद्रेति कथिता देवदेवस्य चक्रिणः॥ १५॥

तर्जनी तथा अनामिका के अलावा सभी अंगुलियों को उठाये, यह

मुद्रा क्रोधभैरव के पूजा आदि में प्रयुक्त करें। सभी अंगुलियों को उठा कर तर्जनी अंगुलि वेष्टन करके कुंचित करें, इसका नाम शङ्खमुद्रा है, यह मुद्रा विष्णु पूजा में प्रसिद्ध है।

अन्योन्यमंगुलीं वेष्टय कनिष्ठाञ्च प्रसारयेत्।
कमण्डलु विधानाख्या मुद्रेयं परिकीर्त्तिता॥१६॥

परस्पर सभी अंगुलियों को वेष्टन करके कनिष्ठांगुलि को फैला दें, इसका नाम कमण्डलु मुद्रा है।

वाममुष्टि विधायाथ तर्जनीमध्यमे ततः।
प्रसार्य तर्जनीमुद्रा निर्द्दिष्टा ब्रह्मरूपिणः॥१७॥

बांयें हांथ की मुट्ठी बाँधकर तर्जनी तथा मध्यमांगुलि को प्रसारित करें, यह मुद्रा ब्रह्मा के पूजा आदि कार्य में प्रयुक्त करना चाहिए।

वामपाणि कृता मुष्टिर्मध्यमामपि तर्जनीम्।
प्रसार्य तर्जनीं कुञ्च मध्यमाञ्चापि वेष्टयेत्॥
कनिष्ठाञ्च प्रसार्याथ मध्यपर्वणि धारयेत्।
ख्याता गौरीति मुद्रेयं विशुद्धा शुद्धकर्मणि॥१८॥

बांयें हांथ की मुट्ठी बाँधकर मध्यमा तथा तर्जनी अंगुलि को फैलायें एवं तर्जनी के द्वारा मध्यमा को वेष्टन करके रखें एवं कनिष्ठांगुलि को फैलाकर मध्य पर्व में धारण करें, इसका नाम गौरीमुद्रा है, यह मुद्रा सभी कार्यों के लिए विशुद्ध है।

उत्ताना अंगुलीः कृत्वा मुष्टि तत्र च धारयेत्।
वामां कनीयसीं भग्नामंगुष्ठौ मुष्टि संस्थितौ॥
वामांगुष्ठं पर्वगतं दक्षिणेन च संगतम्।
आदित्यरथ मुद्रेयं प्रोक्ता क्रोधाधिपेन च॥१९॥

सभी अंगुलियों को उठाकर मुट्ठी बाँधकर एवं अंगुष्ठांगुलि द्वय मुट्ठी के ऊपर स्थापित करके वामांगुष्ठ के पर्व तक मुट्ठी के भीतर विन्यास करें, इसका नाम आदित्यरथमुद्रा है, यह मुद्रा स्वयं क्रोधराज ने

कही है।

प्रसार्य दक्षिणं पाणिं भग्नं तर्जन्यनामिकाम्।
विधाय राहुमुद्रेयं क्रोधराजेन भाषिता॥ २०॥

दाहिने हाथ को प्रसारित करके तर्जनी तथा अनामिका को झुका करके रखना चाहिए, यही राहु मुद्रा है। इसे स्वयं क्रोधराज ने कहा है।

नटाकारं दक्षकरं कृत्वा मुष्टिं विनिक्षिपेत्।
तर्जनीं दक्षिणां वामे मुष्टिञ्चापि प्रसारयेत्॥
ज्येष्ठांगुष्ठेन च तथा कनिष्ठानखमाक्रमेत्।
नटेश्वरस्य मुद्रेयं निर्दिष्टा सिद्धिदायिनी॥ २१॥

नटाकार से दक्षिण हांथ की मुट्ठी बाँधकर बांयें हांथ की तर्जनी को प्रसारित करें एवं वृद्धांगुलि के द्वारा कनिष्ठा को छूना चाहिए। यह नटेश्वर मुद्रा सर्वसिद्धि प्रदान करती है।

कनिष्ठान्योन्यमावेष्टय मुष्टिं कृत्वा पृथक् पृथक्।
उमाख्येयं महामुद्रा प्रभेश्वर्या इय शृणु॥
करावुभौ भगाकारौ क्षिपेन्मूर्ध्नि प्रभेश्वरी।
अंगुलीसंपुटौ मूर्ध्नि क्षिपेन्मुद्रा श्रियः स्मृता॥ २२॥

पृथक रूप से मुट्ठी बाँधकर कनिष्ठाद्वय को वेष्टन करें, इसका नाम उमामुद्रा है। इसके बाद प्रभा देवी की मुद्रा कह रहा हूँ सुनों, दोनों हाथ भगाकार (योनि के सदृश) करके माथे पर निक्षेप करें, इसका नाम प्रभेश्वरी मुद्रा है, सभी अंगुलि पुटित करके माथे पर क्षेपण करें, यह मुद्रा लक्ष्मीदेवी की अति प्रिय मुद्रा है। इस मुद्रा के द्वारा लक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए।

अन्योन्यमुष्टि मास्थाय कनिष्ठां तर्जनीं तथा।
वेष्टयेच्च शिरोदीपे शिखाकारेण भ्रामयेत्।
मुद्रेयं श्रीशशीदेव्या दर्शननैव सिध्यति॥ २३॥

दोनों हाथों की मुट्ठी परस्पर बाँधकर कनिष्ठा तथा तर्जनी को

वेष्टन करना चाहिए, इस मुद्रा के दर्शनमात्र से ही शशीदेवी सिद्ध होती हैं।

मुष्टिमन्योन्यमास्थाय ज्येष्ठांगुल्यः प्रसारयेत्।
तर्जन्यां स्थापयेन्मूले मुद्रा सरस्वती स्मृता।
कृताञ्जलिं न्यसेन्मूर्ध्नि ज्ञंया मुद्रा तिलोत्तमा॥ २४॥

दोनों हाथों की मुट्ठी परस्पर युक्त करके वृद्धांगुलि को प्रसारित करें एवं तर्जनी को मूल में स्थापित करें, इस मुद्रा के द्वारा सरस्वती की पूजा करें। दोनों हाथों की अंजलि मांथे पर धारण करने से तिलोत्तमा मुद्रा होती है।

हस्तान्योन्यं पुटाकारं कृत्वा संस्थापयेद् यदि।
इयं मुद्रा महादेव्या रम्भायाः परिकीर्त्तिता॥ २५॥

दोनों हाथ पुटाकार करके हृदय पर स्थापित करें, यह मुद्रा महादेवी रम्भा के पूजा आदि कार्य में प्रयुक्त करना चाहिए।

अथातः संप्रवक्ष्यामि महामण्डलवर्त्तिनोम्।
इन्द्रादिलोक पालानां मनुमिष्टार्थ साधनम्।
हालाहलञ्च शक्राय शिरः शक्रमनुर्मतः॥ २६॥

अब महामण्डल मध्यवर्त्ति इन्द्रादि लोकपालों की सर्वार्थ साधना का मंत्र कह रहा हूँ, '**ॐ शक्राय स्वाहा**' इस मंत्र से इन्द्र की पूजा करें।

पञ्चरश्मि रग्नय इति शिरोऽन्तः परिकीर्तितः।
तारोयमायेति शिरः प्रोक्ता याम्यो महामनुः॥ २७॥

'**ॐ अग्नये स्वाहा**' इस मंत्र से अग्निका, '**ॐ यमाय स्वाहा**' इस मंत्र से यम की पूजा करें।

विषबीजं समुद्धृत्य राक्षसाधिपतिस्ततः।
पतयेजययुगमञ्च द्विठान्तो नैऋतो मनुः॥ २८॥
ङेऽन्तं वरुणमाभाष्य जलाधिपतये ततः।
हरद्वयं शिरोन्तोयं तारादि वरुणो मनुः॥ २९॥

'ॐ राक्षसाधिपतये जय जय स्वाहा' इस मंत्र से निर्ऋति की तथा **'वरुणाय जलाधिपतये हर हर स्वाहा'** इस मंत्र से वरुण की पूजा करें।

आदिबीजं समुद्धृत्य वायवे तारयुग्मकम्।
वह्निजायान्त उक्तोऽयं मनुर्वायोर्महात्मनः॥ ३०॥
विषबीजं समुद्धृत्य कुबेराय पदं ततः।
यक्षाधिपतये स्वाहा कुबेरस्य मनुः स्मृतः॥ ३१॥
तारं चन्द्रायेति शिरः सौम्य ईशानगो मनुः॥ ३२॥
आदि बीजं समुद्धृत्य ईशानाय द्विठस्ततः।
ईशानस्य मनुः प्रोक्तः ईशानदिशि संस्थितः॥ ३३॥

'ॐ वायवे तार तार स्वाहा' यह महात्मा वायु का मंत्र है, **'ॐ कुबेराय यक्षाधिपतये स्वाहा'** यह मंत्र कुबेर का है। **'ॐ चन्द्राय स्वाहा'** यह मंत्र सोम का है। **'ॐ ईशानाय स्वाहा'** यह मंत्र ईशान का है।

मुद्रा सर्वेश्वरीपूर्वं सुन्दर्या अपि कथ्यते।
यया विज्ञातया नूनं सिद्धिः सर्वविधा भवेत्॥
अन्योन्यमुष्टिमास्थाय कनिष्ठाञ्च प्रसारयेत्।
कनिष्ठा कुण्डलाकाराः मुद्रेयं सुन्दरी स्मृता॥ ३४॥

यहां सर्वेश्वरी सुन्दरी मुद्रा कर रहा हूँ, इस मुद्रा के परिज्ञान मात्र से सर्व प्रकार की सिद्धि होती है। दोनों हाथ की मुट्ठी बांधकर परस्पर संयुक्त करके कनिष्ठांगुलि को प्रसारित करें एवं उस कनिष्ठा को कुण्डलाकार करके रखें। इस मुद्रा से सुन्दरी देवी प्रसन्न होती हैं।

मुष्टिमन्योन्यमास्थाय कनिष्ठा वेष्टयेदुभे।
तर्जनीं कुण्डलीं कृत्वा मुद्रेयं भूतनायिका॥ ३५॥

दोनों हाथ की मुट्ठियां परस्पर संयोजित करके दोनों कनिष्ठा को वेष्ठित करें एवं तर्जनी को कुण्डलाकार करके रखें। यह मुद्रा भूतनायिका

की है।

अन्योन्यं मुष्टिमास्थाय तर्जनीं वेष्टयेत् पृथक्।
मुद्रेयं द्वार पालिन्या अष्टभ्यः परिकीर्तिता।
इन्द्रस्य पूजने वज्रमुद्रेयं परिकीर्त्तिता॥ ३६॥

परस्पर मुट्ठियां बाँधकर तर्जनीद्वय को वेष्टन करे। इस मुद्रा से अष्टद्वार पालिनी भूतिनी तथा इन्द्र आदि की पूजा करना चाहिए।

कृत्वोत्तानं दक्षहस्तं तर्जनीन्तु प्रसारयेत्।
आग्नेयीयं महामुद्रा याम्या निर्द्दिश्यते ततः॥
कृत्वा मुष्टिं दक्षहस्ते तर्जनीञ्च प्रसारयेत्।
याम्याख्येयं महामुद्रा प्रोक्तातो नैऋतिं शृणु।
कृत्वा मुष्टिं दक्षहस्ते खड्गाख्येयन्तु राक्षसी॥ ३७॥

दाहिने हाथ को उठाकर तर्जनी अंगुलि को प्रसारित करें, यह मुद्रा अग्निदेव की है। इसके बाद आगे यम की मुद्रा कह रहें हैं।

दाहिने हाथ की मुट्ठी बाँधकर तर्जनी अंगुलि को प्रसारित करें, इसे यम नामक महामुद्रा कहते हैं। इसके बाद निर्ऋति मुद्रा सुनो, दाहिने हाथ की मुट्ठी बाँधकर खड्गाकार करें, इसका नाम निर्ऋति मुद्रा है।

वाममुष्टि विधायाथ तर्जनीन्तु प्रसारयेत्।
तामेव कुण्डलाकारा मुद्रेयं वारुणी स्मृता॥ ३८॥

बायें हाथ की मुट्ठी बाँधकर तर्जनी अंगुली को प्रसारित करें, उस तर्जनी को कुण्डलाकार करके रखना चाहिए। इसका नाम वारुणी मुद्रा है।

मुष्टिं वामकरे कृत्वा मध्यमामपि तर्जनीम्।
प्रसार्येयं पताकाख्या वायोर्मुद्रा प्रकीर्तिता॥ ३९॥

बायें हाथ की मुट्ठी बाँधकर मध्यमा तथा तर्जनी को प्रसारित करें, इसका नाम वायु मुद्रा है।

मुष्टिं दक्षकरे कृत्वा अंगुष्ठन्तु प्रसारयेत्।
प्रोक्ता वैश्रवणी मुद्रा धनाद्याकर्षणक्षमा ॥ ४० ॥

दाहिने हाथ की मुट्ठी बाँधकर वृद्धांगुली को प्रसारित करें, इस कुबेर की मुद्रा द्वारा धनादि आकर्षण किया जाता है।

कृत्वान्योन्यकरे मुष्टिं तर्जनीञ्चापि वेष्टयेत्।
सौम्याख्येयं महामुद्रा सोमस्य परिकीर्त्तिता ॥ ४१ ॥

दोनों हाथ की मुट्ठियां परस्पर युक्त करके तर्जनीद्वय को वेष्टन करें, इसका नाम सौम्यमुद्रा है, इस मुद्रा से सोम की पूजा करनी चाहिए।

वाममुष्टिं विधायाथ ज्येष्ठांगुष्ठकनीयसा।
नखमाक्रम्य शेषाश्च प्रसार्यैशी प्रकीर्त्तिता ॥ ४२ ॥

बांये हाथ की मुट्ठी बाँधकर कनिष्ठांगुलि के द्वारा वृद्धांगुली को स्पर्श करें, इसका नाम ईशान मुद्रा है।

सृष्टिबीजं सिद्धिवज्रपदादापूरयद्वयम्।
वज्रबीजं नतिश्चान्ते पूर्णाख्योऽयं महामनुः ॥
स्थितिबीजाद्वज्रक्रोध महामन्त्रपदात्ततः।
सिद्धाकर्षण मन्त्रोऽयं महामण्डलमध्यगः।
सम्पुटावञ्जलिं कृत्वा पुनर्मुद्रा प्रकीर्त्तिता ॥ ४३-४४ ॥

'ॐ सिद्धिवज्र पूरय पूरय हूँ' यह क्रोधपति का पूर्ण मंत्र है। **'ॐ वज्र हूँ'** यह सिद्धाकर्षण मंत्र है। महामण्डल मध्यवर्ती क्रोधराज की उक्त मंत्र से पूजा करें, उसके बाद हाथ जोड़ करके पुनः मुद्रा प्रदर्शन करें।

मुष्टिमन्योन्यमास्थाय कनिष्ठौ वेष्टयेदुभे।
प्रसार्य कुण्डलाकारं विधाय तर्जनीद्वयम्।
सिद्धाकर्षणमुद्रेयं सिद्धमाकर्षयेद् ध्रुवम् ॥ ४५ ॥

दोनों हाथों की मुट्ठियां परस्पर युक्त करके दोनों कनिष्ठा का वेष्टन करें एवं तर्जनीद्वय प्रसारित करके कुण्डलाकार करें। इस सिद्धाकर्षण मुद्रा से सर्वाकर्षण होता है।

तारश्च क्रोधशमयसाधने पदमुद्धरेत्।
सिध्यतीति पदात् सर्वदेवतानुपदं ततः॥
मे शीघ्रं सिध्यतु पदं मनुत्तमपद ततः।
बद्ध्वा तु वज्रमुद्राख्यमिममुच्चारयेन्मनुम्॥४६॥

'ॐ क्रोध शमयसाधने सिध्यति सर्व देवतानु मे शीघ्रं सिध्यतु' यह मंत्र उच्चारण करके वज्रमुद्रा बन्धन करना चाहिए।

वज्रभूताशनीमुद्रा लक्षणं कथयाम्हम्।
कृत्वोत्तानं वामहस्तं सच्छिद्रांगुष्ठमीरितम्॥
दक्षमुष्टेः समुत्तीर्यांगुष्ठं दक्षाङ्गसंस्थितम्।
अपराजितमाक्रम्य मुद्रेयं परिकीर्त्तिता॥४७॥

यहां वज्रभूताशनी मुद्रा के लक्षण कह रहा हूँ। बांये हाथ को उठाकर दाहिने हाथ की मुट्ठी उस पर संयुक्त करें।

प्रालेयं बीजमुद्धृत्य जयद्वय महापदात्।
क्रोधाधिप इत्युक्त्वा क्रोधराजपदात्ततः॥
इदं भूतासनं प्रोक्त्वा दर्शयद्वयमीरयेत्।
मर्षयद्वयमाभाष्य प्रतिगृह्णपदाद्विठः।
महामण्डलमाभाष्य भूताशनमनुः स्मृतः॥४८॥

'ॐ जय जय क्रोधाधिप क्रोधराज! इदं भूतासनं दर्शय दर्शय मर्षय मर्षय प्रति गृह्ण स्वाहा', यह भूतासन मंत्र कहा गया है।

सम्पुटामञ्जलिं कृत्वांगुलीनां विधतिस्थितिः।
पद्ममुद्रेयमाख्याता विसर्जनमनुं शृणु॥४९॥

अंजलि बनाकार सभी अंगुलियों को समभाव में रखें। यह पद्ममुद्रा है। अब विसर्जन मंत्र व मुद्रा कही जा रही है, सुनों।

विषात् पद्मोद्भवपदं निलयेति पदं ततः।
सर्वदेवासनायेति शिरोऽन्तो मनुरीरितः॥
तारं सर्वसिद्धि पदं सिद्धिं देहि पदं ततः।

गच्छति पदमाभाष्य देवदेवं विसर्जयेत्॥
भूताधिप! महाक्रोध! सर्वसिद्धि प्रदायक।
दत्त्वाभिलषितं देव गच्छ गच्छ यथासुखम्।
मन्त्रेणानेन देवेशं यथाविधि विसर्जयेत्॥५०॥

'ॐ पद्मोद्भव निलय सर्वदेवतासनं स्वाहा।' ॐ सर्वसिद्धि सिद्धिं देहि गच्छ। ॐ भूताधिप महाक्रोध सर्वसिद्धि प्रदायक।

'दत्त्वाभिलषितं देव गच्छ गच्छ यथासुखम्।' इस मन्त्र से विसर्जन करना चाहिए।

क्रोधमन्त्रस्य जापेन मण्डलस्य च दर्शनात्।
स्मरणात् क्रोधराजस्य राज्यं त्रैधातुकं भवेत्॥
चेटकाः सर्वभूतानां स्यर्यक्षगन्धर्व किन्नराः।
क्रोधमन्त्रेण नश्यन्ति सर्वलौकिक देवताः॥
क्रोधार्णोच्चारणाद्देवा पलायन्ते समन्ततः।
प्रजपेदात्मरक्षार्थं मेकलक्षं महामनुम्॥
वज्रमन्त्रस्य जापेन भवेदवज्रसमंवपुः।
सिद्धिकामो पजेत् पौर्णमास्यामभ्यर्च्यर्यत्नतः॥
क्रोधमुद्रां विधायाथ प्रजपेत् सकलां निशाम्।
प्रभातसमये भूतानुकम्पा जायते ध्रुवम्॥
मुद्राज्वलित सर्वत्र तया ज्वलितया पुनः।
अजरामररूपी च भवेत् क्रोधसमोनरः।
एवमाराधितो वज्रो वाञ्छितार्थ प्रदायकः॥५१॥

क्रोधभैरव के मन्त्र जप तथा क्रोधमण्डल का दर्शन करने पर साधक त्रिलोक का राजा हो सकता है। यक्ष, गन्धर्व तथा किन्नर आदि देवयोनिगण उसके दास होंगे। क्रोधमंत्र से सभी लौकिक देवता का नाश होता है। क्रोधमंत्र के उच्चारण मात्र से ही पिशाचादि लौकिक देवगण चारों दिशाओं से भाग जाते हैं। आत्मरक्षार्थ क्रोधमंत्र का एक लाख जप करना चाहिए।

क्रोधमंत्र के जप से साधक का देह वज्र के समान दृढ़ हो जाता है। यह मंत्र सिद्धिकामी व्यक्ति पूर्णिमा की रात को अर्चना करके क्रोधमुद्रा बन्धन सम्पन्न करके सारी रात जपे। इस प्रकार जप करने पर प्रभात के समय क्रोधराज की अनुकम्पा होती है। क्रोधराज के सिद्ध होने पर साधक अजर, अमर होकर क्रोधराज के तुल्य होता है। इस प्रकार क्रोधराज के आराधना में अभिलाषित कार्य सिद्धि होता है।

क्रोधभूपति के प्रबल मंत्र, भूतनाथ सिद्धि एवं तंत्र मुद्रा प्रकरण का यह प्रथम भाग यहाँ सम्पूर्ण हुआ।

उन्मत्त भैरव साधना

द्वितीय भाग

क्रोध मंत्र-देवता सिद्धि

उन्मत्त भैरव्युवाच:।

त्रिजगद् वन्द्य देवेश सर्वलोकभयङ्कर।
देवतामारणं ब्रूहि वीरं सिध्यति साधने॥ १॥

उन्मत्त भैरवी कहने लगीं, हे देवेश्वर! आप सभी लोकों में भय का संचार करते हो एवं त्रिजगत् के पूजनीय हो, आप मेरे समीप देवतामारण साधना कहें, जिससे वीरगण सिद्ध हो जाते हैं।

उन्मत्त भैरव उवाच।

अथात: सम्प्रवक्ष्यामि येन सिद्धिर्भवेत् ध्रुवम्।
देवता म्रियते वापि मूर्ध्नि स्फुटति शुष्यति॥ २॥

उन्मत्त भैरव कहने लगे, तदनन्तर सिद्धि विधान कह रहा हूँ, जिससे देवगणों का मारण तथा मस्तक स्फुटित होता है तथा शरीर शुष्क हो जाता है।

सम्पूज्य अयुतं वामपादेनाक्रम्य संजपेत्।
स्वयमायात्युमा देवी भार्या भवति यच्छति॥

रसं रसायनं दिव्यं दिव्यकामिक भोजनम्।
सिद्धाद्यदान पक्षेतु लेपयेद् वृषभध्वजम्॥ ३॥

बांये पैर से आक्रमण करके पूजा तथा दशसहस्त्र जप करें, इससे उमा देवी स्वयं आगमन करके नाना रसयुक्त अभिलाषित भोजन, द्रव्य प्रदान करती हैं।

आक्रम्य वामपादेन मन्त्रमुच्चारयेदमुम्।
आदिबीजं ज्वलयुगं वज्रेणेति पदं ततः॥
मारयद्वयमाभाष्य सकर्मसाध्यमुद्धरेत्।
ततः क्रोधद्वयं चास्त्रं जपेदष्टसहस्त्रकम्।
जपमात्रेण सिध्यति भूतिन्यो म्रियते तथा॥ ४॥

बांये पैर से आक्रमण करके '**ॐ ज्वल ज्वल वज्रेण मारय मारय अमुकं भूतिनीं कूं कूं फट्।**' इस मंत्र का अष्टसहस्त्र बार जप करें। यह मंत्र जप करने मात्र से भूतिनी सिद्धि होती है, इस मंत्र से सिद्धि न होने पर भूतिनी की मृत्यु होती है।

श्रीदेवीं वामपादेनाक्रम्य मन्त्रायुतं जपेत्।
श्रीदेव्यायाति दद्याच्च कुसुमासनमुत्तमम्।
वक्तव्यं स्वागतं भार्या कामिता राज्यदा भवेत्॥ ५॥

गोरोचन के द्वारा लक्ष्मी देवी की प्रतिमूर्त्ति अंकित करके उसका वाम पद के द्वारा आक्रमण पूर्वक दशसहस्त्र जप करें। इस प्रकार जप करने पर लक्ष्मी देवी स्वयं आगमन करती हैं, तत्क्षणात् पुष्पासन प्रदान करके स्वागत जिज्ञासानन्तर भार्या सम्बोधन करें, देवी, साधक की कामना परिपूर्ण करके राज्य प्रदान करती है।

भैरवीं वामपादेनाक्रम्य मन्त्रायुतं जपेत्।
भैरवी शीघ्रमागत्य चेटीकर्म करोति च॥ ६॥

भैरवी को वामपाद से आक्रान्त करके दशसहस्त्र मंत्र का जप करें, इस प्रकार जप करने पर भैरवी तत्क्षणात् आगमन करके दासी हो जाती है।

चामुण्डां वामपादेनाक्रम्य मंत्रायुतं जपेत्।
शीघ्रमागत्य चामुण्डा दासीवद् वश्यतामियात्॥ ७॥

चामुण्डा को बायें पैर से आक्रमण करके दशसहस्र मंत्र का जप करें, इस प्रकार से जप करने पर तत्क्षणात् चामुण्डा देवी आगमन करती हैं एवं दासी के समान वशीभूत होती है।

अनेनैव विधानेन पूजयेत सर्वदेवताम्।
गत्वैकलिङ्गं सम्पूज्य जपेदष्टसहस्रकम्॥
वामपादेन चाक्रम्यान्वहं सप्तदिनानि च।
महादेवः समागत्य राज्यं यच्छति कामिकम्।
यदि यच्छति नागत्य म्रियते शुष्यते ध्रुवम्॥८॥

उपरोक्त विधान से सर्व देवता की पूजा करें एवं शिवलिंग के निकट जाकर देवता की पूजा करके अष्टसहस्र जप करें। इस प्रकार बांये पैर से आक्रमण करके सात दिन तक जप करने पर महादेव स्वयं आगमन करके साधक की कामना परिपूर्ण करके राज्य प्रदान करते हैं, ऐसा न होने पर देवता की मृत्यु अथवा शरीर शुष्क होता है।

जपेदष्टसहस्रन्तु प्राग्वत् सप्तदिनानि च।
नारायणं वामपादेना क्रम्यायाति यच्छति।
प्रार्थितं किंकरो भूत्वा म्रियते शुष्यतेऽपि च॥९॥

पूर्ववत् सप्ताह पर्यन्त प्रतिदिन बांये पैर से आक्रमण करके नारायण मन्त्र का अष्टसहस्र बार जप करें। इस प्रकार जप करने पर प्रभु साधक के दास होकर साधक को प्रार्थित वस्तु प्रदान करते हैं। ऐसा न होने पर देवता की मृत्यु अथवा शरीर शुष्क होता है।

ब्रह्माणं वामपादेनाक्रम्य प्राग्वत् जपेत् सदा।
आगत्य किंकरः स स्यादन्यथा म्रियते ध्रुवम्॥ १०॥

पूर्ववत् बांये पैर के द्वारा आक्रमण करके ब्रह्मा का मंत्र जप आरम्भ करें। इससे ब्रह्मा साधक के दास हो जाते हैं। ऐसा न होने से देवता की

मृत्यु अथवा शरीर शुष्क होता है।

आदित्यं वामपादेनाक्रम्य सप्तदिनानि च।
जपेदष्टसहस्त्र स्वागत्य सिद्धिं प्रयच्छति॥
अन्यथा म्रियते जप्त एवं चन्द्रः प्रयच्छति।
शतं स्वर्णपलं दद्यादन्यथा म्रियते ध्रुवम्॥११॥

बांये पैर से आक्रमण करके सात दिन तक आदित्य मंत्र का जप करें, इससे आदित्य देव सिद्धि प्रदान करते हैं, अन्यथा देवता की मृत्यु होती है। इस प्रकार चन्द्र मंत्र का जप करने पर तत्क्षणात् चन्द्र सिद्ध होकर प्रतिदिन एक पल सुवर्ण प्रदान करते हैं अन्यथा चेत् देवता की मृत्यु होगी।

भैरवं वामपादेनाक्रम्य सप्तदिनानि च।
जपेदष्टसहस्त्रन्तु पूजयेच्च प्रयत्नतः॥
दीपंमनुष्यतैलेन धूपं मांसेन दापयेत्।
आमिषेणैव नैवद्यं कृत्वा मन्त्रं जपेत् पुनः॥
अर्द्धरात्र व्यतीते तु महानादं विमुञ्चति।
कुरुतेऽट्टट्टहासञ्च वदेत्तं भक्षयाम्यहम्॥
भयं तत्र न कर्त्तव्यं क्रोधबीज मनुस्मरेत्।
मन्त्रोच्चारणमात्रेण सुस्थः साध्योऽत्र भैरवः॥
दद्यात्रैधातुकं राज्यं सर्वाशाः पूरयत्यपि।
क्रोधभीत्या विनश्यन्ति सर्व लौकिक देवताः॥१२॥

बांये पैर के द्वारा आक्रमण करके भैरवमंत्र सप्तदिन जप करें, अष्टसहस्र जप होने पर यत्न पूर्वक पूजा करें एवं तेल के द्वारा दीप जलायें तथा मनुष्यमांस द्वारा धूप दे एवं अनामिका के द्वारा नैवेद्य प्रदान करके मंत्र का जप करें। इस प्रकार जप करते-करते अर्द्धरात्रि अवसान में एक महाशब्द श्रुत होगा, उसके बाद अति उच्च स्तर से हंसते हुये भैरव साधक को कहते हैं, मैं भक्षण करूँगा, उससे साधक भयभीत न होकर

क्रोधमंत्र का स्मरण करें। मंत्र स्मरणमात्र से ही देव शान्त होकर साधक की सभी आशा परिपूर्ण करके त्रिलोक का राजत्व प्रदान करते हैं। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध होने पर क्रोधराज के भय से सभी लौकिक देवताओं का विनाश होता है।

वामपादेन चाक्रम्य नटेशं पूर्ववज्जपेत्।
आगत्य किंकरः स स्यादन्यथा म्रियते ध्रुवम्॥१३॥

बांये पैर के द्वारा आक्रमण करके पूर्ववत नटेश्वर का मंत्र जप करें। तत्क्षणात् नटेश्वर आगमन करके साधक के दास हो जाते हैं, अन्यथा देवता की मृत्यु होगी।

महाकालं वामपादेनाक्रम्याष्टसहस्रकम्।
दिनानि सप्तप्रजपेदागच्छति गणान्वितः।
चेटको भवति क्षिप्रमन्यथा म्रियते क्षणात्॥१४॥

बांये पैर के द्वारा आक्रमण करके महाकाल का मंत्र जप करें। सप्ताह पर्यन्त अष्टसहस्र जप करने पर महाकाल स्वीय परिवारगण से परिवृत होकर आगमन करते हैं एवं साधक के दास हो जाते हैं। इसका अन्यथा करने पर तत्क्षणात् महाकाल की मृत्यु होती है।

ईश्वरायतनं गत्वायुतं सप्तदिनानि च।
जपेच्चतुर्मुखं वामपादेनाक्रम्य साधकः॥
आगत्य परिवाराढ्यः किङ्करो भवति क्षणात्।
आरोप्य पृष्ठे त्रिदिवं दर्शयत्यपि यच्छति॥
समानीयोर्वशीं देवीं भोज्यं काम्यं रसायनम्।
अन्यथा म्रियते प्राह स्वयं क्रोधाधिपोऽसकृत्।
एवं संसाधयेत् सिद्धिं कैङ्करीं क्रोधभक्तितः॥१५॥

शिवालय में जाकर सात दिन तक चतुर्मुख को बांये पैर से आक्रमण करके दश सहस्र जप करें। इस प्रकार जप करने पर चतुर्मुख स्वीय परिवारगण के साथ आगमन करके साधक के किङ्कर होते हैं एवं साधक

को पीठ पर आरोहण कराकर स्वर्गपुर में गमन करते हैं। उर्वशी आदि स्वर्गीय युवतीगण को लेकर आते हैं, नानाविध भोज्य पदार्थ प्रदान करते हैं। इसका अन्यथा करने पर तत्क्षणात् चतुर्मुख की मृत्यु होती है, यह स्वयं क्रोधाधिपति ने बार-बार कहा है। क्रोधराज के प्रति भक्ति करके इन सिद्धियों को करना चाहिए।

उन्मत्त भैरव द्वारा उच्चारित क्रोधमंत्र से सभी देवता सिद्धि की साधना का यह भाग यहाँ समाप्त हुआ।

तृतीय खण्ड

भीषण भैरव शाबर मन्त्र

शाबर विद्या परम्परा

प्राचीन मन्त्र साहित्य के विशाल संग्रह में शाबर मन्त्रों का स्थान महत्त्वपूर्ण है। शीघ्र फलदायी होने के कारण इनका गौरव अक्षुण्ण है। शाबर मन्त्रों की सम्पूर्ण प्राचीन थाती आज पूर्णतया उपलब्ध नहीं है। इसका कारण यह भी है कि कुछ स्वार्थी तत्त्वों ने इसे सामान्य जनमानस से छुपाकर रखा था तथा कुछ अज्ञानतावश भी यह विद्या लुप्तप्राय हो चुकी थी। सामान्य लोगों की श्रद्धा इन साधारण दिखने वाले शाबर मन्त्रों से उठ गई थी। लोगों को विश्वास ही नहीं है कि इन साधारण बोल-चाल की ग्रामीण भाषा के मन्त्रों से भी व्यक्ति की अभिलाषा पूर्ण हो सकती है।

सदियों तक जिन शाबर मन्त्रों को श्रद्धालु सिद्धों ने हस्त प्रतिलिपि करके जीवित रखा था, उन्हीं मन्त्रों को पुनः प्राचीन गौरव पर प्रतिष्ठित करना ही इस पुस्तक का उद्देश्य है। प्रभावशाली भैरव शाबर मन्त्रों की प्राचीन परम्परा को प्रमाणिक रूप से प्रकाशित करने का यह एक अतुलनीय प्रयास है। पुस्तक में दिये गये कुछ शाबर मन्त्रों की भाषा एवं शैली अत्यन्त प्राचीन एवं ग्राम्य अंचल की सुगन्ध से परिपूर्ण है, अतः यथा सम्भव उनका उच्चारण एवं प्रयोग भी उसी श्रद्धा एवं शुद्ध मन से करें। भैरवनाथ की कृपा आप सब पर बनी रहे।

—लेखक

शाबर मन्त्रों का महत्त्व

शक्तिशाली सिद्ध शाबर मन्त्र को स्वयंसिद्धि मन्त्र के नाम से भी पुकारा जाता है यह मन्त्र अत्यन्त शक्तिशाली एवं अचूक है, अगर आप को लग रहा है कि आपकी दुकान अथवा घर आदि में किसी ने टोटका कर रखा है अथवा घर में कोई व्यक्ति ज्यादा बीमार है, निर्धनता आपका पीछा नहीं छोड़ती या कोई कार्य बनते बनते बिगड़ जाता हो अथवा कोई व्यक्ति तान्त्रिक क्रिया द्वारा आपको बार-बार परेशान कर रहा हो तो इन सब कष्टों से मुक्ति प्राप्त करने के लिए शाबर मन्त्र को सबसे सिद्ध एवं प्रभावकारी माना गया है।

शाबर मन्त्र अन्य शास्त्रीय मन्त्रों की भाँति उच्चारण में कठिन नहीं होते है तथा इन अचूक मन्त्रों को कोई भी बड़े आसानी से प्रयोग कर अपने कार्यों को सिद्ध कर सकता है।

इन मन्त्रों को थोड़े से जाप द्वारा सिद्ध किया जा सकता है तथा यह मन्त्र शीघ्र प्रभाव डालते है, इन मन्त्रों का जो प्रभाव होता है, वह स्थायी है। शाबर मन्त्रों के सरल भाषा में होने के कारण इनका प्रयोग बहुत ही आसान है। कोई भी व्यक्ति इन्हें सुगमता से प्रयोग कर सकता है, यह मन्त्र दूसरे दुष्प्रभावी मन्त्रों के काट में सहायक है।

शाबर मन्त्र के प्रयोग से प्रत्येक समस्या का निराकरण सहज ही हो जाता है, इस मन्त्र का प्रयोग कर व्यक्ति अपने परिवार, मित्र, सम्बन्धी आदि की समस्याओं का निवारण करने में सक्षम हो सकता है।

वैदिक, पौराणिक एवम् तान्त्रिक मन्त्रों के समान 'शाबर मन्त्र' भी अनादि हैं, सभी मन्त्रों के प्रवर्तक मूल रूप से भगवान शंकर ही हैं, परन्तु शाबर मन्त्रों के प्रवर्तक भगवान शंकर प्रत्यक्षतया नहीं हैं, फिर भी इन मन्त्रों का आविष्कार जिन्होंने किया वे परम शिव भक्त थे।

गुरु गोरखनाथ तथा गुरु मछेन्दरनाथ शाबरमन्त्र के जनक माने जाते है, अपने साधन, जप-तप एवं सिद्धियों के प्रभाव से उन्होंने वह स्थान प्राप्त कर लिया था, जिसकी मनोकामना बड़े-बड़े तपस्वी एवं ऋषि मुनि करते है।

शाबर मन्त्रों में श्रद्धा और आग्रह दोनों का प्रयोग किया जाता है। साधक याचक होते हुए भी देवता को सब कुछ कहने का सामर्थ्य रखता है व उसी से सब कुछ करवाना चाहता है।

विशेष बात यह है कि उसकी यह 'आन' भी फलदायी होती है, आन का अर्थ है सौगन्ध, अभी वह युग गए अधिक समय नहीं बीता है, जब सौगन्ध का प्रभाव आश्चर्यजनक व अमोघ हुआ करता था।

शाबर मन्त्रों में गुजराती, तमिल, कन्नड़ आदि भाषाओं का मिश्रण है, वैसे सामान्यतः अधिकतर शाबर मन्त्र हिन्दी में ही मिलते है। प्रत्येक शाबर मन्त्र अपने आप में पूर्ण होता है। उपदेष्टा 'ऋषि' के रूप में गोरखनाथ, सुलमान जैसे सिद्ध पुरुष हैं, कई मन्त्रों में इनके नाम का प्रवाह प्रत्यक्ष रूप से आया है तो कहीं केवल गुरु नाम से ही कार्य बन जाता है।

इन मन्त्रों में विनियोग, न्यास, तर्पण, हवन, मार्जन, शोधन आदि जटिल विधियों की कोई आवश्यकता नहीं होती। फिर भी वशीकरण, सम्मोहन, उच्चाटन आदि सहकर्मों, रोग-निवारण तथा प्रेत-बाधा शान्ति हेतु जहाँ शास्त्रीय प्रयोग कोई फल तुरन्त या विश्वसनीय रूप में नहीं दे पाते, वहाँ 'शाबर-मन्त्र' तुरन्त, विश्वसनीय, अच्छा और पूरा काम करते हैं।

अब हम आपको सिद्ध शाबर मन्त्र के प्रयोग के बारे में तथा इनसे जुड़ी कुछ विशेष तथा ध्यान रखने वाली बातों के विषय में बतायेंगे—

शक्तिशाली शाबर मन्त्र पहले से ही शक्तियों से परिपूर्ण और सिद्ध होते हैं। किसी भी आयु, जाति और वर्ण के पुरुष या स्त्रियाँ इन मन्त्रों का प्रयोग कर सकते हैं। इन मन्त्रों की साधना के लिए गुरु की विशेष आवश्यकता नहीं होती है। किन्तु षट्कर्म की साधना को करने के लिए गुरु की अनुमति अवश्य लेनी चाहिए। मन्त्र के जाप के लिए लाल या सफेद आसन बिछाकर उस पर बैठना चाहिए। शाबर मन्त्र का जाप श्रद्धा और विश्वास के साथ ही करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त विभिन्न शाबर मन्त्रों पर आधारित हमारी दो खोजपूर्ण रचनायें—'सिद्ध शाबर मन्त्र' एवं 'वृहद शाबर मन्त्र, शाबर तन्त्र और शाबर यन्त्र' भी आप पढ़ सकते हैं।

पुस्तक के इस द्वितीय खण्ड में महाभैरव, काल भैरव तथा बटुक भैरव के चुने हुये, सिद्ध व प्रभावी शाबर मन्त्र दिये गये हैं। कुछ मन्त्र विशाल है, वहीं कुछ शाबर मन्त्र अति सूक्ष्म हैं, यह सभी भैरव जी की कृपा से अत्यन्त प्रभावशाली हैं। यह सभी शाबर मन्त्र प्राचीन तन्त्र ग्रन्थों और सिद्ध तान्त्रिकों से आशीर्वाद स्वरूप प्राप्त हुये हैं। इनका सावधानी से प्रयोग करें।

दुर्लभ भीषण भैरव शाबर मन्त्र

ॐ गुरु जी सत नाम आदेश आदि पुरुष को।
काला भैरुं, गोरा भैरुं, भैरुं रंग बिरंगा॥
शिव गौरां को जब जब ध्याऊं, भैरूं आवे पास
पूरण होय मनसा वाचा पूरण होय आस
लक्ष्मी ल्यावे घर आंगन में,
जिव्हा विराजे सुर की देवी, खोल घडा दे दड़ा॥
काला भैरुं खप्पर राखे, गौरा झांझर पांव
लाल भैरुं, पीला भैरुं, पगां लगावे गाँव
दशों दिशाओं में पञ्च पञ्च भैरुं॥
पहरा लगावे आप! दोनों भैरुं मेरे संग में चालें
बम बम करते जाप॥ भीषण भैरव मेरे सहाय हो
गुरु रूप से, धर्म रूप से, सत्य रूप से, मर्यादा रूप से,
लक्ष्मी रूप से, सम्मान सिद्धि रूप से,
स्व कल्याण जन कल्याण हेतु सहाय हो,
श्री शिव गौरां पुत्र भैरव॥
शब्द सांचा पिंड कांचा चलो मन्त्र ईश्वरो वाचा॥

सिद्धि की दृष्टि से इस मन्त्र का विधि विधान अलग है, परन्तु साधारण रूप से मात्र ११ बार रोज जपने की आज्ञा है। श्री भीषण भैरव जी का यह शाबर मन्त्र प्रतिदिन ११ बार जाप करने से हर प्रकार की

आर्थिक विपत्ति का नाश होता है। घर में लक्ष्मी का निवास होता है।

कालभैरव गुप्त सिद्ध शाबर मन्त्र

यहाँ हम बाबा भैरव जी का शाबर मन्त्र दे रहे हैं, जो तीक्ष्ण है, इस मन्त्र की सिद्धि मात्र ८ दिन की है, साधना के लिये भैरव चित्र और रुद्राक्ष माला जरूरी है। सर्व प्रथम भैरव जी के चित्र का पूजन करके नित्य, मन्त्र का एक माला जाप करे, माला पूर्ण होते ही किसी पात्र में शराब का भोग अर्पित करना है। जब साधना का आठवाँ दिन समाप्त हो जाये तो एक नारियल का बली आवश्यक है और दहीबड़ा भी चढ़ायें। सिर्फ इतना ही विधान जरूरी है। साधना रात्रि में ९ बजे के बाद शुरू करें। साधना सिद्ध होने के बाद जब भी भैरव जी से अपना कामना पूर्ण करवाना हो तब शराब अर्पित करें और नारियल का बली दें। इतनी पूजा समर्पित भाव से करने पर कार्य अवश्य पूर्ण होता है।

बाबा काल भैरव सिद्ध शाबर मन्त्र आरम्भ

ॐ काला भैरू, कपिला केश। काना कुण्डल भगवा वेश।
तीर पतर लियो हाथ, चौंसठ जोगनिया खेले पास।
आस माई, पास माई। पास माई, सीश माई।
सामने गादी बैठे राजा, पीडो बैठे प्रजा मोहे।
राजा को बनाऊ कुकड़ा। प्रजा को बनाऊँ गुलाम।
जय हो काल भैरव, सदा हो विजय।
शब्द साँचा, पिड कांचा। राजगुरु का बचन जुग जुग सांचा।
सतनाम आदेश जी गुरु जी को आदेश आदेश!!

उपरोक्त साधना में स्त्री से दूर रहना है और सम्बन्ध भी नहीं रखना है। यह मन्त्र गुरु कृपा से प्राप्त हुआ है। अतः इसे पूर्ण शुद्धता से सिद्ध करें।

भीषण भैरव के गुह्य शाबर मन्त्र प्रयोग

प्रयोग १

निम्नलिखित मन्त्र की सिद्धि के लिये किसी भैरव मन्दिर या शिव मन्दिर में मंगलवार या शनिवार को ११ बजे रात्रि के बाद पूर्व या उत्तर दिशा में मुँह करके लाल या काला आसन लगाकर पहले भैरव देव की षोडशोपचार पूजा करें। इसके बाद गुड़ से बनी खीर, शक्कर युक्त नैवेद्य अर्पण करें फिर रूद्राक्ष माला से १००८ बार निम्न वर्णित मन्त्र का जप करके भैरव देव को दाहिने हाथ में जप-समर्पण करें। यह प्रयोग २१ दिन लगातार करना है। २१वें दिन जप पूर्ण होते ही भैरव देव प्रत्यक्ष हो जाते हैं, तब तुरन्त लाल कनेर के फूल की माला भैरव देव को पहनाकर आशीर्वाद माँग लें।

मन्त्र—"ॐ रिं रिक्तिमा भैरो दर्शय स्वाहा। ॐ क्रं क्रं-काल प्रकटय प्रकटय स्वाहा। भीषण भैरऊ रक्त जहां दर्शे। वर्षे रक्त घटा आदि शक्ति। सत मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र सिद्धि परायणा रह-रह। रुद्र, रह-रह, विष्णु रह-रह, ब्रह्म रह-रह। बेताल रह-रह, कंकाल रह-रह, रं रण-रण रिक्तिमा सब भक्षण हुँ, फुरो मन्त्र। महेश वाचा की आज्ञा फट कंकाल माई को आज्ञा। ॐ हुं चौहरिया वीर-पाह्ये, शत्रु ताह्ये भक्ष्य मैदि आतू चुरि फारि तो क्रोधाश भैरव फारि तोरि डारे।

फुरो मन्त्र, कंकाल चण्डी का आज्ञा। भीषण संहार कर्म कर्ता महा संहार पुत्र। 'अमुंक' गृहण-गृहण, मक्ष-भक्ष हूं। मोहिनी-मोहिनी बोलसि, माई मोहिनी। मेरे चउअन के डारनु माई। मोहुँ सगरों गाउ। राजा मोहु, प्रजा मोहु मन्द गहिरा। मोहिनी चाहिनी चाहि, माथ नवइ। पाहि सिद्ध गुरु के वन्द पाइ जस दे कालि का माई॥''

इसकी सिद्धि से साधक की सर्व मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं तथा श्री भीषण भैरवजी की कृपा बनी रहती है। इस मन्त्र से झाड़ने पर सभी व्याधियों का नाश होता है।

प्रयोग २

इस शाबर के प्रयोग हेतु ४१ दिनों तक किसी शिव मन्दिर या भैरव मन्दिर में भैरव की पंचोपचार पूजा करने के बाद उड़द के बड़े और मद्य का भोग लगाएँ। भैरव देव प्रसन्न होकर भक्त की सब मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

मन्त्र—''आद भैरों, जुगाद भैरों, भैरों हैं सब भाई। भैरों ब्रह्मा, भैरों विष्णु भैरों ही भोला साईं। भैरों देवी, भैरों सब देवता, भैरों सिद्ध भैरों नाथ, गुरु, भैरों पीर, भैरों ज्ञान, भैरों ध्यान। भैरों योग-वैराग। भैरों बिन होय ना रक्षा। भैरों बिन बजे ना नाद। काल भैरों, विकराल भैरों। घोर भैरों, अघोर भैरों। भैरों की कोई ना जाने सार। भैरों की महिमा अपरम्पार। श्वेत वस्त्र, श्वेत जटाधारी। हत्थ में मुदगर, श्वान की सवारी। सार की जंजीर, लोहे का कड़ा। जहां सिमरुं, भैरों बाबा हाजिर खड़ा। चले मन्त्र, फुरे वाचा। देख आद भैरों। तेरे इल्म चोट का तमाशा॥''

प्रयोग ३

भैरव जी के चित्र या मूर्ति के सम्मुख दीप, धूप, गुग्गल देकर भैरवदेव की पंचोपचार पूजा करें। पूजा के उपरान्त १०८ बार नित्य इस मन्त्र का जप करें। फिर मद्य अर्पित करें। यह प्रयोग ८ दिन करना है, ८वें

दिन नारियल, रोट सवा सेर, लाल कनेर के फूल से भैरव देव को बलि दें। भैरव देव प्रसन्न होकर सभी मनोकामना पूर्ण करते हैं।

मन्त्र—"ॐ काला भैरुं, कबरा केश। काना कुण्डल, भगवा वेष। तिर पतर लिए हाथ, चौंसठ योगनियाँ खेले पास। आस माई, पास माई। पास माई, सीस माई। सामने गादी बैठे राजा, पीड़ो बैठे प्रजा मोहि। राजा को बनाऊ कुकड़ा, प्रजा का बनाऊं गुलाम। शब्द साचा, पिण्ड काचा, गुरु का वचन जुग जुग सांचा॥"

प्रयोग ४

भैरव जंजीरा

निम्नलिखित मन्त्र का अनुष्ठान रविवार से प्रारम्भ करें। एक पत्थर का तीन कोने वाला काला टुकड़ा लेकर उसे अपने सामने स्थापित करें। उसके ऊपर तेल और सिन्दूर का लेप करें। पान और नारियल भेंट में चढ़ावें। नित्स सरसों के तेल का दीपक जलावें। उत्तम होगा कि वह दीपक अखण्ड हो। मन्त्र को नित्य २१ बार ४१ दिनों तक जपें। जप के बाद नित्य छार, छरीला, कपूर, केशर और लौंग से हवन २१ बार करें। भोग में बाकला रखें। जब श्री भैरव देव दर्शन दें, तो डरें नहीं। भक्तिपूर्वक प्रणाम करें और मांस मदिरा की बलि दें। जो मांस-मदिरा का प्रयोग न कर सकें, वे उड़द के पकौड़े, बेसन के लड्डू और गुड़ मिली खीर की बलि दें। सिद्ध होने के बाद सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। इसे भैरव दर्शन विधान भी कहते हैं।

मन्त्र—"ॐ गुरुजी! काला भैरु, कपला केश। काना मदरा, भगवाँ भेष। मार-मार काली-पुत्र, बारह कोस की मार। भूतां हात कलेजी, खूं हाँ गेडिया। जाँ जाऊँ, भैरू साथ। बारह कोस की रिद्धि ल्यावो, चौबीस कोस की सिद्धि ल्यावो। सुत्यो होय, तो जगाय ल्यावो। बैठ्या होय, तो उठाव ल्यावो। अनन्त केसर को थारी ल्यावो, गौराँ पार्वती की बिछिया ल्यावो।

गेले की रस्तान मोय, कुवें की पणियारी मोय। हटा बैठया बणियाँ मोय, घर बैठी बणियाणी मोय। राजा की रजवाड़ मोय, महल बैठी राणी मोय। डकणी को, सकणी को, भूतणी को, पलीतणी को, ओपरी को, पराई को, लाग कूँ, लपट कूँ, धूम कूँ, धकमा कूँ, अलीया को, पलीया को, चौड़ को, चौगट को, काचा को, कलवा को, भूत को, पलीत को, जिन्न को, राक्षस को, बैरियाँ से बरी कर दे। नजराँ जड़ दे ताला।

इत्ता भैरव नहीं करे, तो पिता महादेव की जटा तोड़ तागड़ी करे। माता पार्वती का चीर फाड़ लँगोट करे। चल डकणी-सकणी, चौडूँ मैला बाकरा। देस्यूं मद की धार, भरी सभा में। छूं ओलमो कहाँ लगाई थी बार। खप्पर में खा, मुसाण में लोटे। ऐसे कुण काला भैरूँ की पूजा मेटे। राजा मेटे राज से जाय। प्रजा मेटे दूध-पूत से जाय। शब्द साँचा, ब्रह्म वाचा, चलो मन्त्र, ईश्वरो वाचा॥''

प्रयोग ५

निम्नलिखित भैरव शाबर मन्त्र शत्रु पीड़ा, वशीकरण, मोहन, आकर्षण में अचूक प्रयोग है। इस मन्त्र का अनुष्ठान शनिवार या रविवार से प्रारम्भ करना चाहिए। एक तिकोना चिकना पत्थर लेकर उसे एकान्त कमरे में स्थापित करके उसके ऊपर तेल-सिन्दूर का लेप करें। नारियल और पान भेंट में चढ़ाएँ। नित्य सरसों के तेल का दीपक अखण्ड जलाएँ। नित्य २७ बार ४० दिन तक इस मन्त्र का जप करके कपूर, केसर छबीला, लौंग, छार की आहुति देनी चाहिए। भोग में बाकला, बाटी रखनी होती है। जब भैरव दर्शन दें तो डरे नहीं, भक्तिपूर्वक प्रणाम करके उड़द के पकौड़े, बेसन के लड्डू, गुड़ से बनी खीर बलि में अर्पित करें। मन्त्र में वर्णित सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

मन्त्र—''ॐ गुरु, ॐ गुरु, ॐ गुरु, ॐ कार, ॐ गुरु भूमसान, ॐ गुरु सत्य गुरु। सत्य नाम काल भैरव। कामरू जटा

चार पहर खोले चौपटा। बैठे नगर में। सुमरों तोय। दृष्टि बान्ध दे सबकी। मोय हनुमान बसे हथेली। भैरव बसे कपाल। नरसिंह जी को मोहिनी, मोहे सकल संसार। भूत मोहूं, प्रेत मोहूं, जिन्द मोहूं, मसान मोहूं। घर का मोहूं, बाहर का मोहूं। बम रक्कस मोहूं, कोढ़ा मोहूं, अघोरी मोहूं, दूती मोहूं, दुमनी मोहूं, नगर मोहूं, घेरा मोहूं, जादू-टोना मोहूं, डंकनी मोहूं, संकनी मोहूं, रात का बटोही मोहूं, पनघट की पनिहारी मोहूं, इन्द्र का इन्द्रासन मोहूं, गद्दी बैठा राजा मोहूं, गद्दी बैठा बणिया मोहूं, आसन बैठा योगी मोहूं। और को देख जले भुने। मोय देख के पायन परे। जो कई काटे मेरा वाचा, अन्धा कर, लूला कर, सिड़ी वोरा कर, अग्नि में जलाय दे। धरी को बताए दे, गढ़ी को बताय दे, हाथ को बताए दे, गांव को बताए दे, खोए को मिलाए दे, रूठे को मनाए दे, दुष्ट को सताए दे, मित्रों को बढ़ाए दे। वाचा छोड़ कुवाचा चले, तो माता का चौखा दूध हराम करे। हनुमान आण। गुरुन को प्रणाम। ब्रह्मा, विष्णु साख भरे, उनको भी सलाम। लोन चामरी की आण, माता गौरा पार्वती महादेव जी की आण। गुरु गोरखनाथ की आण, सीता रामचन्द्र की आण मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। गुरु के वचन से चले, तो मन्त्र ईश्वरो वाचा॥''

प्रयोग ६

यह भैरव प्रयोग किसी अटके हुए कार्य में सफलता प्राप्ति हेतु है। प्रयोग रविवार से प्रारम्भ करके २१ दिन तक मृत्तिका की मणियों की माला से नित्य २८ बार जप करें। जप करने से पहले भैरव देव की पंचोपचार पूजा करें। जप के बाद गुड़ व तेल, उड़द का दही-बड़ा चढ़ाएँ और पूजा से उठने के बाद उसे काले कुत्ते को खिला दें।

मन्त्र—'' ॐ नमो भैरुनाथ, काली का पुत्र हाजिर होके, तुम मेरा कारज करो तुरत। कमर विराज मस्तंग लंगोट, घूघर माल। हाथ

बिराज डमरू खप्पर त्रिशूल। मस्तक विराज तिलक सिन्दूर। शीश विराज जटाजूट, गल विराज नादे जनेऊ। ॐ नमो भैरूनाथ काली का पुत्र। हाजिर होके तुम मेरा कारज करो तुरत। नित उठ करो आदेश-आदेश।''

प्रयोग ७

यह मन्त्र नवरात्रि, दीपावली या सूर्यग्रहण की रात्रि में सिद्ध करें। त्रिखुटा चौका देकर, दक्षिण की ओर मुँह करके, मन्त्र का जप १००८ बार करें। तब लाल कनेर के फूल, लड्डू, सिन्दूर, लौंग, भैरव देव को चढ़ावें। जप से पहले भैरव देव की पंचोपचार पूजा करें। अखण्ड दीपक निरन्तर जलता रहना चाहिए। जप के दशांश का हवन छार, लौंग, छबीला, कपूर, केसर से करें। जब भैरव जी भयंकर रूप में दर्शन दें तो बिना डरे प्रसन्नता से प्रार्थना करें। तत्काल फूल की माला उनके गले में डालकर बेसन का लड्डू उनके आगे रखकर वर माँग लेना चाहिए। श्री भैरव दर्शन न दें तो भी कार्य सिद्धि अवश्य होगी। दर्शन न मिले तो उनकी मूर्ति को माला पहनाकर लड्डू वहीं रख दें। अभीष्ट कार्य कुछ ही दिनों में पूर्ण हो जाएगा। यह सिद्ध मन्त्र है।

मन्त्र—''ॐ काली कंकाली, महाकाली के पुत्र, कंकाल भैरव। हुकम हाजिर रहे मेरा भेजा काल करे। मेरा भेजा रक्षा करे। आन बाँधू, बान बाँधू। चलते फिरते के औंसान बाँधू। दसों स्वर बाँधू। नौ नाड़ी बहत्तर कोठा बाँधू। फूल में भेजूँ, फूल में जाए। कोठे जीव पड़े, थर-थर काँपे। हल-हल हलै, गिर-गिर पड़ै। उठ-उठ भगे, बक-बक बकै। मेरा भेजा सवा घड़ी, सवा पहर, सवा दिन, सवा माह, सवा बरस को बावला न करे तो माता काली की शैया पर पग धरै। वाचा चुके तो ऊमा सुखे। वाचा छोड़ कुवाच करे तो धोबी की नांद में, चमार के कूड़े में पड़े। मेरा भेजा बावला न करे, तो रूद्र के नेत्र से अग्नि की ज्वाला कढ़ै। सिर की लटा टूट भू में

गिरै। माता पार्वती के चीर पर चोट पड़ै। बिना हुक्म नहीं मारता हो। काली के पुत्र, कंकाल भैरव। फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। सत्य नाम, आदेश गुरु को।''

प्रयोग ८

यह मन्त्र होली, दीपावली, शिवरात्रि, नवरात्रि या ग्रहण के समय लाल मिट्टी से चौका देकर अरंडी (एरंड) की सूखी लकड़ी पर तेल का हवन करें। जब लौ प्रज्वलित हो तो उसी प्रज्वलित लौ को चमेली के फूलों की माला पहना कर सिन्दूर, मदिरा, मगौड़ी, इत्र, पान चढ़ाकर फिर गुग्गुल से हवन करें। उपरोक्त क्रिया करने से पहले १००८ बार निम्नलिखित मन्त्र का पहले जप कर लें। मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। प्रारम्भ में भैरव देव का पंचोपचार पूजन कर दें। प्रत्येक वर्ष नवरात्र या दीपावली में मन्त्र शक्ति बढ़ाने के लिए १०८ बार इस मन्त्र का जप कर लिया करें। जब कोई कार्य सिद्ध करना हो तो जहाँ 'मेरा' लिखा है, वहाँ कार्य का नाम कहें।

मन्त्र—''भैरों उचके, भैरों कूदे। भैरों सोर मचावे। मेरा ना करे, तो कालिका को पूत न कहावै। शब्द सांचा, पिण्ड कांचा, फूरो मन्त्र ईश्वरी वाचा॥''

प्रयोग ९

इस मन्त्र का अनुष्ठान २१ दिन का है, साधक शमशान में भैरव देव का पंचोपचार पूजन करने के उपरान्त १० माला का जप नित्य ७ दिनों तक करें, फिर ७वें दिन मद्य, मांस की आहुति दें, फिर चौराहे में बैठकर १० माला का जप करें और ७वें दिन दही-बड़ा, बाकला-बाटी और मद्य, मांस की आहुतियाँ दें, इसके भैरव जी प्रसन्न होकर साधक की सभी मनोकामनाएँ पूरी करते हैं।

मन्त्र—''ॐ भैरों ऐंडी भैरों मैंडी। भैरों सबका दूता देवी का दूत, देवता का दूत, गुरु का दूत, पीर का दूत, नाथों का दूत, पीरों

का दूत, भैरों छड़िया कहाए। जहां सिमरूं तहां आए। जहां भेजूं, तहां जाए। चले मन्त्र फूरे वाचा। देखूं छड़िया भैरों, तेरे इल्म का तमाशा॥''

प्रयोग १०

होली, दिवाली अथवा ग्रहण के समय इस शाबर मन्त्र का एक हजार बार जप करें। किसी को ओपरी (तान्त्रिक आभिचारिक) बाधा हो तो लौंग, इलायची और विभूति बनाकर दें। उससे लाभ होगा।

मन्त्र—''काला भैरों कपली जटा। हत्थ वराड़ा, कुन्द वडा। काला भैरों हाजिर खड़ा। चाम की गुत्थी, लौंग की विभूत। लगे लगाए की करे भस्मा भूत। काली बिल्ली, लोहे की पाखर, गुर सिखाए अढ़ाई आखर। अढ़ाई आखर गए गुरों के पास, गुराँ के पास, गुराँ बुलाई काली। काली का लगा चक्कर। भैरों का लगा थप्पड़। लगा-लगाया, भेजा-भेजाया, सब गया सत समुद्र-पार जय भैरों का कमाल॥''

प्रयोग ११

इस मन्त्र की साधना ४० दिन की है। यह साधना शुद्ध जल से स्नान करके, स्वच्छ वस्त्र धारण करके शनिवार से प्रारम्भ करें। पहले भैरव देव की पंचोपचार पूजा करके एक मिट्टी के घड़े के ऊपरी हिस्से को तोड़कर नीचे का जो आधा और बड़ा भाग रहे, उस हिस्से में आग जलाएँ, उसके पास एक तरफ सरसों के तेल का दीपक जलाकर रखें और दूसरे तरफ गुग्गुल की धूप जलाएँ और उसके सामने मद्य, मांस का भोग रखकर निम्नलिखित मन्त्र की एक माला का जप करें। जप के बाद भोग को अग्नि में डाल दें, प्रतिदिन भोग देकर जप करते रहें। प्रत्येक आठवें दिन भोग सामग्री का विशेष हवन १० बार अलग से किया करें तो मन्त्र सिद्ध होता है और इससे साधक की सभी मनोकामनाएँ अवश्य पूर्ण होती है।

मन्त्र—"ॐ काला भैरव काला बान। हाथ खप्पर लिए फिर मसान। मद्य मछली का भोजन करें सांचा भैरव हांकता चले। काली का लाडला। भूतों का व्यापारी। डाकिनी शाकिनी सौदागरी। झाड़-झटक, पटक-पछाड़। सर खुला मुख बला। नहीं तो माता कालिका का दूध हराम। शब्द सांचा, पिंड कांचा। चलो भैरव। ईश्वरो वाचा॥"

प्रयोग १२

भैरव शत्रु-संहारक शाबर मन्त्र—रात्रि को दस बजे के बाद कड़ुए तेल का दीपक जला कर बैठे। सामने भैरव की प्रतिमा या चित्र रखें। मन्त्र पढ़कर एक नींबू खड़ा काटे। फिर आगे लिखा मंत्र १०८ बार जपें। ऐसा ही ग्यारह दिनों तक करे। १२वें दिन १२ 'बटुक'—छोटे-छोटे ब्राह्मण बालकों को भोजन कराए और उन्हें दक्षिणा दे। रात्रि को हवन करे। सम्भव हो, तो यह हवन शमशान में सन्ध्या के बाद करें। १३वें दिन सुबह जल्दी शमशान जाए और उक्त हवन की भस्मी, जो भी चिता वहाँ अधजली या जली हो, उसमें डाल दें। उस चिता पर कुमकुम, अक्षत, पुष्प एवं कुछ मीठा प्रसाद छोड़कर नमस्कार करके वापिस आ जायें।

मन्त्र—"ॐ नमो, आदेश गुरु को। काला भेरू-कपिल जटा। भेरू खेले चौराह-चौहट्टा। मद्य-मांस को भोजन करे। जाग जाग से काला भेरू। मात कालिका के पूत। साथे जोगी जङ्गम और अवधूत।

मेरे वैरी...(अमुक) को मार। मार-मार तू भस्म कर डार। वाह वाह रे काला भेरू। काम करो बेधड़क-भरपूर। जो तू मेरे वैरी दुश्मन (अमुक) को नहीं मारे, तो मात कालिका का पिया दूध हराम करे। माँगली तेलन, लूनी चमारन का-कुण्ड में पड़े। वाचा, वाचा, ब्रह्मा की वाचा, विष्णु की वाचा, शिव-शङ्कर की वाचा, शब्द है साँचा, पिण्ड है काचा। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। चलो मन्त्र।

तुरत उबारो। ॐ हूं फट्।"

प्रयोग १३

श्री भैरव-सिद्धि मन्त्र—निम्नलिखित मन्त्र का एक लाख जप तथा दशांश होम करने से यह मन्त्र सिद्ध होता है। प्रतिदिन प्रातःकाल पवित्रावस्था में यथा विधि पूजन इत्यादि करके यथा-शक्ति अधिकाधिक जप करना चाहिए।

मन्त्र—"ॐ नमो काला-गोरा क्षेत्र-पाल। वामं हाथं कान्ति, जीवन हाथ कृपाल। ॐ गन्ती सूरज थम्भ प्रातः-सायं रथभं जलतो विसार शर थम्भ। कुसी चाल, पाषान चाल, शिला चाल हो चाली, न चले तो पृथ्वी मारे को पाप चलिए। चोखा मन्त्र, ऐसी कुनी अब नार हसही॥"

इतने जप के बाद अब इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए भैरव जी को नमस्कार करना चाहिए। यथा—"**ह्रीं ह्रों नमः।**" इस प्रकार साधना करने से भैरव जी सिद्ध होते हैं और साधक की सभी अभिलाषाएँ पूर्ण होती हैं।

प्रयोग १४

श्री भैरव-चेटक मन्त्र—इस नवाक्षर मन्त्र का कुल ४० हजार जप कर गो-धूलि से दशांश हवन करे। १८ दिनों तक इस तरह हवन करने से भैरव जी प्रसन्न होते हैं और उनकी कृपा से सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।

मन्त्र—"ॐ नमो भैरवाय स्वाहा॥"

प्रयोग १५

भैरव जी की चौकी मूकने का मन्त्र—उक्त चौकी मन्त्र को पढ़कर अपने चारों ओर एक घेरा खींचे तो किसी भी प्रकार का डर नहीं रहता। स्व-रक्षा और दूसरों द्वारा किए गए अभिचार कर्म के लिए यह उपयोगी मन्त्र है।

मन्त्र—"चेत सूना ज्ञान, औंधी खोपड़ी मरघटियां मसान, बाँध दे बाबा भैरों की आन॥"

प्रयोग १६

अरिष्ट-निवारक-भैरव मन्त्र—उक्त मन्त्र का दस हजार बार जप करने से अरिष्टों की शान्ति होती है। शान्ति करने हेतु यह उत्तम मन्त्र है।

मन्त्र—"ॐ क्षौं क्षौं स्वाहा।"

प्रयोग १७

भय-निवारक भैरव मन्त्र—५ हजार बार जप करने से निम्नलिखित मन्त्र की सिद्धि होती है। बाद में जब किसी भी प्रकार का भय हो, तब इस मन्त्र का जप करे। इससे भय दूर होता है।

मन्त्र—"ॐ ह्रीं भैरव-भैरव भयंकर-भय हर मां, रक्ष-रक्ष हुँ फट् स्वाहा॥"

प्रयोग १८

शिशु बाधा निवारक भैरव मन्त्र—५ वर्ष से कम उम्र वाले बच्चों की सुरक्षा के लिए यह मन्त्र अमोघ है। रोग, बाधा, टोना या टोटका आदि से पीड़ित बच्चों को और विभिन्न बलाओं से बचाने के लिए बच्चे की माँ के बाँए पैर के अँगूठे को एक छोटे ताम्र-पत्र में रखवाकर धोयें। फिर धोए हुए जल के ऊपर ११० बार इस मन्त्र का जप करके उसे अभिमन्त्रित करे। इस अभिमन्त्रित जल से निम्नलिखित मन्त्र का जप करते हुए बच्चे को कुश या पान के पत्ते से छींटे मारे। इससे बच्चा तुरन्त स्वस्थ हो जाता है। यदि एक बार में विशेष लाभ न हो, तो ऐसा ३ या ७ या ६ दिनों तक नित्य करें। बच्चे को आराम अवश्य होगा।

मन्त्र—"श्री भैरवाय वं वं वं ह्रां क्ष्रौं नमः॥"

प्रयोग १९

सर्व विघ्न निवारक मन्त्र—पहले श्री काल भैरव जी के पास

धूप-दीप, फल-फूल नैवेद्य आदि यथा-शक्ति चढ़ायें। फिर इस मन्त्र का एक माला जप करें। ऐसा तब तक करें, जब तक ध्येय-सिद्धि न हो। मन्त्र को एक कागज के ऊपर लिख कर पूजा स्थान में रख लेना चाहिए। जिससे मन्त्र जप में भूल न हो।

मन्त्र—"ॐ हूँ ख्रों जं रं लं बं क्रों ऐं ह्रीं महाकाल भैरव सर्व विघ्न नाशय नाशय ह्रीं फट स्वाहा॥"

प्रयोग २०

सिद्धि-प्रदायक महा-काल भैरव जी का मन्त्र—शुभ मुहूर्त में अथवा जब आपकी राशि का चन्द्र बली हो, तब इस मन्त्र का २१ हजार बार जप करें। इससे मन्त्र-सिद्धि होगी। बाद में नित्य १ माला जप करते रहे, तो श्री महाकाल भैरव जी प्रसन्न होकर अभीष्ट सिद्धि प्रदान करते हैं। जप के साथ कामनानुसार ध्यान भी करना चाहिए।

मन्त्र—"ॐ हं षं नं गं फं सं खं महाकाल भैरवाय नमः

सर्व कार्य रुद्र भैरव शाबर मन्त्र

मन्त्र—"ॐ गुरु ॐ गुरु ॐ गुरु ॐ रुद्र भैरव ॐ कार। ॐ गुरु भु-मसान, ॐ गुरु सत्य गुरु, सत्य नाम रूद्र भैरव कामरू जटा आठ पहर खोले चोपटा, बैठे नगर में सुमरो तोय दृष्टि बाँध दे सबकी। मोरे हनुमान बसे हथेली। भैरव बसे कपाल। नरसिंह जी की मोहिनी मोहे सकल जगत। भूत मोहूँ, मानुस मोहूँ, मसान मोहूँ, घर का मोहूँ, कुम्हार मोंहूँ, बाहर का मोहूँ, बम-भोले मोहूँ, कोढ़ा मोहूँ, अघोरी मोहूँ, दूती मोहूँ, दुमनी मोहूँ, नगर मोहूँ, प्रेत मोहूँ, जादू-टोना मोहूँ, डकणी मोहूँ, संकणी मोहूँ, रात का बटोही मोहूँ, पनघट की पनिहारी मोहूँ, इन्द्र का इन्द्रासन मोहूँ, गद्दी बैठा नृप मोहूँ, गद्दी बैठा बणिया मोहूँ, आसन बैठा जोगी मोहूँ, जो कोई काटे मेरा वाचन अंधा कर, लूला कर, सिड़ी वोरा कर, अग्नि में जलाय दे, धरी को बताय दे, गढ़ी बताय दे, हाथ को बताय दे, गाँव को बताय दे, मिट्टी को मिलाए दे, रूठे को मनाय दे, दुष्ट को सताय दे, मित्रों को बढ़ाए दे। वाचा छोड़ कुवाचा चले, माई चोखा दूध हराम करे। हनुमान की आण, गुरुन को प्रणाम। ब्रह्मा-विष्णु साख भरे, उनको भी प्रणाम। लोना चमारी की आण, माता गौरा पारवती महादेव जी की आण। गुरु गोरखनाथ की आण, सीता-रामचन्द्र की आण। जय रूद्र भैरव, मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। गुरु के वचन से चले, तो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

विधि—सर्व कार्य सिद्ध करने वाला यह रूद्र भैरव शाबर मन्त्र अत्यन्त गुप्त और अत्यन्त प्रभावी है। इस मन्त्र से केवल परोपकार के ही कार्य करने चाहिए।

रविवार को पीपल के नीचे अर्द्धरात्रि के समय जाना चाहिए, साथ में उत्तम गुग्गुल, सिन्दूर, शुद्ध केसर, लौंग, शक्कर, पञ्चमेवा, शराब, सिन्दूर लपेटा नारियल, सवा गज लाल कपड़ा, आसन के लिये, चन्दन का बुरादा एवं लाल लुंगी आदि वस्तुएँ ले जानी चाहिए। लाल लुंगी पहन कर पीपल के नीचे चौका लगाकर पूजन करें, धूप-दीप देकर सब सामान अर्पित करे। साथ में तलवार और लालटेन अवश्य रखनी चाहिए। प्रतिदिन मंत्र १०८ बार २१ दिन तक निरन्तर जप करें। यदि कोई कौतुक दिखाई पड़े तो डरना नहीं चाहिए। फिर मन्त्र सिद्ध होने पर जब भी उपयोग में लाना हो, तब आग पर धूप डालकर तीन बार मन्त्र पढ़ने से कार्य सिद्ध होंगे। ऊपर जहाँ चौका लगाने के बारे में बताया गया है, उसका अर्थ यह है कि पीली मिट्टी से चौके बनाओ। चार चौकियाँ अलग-अलग बनायें। पहली धूनी गुरु की, फिर हनुमान की, फिर भैरव की, फिर नरसिंह की। यह चारों चौकों में कायम करो। आग रखकर चारों में हवन करें। गुरु की पूजा में गुग्गुल नहीं डाले। नरसिंह की धूनी में नाहरी के फूल एवं शराब और भैरव की धूनी में केवल शराब डालें।

कालभैरव सवारी आवाहन शाबर मन्त्र

यहाँ कालभैरव भगवान की सवारी शरीर में बुलाने का गोपनीय विधि बता रहे हैं, जो विलक्षण होने के साथ शाबर मन्त्र से नाथमुखी द्वारा प्राप्त विधान है। यह भैरव जी की सवारी को शरीर में बुलाने का महा शाबर मन्त्र है। कोई भी व्यक्ति शुद्धता पूर्वक साधना करके सवारी को शरीर में बुला सकता है। सवारी आने पर 'भगत' (जिस इन्सान में सवारी आता है उसको भगत कहा जाता है) को जो कुछ पूछा जाये वह उसका

सटीक जवाब देता है साथ में सभी कष्ट, पीड़ा, बाधा, रोग, समस्याओं से मुक्ति दिलवाता है।

यह प्रयोग किसी भी रविवार, मंगलवार अथवा कृष्ण पक्ष की अष्टमी को सम्पन्न किया जा सकता है। भैरव साधना मुख्यत: रात्रिकाल में ही सम्पन्न की जाती है, परन्तु इस प्रयोग को आप अपनी सुविधानुसार दिन में भी सम्पन्न कर सकते हैं। साधना काल में साधक स्नान कर स्वच्छ लाल वस्त्र धारण कर, दक्षिणाभिमुख होकर बैठ जाए। अपने सामने एक बाजोट पर सर्वप्रथम गीली मिट्टी की ढेरी बनाकर उस पर 'काल भैरव कंगण' स्थापित करें। उसके चारों ओर तिल की आठ ढेरियाँ बना लें तथा प्रत्येक पर एक-एक सुपारी स्थापित करें। बाजोट पर तेल का दीपक प्रज्वलित करें तथा गुगुल धूप तथा अगरबत्ती जला दें।

सर्वप्रथम निम्न मन्त्र बोलकर भैरव जी का आवाहन करें—

आवाहन मन्त्र—

आयाहि भगवन् रुद्रो भैरवः भैरवीपते।
प्रसन्नोभव देवेश नमस्तुभ्यं कृपानिधि॥

भैरव आवाहन के पश्चात् साधक भैरव का ध्यान करते हुए अपने शरीर में सवारी प्राप्त करने हेतु कालभैरव से प्रार्थना करें तथा हाथ में जल लेकर निम्न संकल्प करें—

संकल्प—''मैं अपने शरीर में 'कालभैरवजी' का सवारी प्राप्त करने हेतु काल भैरव प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूँ।''

अब जल को जमीन पर छोड़ दीजिये और इस शाबर मन्त्र का स्पष्टता से जाप करें।

मन्त्र—''जय काली कंकाली महाकाली के पूत कालभैरव, हुक्म है-हाजिर रहे, मेरा कहा काज तुरन्त करे, काला-भैरव किल-किल करके चली आयी सवारी, इसी पल इसी घड़ी यही भगत में रूके, ना रूके तो दुहाई काली माई की, सवारी सर्व काम सिद्ध

करे, दुहाई कामरू कामाक्षा की, गुरु गोरखनाथ बाबा की आण, छु वाचापुरी ॥''

काल भैरव कंगण

अब बात करते है 'कालभैरव कंगण' की, जो अष्टधातु से निर्मित है और इसका निर्माण वही कर सकता है, जो कालभैरव का भगत हो, जिसमें सवारी आती हो। इस कंगण की सिद्धि से सवारी जल्दी आती है। यह कंगण, सवारी में आये हुए कालभैरव भगवान से आज्ञा लेकर बनवाया जाता है ताकि आपको पूर्ण सफलता मिलें। अमावस्या/पूर्णिमा को सवारी में बहुत शक्ति होती है और उसी समय उसी दिन आज्ञा लेकर निर्मित किया हुआ कंगण उनके सामने रखकर सिद्धि और रक्षा हेतु प्रार्थना करें। इस कंगण की साधना हेतु आगे दिया हुआ प्रयोग अवश्य करें।

भैरों जी सिद्धि

ॐ नमो आदेश गुरु को। काला भैरव, काला केश। कानों मुंदरा, भगवा वेष। मार मार काली पुत्र बारह कोस की मार। भूतां हाथ कलेजी खूँहा। गेड़िया जहाँ जाऊँ भैरों साथ। बारह कोस की ऋद्धि लाओ। चौबीस कोस की सिद्धि लाओ। सोती होय जगाय लाओ। बैठी होय उठाय लाओ। अनन्त केशर की भारी लाओ। गौरा पार्वती की बिछिया लाओ। गेल्यां की रस्सतान मोह। कुएं बैठी पणिहारी मोह। गद्दी बैठा बणिया मोह। गृह बैठी बणियानी मोह। राजा की रजवाडिन मोह। महलों बैठी रानी मोह। डाकिनी को। शाकिनी को। भूतिनी को। पलीतनी को। प्रेत को। पिशाच को। औपरी को। पराई को। लाग को। लपटाई को। धूम को। धक्का को। पलिया को। चौड़ को। चुगाठ को। काचा को। कलवा को। भूत को। पलीत को। जिन्न को। राक्षस को। बैरिनों से बरी कर दे। नजरों जड़ दे ताला। इत्ता भैरव न करे तो पिता महादेव की जटा।

तोड़ तागड़ी करे। माता पार्वती का चीर फाड़ लंगोट करे। चल डाकिनी शाकिनी। चौडूं मैला बाकरा। देउं मद की धार। भरी सभी में घूं आने में कहाँ लगाईं वार। खप्पर में खाय मसान में लोटे। ऐसे काला भैरों की कुण पूजा मेटे। राजा मेटे राज से जाये। प्रजा मेटे, दूध पूत से जाये। जोगी मेटे ध्यान से जाये। शब्द साँचा। पिण्ड काँचा। फुरे मन्त्र ईश्वरो वाचा। जय भैरों जी की दुहाई।

एक काले रंग का त्रिभुजाकार पत्थर लेकर काले रंग और चमेली के तेल को मिलाकर उसे रंग दे और अब इसे किसी धरातल पर जहाँ आपको साधना करनी हो वहाँ इसे सीधा खड़ा कर दे। शनिवार की रात्रि में इसके सामने अखण्ड दीप जलाये, दो लौंग रखे, नारियल तथा पान की पूजा करें। मदिरा का भी प्रबन्ध करें। अब इसके सामने धूप जलाकर इस मन्त्र का जाप प्रारम्भ करें। कम से कम तीन माला तो अवश्य जपें और रात्रि में इसी भाँति निरन्तर पाठ करते रहे। दिन में काले कुत्ते को खीर हलुआ खिलाये। मन्दिर में भैरों जी के दर्शन करे। यह कार्य नियमित रूप से चलना चाहिए। शीघ्र ही भैरों जी दर्शन देंगे। जब भैरों जी को मांस, मदिरा का भोग प्रस्तुत करें और आगे कोई भी वर मांग ले।

अचूक भैरव साधना शाबर मन्त्र

मन्त्र—ॐ नमो भैंरुनाथ, काली का पुत्र। हाजिर होके, तुम मेरा कारज करो तुरत। कमर बिराज मस्तङ्गा लँगोट, घूँघर माल। हाथ बिराज डमरू खप्पर त्रिशूल। मस्तक बिराज तिलक सिन्दूर। शीश बिराज जटा-जूट, गल बिराज नोद जनेऊ। ॐ नमो भैरूनाथ, काली का पुत्र। हाजिर होके तुम मेरा कारज करो तुरत। नित उठ करो आदेश-आदेश।''

विधि—सर्वप्रथम पञ्चोपचार से पूजन करें। रविवार से शुरू करके २१ दिन तक मृत्तिका जी मणियों की माला से नित्य अट्ठाइस (२८) माला जप करें। भोग में गुड़ व तेल का शीरा तथा उड़द का दही-बड़ा चढ़ायें और पूजा-जप के बाद उसे काले श्वान को खिलाए। यह प्रयोग किसी भी अटके हुए कार्य में सफलता प्राप्ति हेतु है। यह प्रयोग मुझे मेरे गुरु ने मेरी गुरु भक्ति से प्रसन्न होकर उत्तरांचल प्रवास के दौरान दिया था। इसके माध्यम से मैंने अनेक लौकिक कार्य सरलता से सिद्ध किये हैं। मेरे इस अनुभूत प्रयोग का साधकगण भी पूर्ण लाभ उठायें।

भैरव शाबर मन्त्र और शिव शाबर मन्त्र वशीकरण प्रयोग

ॐ गुरु जी सत नाम आदेश आदि पुरुष को।
काला भैरूं, गोरा भैरूं, भैरूं रंग बिरंगा।
शिव गौरां को जब जब ध्यांऊ, भैरुं आवे पास
पूरण होय मनसा वाचा पूरण होय आस
लक्ष्मी ल्यावे घर आंगन में,
जिह्वा विराजे सुर की देवी, खोल घड़ा दे दड़ा॥
काला भैरूं खप्पर राखे, गौरा झांझर पांव
लाल भैरूं, पीला भैरूं, पगां लगावे गाँव
दशों दिशाओं में पञ्च पञ्च भैरूं॥
पहरा लगावे आप। दोनों भैरूं मेरे संग में चालें
बम बम करते जाप। बावन भैरव मेरे सहाय हो
गुरु रूप से, धर्म रूप से, सत्य रूप से, मर्यादा रूप से,
देव रूप से, शंकर रूप से, माता पिता रूप से,
लक्ष्मी रूप से, सम्मान सिद्धि रूप से,
स्व कल्याण जन कल्याण हेतु सहाय हो,
शिव की दुहाई, भैरव की दुहाई।
श्री शिव गौरां पुत्र भैरव॥
शब्द सांचा पिंड कांचा चलो मन्त्र ईश्वरो वाचा॥

सिद्धि की दृष्टि से इस मन्त्र का विधि विधान अलग है, परन्तु साधारण रूप में मात्र ११ बार रोज जपने की आज्ञा है। श्री शिव पुत्र भैरव आपकी अवश्य सहायता करेंगे। चार लड्डू बूंदी के यह मन्त्र बोलकर ७ रविवार निरन्तर काले कुत्ते को खिलाएँ। शिव जी की प्रतिदिन पूजा करते रहें, अवश्य ही कार्य सिद्ध होगा।

भैरवसिद्धि का शाबर मन्त्र

ॐ नमो काल गौरा क्षेत्रपाल वामं हाथं कांति जीवन हाथ कृपालु ॐ गन्ती सूरज थम प्रातः सायं रथभंजलतो विसार rारथंभ कुली चाल पाषाण चाल शिला चाले हो चाली न चले तो पृथ्वी मोर को पाप चलिये चोरवा मंत्र ऐसा कुनी अब नार हस ही।

इस मन्त्र का एक लाख की संख्या में जप करें। जप के बाद दशांश होम करने पर यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। प्रतिदिन प्रातःकाल पवित्र होकर नित्य कर्म से निवृत्त होकर, स्वच्छ वस्त्र पहन यथाविधि पूजनादि करने के बाद यथाशक्ति इस मन्त्र का जप करना चाहिए। नित्य जप के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए नमस्कार करना चाहिए।

ह्रां ह्रीं नमः।

इस प्रकार साधना करने पर भैरव देव की सिद्धि प्राप्त होती है तथा भैरव देव साधक की हर मनोकामना को पूर्ण करते हैं।

अदीठनाशक भैरव मन्त्र

ॐ नमो सिर कटा, नख कटा, अस्थिमेदमज्जागत फोड़ा, फुंसी, अदीठ, हुंबल रैल्याच रोग रींधन बाय जाए। चौंसठ जोगनी बावन और छप्पन भैरव रक्षा कीजै आया शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

अदीठ का अर्थ होता है, न दिखाई देने वाला। कमर पर जो फोड़ा हो जाता है, ग्रामीण लोग उसे 'अदीठ' कहते हैं। यह भयंकर रोग

जानलेवा सिद्ध होता है। मधुमेह के रोगियों को ही यह रोग अधिक होता है। अतः रोग की औषधि के साथ इस भैरव मंत्र का प्रयोग अमोघ रहता है। ग्रहणकाल में सिद्ध करके इस मंत्र का प्रयोग करें। आठ हजार जप से ही मंत्र सिद्धि हो जाती है। उपचार हेतु अदीठ के रोगी को सामने बिठाकर मोर पंख से भूमि को साफ कर लें तथा मंत्र पढ़ते हुए सात बार झाड़े, भूमि की धूल सात बार लेकर फोड़े के चारों ओर लगाएँ। यह क्रिया सात दिन करने से रोगी का रोग (फोड़ा) समाप्त हो जाता है।

प्रेतबाधानाशक भैरव मंत्र

काला भैरव पीली जटा, रात-दिन खेले चोपटा। काला भसम मुसाण, जेहि मांगु तेहि पकड़ी आन। डाकिनी, शाकिनी, पट्ट सिहारी, जरख चढंती गोरखमारी। छोड़ि छोड़ि रो पापिनी बालक पराया, गुरु गोरखनाथ का परवाना आया।

किसी भी बालक या युवक के प्रेतबाधा से पीड़ित होने पर नुकीले तीर से इक्कीस बार इस मंत्र को पढ़ते हुए झाड़ा लगा दें तथा इक्कीस बार जल को अभिमन्त्रित करके बच्चे को पिला दें। वह बच्चा प्रेतबाधा से मुक्त हो जाएगा। यह मन्त्र भैरव का प्रेतबाधानाशक मंत्र है।

कटोरी चलाने का भैरव मन्त्र

ॐ का मन्त्र चलता चलै, सेत भयंकर चलै, गणनायक चलै, पिदर मादर चलै, कौन की शक्ति चलै, भैरवनाथ की शक्ति चलै, वद्या चलै, अरडती चलै, मरडती चलै, द्यौरती चलै की लाऊ कीलती चलै, गाडरय उखलती चलै, चलि चलि हो भद्रनाम ऋषिवर तोस्यों मस्तक टूटे, धरनी चुवै, महादेव की आज्ञा फुरो, फणिद्र स्वाहा।

जिस कटोरी को चलाना हो, वह कांसे की अथवा हल्के वजन की होनी चाहिए और वह चार उंगल चौड़ी हो। होली, दीवाली की रात्रि अथवा सूर्य ग्रहण के समय उपर्युक्त मंत्र का एक हजार आठ बार जप करें और जप के समय काले उड़द कटोरी पर चढ़ाते रहें। इस क्रिया से

कटोरी और मंत्र दोनों सिद्ध हो जाते हैं।

सिद्ध होने के बाद जब कभी इस कटोरी से काम लेना हो तो पहले इसे निमंत्रण देना चाहिए। शनिवार को निमंत्रण देते समय पीले चावल व सुपारी कटोरी के सम्मुख रखकर कहें कि मैं तुम्हें न्योता देने आया हूँ, अमुक व्यक्ति के यहाँ चोरी हो गई है, कल रविवार को तुम्हें आना है। जहाँ से चोरी हुई है, उसी जगह से कटोरी चलाई जाती है।

उस स्थान पर गाय के गोबर से चौका लगाकर स्थान को शुद्ध कर लें, लोबान की धूनी दें, थोड़ा इत्र छिड़क दें। कटोरी को उस स्थान पर रख दें, फिर मंत्र को पढ़ते हुए कटोरी पर चावल फेंकें, तो कटोरी चलने लगेगी। जिस मार्ग से चोर चोरी करके गया है, कटोरी वहाँ से चलकर जहाँ चोरी की वस्तु रखी है, वहाँ जाकर ठहर जाएगी। जब तक कटोरी का चलना बन्द न हो जाए, तब तक उस पर मन्त्र पढ़-पढ़कर चावल फेंकते रहना चाहिए। इस प्रकार कटोरी चोर तक पहुँच जाती है।

भैरव नित्यपाठ मन्त्र

ॐ सत् नमो आदेश गुरु जी को आदेश। ॐ गुरू जी। तुम भैरों काली का पूत सदा रहे मतवाला, चढ़े तेल-सिन्दूर। गले फूलों की माला, जिस किसी पर संकट पड़े, जो सुमिरे तुम्हें उसकी रक्षा करें, तुम हो रक्ष-पालं। भरी-कटोरी तेल की, धन्य तुम्हारा प्रताप, काल भैरो अकाल-भैरो। लाल भैरो, जल भैरो, थल भैरो। बाल-भैरो, आकाश भैरो, क्षेत्रपाल भैरो, सदा रहो कृपाल भैरो चोला-जाप सम्पूर्ण भया, नाथ जी, गुरू जी आदेश-आदेश-आदेश।

यह मंत्र भैरव के विशेष भक्तों हेतु है। इसका नित्य प्रति जाप करने से जपकर्ता के ऊपर श्री भैरव जी की असीम कृपा बनी रहती है, परन्तु इस जप का लाभ सिर्फ उन्हीं को होगा, जिनके इष्ट भैरव जी होंगे।

भैरव बाबा का नित्य जप मन्त्र

सत नमो आदेश गुरू को आदेश ॐ गुरू जी चण्डी-चण्डी तो प्रचण्डी अलावला फिर नव-खण्डी। तीर बाँधूँ, तलवार बाँधूँ, बीस कोस पर बाँधूँ वीर, चक्र ऊपर चक्र चले, भैरो बली के आगे धरे, छल चले, बल चले, तब जानवा काल-भैरों। तेरा रूप। कौन भैंरों? आदि भैरो, युगादि भैरो, त्रिकाल भैरों, कामरू देश रोला मचावे, हिन्दू का जाया, शत्रु का मुर्दा फाड़-फाड़ बगाया। जिस माता का दूध पिया, सो माता की रक्षा करना, अवधूत खप्पर में खाय। मसान में लेटे, काल-भैरों की पूजा कौन मेटे? राजा मेटे राज-पाट से जाय, योगी मेटे, योग से जाये, प्रजा मेटे, दूध-अन्न से जाय, लेना भैरों, लौंग सुपारी, कड़वा प्याला, भेंट तुम्हारी। हाँथ काती मोढ़े मढ़ा, जहाँ सिमरूँ तहाँ हाजिर खड़ा। श्रीनाथ जी, गुरू जी आदेश-आदेश।

इस जंजीरे का नित्य जप करने से सभी कार्यों में सफलता मिलती है, इस जंजीरे का जप करते हुए झाड़ा करने से भूत-प्रेतादि बाधा से ग्रसित रोगी की बाधा दूर होती है। यह लाभ सिर्फ उन्हीं को होगा, जिस साधक की श्री भैरव के प्रति पूर्ण श्रद्धा होगी।

काल भैरव, भैंसासुर शाबर मन्त्र

कर-कर बोले। काल भैरों रकत माँस के भोजन करे। छाती तोड़ कलेजा खाय, मूड़ तोड़ भेजा जाय। नैनन बैठ पानी पिए। मार आ, तोड़ आ, जार आ, फूँक आ, लौट दिवाले आ। नीचे देहों वाच को मुरगा, ऊपर मद की धार। जार बार बैरी की खबर ला। मेरा नाम छिपा, दूसरे का नाम बता। किसी के कहने में मत आना। लौटत आना कारी घटिया, तोह देऊँ जोत बरत बराई। ऊपर चले मसान, मिर्गा औखर खाय। ढाई अक्षर मन्त्र की दुहाई। छोट-मोट इमली, छिचल-बिचल गई डार। जोतें तेली, जोतें कलार। अम्बे भैंसासुर

माता के कोरे, सिकन्दर बाजा करुवा। का बजा, गुरू कौन, अघोर मन्त्र की दुहाई।

यह अद्‌भुत काल भैरव भैंसासुर शाबर मन्त्र है। इसका प्रतिरात्रि ५१ जप २१ दिवस करने पर सफलता मिलती है। भैरव प्रत्यक्ष होकर भैंसासुर को साधक का कार्य करने का आदेश देते हैं।

विशिष्ट भैरव वशीकरण मन्त्र

अब हम आपको भैरव वशीकरण साधना के बारे में बताते है, जिसको करने से आपके सभी असाध्य व भयानक कष्ट दूर हो जायेंगे।

मन्त्र—आयाहि भगवान् रुद्रो भैरवः भैरवीपते, प्रसन्नोभव देवेश नमस्तुभ्यं कृपानिधि।

इस साधना को आप किसी भी रविवार, मंगलवार या कृष्ण पक्ष की अष्टमी को शुरू कर सकते है। लाल वस्त्र का परिधान आपको पहनना होता है व मन्त्र जाप के लिए काली हकीक की माला ली जाती है। साधना को शुरू करने से पहले आप अपने आसन के ठीक सामने भैरव का चित्र या मूर्ति स्थापित कर ले। तेल का दीपक भी साथ जला लें व साथ में गुग्गुल, धूप-अगरबत्ती भी जला सकते है। साथ ही यह ध्यान रखें कि पूजा के बाद अर्पित की गई सामग्री को गई पूजा स्थल से बाहर नहीं ले जायें, बल्कि प्रसाद के रूप में उसी समय उसका सेवन कर लेना चाहिए।

भैरव का आवाहन करते हुए आपको अग्र लिखित मन्त्र का उच्चारण करना होता है और भैरवाय नमः बोलने के साथ चन्दन, फूल, अक्षत, दक्षिणा, सुपारी, नवैद्य आदि सहित धूप और दीप से आरती करें। ध्यान रहे कि भैरव का आवाहन करने के बाद आप काल भैरव की उपासना करते हुए इस शाबर मन्त्र का जाप भी करें।

मन्त्र—जय काली कंकाली महाकाली के पुत काल भैरव,

हुक्म है—आदेश है शिव का, हाजिर रहे, मेरा कहा काज तुरन्त माने, काला भैरव किल-किल करके चली आई काल भैरव सवारी, इसी पल इसी घड़ी यही भगत के पास रूके, ना रूके तो तो दुहाई काली माई की, दुहाई कामरू कामाक्षा की, दुहाई शिव की, गुरु गोरखनाथ बाबा की, आण छु वाचापुरी। वशीकरण सिद्ध करो, जय बाबा भैरव।

भैरव साधना करते समय खास ध्यान ये देना होता है कि उस दिन लहसुन और प्याज न खायें, किसी का झूठा पानी व भोजन न लें, दिन के वक्त नींद न ले। प्लास्टिक के बर्तन की जगह ताँबे का इस्तेमाल कर सकते हैं।

''ॐ भ्रां भ्रां भूँ भैरवाय स्वाहा। ॐ भं भं भं अमुक-मोहनाय स्वाहा।'' ये भैरव का एक वो मन्त्र है जिसका इस्तेमाल उपरोक्त प्रयोग के पश्चात् करके आप किसी पर भी वशीकरण कर सकते है। इस मन्त्र को आप सात बार पढ़कर पीपल के पर लिखकर उसे अभिमन्त्रित कर दे फिर जिस भी इन्सान पर वशीकरण करना है उसके घर में पत्ते को फेक दें या उसके घर के पीछे गाड़ दे। वैसे आप पीपल के पत्तों की जगह इस क्रिया को छितवन या फुरहठ के पत्तों के माध्यम से भी कर सकते है।

भैरों सिद्धि अद्भुत शाबर

मन्त्र—भैरों ऐंडी, भैरों मैंडी, भैरों सबका दूत। देवी का दूत, देवता का दूत। गुरु का दूत, पीर का दूत। नाथों का दूत, पीरों का दूत। भैरों छड़िया कहाए जहाँ, सिमरूँ तहाँ आए। जहाँ भेजूँ, तहाँ जाए। चले मन्त्र, फुरे वाचा। देखूँ छड़िया भैरों, तेरे इल्म का तमाशा।

विधि—श्मशान-घाट में भैरों के पूजन के उपरान्त १० माला ७ दिन तक यह मन्त्र जप करें। सातवें दिन, मांस-मछली और मद्य से 'आहुति' दें। फिर चौबाटे (चौराहे) में बैठ कर १० माला ७ दिन 'जप'

करें। सातवें दिन उड़द के बड़े, मांस और मद्य की 'आहुति' दें। इसके बाद घर के एकान्त कमरे में सात दिन १० माला 'जप' करे और सातवें दिन उड़द के बड़े, वाकला और मद्य से 'आहुति' दे। इससे भैरों बाबा प्रसन्न होकर साधक को सभी प्रकार सहायता प्रदान करते हैं। किसी का अपकार न करे। भलाई हेतु ही इस मन्त्र का प्रयोग करें।

काला भैरों थप्पड़ शाबर मन्त्र

मन्त्र—काला भैरों कपली जटा। हत्थ वराड़ा, कुन्द वड़ा। काला भैरों हाजिर खड़ा। चाम की गुत्थी, लौंग की विभूत। लगे लगाए की करे भस्मा भूत। काली बिल्ली, लोहे की पाखर, गुराँ सिखाए अढ़ाई आखर। अढ़ाई आखर गए गुराँ के पास, गुराँ बुलाई काली। काली का लगा चक्कर। भैरों का लगा थप्पड़। लगा-लगाया, भेजा-भेजाया, सब गया सत समुद्र-पार।

विधि—होली, दीवाली अथवा ग्रहण के समय उक्त मन्त्र का एक हजार बार जप करें। किसी को ओपरी (तान्त्रिक आभिचारिक) बाधा हो तो इसकी लौंग, इलायची और विभूति बनाकर दें। अवश्य लाभ होगा।

श्री भैरव प्रत्यक्ष दर्शन शाबर मन्त्र

मन्त्र—ॐ गुरु जी। काला भैरूँ, कपला केश। काना मदरा, भगवाँ भेष। हाथ में दण्ड, सुतवा नाक मार-मार काली पुत्र, बारह कोस की मार। भूतां हात कलेजी, खूं हाँ गेडिया। जाँ जाऊँ, भैरूँ साथ। सब संसार के सिद्ध भैरव बारह कोस की रिद्धि ल्यावो, चौबीस कोस की सिद्धि ल्यावो। सुत्यो होय, तो जगाय ल्यावो। बैठ्या होय, तो उठाव ल्यावो। अनन्त केसर की थारी ल्यावो, गौराँ पार्वती की बिछिया ल्यावो।

गेले की रस्तान मोय, कुवें की पणियारी मोय। हटा बैठया बणियाँ मोय, घर बैठी बणियाणी मोय। राजा की रजवाड़ मोय,

महलाँ बैठी राणी मोय। डकणी को, सकणी को, भूतणी को, बेताल को, मलिछ को, पलीतणी को, ओपरी को, पराई को, लाग कूँ, लपट कूँ, धूम कूँ, धकमा कूँ, अलीया को, पलीया को, घोर को, अघोर को, चौड़ को, चौगट को, काचा को, कलवा को, भूत को, पलीत को, जिन्न को, राक्षस को, बैरियाँ से बरी कर दे। नजराँ जड़ दे ताला। सब बुरी बला कर दे बन्द।

इता भैरव नहीं करे, तो पिता महादेव की जटा तोड़ तागड़ी करे। माता पार्वती का चीर फाड़ लँगोट करे। चल डकणी-सकणी, चौड़ूँ मैला बाकरा। देस्यूँ मद की धार, भरी सभा में। छूं ओलमो कहाँ लगाई थी बार। खप्पर में खा, मुसाण में लोटे। ऐसे कुण काला भैरूँ की पूजा। मेरे राजा मेरे राज से जाय। प्रजा मेरे दूध-पूत से जाय। जोगी मेरे ध्यान से जाय। भोगी मेरी साधना से जाये। शब्द साँचा, ब्रह्म वाचा, चलो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—शनिवार की रात में यह साधना प्रारम्भ करें। एक तिकोना काला पत्थर बनाकर अपने साधना-स्थल के सामने स्थापित करें। उसके ऊपर तेल, सिन्दूर, पान चढ़ाए और नारियल रखे। प्रतिदिन साधना के समय तिल के तेल का दीपक जलाए, धूप देवे, छड़-छड़ीला-कपूर-केसर-लौंग धूप में डालें। रात्रि में नित्य निश्चित समय पर उक्त मन्त्र का २१ बार जप करे। इक्कीस वें दिन भैरव जी का जब दर्शन दें, तो बाकला, पान-सुपारी दे, बकरे की पूरी कलेजी दें, एक बोतल शराब की धार दें। इस प्रकार भैरव जी सिद्ध हो जाएँगे तथा अभीष्ट काम करेंगे। यह साधना करते समय किसी को न बतायें, गुप्त रखें।

विशेष नवरात्रि भैरव शाबर मन्त्र

भैरों उचके, भैरों कूदे। भैरों सोर (शोर) मचावै।
मेरा कहना ना करे, तो कालिका को (का) पूत न कहावै।

शब्द साँचा, फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। भैरों की सिद्धि, लाये रिद्धि।

विधि—होली की रात में, पोतनी (सफेद) मिट्टी या लाल मिट्टी से चौका देकर अण्डी (एरण्ड) की सूखी लकड़ी पर तेल का हवन करें। जब लौ प्रज्वलित हो, तब उसी प्रज्वलित लौ को चमेली के फूलों की माला पहना दे। सिन्दूर, मदिरा, मगौड़ी, इत्र, पान चढ़ा कर गुग्गल का हवन करें। १००१ बार उक्त मन्त्र जपें। इससे मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। आगे नवरात्रि, दीवाली एवं अन्य सिद्ध पर्वों में १ माला जप करे। जप के पूर्व पूजन, हवन करें। जब कोई कार्य सिद्ध करना हो, तो जहाँ 'मेरा' लिखा है, वहाँ 'मेरा अमुक कार्य' कहें।

बटुक भैरव सिद्धिप्रद शाबर मन्त्र

श्री काल भैरव बटुक भैरव प्रयोग

ॐ अस्य श्री बटुक भैरव स्तोत्रस्य सप्त ऋषिः ऋषयः, मातृका छन्दः, श्री बटुक भैरवो देवता, ममेप्सित-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ काल-भैरो, बटुक-भैरो, भूत भैरो। महा भैरव महा भय-विनाशनं देवता सर्व सिद्धिर्भवेत्। शोक-दुःख क्षय करं निरञ्जनं, निराकारं नारायणं, भक्ति-पूर्ण त्वं महेशं। सर्व काम सिद्धिर्भवेत्। काल-भैरव, भूषण-वाहनं काल-हन्ता रूपं च, भैरव गुनी। महात्मनः योगिनां महा-देव स्वरूपं। सर्व सिद्ध्येत्। ॐ काल-भैरो, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ। महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिभवेत्।

ॐ त्वं ज्ञानं, त्वं ध्यानं, त्वं योगं, त्वं तत्त्वं, त्वं बीजं, महात्मानं त्वं शक्तिः, शक्ति-धारणं त्वं महा-देव-स्वरूपं। सर्व-सिद्धिर्भवेत्। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरो। महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ काल-भैरव। त्वं नागेश्वरं, नाग-हारं च त्वं, वन्दे परमेश्वरं।

ब्रह्म-ज्ञानं ब्रह्म-ध्यानं, ब्रह्म-योगं, ब्रह्म-तत्वं, ब्रह्म-बीजं महात्मनः। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ। महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

त्रिशूल चक्र गदा पाणिं शूल-पाणि पिनाक-धृक्। ॐ काल-भैरौ, बटुक भैरौ, भूत-भैरौ। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्व सिद्धिर्भवेत्।

यह वैदिक शाबर मन्त्र भैरवजी की प्रतिदिन पूजा करके सात दिन तक प्रतिदिन २१ बार जपें। बटुक भैरव प्रसन्न होकर साधक की बाधाओं का नाश करके सिद्धि का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

रूद्रभैरव भय नाशक शाबर मन्त्र

ॐ रूद्र भैरव। त्वं बिना गन्धं, बिना धूपं, बिना दीपं सर्व शत्रु विनाशनं। सर्व- सिद्धिर्भवेत्।

विभूति-भूति-नाशाय, दुष्ट-क्षय-कारकं, महा-भैरवे नमः। सर्व-दुष्ट-विनाशनं सेवकं सर्व-सिद्धिं कुरु। ॐ काल-भैरौ, बटुक भैरौ, भैरौ। रूद्र-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ काल-भैरव। त्वं महा-ज्ञानी, महा ध्यानी, महा योगी, महा बली, तपेश्वर। देहि मे सिद्धिं सर्वं। त्वं भैरवं भीम-नादं च नादनम्। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ। रूद्र-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं। अमुकं मारय मारय, उच्चाटय उच्चाटय, मोहय मोहय, वशं कुरु कुरु। सर्वार्थकस्य सिद्धि रूपं त्वं महाकाल। काल भक्षणं महा देव स्वरूपं त्वं। सर्व सिद्धयेत्। ॐ काल भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ। रूद्र भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्व सिद्धिर्भवेत्।

ॐ काल भैरव। त्वं गोविन्द, गोकुलानन्द। गोपालं, गोवर्द्धनं धारणं त्वं। वन्दे परमेश्वरं। नारायणं नमस्कृत्य, त्वं धाम शिव रूपं च। साधकं सर्व सिद्धयेत्। ॐ काल भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। रूद्र भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्व सिद्धिर्भवेत्।

सर्व दुष्ट विनाशक भैरव शाबर मन्त्र

ॐ काल-भैरव। त्वं राम-लक्ष्मणं, त्वं श्रीपति-सुन्दरं, त्वं गुरुड़-वाहनं त्वं शत्रु हन्ता च, त्वं यमस्य रूपम्। सर्व कार्य सिद्धिं कुरु। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ। महा-भैरव महा-शत्रु-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ काल-भैरव। त्वं ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरं, त्वं जगत्-कारणं, सृष्टि-स्थिति-संहार-कारकं, रक्त-बीजं, महा-सैन्यं, महा-विद्या, महा-विद्या, महा-भय-विनाशनम्। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ। महा-भैरव महा-शत्रु-विनाशनं देवता। सर्व सिद्धिर्भवेत्।

ॐ काल भैरव। त्वं आहार मद्य, मांसं च, सर्व-दुष्ट-विनाशनं, साधकं सर्व-सिद्धि-प्रदा।

ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं अघोर-अघोर, महा-अघोर, सर्व-अघोर, भैरव-काल। ॐ काल भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ। महा भैरव महा-शत्रु-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

शत्रु उच्चाटन संहार भैरव शाबर मन्त्र

ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं। ॐ आं क्लीं क्लीं क्लीं। ॐ आं क्रीं क्रीं क्रीं। ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं, रुं रुं रुं, क्रूं क्रूं क्रूं। मोहन। सर्व-सिद्धि कुरु-कुरु। ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं। अमुकं उच्चाटय-उच्चाटय, मारय-मारय। प्रूं प्रूं, प्रें, प्रें, खं खं। दुष्टान् हन-हन। अमुकं फट् स्वाहा। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ। संहार भैरव महा-शत्रु-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ बटुक-बटुक योगं च बटुकनाथ महेश्वरः। बटुकं वट-वृक्षै बटुकं प्रत्यक्ष सिद्धयेत्। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ भूत-भैरौ। संहार-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ काल-भैरव, श्मशान-भैरव, काल-रूप काल-भैरव। मेरौ

वैरी तेरो आहार रे। काढ़ि करेजा चखन करो कट-कट। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ। संहार-भैरव महा-दुष्ट-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

डाकिनी-शाकिनी शाबर मन्त्र

ॐ नमो हंकारी वीर ज्वाली-मुखी। तूं दुष्टन बध करो। बिना अपराध जो मोहिं सतावे, तेकर करेजा छिदि परै, मुख-वाट लोहू आवे। को जाने? चन्द्र, सूर्य जाने को आदि-पुरुष जाने। काम-रूप कामाक्षा देवी। त्रिवाचा सत्य, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ। महा-भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ काल-भैरव। त्वं डाकिनी, शाकिनी, भूत पिशाचश्च। सर्व-दुष्ट-निवारणं कुरु कुरु, साधकानां रक्ष रक्ष। देहिं मे हृदये सर्व-सिद्धिम्। त्वं भैरव-भैरवीभ्यो, त्वं महा-भय-विनाशनं कुरु। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ। महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

मसान बाँधने का शाबर मन्त्र

ॐ आं ह्रीं। पच्छिम दिशा में सोने का मठ, सोने का किवाड़, सोने का ताला, सोने की कुञ्जी, सोने का घण्टा, सोने की साँकुली। पहली साँकुली अठारह कुल-नाग के बाँधों। दूसरी साँकुली अठारह कुल-जाति के बाँधों। तीसरी साँकुली वैरि-दुष्टन के बाँधों। चौथी साँकुली डाकिनी-शाकिनी के बाँधों। पाँचवीं साँकुली भूत-प्रेत के बाँधों। जरती अगिन बाँधों, जरता मसान बाँधों, जल बाँधों, थल बाँधों, बाँधों अम्मरताई। जहाँ तहाँ जाई। जेहि बाँधि मँगावों, तेहिं का बाँधि लाओ। वाचा चूकै, उमा सूखै। श्री बावन वीर ले जाय, सात समुन्दर तीर। त्रिवाचा फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। ॐ काल-

भैरौ, बटुक भैरौ, भूत-भैरौ। महा-भैरव, महा-दुख-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ आं ह्रीं। उत्तर दिशा में रूपे का मठ, रूपे का किवार, रूपे का ताला, रूपे की कुञ्जी, रूपे का घण्टा, रूपे की सांकुली। पहिली साँकुली अठारह कुल नाग बाँधों, दूसरी साँकुली अठारह कुल-जाति को बाँधूं, तीसरी साँकुली बैरी दुश्मन को बाँधों, चौथी साँकुली डाकिनी-शाकिनी को बाँधो, पाँचवीं साँकुली भूत-प्रेत को बाँधों। जलत अगिन बाँधें, जलत मसान बाँधों, जल बाँधों, थल बाँधों, बाँधों अम्मरताई। जहाँ भेजूँ, तहाँ जाई। जेहि बाँधि मँगावों, तेहिं का बाँधि लाओ। वाचा चूकै, उमा सूखै। श्रीबावन वीर ले जाय, समुन्दर तीर। त्रिवाचा फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। ॐ काल-भैरौ, बटुक भैरौ, भूत-भैरौ। महा-भैरव, महा-दुख-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ आं ह्रीं। पूरब दिशा में तामे का मठ, तामे का किवार, तामे का ताला, तामे की कुञ्जी, तामे का घण्टा, तामे की सांकुली। पहली सांकुली अठारह, कुल नाग को बाँधूं, दूसरी सांकुली अठारह कुल जाति को बाँधूं, तीसरी साँकुली वैरी-दुष्टन को बाँधूं, चौथी सांकुली डाकिनी-शाकिनी को बाँधूं, पाँचवीं सांकुली भूत-प्रेत को बाँधूं। जलत अगिन बाँधूं, जलत मसान बाँधूं, जल बाँधों, थल बाँधों, बाँधों अम्मरताई। जहाँ भेजूँ, तहाँ जाई। जेहि बाँधि मँगावों, तेहि बाँधि लाओ। वाचा चूकै, उमा सूखै। श्री बावन वीर ले जाए सात समुन्दर तीर। त्रिवाचा फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। ॐ काल-भैरौ, बटुक भैरौ, भूत-भैरौ। महा-भैरव महा-दुख-विनाशनं देवता। सर्व सिद्धिर्भवेत्।

ॐ आं ह्रीं। दक्षिण दिशा में अस्थि का मठ, अस्थि का किवार, अस्थि का ताला, अस्थि की कुञ्जी, अस्थि का घण्टा, अस्थि की

सांकुली। पहली सांकुली अठारह कुल नाग को बाँधों, दूसरी सांकुली अठारह कुल-जाति को बाँधों, तीसरी साँकुली वैरी-दुष्टन को बाँधों, चौथी सांकुली डाकिनी-शाकिनी को बाँधों, पाँचवीं साँकुली भूत-प्रेत को बाँधों। जलत अगिन बाँधों, जलत मसान बाँधों, जल बाँधों, थल बाँधों, बाँधों अम्भरताई। जहाँ भेजूँ, तहाँ जाई। जेहि बाँधि भँगावों, तेहि का बाँधि लाओ। वचा चूकै, उमा सूखै। श्री बावन वीर ले जाय सात समुन्दर तीर। त्रिवाचा फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। ॐ काल-भैरौ, बटुक भैरौ, भूत-भैरौ। महा-भैरव महा-दुख-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ काल-भैरव। त्वं आकाशं, त्वं पातालं, त्वं मृत्यु लोकं। चतुर्भुजं, चतुर्मुखं, चतुर्बाहुं, शत्रु-हन्ता च त्वं भैरव। भक्ति पूर्ण कलेवरम्। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ। महाभैरव महा-दुख विनाशनं देवता। सर्व सिद्धिर्भवेत्।

दुश्मन नाश करने का कपाल भैरव शाबर मन्त्र

ॐ कपाल-भैरव! तुम जहाँ जाहु, जहाँ दुश्मन बैठ होय, तो बैठे को मारो। चलत होय, तो चलते को मारो। सोवत होय, तो सोते को मारो। पूजा करत होय, तो पूजा में मारो। जहाँ होय, तहाँ मारो। व्याघ्र लै भैरव, दुष्ट को भक्षौ। सर्प लै भैरव! दुष्ट को डँसो। खड्ग से मारो, भैरव। दुष्ट को। शिर गिरैवान से मारो, दुष्टन करेजा फटै। त्रिशूल से मारो, शत्रु से छिदि परै, मुख वाट लोहू आवे। को जाने? चन्द्र, सूरज जाने या आदि-पुरुष जाने। काम-रूप कामाक्षा देवी। त्रिवाचा सत्य फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। ॐ कपाल-भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। कपाल भैरव महा शत्रु विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ कपाल भैरव त्वं। वाचा चूकै, उमा सूखै, दुश्मन मरै अपने

घर में। दुहाई कपाल-भैरव की। जो मार वचन झूठा होय, तो ब्रह्मा के कपाल टूटै शिवजी के तीनों नेत्र फूटैं। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। ॐ कपाल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ। महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ कपाल-भैरव। त्वं भूतस्य भूत-नाथश्च, भूतात्मा भूत-भावनः। त्वं भैरव, सर्व-सिद्धिं कुरु कुरु। ॐ काल भैरौ, बटुक भैरौ, भूत-भैरौ। महा-भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ कपाल-भैरव। त्वं ज्ञानी, त्वं ध्यानी, त्वं योगी, त्वं जङ्गम स्था-वरं त्वं से सेवित सर्व-काम-सिद्धिर्भवेत्। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ। महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ कपाल-भैरव। त्वं वन्दे परमेश्वरं, ब्रह्म-रूपं, प्रसन्नौ भव। गुनि, महात्मानां महा-देव-स्वरूपं सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

भूत, प्रेत, पिशाच, शत्रु-भय-निवारणार्थ प्रयोग

ॐ ह्रीं बटुक-भैरव। बालक केश। भगवान् वेश। सब आपद को काल। भक्त-जन हठ को पाल। कर-धरे शिर-कपाल। दूजे करवाल। त्रि-शक्ति देवी को बाल। भक्त-जन-मानस को भाल। तैंतीस कोटि मन्त्र को जाल। प्रत्यक्ष बटुक-भैरव जानिए। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा।

विधि—उक्त मन्त्र की सिद्धि के लिए ग्रहण काल, गंगा दशहरा या होली की रात में उड़द के बड़ों को नैवेद्य लगाए। गुग्गुल की धूप देकर इस मन्त्र का एक हजार बार जप करें। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर भूत, प्रेत, पिशाच, शत्रु-भय आदि बाधा नष्ट करने के लिए या अन्य किसी कामना की पूर्ति के लिए भगवान् बटुक भैरव का ध्यान कर सिद्ध हुए मन्त्र का १०८ बार जप करना चाहिए।

मनोकामना सिद्धि कंकाल भैरव शाबर प्रयोग

ॐ काली, कङ्काली महाकाली के पुत्र कङ्काल-भैरूँ। हुकुम हाजिर रहे। मेरा भेजा काल करे, मेरा भेजा रक्षा करे। आन बाँधूँ, बान बाँधूँ, चलते फिरते औसान बाँधूँ, दसो सुर बाँधूँ, नौ नाड़ी-बहत्तर कोठा बाँधूँ।

फल में भेजूँ, फूल में जाय। कोठे जो पड़े, थर-थर काँपे, हल-हल हले, गिर-गिर पड़े। उठ-उठ भागे, बक-बक बके।

मेरा भेजा सवा घड़ी, सवा पहर, सवा दिन, सवा मास, सवा बरस कूं बावला न करे, तो माता काली की शय्या पर पग धरे। वाचा चूके, तो उमा सूखे। वाचा छोड़, कुवाचा करे, तो धोबी की नाँद-चमार के कुण्ड में पड़े।

मेरा भेजा बावला न करे, तो रुद्र के नेत्र की ज्वाला, कढ़े, शिर की लटा टूटि भूमि में गिरे, माता पारवती के चीर पर चोट पड़े। बिना हुकुम नहीं मारना हो, तो काली के पुत्र कङ्काल-भैरुँ। फुरो मन्त्र—ईश्वरो वाचा। सत्य नाम, आदेश गुरु का।

विधि—दीपावली (काल-रात्रि) अथवा ग्रहण रात्रि में चौमुखा दीपक जलाए। त्रि-खूँटा चौका लगाकर दक्षिणाभिमुख बैठे। कनेर के फूल, लड्डू, सिन्दूर, लौंग-जोड़ा और पुष्प माला सामने रखें। उक्त मन्त्र का एक हजार जप कर, दशांश हवन करें। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध हो जाने पर इच्छित कार्य हेतु भगवान् भैरव से प्रार्थना करें, तो वह अवश्य पूर्ण होगी।

काला भैरो रक्षा शाबर मन्त्र

काला भैरौ, कपिल जट्टा-भैरौ खेले। चार चमट्टा भैरौ मारे। भैरौ खाय, भैरौ मार मसाने जाय। दोहाई नोना चमाइन के। दोहाई शहर जमाल के। दोहाई काल-भरव के। मेरे पिण्ड-प्राण के

खबरदार रहना। स्वाहा।

विधि—सिद्धि हेतु इस मन्त्र का एक हजार बार जप कर, लोबान और गुग्गुल से दशांश (१००) हवन करें।

प्रयोग यदि किसी दूसरे के लिए है, तो 'मेरे' के स्थान पर उसका नाम कहें। यह अनुभूत शाबर मन्त्र है।

रुद्र भैरव वशीकरण मन्त्र

१. ॐ नमो रुद्राय, कपिलाय, भैरवाय, त्रि-लोक-नाथाय। ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।

विधि—सर्व प्रथम किसी रविवार को गुग्गुल, धूप, दीपक सहित उपरोक्त मन्त्र का पन्द्रह हजार बार जप कर उसे सिद्ध करें। फिर आवश्यकतानुसार इस मन्त्र का एक सौ आठ बार जप कर एक लौंग को अभिमन्त्रित करें। इस अभिमन्त्रित लौंग को, जिसे वशीभूत करना हो, उसे खिलाए। यह लौंग एक बार ही प्रयोग करें।

२. ॐ नमो काला गोरा भैरूं वीर। पर-नारी सूँ देही सीर। गुड़, परिदीयी गोरख जाणी, गुद्दी पकड़ दे भैरूं आणी। गुड़, रक्त का धरि ग्रास, कदे न छोड़े मेरा पाश। जीवत सवै देवरो, मूआ सेवै मसाण। पकड़ पलना ल्यावे। काला भैरूं न लावै, तो अक्षर देवी कालिका की आण। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—इक्कीस हजार जप। आवश्यकता पड़ने पर इक्कीस बार गुड़ को अभिमन्त्रित कर साध्य को खिलाएं।

३. ॐ भ्रां म्रां भ्रूँ भैरवाय स्वाहा।

ॐ भं भं भं अमुक-मोहनाय स्वाहा॥

विधि—इस मन्त्र को सात बार पढ़कर पीपल के पत्ते को अभिमन्त्रित करें। फिर मन्त्र को उस पत्ते पर लिखकर, जिसका वशीकरण करना हो, उसके घर में फेंक देवे या उसके घर के पिछवाड़े गाड़ दें। यही क्रिया 'छितवन' या 'फुरहठ' के पत्ते द्वारा भी की जा सकती है।

स्वप्न में कामना ज्ञान का क्षेत्रपाल मन्त्र

१. ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षः क्षेत्र-पालाय नमः।

विधि—रात्रि में शयन के समय अपने सिरहाने नौ प्यालों में जल भरकर रखे और गुग्गुल का धुआँ करें। लेटे-लेटे उपरोक्त मन्त्र का एक सौ आठ बार जप करें। इस प्रकार तीन रात्रि निरन्तर करें। जिस बात को जानना हो, उसका स्मरण करते हुए सोएं। स्वप्न में भगवान् भैरव द्वारा सम्पूर्ण कामनाओं का ज्ञान हो जाता है। स्वप्न में मिला ज्ञान किसी को न बतायें।

२. ॐ नमो मणि-भद्राय, चेटकाय, सर्व-कार्य-सिद्धिं कुरु-कुरु, मम स्वप्न-दर्शनं कुरु-कुरु स्वाहा।

विधि—दस हजार जप। फिर कभी भी आवश्यकता पड़ने पर १०० बार मन्त्र का जप कर लाल कनेर के पुष्प को अभिमन्त्रित करें और अपने सिरहाने रखकर सोएं। तीन, पाँच या सात दिनों में स्वप्न में ऐच्छिक उत्तर की प्राप्ति होती है।

सर्व-कामना पूर्ति क्षेत्रपाल शाबर मन्त्र

१. ॐ क्षां क्षीं क्षौं क्षेत्रपालाय, सर्व-दोषान् चूरय-चूरय। सर्व-देवान् साधय-साधय। राजा मोही, प्रजा मोही, ग्राम-जन मोही। बाप क्षेत्रपाल, थारी आण फिरे। ॐ ह्रीं ठः ठः स्वाहा।

विधि—ग्यारह हजार जप। इकतालीस दिन तक लगातार जप करें। प्रति-दिन कुत्ते को मीठा खिलायें। फिर आवश्यकतानुसार प्रार्थना कर जप करें। सभी कार्य सिद्ध होते हैं। इससे सभी प्रकार की आपदाएँ दूर हो जाती हैं।

२. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्षेत्रपालाय नमः। राजा-प्रजा-वासी कुरु कुं स्वाहा।

विधि—उपरोक्त मन्त्र का जप पूर्ण पवित्रता के साथ पुष्य नक्षत्र में

रविवार को प्रारम्भ करें। इक्कीस माला जप छः मास तक निश्चित समय पर नित्य धूप-दीप के साथ करें। रात्रि में भगवान् बटुक-भैरव को नित्य बलि प्रदान करें। इससे भगवान् बटुक-भैरव का निश्चित रूप से दर्शन होता है और सभी कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

३. ॐ क्रीं ह्रीं श्रीं गोरा क्षेत्रपाल। आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

विधि—इक्यावन हजार जप। यह जाप रविवार को पुष्य नक्षत्र से प्रारम्भ करें। लाल चन्दन, गुग्गुल, लाल कनेर के फूल तथा गोरोचन का प्रतिदिन हवन करें। इसकी सिद्धि से सर्व-कामनाएँ सिद्ध होती हैं।

भूत-प्रेत-नाच बन्द करने का भैरव शाबर मन्त्र

ॐ त्रीं त्रीं त्रीं भैरवाय स्वाहा।

विधि—जिस घर में भूत-प्रेत का नाच हो रहा हो, वहाँ यह मन्त्र सात बार पढ़कर सात मुट्ठी धूल फेंक दे, तो नाच बन्द हो जाता है।

श्री उन्मत्त भैरव-सिद्धि मन्त्र

ॐ नमो काला-गोरा क्षेत्र-पाल। वामं हाथं कान्ति, जीवन हाथ कृपाल। ॐ गन्ती सूरज थम्भ प्रातः-सायं रथभं जलतो विसार शर थम्भ। कुसी चाल, पाषान चाल, शिला चाल हो चाली, न चले तो पृथ्वी मारे को पाप चलिए। चोखा मन्त्र, ऐसा कुनी अब नार हसही। उनमत भैरव की दुहाई, गुरुवचन करो किरपा।

विधि—उपरोक्त मन्त्र का एक लाख जप तथा दशांश होम करने से मन्त्र सिद्ध होता है। प्रतिदिन प्रातःकाल पवित्रावस्था में सविधि पूजन इत्यादि कर यथा-शक्ति जप करना चाहिए। जप के बाद निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए भैरव जी को नमस्कार करना चाहिए। यथा—**ह्रीं ह्रों नमः**। इस प्रकार साधना करने से उनमत्त भैरव जी सिद्ध होते हैं और साधक की सभी अभिलाषाएँ पूर्ण होती हैं।

भैरव साधना के अद्‌भुत प्रयोग

यदि आप किसी को अपने वश में करना चाहते हैं तो रविवार को स्नान कर स्वच्छ होकर किसी एकांत जगह पर आसन लगाकर भैरव जी की प्रतिमा स्थापित करके और उसकी धूप दीप से विधिपूर्वक पूजा करें और १०८ बार मन्त्रों का जाप कर लौंग पर फूंक मारे, इससे यह लौंग अभिमन्त्रित हो जाएँगे और इस अभिमन्त्रित लौंग को जो भी व्यक्ति खायेगा वह आपके वश में आ जाएगा। परन्तु याद रहे यह क्रिया आप किसी को हानि पहुँचाने की मनोभावना से न करें।

मन्त्र—ॐ नमोहः रुद्रायः, कपिलायः भैरवायः, त्रिलोक-नाथाय, ॐ ह्रीं फट् स्वाहाः।

यदि आपको आपका कोई शत्रु परेशान कर रहा है या प्रेम विवाह में दिक्कत आ रही है तब आपको भैरव वशीकरण मन्त्रों की सहायता लेनी चाहिए। इससे आप किसी को भी अपने वश में करके अपने कार्य को करा सकते हैं वह आप अपनी समस्त इच्छाओं की पूर्ति कर सकते हैं, जिसके लिए सुबह स्नान कर स्वच्छ होकर पुष्पक पीपल के पत्ते तोड़ ले और उसमें उसका नाम लिख दे, जिसको आप अपने वश में करना चाहते हैं। फिर मन्त्रों को सात बार पढ़ कर उन पत्तों को अभिमन्त्रित करके यह पत्ते उस व्यक्ति के घर में फेंक दें या उसके घर के पीछे कहीं गाड़ दें। आपका वह इच्छित व्यक्ति वशीभूत हो जाएगा तथा वह व्यक्ति आपके वश में आ जाएगा।

मन्त्र—ॐ भ्रां भ्रां भूँ भैरवायः स्वाहा। ॐ भं भं भं अमुक-

मोहनायः स्वाहः।

भैरव गुड़ वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो काला गोरा भैरूं वीर, पर-नारी सूँ देही सीर। गुड़ परिदीयी गोरख जाणी, गुद्दी पकड़ दे भैंरूं आणी, गुड़, रक्त का धरि ग्रास, कदे न छोड़े मेरा पाश। जीवत सदै देवरो, मूआ सेवै मसाण। पकड़ पलना ल्यावे। काला भैंरु न लावै, तो अक्षर देवी कालिका की आण। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि—१,२५,००० जप। आवश्यकता पड़ने पर २१०० बार गुड़ को अभिमन्त्रित कर साध्य को खिलाएं।

लौंग वशीकरण भैरव मन्त्र

ॐ नमो रुद्राय, कपिलाय, भैरवाय, त्रिलोक-नाथाय, ॐ ह्रीं फट् स्वाह।

विधि—सर्व-प्रथम किसी रविवार को गुगल, धूप, दीपक सहित उपर्युक्त मन्त्र का पन्द्रह हजार जप कर इसे सिद्ध करें। फिर आवश्यकतानुसार इस मन्त्र का १०८ बार जप कर एक लौंग को अभिमन्त्रित कर लें। लौंग को जिसे वशीभूत करना हो, उसे खिलादें।

राई वशीकरण भैरव मन्त्र

ॐ नमो काला गोरा भैंरुं वीर, पर-नारी सूँ देही सीर। राई परिदीयी गोरख जाणी, गुद्दी पकड़ दे भैंरु आणी, राई, रक्त का धरि ग्रास, कदे न छोड़े मेरा पाश। जीवत सवै देवरो, मूआ सेवै मसाण। पकड़ पलना ल्यावे। काला भैंरु न लावै, तो अक्षर देवी चामुण्डा की आण। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि—२१,००० जप। आवश्यकता पड़ने पर २१ बार राई को अभिमन्त्रित कर साध्य को खिलादें।

भैरव जी के अद्भुत गोपनीय मन्त्र

जादू-टोना नाशक नाशक भैरव मन्त्र—

ॐ भं भैरवाय आपदुद्धारणाय तन्त्र बाधाम नाशय नाशय।

इस मन्त्र का सात माला जाप करना चाहिए। इससे पहले आटे के तीन दिये जलाकर कपूर से भैरव आरती अवश्य करनी चाहिए।

शत्रु नाशक भैरव मन्त्र

ॐ भं भैरवाय आपदुद्धारानाय शत्रु नाशं कुरु।

इस मंत्र को जपने से पूर्व नारियल को काले कपड़े में लपेटकर भैरव जी को अर्पित करें। गुग्गुल धुनी जलाकर इस मंत्र का पांच माला जप करें।

प्रतियोगिता-परीक्षा में सफलता का भैरव मन्त्र—

ॐ भं भैरवाय आप्दुद्धारानाय साफल्यं देहि स्वाहाः।

इस मन्त्र का जाप करने से पूर्व बेसन का हलवा प्रसाद के रूप में भोग लगाने के बाद अखण्ड दीप जलाएँ और पूर्व की ओर मुख करके आठ माला का जाप करें।

बच्चों की सुरक्षा का भैरव का मन्त्र—

ॐ भं भैरवाय आप्दुद्धारानाय कुमारं रक्ष रक्ष।

इस मन्त्र का छह माला जाप मीठी रोटी का भोग लगाकर पश्चिम की ओर मुंह करके किया जाना चाहिए। इससे बच्चों की रक्षा होती है।

लम्बी आयु का भैरव मन्त्र—

ॐ भं भैरवाय आप्दुद्धारानाय कुमारं रु रु स्वरूपाय स्वाहा।

इस मन्त्र का पाँच माला जाप पूरब की ओर मुख करके करना चाहिए। साथ ही गरीबों को भोजन भी करवाएँ।

वृद्धि देने वाला भैरव मन्त्र—

ॐ भं भैरवाय आप्दुद्धारानाय शौर्य प्रयच्छ।

इस मन्त्र का सात माला जाप काले कम्बल पर बैठकर रात्रि में करें। इससे व्यापार वृद्धि होती है।

सर्व कार्य सिद्धिप्रद काल भैरव बटुक भैरव शाबर स्तोत्र

ॐ अस्य श्री भैरव-स्तोत्रस्य सप्त ऋषिः ऋषयः, मातृका छन्दः, श्रीवटुक-भैरो देवता, ममेप्सित-सिद्ध्यर्थ जपे विनियोगः।

ॐ काल भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव-भय विनाशनं देवता-सर्व सिद्धिर्भवेत्। शोक-दुखः-क्षय-करं निरञ्जनं, निराकारं नारायणं, भक्ति-पूर्ण त्वं महेशं। सर्व-काम-सिद्धिर्भवेत्। काल-भैरव, भूषण-वाहनं काल-हन्ता रुपं च, भैरव गुनी। महात्मनः योगिनां महा-देव-स्वरूपं। सर्व सिद्धयेत्। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ। महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्वसिद्धर्भवेत्॥ १॥

ॐ त्वं ज्ञानं, त्वं ध्यानं, त्वं तत्त्वं, त्वं बीजं, महात्मानं त्वं शक्तिः, शक्ति-धारणं त्वं महा देव स्वरूपं। सर्व सिद्धिर्भवेत्। ॐ काल भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्वसिद्धिर्भवेत्॥ २॥

ॐ काल भैरव। त्वं नागेश्वरं, नाग-हारं च त्वं, वन्दे परमेश्वरं। ब्रह्म-ज्ञानं, ब्रह्म ध्यानं, ब्रह्म योगं, ब्रह्म तत्त्वं, ब्रह्म बीजं महात्मनः। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्वसिद्धिर्भवेत्॥ ३॥

त्रिशूल चक्र गदा पाणिं, शूल-पाणि पिनाक-धृक्। ॐ काल-भैरौ, बटुक भैरौ। महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ काल-भैरव। त्वं विना गन्धं, विना धूपं, विना दीपं सर्व शत्रु विनाशनं। सर्व-सिद्धिर्भवेत्। विभूति-भूति-नाशाय, दुष्ट-क्षय-कारकं, महा-भैरवे नमः। सर्व-दुष्ट-विनाशनं सेवकं सर्व-सिद्धिं कुरु। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ। महा-भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्वसिद्धिर्भवेत्॥ ४॥

ॐ काल-भैरव। त्वं महा-ज्ञानी, महा-ध्यानी, महा-योगी, महा-बली, तपेश्वर। देहि मे सिद्धिं सर्व। त्वं भैरव भीम-नादं च नादनम्। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्वसिद्धिर्भवेत्॥ ५॥

ॐ आं ह्लीं ह्लीं ह्लीं। अमुकं मारय मारय, उच्चाटय उच्चाटय, मोहय मोहय, वशं कुरु कुरु। सर्वार्थकस्य सिद्धि-रूपं त्वं महाकाल। काल भक्षणं महा देव स्वरूपं त्वं। सर्व-सिद्धयेत्। ॐ काल भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्वसिद्धिर्भवेत्॥ ६॥

ॐ काल भैरव। त्वं गोविन्द, गोकुलानन्द। गोपालं, गोवर्द्धनं धारणं त्वं। वन्दे परमेश्वरं। नारायणं नमस्कृत्य, त्वं धाम शिव-रुपं च। साधकं सर्व सिद्धयेत्। ॐ काल भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता॥ ७॥

ॐ काल भैरव। त्वं राम-लक्ष्मणं, त्वं श्रीपति-सुन्दरं, त्वं गरुड़-वाहनं, त्वं शत्रु-हन्ता च, त्वं यमस्य रुपम्। सर्व कार्य सिद्धिं कुरु। ॐ काल-भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्वसिद्धिर्भवेत्॥ ८॥

ॐ काल भैरव। त्वं ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरं, त्वं जगत्-कारणं,

सृष्टि-स्थिति संहार कारकं, रक्त बीजं, महा-सैन्यं, महा-विद्या, महा भय विनाशनम्। ॐ काल भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता॥ ९॥

ॐ काल भैरव। त्वं आहार मद्य, मांसं च, सर्व-दुष्ट विनाशनं, साधकं सर्व सिद्धि प्रदा। ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं अघोर-अघोर, महा अघोर, सर्व अघोर, भैरव काल। ॐ काल भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता॥ १०॥

ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं। ॐ आं क्लीं क्लीं क्लीं। ॐ आं क्रीं क्रीं क्रीं। ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं, रुं रुं रुं, क्रूं क्रूं क्रूं। मोहन। सर्व-सिद्धिं कुरु कुरु। ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं। अमुकै उच्चाटय उच्चाटय, मारय-मारय। प्रूं प्रूं, प्रें प्रें, खं खं। दुष्टान् हन-हन। अमुकं फट् स्वाहा। ॐ काल-भैरौ, बटुक भैरौ, भूत-भैरौ। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्वसिद्धिर्भवेत्॥ ११॥

ॐ बटुक बटुक योगं च बटुकनाथ महेश्वरः। बटुकै वट-वृक्ष बटुकं प्रत्यक्ष सिद्धयेत्। ॐ काल-भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्वसिद्धिर्भवत्॥ १२॥

ॐ काल भैरव, शमशान भैरव, काल रूप काल भैरव। मेरो वैरी तेरो आहार रे। काढ़ी करेजा चखन करो कट-कट। ॐ काल भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्वसिद्धिर्भवेत्॥ १३॥

ॐ नमो हंकारी वीर ज्वाला मुखी। तूं दुष्टन बध करो। बिना अपराध जो मोहिं सतावे, तेकर करेजा छिंदि परै, मुख-वाट लोहू आवे। को जाने? चन्द्र, सूर्य जाने की आदि पुरुष जाने। काम रुप कामाक्षा देवी। त्रिवाचा सत्य, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। ॐ काल भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्वसिद्धिर्भवेत्॥ १४॥

ॐ काल-भैरव। त्वं डाकिनी, शाकिनी, भूत-पिशाचश्च। सर्व-दुष्ट-निवारणं कुरु-कुरु, साधकानां रक्ष-रक्ष। देहि मे हृदये सर्व सिद्धिम्। त्वं भैरव-भैरवीभ्यो, त्वं महा-भय-विनाशनं कुरु। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्वसिद्धिर्भवेत्॥ १५॥

ॐ आं ह्रीं। पच्छिम दिशा में सोने का मठ, सोने का किवाड़, सोने का ताला, सोने की कुञ्जी, सोने का घण्टा, सोने की सांकुली। पहिली साँकुली अठारह कुल नाग के बाँधों, दूसरी साँकुली अठारह कुल जाति के बाँधों, तीसरी साँकुली बैरी-दुश्मन के बाँधों, चौथी साँकुली डाकिनी-शाकिनी के बाँधों, पाँचवी साँकुली भूत-प्रेत के बाँधों॥ १६॥

जरती अगिन बाँधों, जरता मसान बाँधों, जल बाँधों, थल बाँधों, बाँधों अम्मरताई। जहाँ भेजूँ, तहाँ जाई। जेहि बाँधि मँगावों, तेहिं का बाँधि लाओ। वाचा चूकै, उमा सूखै। श्रीबावन वीर ले जाय, समुन्दर तीर। त्रिवाचा फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। ॐ काल भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव, महा भय विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्॥ १७॥

ॐ आं ह्रीं। उत्तर दिशा में रूपे का मठ, रूपे का किवार, रूपे का ताला, रूपे की कुञ्जी, रूपे का घण्टा, रूपे की सांकुली। पहिली साँकुली अठारह कुल नाग बाँधों, दूसरी साँकुली अठारह कुल-जाति को बाँधूँ, तीसरी साँकुली बैरी-दुश्मन को बाँधों, चौथी साँकुली डाकिनी-शाकिनी को बाँधों, पाँचवीं साँकुली भूत-प्रेत को बाँधों। जलत अगिन बाँधों, जलत मसान बाँधों, जल बाँधों, थल बाँधों, बाँधों अम्मरताई। जहाँ भेजूँ, तहाँ जाई। जेहि बाँधि मँगावों, तेहिं का बाँधि लाओ। वाचा चूकै, उमा सूखै। श्रीबावन वीर ले जाय, समुन्दर तीर। त्रिवाचा फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। ॐ काल-

सृष्टि-स्थिति संहार कारकं, रक्त बीजं, महा-सैन्यं, महा-विद्या, महा भय विनाशनम्। ॐ काल भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता॥ ९॥

ॐ काल भैरव। त्वं आहार मद्य, मांसं च, सर्व-दुष्ट विनाशनं, साधकं सर्व सिद्धि प्रदा। ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं अघोर-अघोर, महा अघोर, सर्व अघोर, भैरव काल। ॐ काल भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता॥ १०॥

ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं। ॐ आं क्लीं क्लीं क्लीं। ॐ आं क्रीं क्रीं क्रीं। ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं, रुं रुं रुं, क्रूं क्रूं क्रूं। मोहन। सर्व-सिद्धिं कुरु कुरु। ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं। अमुकै उच्चाटय उच्चाटय, मारय-मारय। प्रूं प्रूं, प्रें प्रें, खं खं। दुष्टान् हन-हन। अमुकं फट् स्वाहा। ॐ काल-भैरौ, बटुक भैरौ, भूत-भैरौ। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्वसिद्धिर्भवेत्॥ ११॥

ॐ बटुक बटुक योगं च बटुकनाथ महेश्वरः। बटुकै वट-वृक्ष बटुकं प्रत्यक्ष सिद्धयेत्। ॐ काल-भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्वसिद्धिर्भवत्॥ १२॥

ॐ काल भैरव, शमशान भैरव, काल रूप काल भैरव। मेरो वैरी तेरो आहार रे। काढ़ी करेजा चखन करो कट-कट। ॐ काल भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्वसिद्धिर्भवेत्॥ १३॥

ॐ नमो हंकारी वीर ज्वाला मुखी। तूं दुष्टन बध करो। बिना अपराध जो मोहिं सतावे, तेकर करेजा छिंदि परै, मुख-वाट लोहू आवे। को जाने? चन्द्र, सूर्य जाने की आदि पुरुष जाने। काम रुप कामाक्षा देवी। त्रिवाचा सत्य, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। ॐ काल भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्वसिद्धिर्भवेत्॥ १४॥

ॐ काल-भैरव। त्वं डाकिनी, शाकिनी, भूत-पिशाचश्च। सर्व-दुष्ट-निवारणं कुरु-कुरु, साधकानां रक्ष-रक्ष। देहि मे हृदये सर्व सिद्धिम्। त्वं भैरव-भैरवीभ्यो, त्वं महा-भय-विनाशनं कुरु। ॐ काल-भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत-भैरौ। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्वसिद्धिर्भवेत्॥ १५॥

ॐ आं ह्रीं। पच्छिम दिशा में सोने का मठ, सोने का किवाड़, सोने का ताला, सोने की कुञ्जी, सोने का घण्टा, सोने की सांकुली। पहिली साँकुली अठारह कुल नाग के बाँधों, दूसरी साँकुली अठारह कुल जाति के बाँधों, तीसरी साँकुली बैरी-दुश्मन के बाँधों, चौथी साँकुली डाकिनी-शाकिनी के बाँधों, पाँचवी साँकुली भूत-प्रेत के बाँधों॥ १६॥

जरती अगिन बाँधों, जरता मसान बाँधों, जल बाँधों, थल बाँधों, बाँधों अम्मरताई। जहाँ भेजूँ, तहाँ जाई। जेहि बाँधि मँगावों, तेहिं का बाँधि लाओ। वाचा चूकै, उमा सूखै। श्रीबावन वीर ले जाय, समुन्दर तीर। त्रिवाचा फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। ॐ काल भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव, महा भय विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्॥ १७॥

ॐ आं ह्रीं। उत्तर दिशा में रूपे का मठ, रूपे का किवार, रूपे का ताला, रूपे की कुञ्जी, रूपे का घण्टा, रूपे की सांकुली। पहिली साँकुली अठारह कुल नाग बाँधों, दूसरी साँकुली अठारह कुल-जाति को बाँधूँ, तीसरी साँकुली बैरी-दुश्मन को बाँधों, चौथी साँकुली डाकिनी-शाकिनी को बाँधों, पाँचवीं साँकुली भूत-प्रेत को बाँधों। जलत अगिन बाँधों, जलत मसान बाँधों, जल बाँधों, थल बाँधों, बाँधों अम्मरताई। जहाँ भेजूँ, तहाँ जाई। जेहि बाँधि मँगावों, तेहिं का बाँधि लाओ। वाचा चूकै, उमा सूखै। श्रीबावन वीर ले जाय, समुन्दर तीर। त्रिवाचा फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। ॐ काल-

भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा-भैरव, महा भय विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्॥ १८॥

ॐ आं ह्लीं। पूरब दिशा में तामे का मठ, तामे का किवार, तामे का ताला, तामे की कुञ्जी, तामे का घण्टा, तामे की साँकुली। पहिली साँकुली अठारह कुल नाग बाँधों, दूसरी साँकुली अठारह कुल-जाति को बाँधूँ, तीसरी साँकुली बैरी-दुश्मन को बाँधों, चौथी साँकुली डाकिनी-शाकिनी को बाँधों, पाँचवीं साँकुली भूत-प्रेत को बाँधों। जलत अगिन बाँधों, जलत मसान बाँधों, जल बाँधों, थल बाँधों, बाँधों अम्मरताई। जहाँ भेजूँ, तहाँ जाई। जेहि बाँधि मँगावों, तेहिं का बाँधि लाओ। वाचा चूकै, उमा सूखै। श्रीबावन वीर ले जाय, समुन्दर तीर। त्रिवाचा फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। ॐ काल भैरौ, बटुक-भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव, महा भय विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्॥ १९॥

ॐ काल-भैरव। त्वं आकाशं, त्वं पातालं, त्वं मृत्यु लोकं। चतुर्भुजं, चतुर्मुखं, चतुर्बाहुं, शत्रु-हन्ता च त्वं भैरव। भक्ति-पूर्व कलेवरम्। ॐ काल-भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव, महा विनाशन देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्॥ २०॥

ॐ काल भैरव। तुम जहाँ जाहु, जहाँ दुश्मन बैठ होय, तो बैठे को मारो। चलत होय, तो चलते को मारो। सोवत होय, तो सोते को मारो। पूजा करत होय, तो पूजा में मारो। जहाँ होय, तहाँ मारो। व्याघ्र लै भैरव, दुष्ट को भक्षौ। सर्प लै भैरव। दुष्ट को डँसो। खड्ग से मारो, भैरव! दुष्ट को शिर गिरैवान से मारो, दुष्टन करेजा फटै। त्रिशूल से मारो, शत्रु छिदि पैरै, मुख वाट लोहू आवे। को जाने? चन्द्र, सूरज जाने की आदि-पुरुष जाने। काम-रूप कामाक्षा देवी। त्रि-वाचा सत्य फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। ॐ काल-भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव, महा भय विनाशनं देवता। सर्व-

सिद्धिर्भवेत्॥ २१॥

ॐ काल-भैरव त्वं। वाचा चूकै, उमा सुखै, दुश्मन मरै अपने घर में। दुहाई काल भैरव की। जो मोर वचन झूठा होय, तो ब्रह्मा के कपाल टूटै शिवजी के तीनों नेत्र फूटैं। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। ॐ काल-भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव, महा भय विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्॥ २२॥

ॐ काल भैरव। त्वं भूतस्य भूत-नाथश्च, भूतात्मा भूत-भावनः। त्वं भैरव, सर्व-सिद्धिं कुरु-कुरु। ॐ काल भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव, महा भय विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्॥ २३॥

ॐ काल भैरव। त्वं ज्ञानी, त्वं ध्यानी, त्वं योगी, त्वं जंगम-स्थावरं, त्वं सेवित सर्व काम सिद्धिर्भवेत्। ॐ काल भैरौ, बटुक भैरौ, भूत भैरौ। महा भैरव, महा भय विनाशनं देवता। सर्व सिद्धिर्भवेत्। ॐ काल भैरव। त्वं वन्दे परमेश्वरं, ब्रह्म रूपं, प्रसन्नो भव। गुनि, महात्मनां माह देव स्वरूपं सर्व-सिद्धिर्भवेत्॥ २४॥

विधि—यह २४ छन्द का स्तोत्र अद्‌भुत है, इसमें सम्पूर्ण भैरव तन्त्र समाहित है, इस स्तोत्र का एक पाठ नित्य प्रातः व सायं करने से सर्व कार्य सिद्धि होती है। शुभ मुहूर्त, पर्व काल में संयम पूर्वक ११०० पाठ कर बलि एवं भोग देने से स्तोत्र सिद्ध होता है। इसका पाठ बटुक भैरव मन्दिर में करें तो दूध का भोग दें। काल भैरव या श्मशान भैरव मन्दिर में करें तो मदिरा का भोग दें।

रक्षा हेतु—सिर से पाँव तक लाल धागा नाप कर इस स्तोत्र का एक पाठ कर एक गांठ लगाएँ, ऐसा करते हुए नौ गाँठ लगाकर गले में पहनने से व्याधि, दुर्घटना, अभिचार एवं ऊपरी बाधा से रक्षा होती है।

नजर हेतु—तीन बार पाठ करके भस्म का तिलक करने/झाड़ने से नजर दोष तुरन्त हट जाता है।

इसके अतिरिक्त शत्रु निवारण, वशीकरण भी होता है। स्तोत्र सिद्ध होने पर त्वरित इच्छा पूर्ति भी हो जाती है।

चतुर्थ खण्ड

बावन बीर साधना और हनुमान जंजीरा

हनुमान जंजीरा का प्रयोग आरम्भ करने से पूर्व
इस चित्र को सामने रखकर हनुमानजी का ध्यान करें।

बावन वीर साधना

वीर मूल रूप से भैरव के अनुयायी होते है और ये सभी ५२ वीर भगवान भैरव की उपासना करके उनके गण कहलाते हैं, जैसे भगवान भैरव महादेव महाकाल के गण है, उसी प्रकार ये बावन वीर भैरव के गण कहलाते है। भैरवजी भगवती काली के पुत्र हैं इसी कारण वीर भी देवी महाकाली के दूत कहलाते हैं। जब भी आप शत्रु के सर्वनाश के लिए महाकाली का कोई अनुष्ठान करते है तो सर्वप्रथम शत्रु पर वीर मंत्र चलाकर एक बार चेतावनी देने का विधान है। इस चेतावनी के बाद ही काली की शक्ति शत्रु पर कार्य करती है।

वीर साधना का विधान बहुत ही गुप्त है। वीर साधना ६१ दिन तक एक कमरे में बंद होकर करनी पड़ती है। जहाँ साधक का मुख ६१ दिन तक गुरु के अलावा कोई नहीं देख सकता, साधना काल में महाकाली एवं भैरव तथा हनुमान की प्रतिमा के अलावा ५२ पुतलियों की आवश्यकता होती है। काले वस्त्र एवं आसन का उपयोग होता है। इस साधना काल में ६१ दिन, दांतों को साफ करना, बाल काटना, बालों में तेल लगाना, नहाना, खाना खाने के बाद मुख शोधन करना, कपड़े बदलना या धोना, नाखून-बाल काटना, नाक-कान साफ करना, झूठे बर्तनों को धोना, जिन बर्तनों में भोजन सामग्री बनाई जाती है उन बर्तन को धोना इत्यादि सब निषेध होता है। यह साधना शमशान में ज्यादा फलीभूत होती है, किंतु शमशान में ६१ दिन निरन्तर साधना करना सामान्य साधकों के लिए

सुलभ नहीं होता। ऐसे में साधकों को शमशान से मिट्टी या भस्म (नियम विधिपूर्वक) लाकर कमरे में स्थापित कर, कमरे को समशान समझते हुए ६१ दिन साधना करनी होती है। इस साधना का एक गुप्त मंत्र है, जिसमें ५२ वीरो के नाम का सम्बोधन किया जाता है। उनका आवाहन किया जाता है। ये साधना बहुत दुष्कर है सभी वीरों का भोजन अलग-अलग होता है और साधक को ये भोग स्वयं बनाकर देवताओं को अर्पित करना होता है। एक बार ५२ वीर साधना में मुझे सफलता प्राप्त हुई थी किन्तु बार-बार वीरों को कार्य देने में सक्षम न होने के कारण मैंने उनका विसर्जन इस वचन के साथ कर दिया था कि जब भी मैं उनका आवाहन करूँ तो उनको आना होगा।

कुछ लोग इस साधना द्वारा वीर कंगन एवं वीर मुद्रिका का निर्माण कर वीरो को कंगन या मुद्रिका में स्थान दे देते हैं। किन्तु इस कंगन को सम्हालना सबके बस की बात नहीं होती है। इन साधनाओं को करने के बाद मैंने जाना कि इन साधनाओं से लाभ कम समाज की हानि ज्यादा है, क्योंकि यहाँ सहायता के लिए साधना कौन करता है, सभी का कोई न कोई स्वार्थ अवश्य ही होता है। किन्तु चामुण्डा जी के परम सेवक इस साधना को आसानी से कर सकते हैं। ये पूर्ण रूप से तांत्रिक शाक्त मत की साधना है। सिद्ध तांत्रिकों को इसमें सफलता प्राप्त होती है। इस साधना को करने से पूर्व साधक को गुरु की शरण में रहकर शक्तिशाली शरीर रक्षा मंत्र को भी सिद्ध करना होता है। इस शरीर रक्षा की सिद्धि पहले ही ४३ दिन में कर लेनी चाहिए, शरीर रक्षा के लिए मैंने गुरु मुख से प्राप्त 'साबर लक्ष्मण रेखा मंत्र' का प्रयोग किया था जो लक्ष्मण जी ने सीता जी की सुरक्षा के लिए उपयोग किया था, जिसको तोड़ पाना महाप्रतापी रावण के बस में भी नहीं था। इस साधना को एक बार सिद्ध करने के बाद समाज के कल्याणार्थ बहुत से वीर कंगन या मुद्रिका बनाई जा सकती है, इसमें प्रयुक्त भौतिक सामग्री कोई ज्यादा मूल्यवान नहीं

होती, किन्तु वास्तविक मूल्य ६१ दिन के समय एवं जोखिम का हो सकता है। साधक चाहे तो गुरु आदेश से एक-एक वीर की ७ दिवसीय साधना करके भी सिद्धि प्राप्त कर सकता है, किन्तु ऐसे में सवा वर्ष का समय लगता है और सवा वर्ष यह सभी कठिन नियम पालन करना भी एक अत्यन्त परिश्रमी साधक ही कर सकता है।

५२ वीरों के नाम

यह बावन वीरों के नाम प्राचीन तंत्र ग्रन्थों के अध्ययन व गुरु अनुमति से ही यहाँ दिये गये हैं। इनके नामों में अनेक विद्वानों के मत में कुछ सूक्ष्म अन्तर होना स्वाभाविक है। अतः स्थान एवं जाति भेद के अनुसार इनके नामों में भेद हो सकता है।

१. क्षेत्रपाल वीर
२. कपिल वीर
३. बटुक वीर
४. नृसिंह वीर
५. गोपाल वीर
६. भैरव वीर
७. गरुढ़ वीर
८. महाकाल वीर
९. काल वीर
१०. स्वर्ण वीर
११. रक्त स्वर्ण वीर
१२. देवसेन वीर
१३. घंटापंथ वीर
१४. रूद्रवीर
१५. तेरासंघ वीर
१६. वरुण वीर
१७. कंधर्व वीर
१८. हंस वीर
१९. लौंकडिया वीर
२०. वहि वीर
२१. प्रियमित्र वीर
२२. कारु वीर
२३. अदृश्य वीर
२४. वल्लभ वीर
२५. वज्र वीर
२६. महाकाली वीर
२७. महालाभ वीर
२८. तुंगभद्र वीर
२९. विद्याधर वीर
३०. घंटाकर्ण वीर
३१. वैद्यनाथ वीर
३२. विभीषण वीर

३३. फाहेतक वीर	३४. पितृ वीर
३५. खड्ग वीर	३६. नाघस्ट वीर
३७. प्रद्युम्न वीर	३८. श्मशान वीर
३९. भरुदग वीर	४०. काकेलेकर वीर
४१. कंफिलाभ वीर	४२. अस्थिमुख वीर
४३. रेतोवेद्य वीर	४४. नकुल वीर
४५. शौनक वीर	४६. कालमुख वीर
४७. भूतबैख वीर	४८. पैशाच वीर
४९. त्रिमुख वीर	५०. इचक वीर
५१. अट्टलाद वीर	५२. वासमित्र वीर

साधकों के विशेष आग्रह पर कुछ वीरों की गुप्त साधना आगे के पृष्ठों पर दी गई है।

महाकाली वीर साधना

वीर साधना अत्यन्त गुप्त साधना है। वीर कई प्रकार के होते हैं। अनेक वीर अत्यन्त उग्र किन्तु शीघ्र प्रसन्न होते हैं। उनमें से ही एक है महाकाली वीर। इस वीर की उत्पत्ति महाकाली से ही होती है तथा ये उन्हीं में विलीन हो जाते हैं। ये कई कार्य सम्पन्न कर सकते हैं, जैसे साधक को सुरक्षा प्रदान करना, कई प्रकार की जानकारी लाकर देना, कई गोपनीय साधनाओं के विषय में बताना आदि। महाकाली वीर वह सभी कार्य कर सकता है, जो साधक आदेश देता है। वास्तव में इस वीर की अपनी कोई शक्ति नहीं होती है। यह महाकाली से ही शक्ति प्राप्त करता है। अतः इससे कभी कोई अनैतिक कार्य नहीं करवाया जा सकता है अन्यथा ये साधक को छोड़कर पुनः महाकाली में विलीन हो जाता है ओर दुबारा कभी सिद्ध नहीं होता। यह साधना जितनी रोचक है उतनी ही उग्र भी है अतः निडर व्यक्ति ही इसे कर सकते हैं। गुरु आज्ञा से ही यह साधना करें। साधना में यदि कोई हानि होती है तो उसके लिए साधक

स्वयं उत्तरदायी होगा। अतः स्वयं के विवेक का प्रयोग करें।

विधि—साधना शमशान, निर्जन स्थान या नदी तट पर करें। अगर ये संभव न हो तो किसी ऐसे कक्ष में करें जहाँ कोई भी व्यक्ति साधना पूर्ण होने तक न आये। आपके आसन व वस्त्र काले हो तथा दिशा दक्षिण हो। सामने एक नीला वस्त्र बिछायें, उस पर महाकाली का कोई भी सुन्दर चित्र स्थापित करें, सर्वप्रथम गुरु तथा गणेश पूजन सम्पन्न करें, फिर सुरक्षा घेरा खींच लें। अब महाकाली का सामान्य पूजन करके सरसों के तेल का दीपक लगायें। लोबान की अगरबत्ती जलायें, भोग में गुलाबजामुन अवश्य रखें। यह सामग्री साधना स्थल पर ही छोड़ कर आ जाना है। यदि आप साधना घर में कर रहे हैं तो यह सामग्री नित्य गाय को खिला दें। माँ से प्रार्थना करें कि वे अपने दूत (वीर) को भेजें और रुद्राक्ष माला या काली हकीक की माला से पहले निम्नलिखित मन्त्र की ११ माला जप सम्पन्न करें।

(अब नीचे दिए गए मंत्र को लगातार माँ के चित्र की और देखते हुए एक घंटे तक जाप करें।)

वीर वीर महाकाली को वीर, आवो टूटे मेरो धीर, महाकाली की दुहाई दूं, तुझको काली मिठाई दूं, मेरो हुकुम पूरण करो, जो यहाँ न आओ तो महाकाली को खड्ग पड़े, तू चटक कुआँ में गिर मरे, आदेश आदिनाथ को आदेश आदेश आदेश॥

साधना ४१ दिन निरन्तर करें, अंतिम दिन वीर माँ के चित्र से ही प्रत्यक्ष होता है।

जब वीर सामने आये तो डरें नहीं, भोग की मिठाई उसे दे दें और वचन ले लें कि मैं जब तुम्हें बुलाऊँगा तब आना और मेरे सभी उचित कार्य पूर्ण करना। स्मरण रहे कोई गलत कार्य न करवायें अन्यथा सिद्धि समाप्त और पुनः कभी सिद्ध होगी भी नहीं, अतः सावधान रहें। कभी-कभी वीर यह साधना पूर्ण होने के पहले ही आ जाता है, तब भी उससे

बात न करें किन्तु जाप करते रहें।

यदि जाप के बाद भी वो वहीं रहे और आपसे वार्ता करें तो मिठाई देकर वचन ले लें और साधना को वहीं समाप्त कर दें। माँ आपका कल्याण अवश्य करेगी।

भैरव वीर साधना

वीर साधनाओं में भैरव वीर का स्थान बहुत ऊँचा माना जाता है। उनकी साधना के बाद व्यक्ति पिशाच और प्रेत बाधाओं से दुखी लोगों का इलाज बड़ी सरलता से कर सकता है। वीर आज्ञा मिलते ही कार्य सरलता से कर देता है। मारण, मोहन सभी कार्य यह करता है। यह साधना एक सौम्य साधना है। इस साधना में किसी प्रकार की कोई हानि नहीं होती। यदि साधना अधूरी छूट जाये तब भी कोई चिन्ता की बात नहीं है। यह साधना आपके सभी अच्छे काम कर सकती है। यह साधना उन लोगों के लिए बहुत उपयोगी है, जो घर से बाहर जाकर साधना नहीं कर सकते। यह मेरी अनुभूत साधना है।

***मंत्र*—उल्टा तरकश उल्टा तीर उल्टा चले भैरव वीर, वीर माँ का बेटा अस्सी बोतल दारू पिए, अस्सी बकरा खाए ढीठ बांधू मुट्ठ बांधू तुनैइआ बुनैइआ बांधू इतना, काम मेरा ना करे तो तुझे अपनी माँ का दूध हराम हो।**

विधि—साधना शुक्ल पक्ष के गुरुवार से शुरू करें। ११ माला जप २१ दिन करें। यदि ४१ दिन जप कर लें तो चौंकी की सिद्धि हो जाएगी। हर रोज पूजा के बाद एक थाली में कपूर के ऊपर दो लौंग रखकर जला दें, उसी थाली में पाँच प्रकार के फूल और पाँच प्रकार की मिठाई रख दें। एक जायफल काट कर रख दें और सात बार मंत्र पढ़ कर पानी से थाली के चारों तरफ एक गोला बना दें।

प्रयोग विधि—जब भी भैरव वीर से कोई कार्य करवाना हो तो थाली सजाकर ११ माला मंत्र शुद्ध मन से जपें, वीर तुरन्त प्रकट होता है।

लौन्कडिया वीर साधना

लौन्कडिया वीर साधना एक दुर्लभ साधना है बहुत कम लोग इस साधना के विषय में जानते हैं। लौन्कडिया वीर महापण्डित रावण जी की एक विशेष सेना के सेनापति थे। उन्हें माँ जगदम्बा का वरदान था और माँ जगदम्बा की कृपा से लौन्कडिया वीर तंत्र में अमर हो गए। मेरे गुरुदेव सिद्ध ने यह साधना मुझे सिखाई थी। इस साधना के दम पर आप अपने शत्रुओं को तुरन्त परास्त कर सकते है और अपने बहुत से रूके हुए कार्य करवा सकते हैं। यह साधना बहुत उग्र है इसलिए गुरु आज्ञा से ही करें। साधना के दौरान कुछ आवाजें सुनाई देगी पर कुछ दिनों के बाद सब शान्त हो जायेगा।

***मन्त्र*—लौन्कडिया वीर भागे आओ दौड़े आओ, जैसे दुर्गा द्वारे कूदे वैसे मेरे द्वारे कूदो रावण जी के सेनापति देखा पाताल के राजा देखा लौन्कडिया वीर तेरी हाजिरी का तमाशा।**

साधना विधि—इस साधना को आप किसी भी दिन से शुरु कर सकते हैं। आसन पर बैठकर पहले आसन जाप पढ़ें और शरीर कीलन कर रक्षा घेरा बनाये। एक तेल का दीपक जलायें और गुरुदेव से आज्ञा लेकर गुरुमंत्र जपे और गणेश जी का पूजन करें, फिर इस मंत्र का १५ माला जाप करें। ऐसा ११ दिन करने से वीर अपने विशाल रूप में प्रकट होकर सिद्धि प्रदान करता है।

वीर-वैताल शाबर मंत्र साधना

यह अदृश्य शक्ति का अद्‌भुत प्रवाह है। क्या आपने कभी विचार किया है कि ब्रह्माण्ड में कितनी अदृश्य शक्तियों का निरन्तर प्रवाह हो रहा है? कई शक्तियाँ आपको दिखाई नहीं देती है, किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि शक्तियाँ होती ही नहीं है। वैताल शिव के प्रमुख गण है, जिन्होंने दक्ष राज के यज्ञ का विध्वंस कर शिव सत्ता स्थापित की। हर व्यक्ति वैताल साधना सम्पन्न कर अपने चारों और एक सुरक्षा चक्र स्थापित कर

सकता है। वैताल साधना ऐसी ही अद्वितीय तंत्र साधना है, जिसके पूर्ण होने पर वैताल हर समय सुरक्षा प्रहरी के रूप में साधक के साथ रहता है। वैताल भगवान शिव का ही सूक्ष्म अंश या स्वरूप हैं, शिव के गणों में वैताल का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। अपनी दैवीय शक्तियों के कारण प्राचीन काल से ही भगवान शिव के विशिष्ट गण 'वैताल' की साधना का प्रचलन रहा है।

इतिहास साक्षी है कि सांदीपन आश्रम में भगवान श्री कृष्ण ने भी वैताल सिद्धि प्रयोग सम्पन्न किया था, जिसके फलस्वरूप वे महाभारत में अजेय बन सके और जीवन में अद्वितीय सिद्ध हो सके, हजारों बाणों के बीच भी वे सुरक्षित रह सके। विक्रमादित्य ने भी वैताल सिद्धि प्रयोग कर अपने जीवन के कठिन प्रश्नों को सुलझा लिया था।

आगे चलकर गुरु गोरखनाथ और मछिन्दरनाथ तो वैताल साधना के सिद्धतम आचार्य बने और उन्होंने वैताल साधना द्वारा अपने जीवन में साधनात्मक उपलब्धियों को सहज ही प्राप्त कर लिया। महान् तंत्र वेत्ता और गोरख तंत्र के आदि गुरु गोरखनाथ प्रणीत 'वैताल साधना' अत्यन्त सूक्ष्म व गहन साधना है। इस पर कभी अलग से किसी पुस्तक में चर्चा करेंगे।

वैताल उत्पत्ति

एक बार राजा दक्ष ने एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया। उस आयोजन में भगवान शिव को उचित मान-सम्मान नहीं दिया गया, इस कारण उनकी पत्नी सती जो राजा दक्ष की पुत्री थी, व्यथित हो गई और यज्ञ कुण्ड में कूदकर अपने प्राण त्याग दिये। इस कारण भगवान् शिव अत्यन्त क्रोधित हुए, उनके क्रोध से तीनों लोक थर्राने लगे, पेड़ों से पत्ते झड़ गये, चारों तरफ बिजलियाँ कड़कने लगीं और समुद्र में तूफान आ गया।

उसी क्रोध के आवेश में भगवान शिव ने अपनी जटा की एक लट

को तोड़कर दक्ष के यज्ञ में होम कर दिया, फलस्वरूप एक अत्यन्त तेजस्वी, पराक्रमी, बलवान और साहसी वीर की उत्पत्ति हुई, जिसे 'वैताल' शब्द से संबोधित किया गया।

यज्ञ में से वैताल को प्रकट होते देख सारे देवता थर-थर कांपने लगे, उसकी ज्वालाओं के सामने सारे देवता लोग झुलसने लगे और ऐसा लगने लगा कि यह पराक्रमी यदि चाहे तो पूरे भूमण्डल को एक हाथ से उठा कर समुद्र में फेंक सकता है।

भगवान शिव की शक्ति से उत्पन्न वैताल को भगवान शिव ने स्वयं आज्ञा दी कि जो साधक तुम्हारी साधना करके तुम्हें प्रत्यक्ष प्रकट करें, उसके सामने शान्त स्वरूप में उपस्थित होना और जीवन भर उसकी छाया की तरह रक्षा करना। यही नहीं अपितु वह जीवन भर तुम्हें जो भी आज्ञा दे, जिस प्रकार की भी आज्ञा दे, उस आज्ञा का पालन करना ही तुम्हारा कर्त्तव्य होगा।

गोरक्ष संहिता के अनुसार वैताल साधना के निम्नलिखित छह लाभ हैं—

१. वैताल साधना से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है, यह अत्यन्त सौम्य और सरल साधना है। जब वैताल साधना सिद्धि होती है, तो मनुष्य के रूप में ही सरल प्रकृति और शान्त रूप वाला वैताल प्रकट होता है और जीवन भर दास की तरह साधक के कार्य सम्पन्न करता है।

२. वैताल सिद्धि होने पर वह छाया की तरह अदृश्य रूप से साधक के साथ बना रहता है और प्रतिपल, प्रतिक्षण उसकी रक्षा करता है। प्रकृति, अस्त्र शस्त्र या मनुष्य उसका कुछ भी अहित नहीं कर सकते, किसी भी प्रकार से उसके जीवन में न तो दुर्घटना हो सकती है और न उसकी अकाल मृत्यु ही सम्भव है।

३. ऐसे साधक के जीवन में शत्रुओं का नामोनिशान नहीं रहता, वह कुछ ही क्षण में अपने शत्रुओं को परास्त करने का साहस रखता है

साधक का जीवन निष्कंटक और निर्भय होता है, लोहे की सींखचें या कठिन दीवारें भी उसका मार्ग नहीं रोक सकती।

४. वैताल भविष्य सिद्धि सम्पन्न होता है, अत: अपने जीवन या किसी के भी जीवन के भविष्य से सम्बन्धित जो भी प्रश्न उससे पूछा जाता है, उसका तत्काल वैताल द्वारा प्रमाणिक रूप से उत्तर मिल जाता है। इस प्रकार व्यक्ति सही अर्थों में भविष्य दृष्टा बन जाता है।

५. जो साधक वैताल को सिद्ध कर लेता है, वह वैताल के कंधों पर बैठ कर अदृश्य हो सकता है, एक स्थान से दूसरे स्थान पर कुछ ही क्षणों में जा सकता है और वापस आ सकता है, उसके लिए पहाड़, नदियाँ या समुद्र बाधक नहीं बनते। ऐसा साधक कठिन से कठिन कार्य को भी वैताल के माध्यम से सम्पन्न करा लेता है और चाहे कोई व्यक्ति कितनी ही दूरी पर हो, उसे पलंग सहित उठा कर अपने यहाँ बुलवा सकता है और वापस लौटा भी सकता है। साधक उसके द्वारा गोपनीय से गोपनीय सामग्री भी प्राप्त कर सकता है।

६. वैताल सिद्धि प्रयोग सफल होने पर साधक अजेय, साहसी, कर्मठ और अकेला ही हजार पुरुषों के समान कार्य करने वाला व्यक्ति बन जाता है।

जो व्यक्ति भगवान शिव की साधना करता है वह वैताल साधना भी सम्पन्न कर सकता है। जिस प्रकार से भगवान शिव का स्वरूप सौम्य है, उसी प्रकार वैताल का भी आकर्षक और सौम्य स्वरूप है। इस साधना को पुरुष या स्त्री सभी सम्पन्न कर सकते हैं। यद्यपि यह तांत्रिक साधना है, परन्तु इसमें किसी प्रकार का दोष या वर्जना नहीं है। गायत्री उपासक या देव उपासक, किसी भी वर्ण का कोई भी व्यक्ति इस साधना को सम्पन्न कर अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है। सबसे बड़ी बात यह है कि इस साधना में भयभीत होने की बिल्कुल जरूरत नहीं है, घर में बैठकर भी यह साधना सम्पन्न की जा सकती है। साधना

सम्पन्न करने के बाद भी साधक के जीवन में किसी प्रकार का अन्तर नहीं आता, अपितु उसमें साहस और चेहरे पर तेजस्विता आ जाती है, फलस्वरूप वह जीवन में स्वयं ही अपने अभावों, कष्टों तथा बाधाओं को दूर कर सकता है।

आज के युग में तंत्र के साधकों हेतु वैताल साधना अत्यन्त आवश्यक और महत्त्वपूर्ण हो गई है, दुर्भाग्य की बात यह है कि अभी तक इस साधना का प्रामाणिक ज्ञान बहुत ही कम लोगों को था तथा साधक वैताल शब्द से ही घबराते थे, परन्तु ऐसी कोई बात नहीं है। जिस प्रकार से साधक लक्ष्मी, विष्णु या शिव आदि की साधना सम्पन्न कर लेते हैं, ठीक उसी प्रकार के सहज भाव से वे वैताल साधना भी सम्पन्न कर सकते हैं।

साधना सामग्री—इस प्रयोग में कोई विशेष सामग्री की आवश्यकता नहीं होती है, नाथ सम्प्रदाय के अनुसार इस प्रयोग में केवल तीन उपकरणों की जरूरत होती है।

१. तंत्रोक्त वीर वैताल यंत्र (जिसमें एक पत्ते वाले बेल वृक्ष की जड़ और एक पत्ते वाले पलाश के वृक्ष की जड़ होना जरूरी है, जो ताबीज में भरकर सिद्ध किया जाता है)।

२. रुद्र मंत्र से अभिमंत्रित तंत्रोक्त वैताल रुद्राक्ष माला।

३. रक्षा कवच (इस कवच में मसन्या उद का प्रयोग होना चाहिए)।

इसके अलावा साधक को अन्य किसी प्रकार की सामग्री, जल, पात्र या कुंकुम आदि की जरूरत नहीं होती। यह साधना रात्रि को सम्पन्न की जाती है, परन्तु जो साधक न तो भयभीत हों और न ही विचलित हों, वे ही निश्चिन्त रूप से इस साधना को सम्पन्न कर सकते हैं।

साधना विधान—साधक रात्रि को दस बजे के बाद स्नान कर लें और स्नान करने के बाद अन्य किसी पात्र को नहीं छुए। पहले से ही धोकर सुखाई हुई काली धोती को पहन कर काले आसन पर दक्षिण की ओर मुँह करके घर के किसी कोने में या एकान्त स्थान में बैठ जाएं।

अपने सामने लकड़ी के एक बाजोट पर शिव परिवार चित्र, भैरव विग्रह, शिव यंत्र, शिवलिंग स्थापित कर लें और साथ ही अपने गुरु/गोरक्षनाथजी का चित्र भी स्थापित कर दें। वैताल साधना में सफलता हेतु गुरु और शिवजी से आशीर्वाद अवश्य प्राप्त करें। इस हेतु सर्वप्रथम गुरु और शिव जी का ध्यान करें—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

अब भगवान शिवजी का मन ही मन नीचे लिखे मंत्र से ध्यान करें—

ध्यायेन्नित्यंमहेशं रजतगिरिनिभं चारुचंद्रावतसं रत्नाकल्पोज्ज्वलांग परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समतात्स्तुतममरगणैव्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्ववंद्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

एक तांबे के पात्र या स्टील की थाली में काजल से एक गोला बनाएँ और उस गोले में वैताल यंत्र को स्थापित कर दें। यंत्र स्थापन के पश्चात् हाथ जोड़कर वैताल का हृदय से ध्यान करें।

ध्यान

धूम्र-वर्ण महा-कालं जटा-भारान्वितं यजेत्।
त्रि-नेत्र शिव-रूपं च शक्ति-युक्तं निरामपं॥
दिगम्बरं घोर-रूपं नीलांजन-चय-प्रभम्।
निर्गुण च गुणाधरं काली-स्थानं पुनः पुनः॥

ध्यान के उपरान्त साधक वैताल सिद्धि माला से इस मंत्र की ३ माला मंत्र जप नित्य क्रम से प्रतिदिन २१ दिनों तक सम्पन्न करें। यह शाबर मंत्र छोटा होते हुए भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और शाबरी तंत्र में इस मंत्र की अत्यन्त प्रशंसा हुई है।

शाबर वैताल मंत्र

॥ ॐ नमो आदेश गुरुजी को वैताल तेरी माया से जो चाहे वह होये, तालाब के वीर-वैताल यक्ष बनकर यक्षिणियों संग चले, शिव का भक्त माता का सेवक मेरा कहयो कारज करे, इतना काम मेरा ना करो तो राजा युधिष्ठर का गला सूखे, अर्जुन वीर, पैशाच वीर, शौनक वीर मेरा कहा पूरा करें। गौरखनाथ और भैरों की दुहाई। ब्रह्म साँचा ईश्वरों वाचा ॥

मंत्र जप करते समय किसी प्रकार आलस्य नहीं लायें, शान्त भाव से मंत्र जप करते रहें। यदि खिड़की, दरवाजे खड़खड़ाने लगें तो भी अपने स्थान से न उठें। संकेत समझकर मंत्र जप के पश्चात् बेसन के लड्डुओं का भोग यंत्र के सामने अर्पित कर दें।

वास्तव में यह अत्यन्त गोपनीय प्रयोग है, अतः यह प्रयोग सामान्य व्यक्ति को, निन्दा करने वाले को, तर्क करने वाले दुराचारी को नहीं देना चाहिए और न ही इसकी विधि समझानी चाहिए।

इस मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व १५ दिन तक पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करें।

अघोरी वीर साधना

कई बार मनुष्य भूत, प्रेत आदि के चंगुल में फंस जाता है और लाख कोशिश करने पर भी उसे इस मुसीबत से छुटकारा नहीं मिलता। कुछ भूत प्रेत विद्याधारी होते हैं और यदि हम मंत्र पढ़ते है तो हमारे मंत्र के उत्तर में वह भी मंत्र पढ़ देते हैं और हमारा मंत्र निष्फल हो जाता है। मैंने बड़े-बड़े साधकों को भी इस समस्या से दो-चार होते हुए देखा है। इस साधना को करने के बाद व्यक्ति भूत-प्रेत आदि समस्या का निपटारा बड़ी आसानी से कर सकता है। इसके साथ ही उसे एक विशेष सिद्धि मिल जाती है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने और अन्य लोगों के रूके

हुए काम भी करवा सकता है। इस सिद्धि के माध्यम से वह निसंतान को संतान दे सकता है, विदेश यात्रा जैसे कार्य सरलता से करवा सकता है और जरूरत पड़ने पर वशीकरण, उच्चाटन आदि कर्म भी कर सकता है।

इस मंत्र सिद्धि के अनेको प्रयोग है जो शब्दों के माध्यम से व्यक्त नहीं किये जा सकते हैं। यह कहना गलत न होगा कि इस साधना के बाद व्यक्ति एक सिद्ध पुरुष बन जाता है। यह साधना एक शमशान साधना है इसलिए इस साधना को सोच विचारकर गुरु आज्ञा से करें।

ऊगत तारे, भये भुनसारे,
यहाँ अघोरी आन विराजे,
लकड़ी जरे, मुर्दा चिल्लाये,
तहाँ अघोरी वीर किरकिराए॥
जय भैरव गोरखनाथ की॥

इस मंत्र की सिद्धि हेतु विधि—शमशान में जाते समय अपने साथ एक लोहे का चिमटा ले जायें। सर्वप्रथम शमशान में जाकर दक्षिण दिशा की तरफ मुंह करके लोहे के चिमटे को प्रणाम करें और भगवान शिव का स्मरण कर रक्षा मंत्र द्वारा एक बड़ा गोला खीच लें। फिर उस गोले में आसन बिछायें और आसन जाप पढ़कर कीलन मंत्र जपे, अपने साथ बकरे की कलेजी और एक शराब की बोतल ले जाएँ। इन दोनों वस्तुओं को अपने सामने रखकर गुरुदेव को प्रणाम करें और मंत्र जप की आज्ञा लें। फिर भगवान् गणेश से मानसिक रूप से आज्ञा लें और उसके बाद भगवान् शिव के किसी भी मंत्र का ११ बार जप करें और इस साधना में सफलता के लिए प्रार्थना करें। उसके बाद एक माला गुरु मंत्र की जपें और फिर इस मंत्र की ५ माला जप करें। मंत्र जप के बाद एक माला पुनः गुरु मंत्र की जपें। यह क्रिया आपको निरन्तर २१ दिन करनी है।

इस साधना के दौरान आपको कुछ डरावने अनुभव हो सकते है, परन्तु किसी भी हालत में सुरक्षा घेरे से बाहर न आये। गोले से बाहर आने

पर आप पागल भी हो सकते हैं या फिर प्राणों पर संकट भी आ सकता है। अतः विवेकपूर्वक निर्णय लें।

प्रयोग विधि की पुनरावृत्ति—एक बार सिद्धि के पश्चात् जब भी कोई कार्य करवाना हो तो इसी प्रकार शमशान में जाकर मांस और शराब अघोरी बाबा को एक माला मंत्र जप करके चढ़ा दें और अपना कार्य बोल दें। निश्चित ही आपका कार्य सिद्ध होगा।

काला कलुआ चौंसठ वीर (लुआ मसान) साधना

यह साधना रात्रिकालीन १२ बजे शमशान में शुरू की जाती है। इस साधना में साधक डरपोक नहीं होना चाहिए। भीरू या कायर भी नहीं होना चाहिए। किसी भयानक चेहरे अथवा किसी भयानक आवाज को सुनकर या डरकर भागना नहीं चाहिए। यह निडर व्यक्ति की साधना है।

प्राचीन तंत्र शास्त्रों में अनेक श्रेणी के तंत्र प्रयोग वर्णित हैं, उनके लिये साधकों की श्रेणी का भी महत्त्व है। अनेक तांत्रिक शक्तियों का प्राकट्य स्थान शमशान है। ऐसी शक्तियों में मसान कलुवा, चुड़ैल, डाकिनी, शाकिनी, बेताल व यक्ष प्रमुख हैं। इन्हीं में से प्रमुख हैं काला कलुवा (लुआ मसान) की साधना। यहाँ वर्णित की गई विधि एक शाबरी बाबा से प्राप्त हुई है। इस साधना हेतु रक्षा कवच अत्यन्त आवश्यक है। यह एक परम प्रचण्ड अघोर साधना है।

सामग्री—साधक को यह सभी सामग्री बाजार से लेनी चाहिए

एक मुर्गी का देशी अंडा

एक दारू देशी की बोतल

५ नींबू

५० ग्राम काले तिल

५० ग्राम राई

२५० ग्राम सरसों का तेल

५ लौंग

१.२५ मीटर लाल कपड़ा

दीपक, रूई की बाती, माचिस

चमेली या मोगरे का ५० ग्राम इत्र।

साधना विधि—इस साधना हेतु शमशान में गुरु को अवश्य साथ ले जायें। जिनके गुरु नहीं है वो इसे न करें। यह सिद्धि शनिवार की अमावस्या को सिद्ध की जाती है। साधक चिता के चरणों में बैठकर मध्य में कपड़ा बिछाकर सभी सामग्री लगाये। फिर १०१ बार महाकाली-महाकाली का नाम लेकर प्रत्येक नाम उच्चारण पर अंडे पर एक-एक फूंक मारता जाये। इसके बाद अंडा (देशी) दोनों हाथ से उठाकर चिता के सिर पर रख दे और फिर मदिरा की धार दे। तब साधक को भयंकर आँधी जैसा लगेगा और चिता के सिर के तरफ एक बबूला दिखेगा तब साधक को उसमें ५ लौंग फेंकनी चाहिये, फिर काले तिल।

तब जमीन उखड़ेगी और साधक को कलुआ मसान के दर्शन होंगे तब साधक मसान को इत्र चढ़ाये। नमस्कार करें और प्रार्थनापूर्वक वचन ले। तब वचन मिलने के बाद उससे उसकी कोई वस्तु मांगे जिससे आप उसको पुनः बुला सको, तब आपको उसके हाँ कहते ही बवंडर में प्रवेश करना है। तब कलुआ मसान भूमि में वापस चला जायेगा और जमीन पर जो वस्तु आपने मांगी होगी वह वहीं रह जायेगी, उस वस्तु को एकदम नहीं उठाना उसको शमशान के किसी भी बन्धन मंत्र से बाँध कर उठाना है, फिर सभी सामग्री चिता को अर्पण करके उस वस्तु को अपने साथ लेकर घर आ जायें।

गृह प्रवेश से पूर्व स्नान करें। पूजा अर्चना करें, फिर एक दिन रूक कर अगले दिन वस्तु हाथ में लेकर वचनोनुसार कलुआ प्रेत बुलाये। वह शक्तिशाली वीर प्रकट हो जाएगा। यह साधक के सभी कार्य सम्पन्न करेगा।

मारण मंत्र-काला कलुआ चौंसठ वीर

काला कलुआ चौसठ वीर, मेरा कलुवा मारा तीर, लुआ मसान है जगबीर, जहाँ को भेजूं वहीं को जावे, मास मछी को छुवन न जाये, अपना मारा आप ही खाये, चलन बजे माँ से उलट मूठ मरू, मार मार कलुवा तेरी आस, चार चौंका, दिया ना बाती, जामा मरू वही को जाती, इतना काम मेरा न करे तो उसे अपनी माता का दूध हराम। काला कलुवा, लुआ मसान, तुझे भैरवनाथ की आन।। गोरख की दुहाई, शब्द साँचा पिण्ड कांचा।।

ये तीव्र मारण मन्त्र है। प्रयोग विधि के लिए आप सम्पूर्ण विधि का ध्यान रखें। ये मंत्र उड़ता हुआ शत्रु के घर जाता है और अगर शत्रु ने प्रति उत्तर भी दिया तो भी उसको नष्ट करता है। इस मंत्र की कोई काट नहीं है। भयंकर शत्रु के विरुद्ध ही इस मंत्र का प्रयोग करें।

कलुवा वीर बहुत उग्र स्वाभाव का है और यह मारण प्रयोग करने से आपका स्वयं का जीवन भी कठिनाई भरा हो सकता है। अतः यह प्रयोग करने के पूर्व और पश्चात् बजरंग बाण का १००० बार जप अवश्य करें।

पुनः यह बताना आवश्यक है कि मात्र परखने हेतु इसका प्रयोग न करें, यह एक तीक्ष्ण प्रयोग है।

आक वीर सिद्धि

यह साधना कृतिका नक्षत्र के प्रारम्भ से शुरू करके उसी दिन सिद्ध

की जाती है। साधक को यह सिद्धि मात्र २१ माला जप करने से प्राप्त हो जाती है। यह एक दिन की साधना होती है। साधक को अपने माथे पर सफेद तिलक लगाना चाहिये। सफेद वस्त्र तथा आसन ग्रहण करना चाहिये। आक के पेड़ के नीचे साधक शान्त मन से बैठे। देशी घी का दिया जलाये, उद की धूप करें। मीठा रोट का भोग लगाये। मंत्र जाप करें। प्रत्येक माला के सम्पूर्ण होने पर आक के पेड़ पर बेरी के कांटे से खरोंच लगाये। सम्पूर्ण कार्य होने पर शांत मन से बैठे रहे। मंत्र जाप के समय या बाद में वीर सिद्ध होने पर साधक को आवाज देता है, डरे नहीं, निर्भय होकर वीर से वचन लें। पवित्रीकरण, वास्तुदोष पूजन, संकल्प, सुरक्षा रेखा, गुरुमंत्र अनिवार्य है। जब वीर सिद्ध होता है तो सभी कार्य सम्पन्न करता है। यह वीर बंद आँखों में भी दर्शन देते हैं। सिद्धि के समय भयानक दृश्य दिख जाने पर साधक को डरना नहीं चाहिये।

मंत्र— **ॐ नमो आदेश गुरु का वीर कम्बली, वीर घात करे, चेते हनुमान वीर, नहीं तो शिव की दुहाई॥ आक वीर की कृपा, सदा भैरों गोरख का नाम जपा।**

इस मंत्र को जपते समय आँखें बन्द रखें। जाप पूरा होने से पूर्व यदि कुछ अनुभव भी हो तो आँखें नहीं खोलें। यह आक वीर बावन वीरों में वर्णित नकुल वीर का ही एक रूप है, ऐसा मेरे गुरु भाई का कथन है। यह आक वीर एक बार यदि प्रसन्न हो जाये, तो दोबारा बुलाने पर अति शीघ्र प्रकट होते हैं। जब भी यह प्रकट हों, इन्हें सर्वप्रथम मिष्ठान्न भेंट करें। तीन बार प्रकट होने के पश्चात् यह साधक को विशेष रूप से वरदान देकर चमत्कृत कर देते हैं। इनकी वाणी अत्यन्त मधुर और वर्ण आकर्षक होता है।

भैंसासुर वीर साधना

आसाम के मयोंग गांव में नाटा, कलवा, दायमत, किच्चिन और वीरों से काम करवाया जाता है, इसमें कलवा और भैंसासुर वीर का पूजा अधिक होता है। भैंसासुर वीर एक आक्रामक शक्ति होने के साथ-साथ साधक के लिये दयालु शक्ति है, परन्तु साधक के शत्रुओं के लिए यह एक हानिकारक शक्ति है। जो भैंसासुर वीर का साधना करता है, उसको भैंसासुर वीर महाराज हमेशा अभय प्रदान करते है और साधक से प्रेम पूर्वक रहते हैं। साधक को जो भी शत्रु हानि पहुँचाना चाहता हो उसको भैंसासुर वीर जी घोर दंड भी देते है। षट्कर्म में से कोई भी कर्म स्वयं भैंसासुर वीर साधक को सरलता से करवा देता है, चाहे साधक किसी का वशीकरण करवाना चाहे या फिर उच्चाटन करवाना चाहे तो भैंसासुर वीर करवा देते है। भैंसासुर वीर की मदद से साधक अन्य लोगों के काम भी करवा सकता है। यह मंत्र साधना बंगाली महिला तांत्रिक का है जो तंत्र की महारानी है, माँ कामाख्या और गुरु कृपा से इनकी एक शिष्या से ही यह साधना मुझे आसाम प्रवास के समय प्राप्त हुई थी, जिसे साधकों हेतु प्रस्तुत किया है। वह महिला मयांग की जादूगरनी कहलाती थी, आज के समय में सिर्फ उनकी विद्या और मंत्र जीवित है।

साधना विधि—यह साधना किसी भी अमावस्या से शुरू करके २१ दिनों तक नित्य ३ माला जाप करने से सिद्ध होती है, साधना के समय तांत्रिक बंगालन के निर्देशानुसार साधक को काला आसन और काले

वस्त्र पहनना जरूरी है। साधना रात्रि में ९ बजे के बाद ही सम्पन्न की जा सकती है, साधना महाकाली जी के चित्र के सामने सम्पन्न की जाती है। साधना में रक्षा कवच आवश्यक है और एक जादुई वनस्पति से बना भैंसासुर वीर प्रत्यक्षीकरण यंत्र जरूरी है, वैसे मयोंग में कई प्रकार की जादुई वनस्पति है, परन्तु उनके क्लिष्ट नाम सिर्फ वहाँ के लोग याद रख सकते हैं, क्योंकि वहाँ की भाषा अलग है, जो हमारे समझ के बाहर है। जब जरूरत पड़ता है तो वहाँ के लोगों से 'जादुई वीर का वनस्पति चाहिए' ये बात भी उन्हीं की भाषा में बोलनी पड़ती है। इस वनस्पति से बने ताबीज के बिना इस साधना में सफलता प्राप्त करना सम्भव नहीं। इस जादुई वीर वनस्पति को २४ घंटे तक लाल कुंकुम के पानी में भिगाकर रखा जाता है, उसके बाद जब वनस्पति फूलकर मोटा हो जाता है तो उसी समय उस पर भैंसासुर वीर का आवाहन करके इत्र लगाते है और महुआ के फूलों का हवन करके १०८ बार आहुति दिया जाता है, एक नारियल के साथ एक अनार और ग्यारह नींबू का बलि दीया जाता है।

रक्षा कवच को काले धागे में पहनना जरूरी है और भैंसासुर वीर प्रत्यक्षीकरण यंत्र को काले चावल पर स्थापित करना है। मंत्र याद किये बिना जाप नहीं किया जा सकता है, इसलिए मंत्र को स्मरण करना जरूरी है और भैंसासुर वीर प्रत्यक्षीकरण यंत्र को देखते हुए जाप करना है। इस साधना में रुद्राक्ष की ७ मुखी माला का इस्तेमाल होता है, अन्य किसी भी माला से जाप नहीं किया जा सकता है।

मंत्र— ॥ ॐ नमो आदेश गुरु का, अइहुल फुल फुले फुफनर ऊपर बामत योगनी करें सिंणगर, मांस खाए हाड़ जोगवे तब तू बामत जोगनी कहांवे, आदि देवता वीर बजरंगबली भैंसासुर को पकड़ बांध लाए और वचनबद्ध कराएँ, मेरा इतना काम इसी क्षण आदि देवता वीर बजरंगबली करके नहीं बताए तो शमशान भैरव

की दुहाई॥ भैंसासुर करे मेरा वचन सिद्ध, जैसे चील को खावे गिद्ध। आदेश गुरु का, शब्द सांचा पिंड कांचा चले मंत्र ईश्वरो वाचा॥

भैंसासुर वीर की यह साधना कालमुख वीर की साधना का ही एक शीतल स्वरूप है। अधिकांश वीर साधनायें उग्र और खतरनाक होती हैं, अतः उन्हें गोपनीय रखने का ही विधान है। भविष्य में गुरु अनुमति से पुनः वीर साधना पर अलग पुस्तक की रचना में इसका विशद विवेचन करने का प्रयास किया जायेगा। प्रत्येक साधना में साधक अपनी विवेकशीलता का अनुगमन अवश्य करें।

रक्षा कारक हनुमान वीर शाबर मंत्र

हनुमान जी के किसी भी मंत्र जाप से पहले नीचे दिए कवच को सिद्ध कर लें। उनके किसी भी मंत्र जाप से पूर्व स्वयं की रक्षा के लिए इस कवच को पकड़कर अपनी छाती पर फूंक मारें। फिर आप उनके किसी भी मंत्र का अनुष्ठान कर सकते हैं। हनुमान लला के किसी भी मंत्र की साधना के पहले हनुमान जी को चोला चड़वाए। हनुमान वीर सबसे सशक्त वीर हैं, ये वीरों के भी वीर हैं।

इसके लिये आसन लाल रखें, ब्रह्मचर्य का पालन करें, मांसाहार न करें, माला मूंगे की, रुद्राक्ष की या चन्दन की प्रयोग में ले। साधना के पूर्ण होते ही नारियल, फूल, प्रसाद भेंट चढ़ायें।

शाबर मंत्र प्रारम्भ—"श्रीरामचन्द्र-दूत हनुमान वीर तेरी चोकी-लोहे का खीला, भूत का मारूँ पूत। डाकिन का करू दाण्डीया। हम हनुमान साध्या। मुडदां बाँधु। मसाण बाँधू। बाँधू नगर की नाई। भूत बाँधू। पलित बाँधू। उघ मतवा ताव से तप। घाट पन्थ की रक्षा-राजा रामचन्द्र जी करे।

बावन वीर, चौंसठ जोगणी बाँधू। हमारा बाँधा पाछा फिरे, तो वीर की आज्ञा फिरे। नूरी चमार की कुण्ड मां पड़े। तू ही पीछा फिरे, तो माता अंजनी का दूध पीया हराम करे। स्फुरो मंत्र, ईश्वरी वाचा। हनुमान वीर की जय"

विधि—उक्त मंत्र का प्रयोग कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को ही करें।

प्रयोग हनुमान जी के मन्दिर में करें। पहले धूप, दीप, अगरबत्ती, फल-फूल इत्यादि से पूजन करें। सिन्दूर लगाएँ, फिर गेहूँ के आटे का एक बड़ा रोट बनायें। उसमें गुड़ व घृत मिलायें। साथ ही इलायची, जायफल, बादाम, पिस्ते इत्यादि भी डालें तथा इसका भोग लगायें। भोग लगाने के बाद मन्दिर में ही हनुमान जी के समक्ष बैठकर उक्त मंत्र का १२५ बार जप करें। जप के अन्त में हनुमान जी के पैर के नीचे जो तेल होता है, उसे साधक अंगुली से लेकर स्वयं अपने मस्तक पर लगायें। इसके बाद फिर दूसरे दिन उसी समय उपरोक्त वर्णनानुसार पूजा करके, काले डोरे में २१ मंत्र पढ़कर गांठ लगायें तथा डोरे को गले में धारण करें। मांस-मदिरा का सेवन कदापि न करें। इस मंत्र सिद्धि से सभी प्रकार के वाद-विवाद में जीत होती है। मनोवांछित कार्य पूरे होते हैं तथा शरीर की सुरक्षा होती है।

श्री हनुमान जंजीरा

हनुमान जी कृपा प्राप्त करने के अनेकों प्रयोग हैं, इन्हीं प्रयोगों में से एक विशेष प्रयोग है हनुमान जंजीरा। यह हनुमद् कृपा पाने का एक गुप्त अस्त्र है। जैसा की हमें ज्ञात है कि हनुमान जी के सभी प्रयोग अचूक होते हैं, वैसे ही यह प्रयोग भी अत्यन्त प्रभावशाली व तीव्र फलदायक है। यह प्रयोग किसी भी प्रकार की ऊपरी बाधा को क्षण भर में ध्वस्त कर देता है व जीवन पर्यंत ऐसी बाधाओं से रक्षा भी करता है। यह जंजीरा किसी भी भूत, प्रेत, पिशाच, चुड़ैल को अपने जाल में बाँधकर नष्ट करने में सक्षम है, इसीलिये इसे जंजीरा कहते हैं।

शाबर मंत्र स्वयं सिद्ध होते हैं, इनको सिद्ध करने की आवश्यक नहीं होती, इसलिए यह मंत्र परम सिद्ध फलदायक है, परन्तु इस अपार शक्ति को धारण करने के लिए एक निश्चित प्रक्रिया का अनुसरण करना अत्यन्त आवश्यक है। इस प्रक्रिया का यथारूप अनुसरण न करने की स्थिति में धारणकर्ता को फल प्राप्ति में संशय हो जाता है। इसलिए प्रक्रिया को विवेकपूर्वक समझकर ही प्रयोग करना चाहिए।

अधिकांश देखा गया है कि व्यक्ति किसी न किसी बीमारी से ग्रसित हो जाता है, जिसके लिए वह उपचार की प्रक्रिया में लग जाता है, परन्तु विशेष फल नहीं मिल पाता। यहाँ तक कि कभी-कभी रोग का कारण भी ज्ञात नहीं हो पाता, रोग दिन-प्रतिदिन प्रबल होता जाता है व मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट बढ़ता चला जाता है। ऐसे में व्यक्ति व उसके

सम्बन्धी लोग धनहानि, मानसिककुंठा व भावनात्मक कष्टों में उलझ जाते है। ऐसे रोगों का कारण कभी-कभी प्राकृतिक नहीं होता अपितु ऊपरी बाधा जैसे कि भूत-प्रेत, तंत्र प्रयोग, टोना-टोटका, घर में व्याप्त व्याधि, आस-पास के क्षेत्र से किसी प्रकार की दूषित ऊर्जा यह सब इस का मूल कारण हो सकती है। गम्भीर रोग, ट्यूमर, कैंसर, लकवा, आकस्मिक दुर्घटनाएँ, घर में किसी न किसी का स्वास्थ खराब रहना। गर्भपात, ग्रह-क्लेश, वैवाहिक जीवन में किसी तीसरे का प्रवेश, व्यापार बाधा, कारखाने का न चलना, कानूनी विवाद आदि। इन सबका कारण भी ऊपरी बाधा हो सकती है।

अनेक प्रकार की अभिचार और सांसारिक बाधायें कर्मफल स्वरूप जीवन में आती रहती हैं। ऐसी समस्याओं के लिए श्री हनुमान जंजीरा का प्रयोग लाभदायक है। यदि समस्या ऊपरी बाधाओं से जुड़ी है तो यह शाबर मंत्र प्रभावकारी होते हैं, यदि ऊपरी बाधाओं के महाकाल श्री हनुमानजी को प्रसन्न किया जाए तो ऊपरी बाधा का सर्वनाश परमसत्य सिद्ध होता है। यह प्रयोग यदि स्वयं करने में असमर्थ हों तो निकट सम्बन्धी भी रोगी के हित में यह प्रयोग कर सकता है। यह प्रयोग कोई कठिन नहीं है पर नियम पूर्वक करने से ही लाभ होता है। इसकी प्रयोग विधि निम्नलिखित है—

श्री हनुमान जंजीरा मंत्र— **ॐ हनुमान पहलवान पहलवान, बरस बारह का जवान, हाथ में लड्डू मुख में पान, खेल खेल गढ़ लंका के चौगान, इस हड़मान का कोई न साणी, जो लड़े वो मांगे पाणी। अंजनी का पूत, राम का दूत, छिन में कीलौ नौ खंड का भूत, जाग जाग हड़मान (हनुमान) हुँकाला, ताती लोहा लंकाला, शीश जटा डग डेरू उमर गाजे, वज्र की कोठड़ी ब्रज का ताला आगे अर्जुन पीछे भीम, चोर नार चंपे ने सींण, अजरा झरे भरया भरे, ई घट पिंड की रक्षा राजा रामचन्द्र जी लक्ष्मण कुँवर हड़मान (हनुमान) करें।**

किसी भी मंगलवार की रात से श्री हनुमान जी का अष्टदल यंत्र स्थापित करें व इसका विधि पूजन आदि करके श्री रामचन्द्र जी को नमस्कार करके व हनुमान जी का ध्यान करते हुए उपरोक्त जंजीरा मंत्र एक माला जाप करें। इक्कीसवें दिन जाप पूर्ण होने पर हनुमान जी के मंदिर जाएँ, वहाँ पीला सिन्दूर, चमेली का तेल, नारियल व ध्वज अर्पण करें। पुनः घर आकर एक बार इसका जाप करें और पूरे घर में यंत्र के द्वारा या रोगी व्यक्ति पर इस यंत्र से ही गुग्गुल की धूप करें व यंत्र को पुनः पूजन स्थान पर रख दें। इस प्रयोग से निश्चित ही लाभ प्राप्त होता है। यदि ऊपरी बाधा है तो प्रयोग के दौरान चमत्कारी अनुभूति होने पर डरें नहीं। हनुमान जी के प्रति पूर्ण श्रद्धा और इस प्रयोग पर पूर्ण विश्वास रखते हुये ही इस जंजीरा का पाठ करें, अवश्य सफलता मिलेगी। अनेक वर्षों से लाखों साधकों के पत्र एवं आग्रह पर यह विशेष साधना इस पुस्तक में दी गई है। साधक पूर्ण श्रद्धा से इसका प्रयोग करें।

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र महाशास्त्र

तान्त्रिक चमत्कार

(लेखक : **योगीराज यशपाल जी**)

मंत्र-तंत्र-यंत्र में असीम अलौकिक शक्तियाँ निहित हैं। इसके द्वारा नर से नारायण बना जा सकता है। 'मंत्र' शब्दों या वाक्यों का वह वर्ण समूह है, जिसके निरन्तर मनन से विशेष शक्ति प्राप्त की जा सकती है। मन्त्र जप से किसी भी देवी-देवता की सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। मन्त्र में अपार शक्ति होती है।

तन्त्र का अर्थ भी बहुत व्यापक है। इसका अर्थ उपाय, व्यवस्था, विधि या प्रणाली होता है। तंत्र साधना में प्रयुक्त होने वाले मंत्र ग्रन्थ में दिए गए हैं। तंत्र वह विधि है, जिसके अनुसार कर्म करने से भय से रक्षा होती है।

यन्त्र विभिन्न आकृतियों, रेखाओं, बिन्दुओं, अंकों व अक्षरों का संयोजन होता है। यन्त्रों के उचित निर्माण व प्रयोग से अभीष्ट फल की प्राप्ति की जा सकती है। मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र का यह विशाल ग्रन्थ मोटे कागज और मजबूत जिल्द के साथ प्रस्तुत किया गया है।

सम्पूर्ण यक्षिणी रहस्य और चौंसठ योगिनी साधना

(लेखक—**के.एल. निषाद 'भैरमगढ़ी'**)

सभी यक्षिणियों का रहस्यपूर्ण विवेचन, मन्त्र पाठ, तंत्रज्ञान एवं महत्त्व इस पुस्तक में प्रकाशित है। पहली बार चौंसठ योगिनी का भी विशिष्ट वर्णन इस में किया गया है। दुर्लभ यक्षिणी यन्त्र साधना भी दी गई है। पुस्तक के उतरार्द्ध में अघोर तन्त्र की भी विशेष चर्चा के अन्तर्गत मन्त्रों एवं तन्त्र प्रयोगों का समावेश किया गया है। यक्षिणी साधकों एवं योगिनी उपासकों हेतु यह पुस्तक विशेष उपयोगी है।

रणधीर प्रकाशन

रेलवे रोड, हरिद्वार-249401,
फोन : 01334-226297, मोबाइल : 9012181820
वेबसाइट : www.randhirbooks.com

3.आत्मिक सुख देने वाली अनमोल पुस्तकें

5.प्रख्यात तान्त्रिकों द्वारा रचित विशेष ग्रन्थ

7.हर घर में काम आने वाली उपयोगी पुस्तकें

मन्त्र,तन्त्र,यन्त्र एवं ज्योतिष के किसी प्रयोग अथवा पूजा पाठ के अनुष्ठान में योग्य गुरु का निर्देशन अवश्य लें। लेखक, प्रकाशक एवं मुद्रक किसी भी उचित या अनुचित प्रयोग का उत्तरदायी नहीं है।
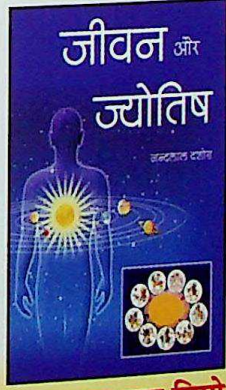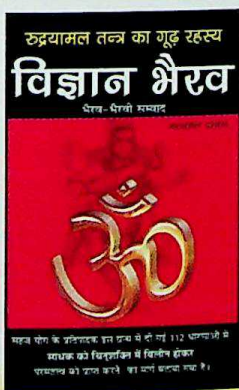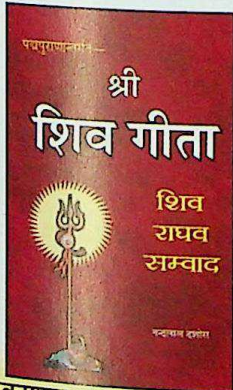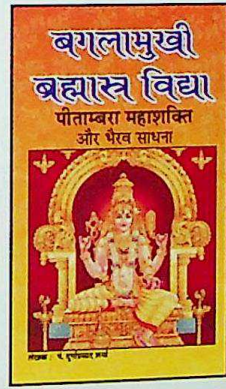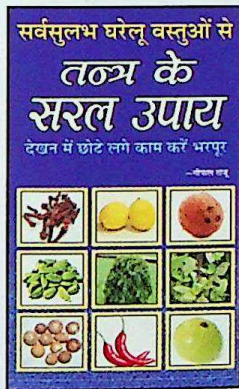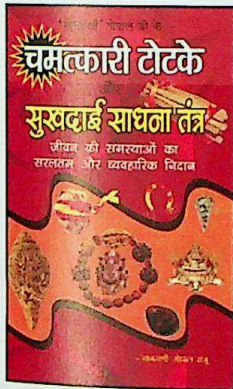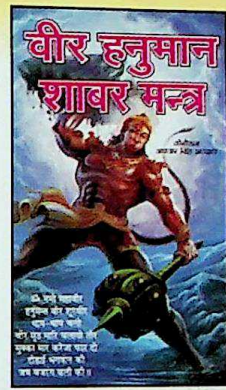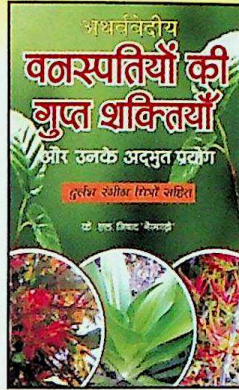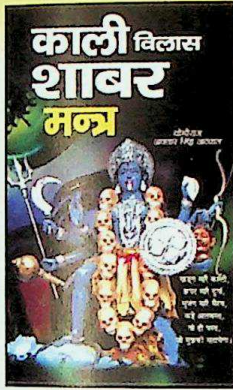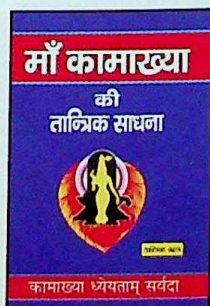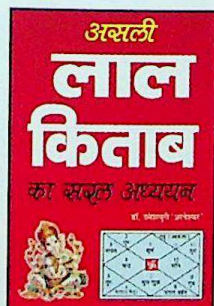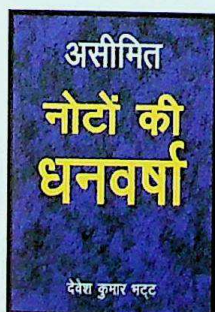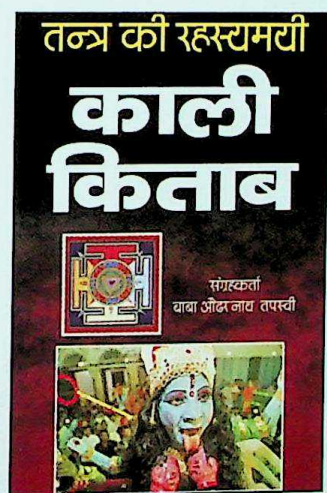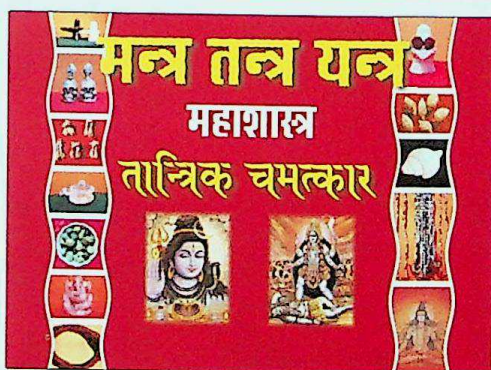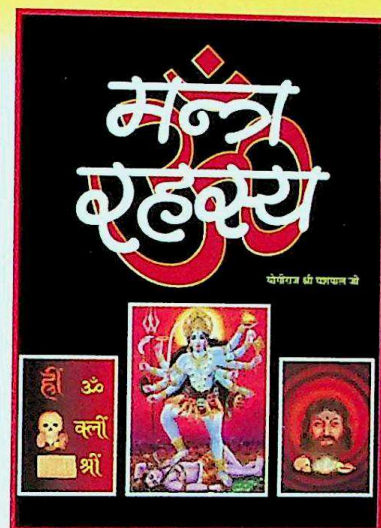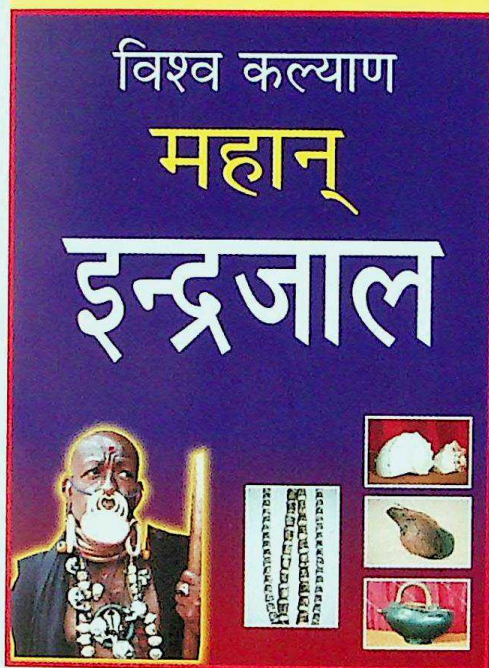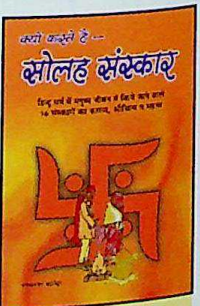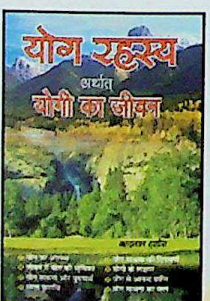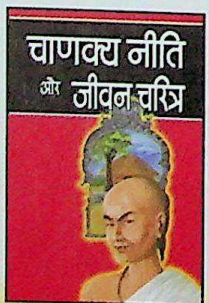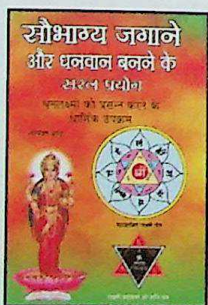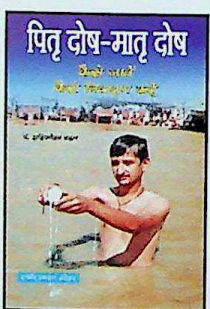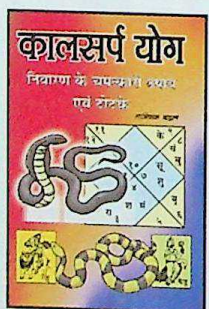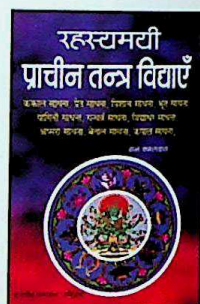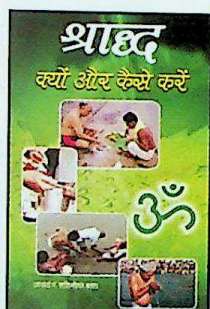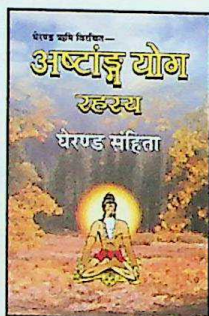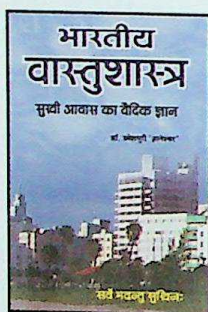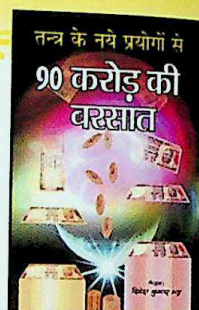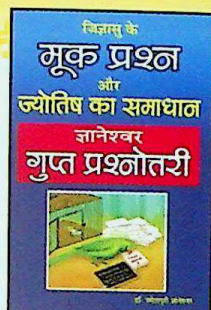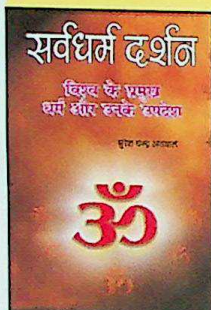
रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

PH: (01334) 226297
MO: 0 9012 1818 20

भैरव तन्त्र रहस्य और भीषण भैरव शाबर

भैरव शिव का एक भयंकर स्वरूप है। भैरव का शाब्दिक अर्थ है भयानक। किन्तु एक सूक्ष्म अर्थ में भैरव = भय+रव अर्थात भय से रक्षा करने वाला देव। महाभैरव वास्तव में मृत्युभय के देवता का बाह्य स्वरूप है।
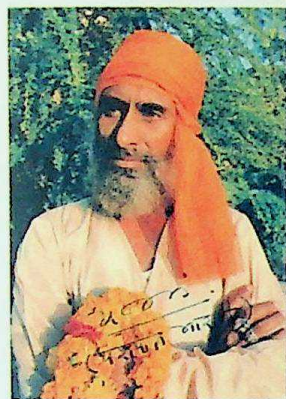
परम पूजनीय बैकुण्ठवासी
योगीराज यशपाल जी

काल की भाँति शोभित होने के कारण यह साक्षात 'कालराज' है। भीषण होने के कारण 'भैरव' है। इनसे काल भी भयभीत होता है अत: यह 'कालभैरव' हैं। दुष्ट आत्माओं का मर्दन करने के कारण इन्हें 'आमर्दक' भी कहा गया है।

भैरव वास्तव में तमस (अंधकार) के देव हैं। इनकी साधना से साधक अपने अज्ञान रूपी तिमिर का नाश करके भैरव कृपा एवं सिद्धि रूपी प्रकाश को प्राप्त कर सकता है।

पुस्तक के भीतर समाहित उल्लेखनीय विषय इस प्रकार हैं-

- ★भैरव तत्व विवेचन
- ★भैरव मन्त्र रहस्य
- ★भैरव तन्त्र साधना
- ★बटुक भैरव साधना
- ★काल भैरव साधना
- ★भीषण भैरव शाबर
- ★स्वर्णाकर्षण भैरव साधना
- ★क्रोध भैरव साधना
- ★शरभेश्वर भैरव साधना
- ★उन्मत्त भैरव साधना
- ★बावन बीर साधना
- ★हनुमान जंजीरा

ISBN:978-81-940650-8-1

रणधीर प्रकाशन - हरिद्वार
www.randhirbooks.com